राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत प्राकृत अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविध वाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

प्रधान सम्पादक
पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्त्वाचार्य
सम्मान्य सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएन्टल सोसाइटी जर्मनी
निवृत्त सम्मान्य नियामक (ऑनरेरि डायरेक्टर),
भारतीय विद्याभवन बम्बई; प्रधान सम्पादक
सिंघी जैन ग्रन्थमाला, इत्यादि ।

ग्रन्थाङ्क ७८

राघवदास कृत

भक्तमाल

(चतुरदास कृत टीका सहित)

प्रकाशक
राजस्थान राज्याज्ञानुसार
सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर (राजस्थान)

राघवदास कृत

भक्तमाल

(चतुरदास कृत टीका सहित)

श्री आचार्य विनयचन्द्र ज्ञान भण्डार, जयपुर

सम्पादक

श्री अगरचन्द नाहटा

प्रकाशनकर्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०२१ | भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८५ | खिृस्ताब्द १९६५
प्रथमावृत्ति १००० | मूल्य रु० ६.७५

मुद्रक । जगदीशचन्द्र स्वर्णकार, अजन्ता प्रिण्टर्स, जोधपुर.

BHAKTAMAL
OF
RAGHAVADAS

(with Commentary by Chaturdas)

Edited by
AGARCHAND NAHATA

PUBLISHED
under the orders of the Government of Rajasthan

BY

The Director Rajasthan Oriental Research Institute,
JODHPUR (RAJASTHAN).

V.S 2021   *Price : Rs. 6.75*   1965 A.D

सञ्चालकीय वक्तव्य

भगवद्भक्तो के आदर्श आचरण और त्यागमय जीवन सामान्य जन-जीवन में मार्गदर्शक होते हैं। इस द्वन्द्वात्मक जगत को जटिल परिस्थितियो के झकझोलो मे जब जनता के धार्मिक विश्वास डगमगाने लगते हैं, तो तारण-तरण पहुँचवान भक्तो की करुणापरिपूरित अमृतवाणी से ही भवदावदग्ध-जनो को शान्ति एव कर्तव्यपथ का निदर्शन प्राप्त होता है। ऐसे जगदुद्धारक हरि-भक्त सन्तो के पवित्र चरित्र और महिमा का वर्णन अनेक सतसङ्गी एव गुरुभक्तों ने विविध रूपो मे किया है।

भक्तमाल, भक्त-परिचयी, मुनि-नाम-माला, साधु-वन्दना आदि अनेक प्रकार की रचनाएँ विभिन्न ग्रन्थ-सग्रहो मे उपलब्ध होती हैं। ऐसी रचनाओ मे महात्मा पयोहारिजी के शिष्य नाभादासजी कृत भक्तमाल प्रसिद्ध है। दादूपथी, रामस्नैही, निरञ्जनी, राधावल्लभीय, गौडीय और हितहरिवशीय सम्प्रदायो के भक्तो के परिचय भी पृथक्-पृथक् भक्तमालो मे सन्दृब्ध हुए हैं।

दादू सम्प्रदाय के कतिपय भक्तो की परिचायिका चारण कवि ब्रह्मदास कृत भक्तमाल का प्रकाशन प्रतिष्ठान की ओर से 'राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला' के अन्तर्गत ग्रन्थाङ्क ४३ के रूप मे किया जा चुका है। दादू सम्प्रदाय का जन्म और विकास राजस्थान मे ही हुआ और दादूपथी भक्तो की वाणी भी अधिकाश मे राजस्थानी भाषा मे ही निबद्ध है।

हरिदास अपर नाम हापोजी के शिष्य राघवदासजी ने स्वरचित भक्तमाल मे अनेक दादूपथी भक्तो के पावन-चरित्रो का चित्रण किया है। इस भक्तमाल की एक टीका भी एतत् सम्प्रदायी शिष्य कवि चतुरदास द्वारा की गई, जिसमे भक्तो का चरित्र विस्तार से दिया गया है।

कुछ वर्षों पूर्व राजस्थान के सुप्रसिद्ध उत्साही साहित्यान्वेषक श्री अगरचन्दजी नाहटा ने 'राघवदास कृत भक्तमाल चतुरदास कृत टीका सहित' की एक प्रति की प्रतिलिपि हमे दिखाकर इस कृति को प्रतिष्ठान की ओर से प्रकाशित करने का प्रस्ताव किया जो हमने स्वीकार कर लिया और प्राचीन प्रतियो के आधार पर इसका विधिवत् सम्पादन करने के लिये श्री नाहटाजी से अनुरोध किया।

प्रस्तुत रचना की दो प्रतियाँ प्रतिष्ठान के जयपुर स्थित शाखा कार्यालय में स्व पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण-संग्रह में विद्यमान हैं। इनमें से एक प्रति स १८६१ की अर्थात् चतुरदासजी कृत टीका के रचनाकाल से साढ़े तीन वर्ष बाद ही की लिखित है। इस प्रति की प्रतिलिपि करवा कर श्री नाहटाजी को भेजी गई और अन्य प्राप्य प्रतियों के पाठान्तरों सहित सम्पादन के लिये उन्हें सूचित किया गया। तदनुसार विद्वान् सम्पादकजी ने भूमिका में उल्लिखित प्रतियों को लेकर पाठान्तर आदि देते हुए प्रेसकॉपी तैयार कराई। समय-समय पर भिन्न अन्य प्रतियों की हमें सूचना मिली अथवा बाद में प्रतिष्ठान में जो प्रतियाँ प्राप्त हुईं, उनके विषय में भी श्री नाहटाजी को जानकारी दी गई और प्रतियाँ उनके अवलोकन व उपयोग के लिये भेजी गईं।

हमारा विचार है कि यदि ऐसी राजस्थानी रचनाओं का सम्पादन राजस्थान के विभिन्न भागों अथवा विभिन्न भूतपूर्व रियासतों में निपिकृत प्रतियों के आधार पर किया जाय तो भाषाशास्त्र के अन्तर्गत ध्वनिभेद और भाषा-विकास सम्बन्धी अनेक गुत्थियों के हल निकलने के अतिरिक्त कितने ही अन्यान्य रोचक तथ्य भी सामने आ जाते हैं और उनसे नए निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। अस्तु, श्री नाहटाजी द्वारा प्रेस-कॉपी तैयार करा लेने तथा प्रेस में मूल ग्रन्थ का बहुत-सा अंश छप जाने के बाद प्रतिष्ठान में राघवदास कृत भक्तमाल (चतुरदास की टीका सहित) की दो और प्रतियाँ प्राप्त हुई हैं। उनके विवरण इस प्रकार हैं :

(१) प्रतिष्ठान के ग्रन्थाङ्क २१६७७ पर अंकित प्रति का विवरण
पत्र स १२ पंक्ति प्रति पृष्ठ = १८
१२ × १४ = सी एम अक्षर प्रति पंक्ति = ४८
प्रतिलिपि संवत् १९० वि ।

पुष्पिका इती श्री भक्तमाल टीका सहित राघोदासजी कृत संमस्त भक्तन को बखानोत बरनन संपूरण समाप्त ॥ छप्पय अर्थ ॥१४१॥ मनहर छंद ॥११ ॥ इंदव छंद ॥४॥ साखी ॥६॥ चौपई ॥२० इंदव छंद ॥८८॥ एती राघवदासजी कृत संपूरण ॥१७४॥ चतुरदासजी कृत टीका ॥ इंदव अर मनहर ॥६६३॥ समस्त मुल टीका कवित को जोड ॥१२५५॥ ग्रन्थ को समस्त श्लोक संख्या हजार ॥४२ ॥

संवत अष्टादश सतक ॥ दस नवगुन अधिकाहि ॥
माघमास सित प्रतिपदा ॥ बुधवासर के मांहि ॥

अथ पंमारमा मध्ये स्वपि पसतल भगवानदासजी का ता मध्ये लिखि साध रामचनाल दादूपंथी ॥ संमत ॥१९ ॥ मीति मावमा सुदी ॥१२॥ राम रं रं रं रं

इस प्रति में छंद संख्या १२५५ लिखी है परन्तु उक्त अंकों की जोड़ने पर
१३ आती है। पृष्ठ संख्या अनुपातत प्रति पृष्ठ पंक्ति संख्या और प्रतिपंक्ति

अक्षर सख्या के गुणन से ४,६६८ श्लोक सख्या आती है, परन्तु प्रति मे ४,५०० ही लिखी है।

(२) संख्या २८००० पर अंकित प्रति का विवरण :

पत्र स० १२० पक्ति प्रति पृष्ठ=१३
माप ३०×१३ सी. एम. अक्षर प्रति पक्ति=५०
लिपि सवत् १६०४ वि०

पुष्पिका—"इति श्री भक्तमाल की टीका सपूरण समापत ॥ सुभमस्तु कल्याणरस्तु ॥ लेषकपाठकयो व्रह्म भवतु ॥ छपै छद ॥३२३॥ मनहर छद ॥१४१॥ हसाल छद ॥४॥ साषी ॥३८॥ चौपई ॥२॥ इदव छद ॥७५॥ राघोदासजी कृत भक्तमाल सपूरण ॥५५३॥ इदव छद ॥ चतुरदास कृत टीका सब छं ॥६२१॥ सरवस कवित ॥११८५॥ ग्रथ की श्लोक सख्या ॥४१०१॥"

यहाँ प्रति मे दोहरा हसपद लगाकर दक्षिण हाशिए पर निम्न दो दोहे सूक्ष्माक्षरो मे लिखे हैं :

अष्यर वतीस ग्यन करि, सष्या चार हजार।
तामैं अरथ अनूप है, वकता लहू विचार ॥१॥
मैं मत. सारू आपणी, ग्रन्थ जो लिष्यो विचार।
सचर घालै अति घणौ, बकता बकसणहार ॥२॥

लिषत सुभसथान रांमगढ मध्ये ॥ सुकल पक्षे तिथ मादव सुधि पचमी मगलवार बार ॥ सबत ॥१६॥४॥ का ॥"

इसके आगे "दादूजी दयाल पाट ग्रीव मसकीन ठाठ" आदि पद्य लिखे हैं, जो पुस्तक के पृ० २७० पर मुद्रित हैं। ये पद्य २१६७७ वाली प्रति मे नही हैं।

इस प्रति की पुष्पिका मे लिखे अनुसार मूल भक्तमाल की छद सख्या ५५३ है, परन्तु जोडने पर ५९३ आती है। इसमें टीका के उल्लिखित ६२१ छद जोडने से योग १,२१४ आता है, परन्तु प्रति मे १,१८५ ही लिखे हैं। प्रति मे समस्त श्लोक सख्या ४,१०१ ही लिखी है, परन्तु उपर्युक्त प्रकार से पृष्ठ सख्या, प्रतिपृष्ठ पक्ति सख्या एवं प्रतिपक्ति अक्षर सख्या का गुणनफल ४,८७५ आता है।

विद्वान् सम्पादक श्री अगरचन्दजी ने प्रस्तुत पुस्तक के सम्पादन मे पूरी रुचि लेकर पाठ-शोधन, पाठान्तर, सूचनागर्भित प्रस्तावना और आवश्यक परिशिष्ट आदि का सङ्कलन कर पुस्तक को उपयोगी बनाने का यथाशक्य पूरा प्रयत्न किया है। तदर्थ वे हमारे धन्यवाद के पात्र हैं। जयपुर के दादू-महाविद्यालय के प्राण स्वामी मगलदासजी महाराज ने भी अतिरिक्त सूचनाएँ व

परिशिष्ट आदि दिये हैं अतः उन्हें भी धन्यवाद अर्पित करना हमारा कर्तव्य है। इनके अतिरिक्त जिन विभागीय एवं अन्य विद्वानों ने पुस्तक को पूर्ण बनाने में श्री नाहटाजी का हाथ बटाया है, वे भी प्रशंसा के पात्र हैं।

प्रस्तुत प्रकाशन भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय की ओर से 'आधुनिक भारतीय भाषा विकास-योजना राजस्थानी' के अन्तर्गत प्रदत्त आर्थिक सहयोग से किया जा रहा है अतएव भारत सरकार के प्रति हम आभार प्रदर्शित करते हैं।

१५ ४ ६५
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर.

मुनि जिनविजय
सम्मान्य सञ्चालक

भूमिका

भारत अध्यात्म-प्रधान देश है। यहाँ के मनीषियो ने सब से अधिक महत्त्व धर्म को ही दिया है, क्योकि मोक्ष की प्राप्ति उसी से होती है और मानव-जन्म का सर्वोच्च अेव अंतिम ध्येय आत्मोपलब्धि या परमात्म-पद-प्राप्ति का ही है। साध्य की सिद्धि के लिअे साधनो की अनिवार्य आवश्यकता होती है।

भारतीय धर्मो मे वैसे तो अनेक साधन प्रणालियो को स्थान दिया गया है, पर उन सब का समावेश ज्ञान, भक्ति और कर्म-योग में कर लिया जाता है। मानवो की रुचि, प्रकृति अेव योग्यता मे विविधता होने के कारण उनके उत्थान के साधनो मे भी भिन्नता रहती है। मस्तिष्क-प्रधान व्यक्ति के लिअे ज्ञान-मार्ग अधिक लाभप्रद होता है और हृदय-प्रधान व्यक्ति के लिअे भक्तिमार्ग। योग अेवं कर्म-मार्ग भी अेक सुव्यवस्थित साधन प्रणाली है, क्योकि जब तक आत्मा का इस शरीर के साथ संबध है, उसे कुछ न कुछ कर्म करते रहना ही पडता है। गीता के अनुसार आसक्ति या फल की आकाक्षारहित कर्म ही कर्म-योग है। पतञ्जलि के योगसूत्र मे योगमार्ग के आठ अग बतलाये गये है, उनमे पहले चार अग हठयोग के अन्तर्गत आते हैं और पिछले चार अग राजयोग के माने जाते हैं। वेदान्त, ज्ञान-मार्ग को महत्व देता है, तो भक्ति-सप्रदाय सब से सरल और सीधा मार्ग भक्ति को ही बतलाता है।

जैन धर्म मे सम्यक्दर्शन, ज्ञान और चारित्र को मोक्ष-मार्ग बतलाया गया है। सम्यग्दर्शन मे श्रद्धा को प्रधानता दी गई है, अत. उसका सबध भक्तिमार्ग से जोडा जा सकता है, कर्म या योग का चारित्र से ज्ञान तो सर्वमान्य है ही, क्योकि उसके बिना भक्ति किसकी[1] और कैसे की जाय तथा कर्म कौन-सा अच्छा है और कौनसा बुरा—इसका निर्णय नही हो सकता।

अपने से अधिक योग्य और सम्पन्न व्यक्ति के प्रति आदर-भाव होना मानव की सहज वृत्ति ही है। महापुरुष या परमात्मा से बढकर श्रद्धा या आदर का स्थान और कोई हो नही सकता। गुणी व्यक्ति की पूजा या भक्ति करने से गुणो के

---

[1]भगवान के सगुण व निर्गुण दो भेद करके उसकी उपासना दोनों रूपो मे की जाती है। इस रीति से निर्गुणोपासक व सगुणोपासक भक्त कहा जाता है।

प्रति आकर्षण बढ़ता जाता है और इससे अपने गुणों का विकास करने की प्रेरणा और शक्ति प्राप्त होती है। इसलिये ईश्वर या महापुरुष की भक्ति को सभी धर्मों ने महत्वपूर्ण स्थान दिया है। भक्ति कई प्रकार से की जाती है जिन में से नवधा भक्ति काफी प्रसिद्ध है।

भक्ति के द्वारा भगवान को प्राप्त करना या जैन-दर्शन के अनुसार प्रत्येक आत्मा परमात्म-स्वरूप है इसलिये परमात्मा के अवलंबन से अपने में छिपे हुये गुणों का विकास कर परमात्मा बन जाना ही भक्ति-मार्ग का इष्ट है।

जिन जिन व्यक्तियों ने भक्ति के द्वारा अपना विकास किया वे 'भक्त' कहलाते हैं। ऐसे भक्तों के नाम स्मरण एवं गुणस्तुति के लिये ही 'भक्तमाल' जैसे ग्रंथों की रचनायें हुई हैं—भक्तजनों की जीवनी के विशिष्ट प्रसंगों व चमत्कारों आदि का वर्णन इन ग्रंथों में संक्षेप से किया जाता है जिससे अन्य व्यक्तियों को भी भक्ति की प्रेरणा मिले और वे भक्त बनें।

महापुरुषों संत एवं भक्तजनों तथा अन्य विशिष्ट व्यक्तियों की गुणस्तुति या चरित्र-वर्णनात्मक साहित्य-निर्माण की परंपरा काफी प्राचीन है। वेदों और उपनिषदों में इसके सूत्र पाये जाते हैं। पुराणों तथा रामायण एवं महाभारत में इस परंपरा का उल्लेखनीय विकास देखने को मिलता है। इसके बाद भी समय-समय पर अनेकों व्यक्तियों के चरित्र एवं स्तुति-काव्य रचे गये। यह उनकी परंपरा आज भी है और आगे भी रहेगी। ऐसी रचनाओं में कुछ तो व्यक्ति-परक होती हैं और कुछ अनेक व्यक्तियों के संबंध में। 'भक्तमाल' जैसा कि नाम से स्पष्ट है भक्तजनों की नामावली एवं गुणस्तुति की एक माला है। जिस प्रकार माला में अनेक मनके होते हैं उसी तरह 'भक्तमाल' में अनेकों संतों एवं भक्तों के नाम तथा उनके जीवन प्रसंगों का संग्रह किया जाता है।

माला नामान्त एवं वाली रचनाओं की परम्परा—

माला द्वारा जप करने की प्रणाली काफी पुरानी है पर माला नामान्त वाली रचनायें इतनी प्राचीन प्राप्त नहीं होतीं। वैसे करीब बारह सौ वर्षों से प्राकृत संस्कृत और अपभ्रंश भाषा में माला व माल नामान्त वाली सत्ताधिक जैन जयमाल आदि रचनायें[1] प्राप्त होती हैं। संभवतः हिन्दी के कवियों को उन्हीं से अपनी रचनाओं को 'माला या माल' संज्ञा देने की प्रेरणा मिली हो।

---

[1] देखिये राजस्थान के दिगम्बर जैन ग्रंथ भण्डारों की सूचियां।

सतरहवी शताब्दी के कवि नाभादास ने सर्वप्रथम 'भक्तमाल' नामक महत्त्वपूर्ण ग्रथ बनाया। उसके बाद तो उसके अनुकरण मे 'भक्तमाल' और ऐसी ही अन्य नामो वाली रचनाएँ बहुत-सी रची गयी और प्रायः प्रत्येक भक्ति और सत सप्रदाय के कवियो ने पौराणिक-भक्तो के नाम एवं गुरुस्तुति के साथ-साथ अपने सप्रदाय के सत एवं भक्तजनो के नाम तथा चरित्र-सबधी प्रसगो का समावेश अपनी रचित भक्तमालो मे किया है।

सन्त एवं भक्तों की परिचइयाँ—

१७ वी शताब्दी से ही हिन्दी मे सतो एव भक्तो के व्यक्तिगत परिचय को देने वाली 'परिचयी' सज्ञक रचनाएँ भी रची जाने लगी, ऐसी रचनाओ मे सर्व प्रथम अनतदास रचित आठ परिचइयाँ प्राप्त हैं, जो कि स० १६४५ के लगभग को रचनाएँ हैं। इसके बाद तो छोटी व बडी शताधिक परिचयी सज्ञक रचनाएं रची गयी, जिनमे से १५ परिचइयो का आवश्यक विवरण डॉ० त्रिलोकीनारायण दीक्षित ने 'परिचयी-साहित्य' नामक ग्रथ में प्रकाशित किया है, जो लखनऊ विश्वविद्यालय से सन् १९५७ मे प्रकाशित हुआ था। इसके बाद मैंने ऐसी रचनाओ की विशेष रूप से खोज की, और करीब ७५ रचनाओ की जानकारी 'राष्ट्रभारती' के जनवरी और सितबर १९६२ के अको मे प्रकाशित मेरे दो लेखो मे दी जा चुकी हैं।

अब मैं 'भक्तमाल' नामक स्वतत्र रचनाओ की जानकारी यहाँ सक्षेप मे दे देना आवश्यक समझता हूँ।

भक्तमाल साहित्य की परम्परा—

नाभादास की भक्तमाल, उसकी टीकायें और प्रकाशित संस्करण

भक्तो के चरित्र-सबधी हिन्दी-काव्यो मे सब से प्राचीन एव सब से अधिक प्रसिद्ध ग्रथ नाभादास की 'भक्तमाल' है। इसकी पद्य सख्या, रचना काल, आदि अभी निश्चित नही हो पाये, क्योकि प्राचीनतम[1] प्रतियो के आधार से इस ग्रन्थ का सम्पादन वैज्ञानिक पद्धति से नही हो पाया है। कई विद्वानो की राय मे मूलत इसमे १०८ पद्य (छप्पय) थे, जैसे कि माला के १०८ मनके होते हैं। पर उतने पद्यो वाली प्राचीनतम प्रति अभी तक प्राप्त नही है। सवत् १७७० की

---

[1] जहाँ तक मेरी जानकारी है, सवतोल्लेखवाली प्राचीन प्रति स० १७२४ की लिखित सरस्वती भण्डार उदयपुर में है। वृन्दावन से प्रकाशित भक्तमाल के पृष्ठ ८९९ मे सं० १७१३ की अन्य प्रति का उल्लेख किया है, पर वह कहाँ है—इसकी जानकारी नहीं मिल सकी।

प्रति में ११४ पद्य हैं। प्रियादास की टीका में २१४ पद्य छपे हैं। शुक्लजी ने इसकी छन्द-संख्या ३१६ बतलाई है। इससे मालूम होता है कि समय-समय पर अन्य व्यक्तियों द्वारा प्रक्षेप होता रहा है। और इसलिये इसका रचना-काल भी अभी तक निश्चित नहीं हो पाया। साधारणतया इसका रचना-काल संवत् १६४२ से १७०० तक का माना जाता है। पर मूल ग्रन्थ में रचना-काल दिया हुआ नहीं है और इस ग्रन्थ में जिन व्यक्तियों संबंधी पद्य है, उनमें से कई व्यक्ति और उनके ग्रन्थ संवत् १६८६ और १७०० के बीच के समय के हैं। इसलिये श्री वासुदेव गोस्वामी ने इसका रचना-काल संवत् १६८६ के बाद का सिद्ध किया है—(देखें नागरी प्रचारिणी पत्रिका वर्ष ६४, अंक ३-४)।

श्री किशोरीलाल गुप्त ने अपने 'भक्तमाल का संयुक्त कृतित्व' नामक लेख में जो कि ना० प्र० पत्रिका, वर्ष ६६, अंक ३—४ में छपा है लिखा है कि भक्तमाल अभी जिस रूप में उपलब्ध है, वह एक व्यक्ति की रचना न हो कर ३ व्यक्तियों की रचना है। उन्होंने लिखा है— 'भक्तमाल के अनुशीलन से स्पष्ट होता है कि यह ग्रन्थ किसी एक व्यक्ति की रचना न होकर कम-से-कम ३ व्यक्तियों की संयुक्त कृति है। ये ३ व्यक्ति हैं—अग्रदास और उनके शिष्य नारायणदास तथा नाभादास। ——— मेरा ऐसा खयाल है कि नारायणदास के मूल भक्तमाल का परिवर्तन नाभादास ने किया और आज वह जिस रूप में उपलब्ध है उसे वह रूप देने का श्रेय नाभादास को है। नाभादास ने ग्रन्थ की भूमिका और उपसंहार में कोई परिवर्तन नहीं किया है और भक्तमाल के सभी दोहे नारायणदास की ही रचना हैं। नाभादास ने केवल छप्पयों को ही बढ़ाया है। २४ छप्पय अग्रदास कृत हैं। जिनमें से २ में स्पष्ट: अग्रदास की छाप है। अग्रदास के छप्पय नाभादासजी ने भक्तमाल को वर्तमान रूप देते समय जोड़े। भक्तमाल के १० से १११ संख्यक १७ छप्पयों में भक्तों का विवरण है इनमें से १०८ छप्पय नारायणदास के होने चाहियें और ६२ *नाभादास के। श्री किशोरीलाल गुप्त ने इस संबंध में विस्तार से प्रकाश डाला है।*[1] स्वामी मंगलदासजी की राय में दादूपन्थी राघोदास ने भक्तमाल की रचना नारायणदास रचित भक्तमाल के आधार से संवत् १७१७ में की है। अतः उसके तुलनात्मक अध्ययन से भी नारायणदास (नाभा) की भक्तमाल के मूल पद्यों का निर्णय करने में सहायता मिल सकती है।

---

[1] इस सम्बन्ध में वृन्दावन से प्रकाशित भक्तमाल वाला बृहद् संस्करण भी महत्व की सूचनाएँ देता है।

भक्तमाल की निम्नोक्त टीकाओ का उल्लेख विभिन्न ग्रन्थो मे देखने मे आया है।

१. प्रियादास की टीका 'भक्ति-रस-बोधिनी' स० १७६९। मे रचित स० १९८८ में वेंकटेश्वर प्रेस से प्रकाशित सस्करण में मूल पद्य २१४ और टीका पद्य ६२४।

२ 'भक्तमाल प्रसग' वैष्णवदास कृत (सन् १९०१ की खोज रिपोर्ट में सवत् १८२९ मे लिखित प्रति) प० उदयशकर शास्त्री ने वैष्णवदास की टिप्पणी— 'भक्तमाल-बोधिनी' टीका सवत् १७८२ मे लिखी गई, लिखा है। उनकी राय में वैष्णवदास दो हो गये हैं।

३. लालदास कृत टीका—इसका रचनाकाल अनूप सस्कृत लायब्रेरी की सूची मे सवत् १८६८ छपा है, पर राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान मे इसकी तीन प्रतियाँ सवत् १८५६, १८७० और १८९३ की लिखी हुई हैं। इसलिये इसकी रचना सवत् १८५६ के पहले की ही समझनी चाहिये।

४. वैष्णवदास और अग्रनारायणदास कृत रसबोधिनी टीका—सन् १९०४ की खोज रिपोर्ट मे इसका रचना सवत् १८४४ दिया गया है।

५. भक्तोवर्शी टीका, लालजीदास—इसका विशेष विवरण नीचे दिया जा रहा है।

भक्तमाल अर्थात् भक्तकल्पद्रुम ले० श्री प्रतापसिंह, सम्पादक-कालीचरण चोरासिया गौड, प्रकाशक-तेजकुमार प्रेस बुक डिपो, लखनऊ। सन् १९५२, बारहवी वार, मूल्य दस रुपये—बडी साइज पृ० ४९३। इस ग्रन्थ मे मगलाचरण के बाद प्रस्तुत ग्रन्थ और इससे पहले की टीकाओ सम्बन्धी निम्नोक्त विवरण दिया गया है।

"छप्पय छन्द मे नाभाजी ने भक्तमाल बनाया। यह माला भक्तजन मणिगण से भरा है। जिसने हृदय मे धारण किया तिसने भगवत को पहिचाना, ऐसी यह माला है। श्री प्रियादासजी माध्वसम्प्रदाय के वैष्णव श्री वृन्दावन मे रहते थे। उन्होने कवित्व मे इस भक्तमाल की टीका बनाई। उनके पश्चात् लाला लालजीदास ने सन् ११५८ हिजरी मे पारसी मे प्रियादासजी के पोते वैष्णवदास के मत से तर्जुमा किया व तर्जुमे का नाम 'भक्तोर्वशी' धरा। यह रहने वाले कांधले के थे, लक्ष्मणदास

नाम था। मथुरा की चकलेदारी में सत्संग प्राप्त हुआ। हितहरिवंशजी की गद्दी के सेवक हुये, लालजीदास नाम मिला। राधावल्लभलालजी के उपासक हुये।

दूसरा तर्जुमा एक और किसी ने किया है नाम याद नहीं है तीसरा तर्जुमा लाला गुमानीलाल कायस्थ रहने वाले रत्पक के, संवत् १६०८ में समाप्त किया। चौथा तर्जुमा लाला तुलसीराम रामोपासक लाला रामप्रसाद के पुत्र अगरवाले रहनेवाले मोरापुर अम्बाले के इलाके के, कमक्टरी के सरिश्तेदार। उस मूल भक्तमाल और टीका को संवत् १६१३ में बहुत प्रेम व परिश्रम करके शास्त्र के सिद्धान्त के अनुसार बहुत विशेष वाक्यों सहित अति ललित पारसी में उर्दू बाणी लिये हुए तर्जुमा करके चौबीस निष्ठा में रच के समाप्त किया।

संवत् उन्नीस सौ सत्रह १६१७ श्रावण के शुक्ल पक्ष में पड़रौना ग्राम में जो श्यामधाम में मुख्य भगवद्धाम है तहाँ श्री राधाराजवल्लभलालजी ठाकुर हिंडोला झूल रहे थे। उसी समय 'उमेदभारती' नामक सन्यासी रहने वाला ज्वालामुखी के जो कोटकांगड़े के पास है भक्तमालप्रदीपन नाम पोथी जो पंजाब देश में अम्बाले शहर के रहने वाले लाला तुलसीराम ने जो पारसी में तर्जुमा करके भक्तमालप्रदीपन नाम ख्यात किया है तिसको लिये हुये आये। उनके सत्कार व प्रेमभाव से पोथी हम ईश्वरीप्रतापराय को मिली। जब सब अवलोकन कर गये तो ऐसा हर्ष व आनन्द चित्त को प्राप्त हुआ कि बयान नहीं हो सकता। साक्षात् भगवत् प्रेरणा करके मनवांछित पदार्थ को प्राप्त कर दिया। व लाला तुलसीराम के प्रेम व परिश्रम की बड़ाई सहस्रों मुख से नहीं हो सकती। कुछ काल उसके श्रवण व अवलोकन का सुख लिया तब मन में यह अभिलाषा हुई कि इस पोथी को देवनगरी में भाषान्तर अर्थात् तर्जुमा करें कि जो फारसी नहीं पढ़े हैं उन सब भगवद्भक्तों को आनन्ददायक हो सो थोड़ा २ लिखते २ तीसरे वर्ष संवत् उन्नीस सौ तेईस १६२३ अधिक ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा को श्री गुरुस्वामी व भगवद्भक्तों की कृपा से यह भक्तमाल नाम ग्रन्थ सम्पूर्ण व समाप्त हुआ व चौबीस निष्ठा में सत्रह निष्ठा तक तो ज्यों का त्यों क्रमपूर्वक लिखा गया परन्तु अठारहवीं निष्ठा से भक्तिरस के तारतम्य से क्रम न लगाकर इस ग्रन्थ में लिखा है। प्रथम (१) धर्मनिष्ठा जिसमें सात उपासकों का वर्णन और (२) दूसरी भागवतधर्मप्रचारक निष्ठा जिसमें बीस भक्तों का बर्णन तीसरी (३) साधुसेवा निष्ठा व सत्संग जिसमें पन्द्रह भक्तों की कथा चौथी (४) श्रवण महात्म्य निष्ठा में ४ भक्तों की कथा और पाँचवी (५) कीर्तन

निष्ठा में १५ भक्तो को कथा है, छठई (६) भेषनिष्ठा निसमे आठ भक्तो की कथा, सातई (७) गुरुनिष्ठा तिसमे ग्यारह भक्तो की कथा, आठई (८) प्रतिमा व अर्चानिष्ठा तिसमे पन्द्रह भक्तो की कथा, नवई (९) लीला अनुकरण जैसे "रासलीला राम लीला" इत्यादि तिसमे छहो भक्तो की कथा, दसवी (१०) दया व अहिंसा तिसमे छवो भक्तो की कथा, ग्यारहवी (११) व्रतनिष्ठा तिसमे दो भक्तो की कथा, बारहवी (१२) प्रसाद निष्ठा तिसमे चार भक्तो की कथा, तेरहवी (१३) धामनिष्ठा तिसमे आठ भक्तो की कथा, चौदहवी (१४) नामनिष्ठा तिसमे पाँच भक्तो की कथा, पन्द्रहवी (१५) ज्ञान व ध्याननिष्ठा तिसमे बारह भक्तो की कथा, सोलहवी (१६) वैराग्य व शान्तनिष्ठा तिसमे चौदह भक्तो की कथा, सत्रहवी (१७) सेवानिष्ठा तिसमें दश भक्तो की कथा, अठारहवी (१८) दासनिष्ठा तिसमे सोलह भक्तो की कथा, उन्नीसवी (१९) वात्सल्यनिष्ठा तिसमे नव भक्तों की कथा, बीसवी (२०) सौहार्दनिष्ठा तिसमे छवो भक्तो की कथा, इक्कीसवी (२१) शरणागती व आत्म-निवेदन निष्ठा तिसमे दस भक्तो की कथा, बाइसवी (२२) सख्यभावनिष्ठा तिसमे पाँच भक्तो की कथा, तेइसवी (२३) शृगार व माधुर्यनिष्ठा तिसमे बीस भक्तो की कथा, चौबीसवी (२४) प्रेमनिष्ठा तिसमें सोलह भक्तो की कथा का वर्णन लिखा गया।"

६. बालकराम कृत भक्तदाम-गुणचित्रणी टीका—इसकी एक प्रति उदयपुर के सरस्वती भण्डार मे है। ४५८ पत्रो की यह प्रति स० १९३२ की लिखी हुई है। बालकराम ने टीका के अन्त मे अपना परिचय देते हुए लिखा है कि रामानुज की पद्धति मे रामानन्द हुये उनके पौत्र-शिष्य श्रीपयहारी की प्रणाली मे सन्तदास के शिष्य, खेम के शिष्य प्रहलाददास और मीठारामदास हुये। उनके शिष्य बालकदास ने यह टीका बनाई है। डॉ० मोतीलाल मेनारिया ने इसके सबध मे लिखा है कि "नाभाजी के भक्तमाल की यह एक बहुत बडी, सरस और भावपूर्ण टीका है। इसमे दोहा, छप्पय आदि कई प्रकार के छन्दो मे वर्णन किया गया है, पर अधिकता चौपाई छन्द की ही है। हिन्दी के भक्त कवियो के विषय मे नाभादास ने, अपने भक्तमाल मे जिन-जिन बातो पर प्रकाश डाला है, उनके अलावा भी बहुत-सी नयी बातें इसमे बतलायी गई है और इसलिये साहित्यिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होने के साथ-साथ वह सत महात्माओ के इतिहास की दृष्टि से भी परम उपयोगी है। इसका रचनाकाल सवत् ८०० से ११८२० तक का है। बालकराम की रचना कहने को नाभाजी के भक्तमाल की टीका है, पर वास्तव

में इसे एक स्वतन्त्र ग्रन्थ ही समझना चाहिये। यह ब्रजभाषा में है जिस पर राजस्थानी का भी थोड़ा-सा रंग लगा है। कविता बहुत ही सरस और प्रवाहयुक्त है।' इसमें दिये हुये कबीर-चरित्र को मेनारियाजी ने अपने राजस्थान में हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की खोज भाग १ में पूर्ण रूप से उद्धृत कर दिया है। इस ग्रन्थ की अन्य प्रति हिन्दी विद्यापीठ आगरा के संग्रह में है उसके अनुसार इसकी रचना सं० १८१३ के फाल्गुन एकादशी सोमवार को हुई है।

७ भक्तरसमास—ब्रजजीवनदास रचना सं० १९१४। सन् १९०९ से १९११ की रिपोर्ट में इसका विवरण प्रकाशित हुआ है। पंडित महावीरप्रसाद, गाजीपुर के संग्रह में इसकी प्रति है। विवरण में इसकी श्लोक संख्या ८५० बतलाने से यह बहुत ही संक्षिप्त मालूम देती है।

८. हरिभक्तिप्रकाशिका टीका—खेतड़ी निवासी हरिप्रपन्न रामानुज दास कायस्थ ने इसकी रचना की। जिसे पंडित ज्वालाप्रसाद मिश्र ने विस्तृत करके लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस से सवत् १९५६ में प्रकाशित की थी। भूमिका में श्री मिश्रजी ने लिखा है कि उर्दू भाषा संस्कृत, छन्दोबद्ध आदि कई प्रकार की भक्तमाल इस समय मिलती हैं तथा एक इसी भक्तमाल को दोहे-चौपाई में मैंने भी रचना किया है जो अभी तक प्रकाशित नहीं हुई है। संवत् १९५५ मुरादाबाद में मिश्रजी ने इस हरिभक्तिप्रकाशिका टीका को नये रूप से लिखके पूर्ण की। ७७६ पृष्ठों का यह ग्रन्थ अवश्य ही महत्वपूर्ण है।

'हिन्दी पुस्तक-साहित्य' में रामानुजदास कृत हरिभक्तिप्रकाशिका टीका का उल्लेख है।

९ भक्तिसुधास्वादतिलक—इस की रचना अयोध्या निवासी श्री सीतारामशरण भगवानप्रसाद रूपकला ने संवत् १९५० के बाद की है। मूल भक्तमाल व प्रियादास की टीका के साथ इसे संवत् १९५९ में काशी के बलदेव नारायण ने प्रकाशित की। इसका तीसरा संस्करण नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ से प्रकाशित हुआ। इसके अन्त में प्रियादास के पौत्र शिष्य वैष्णवदास रचित भक्तमाल महात्म्य भी छपा है। १०० पृष्ठों का यह ग्रन्थ अपना विशेष महत्व रखता है

१० सखाराम भीक्षित कृत टीका—'हिंदी में उच्चतर-साहित्य' नामक ग्रन्थ के पृष्ठ ४८ में बम्बई से इसके प्रकाशन का उल्लेख है। इसी ग्रन्थ में तुलसीराम की टीका (?) मत्राउल उलूम प्रेस, मुहाना से प्रकाशित होने का उल्लेख है तथा

भक्तमाल के कई सस्करण, (१) नृत्यलाल शील, कलकत्ता, (२) पजाब कानोमिकल प्रेस, लाहौर, (३) चश्म-ए-नूर प्रेस, अमृतसर का भी उल्लेख है। पर ये संस्करण मेरे देखने मे नही आये। 'हिन्दी पुस्तक साहित्य' के पृष्ठ ५३ मे तुलसीराम तथा हरिबख्स मुशी की भक्तमाल का भी उल्लेख है।

(११) मलूकदास लिखित भक्तमाल टीका—इसका विवरण सन् १६४१ से १६४३ की खोज रिपोर्ट के पृष्ठ १०५३ मे छपा है। ना० प्र० सभा, काशी के पुस्तकालय मे सवत् १६६२ की लिखी २६० पत्रो की प्रति है। मलूकदास वैष्णवदास के शिष्य थे और छत्रपुर रियासत मे रविसागर के निकट रहते थे।

उक्त खोज रिपोर्ट के पृ३ १०५२ मे भक्तचरितावली ग्रन्थ का विवरण छपा है जिसमे पौराणिक-चरितो का अभाव है। पर महाराजा बदनसिंह, विजयसिंह, शिवराम भट्ट आदि १६वी शताब्दी के भक्तो का वर्णन भी है। ग्रन्थ खण्डित है। ग्रन्थ की शैली भक्तमाल के समान प्रौढ न होते हुये भी उत्तम बतलाई गई है।

(१२) जानकीप्रसाद की उर्दू टीका—प० उदमशकरजी शास्त्री की सूचनानुसार नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ से यह छप चुकी है।

(१३) छप्पयो पर फारसी टीका—प० उदयशकरजी शास्त्री के कथनानुसार मन्नूलाल पुस्तकालय, गया मे इसकी हस्तलिखित प्रति है।

(१४) सस्कृत भक्तमाला—श्री चद्रदत्त ने नाभादास की भक्तमाल (एव टीका) के आधार से सस्कृत-पद्य-बद्ध इस ग्रन्थ को बहुत विस्तार से लिखा है। इसके तीन खण्ड—विष्णु, शिव और शक्ति मे मे केवल विष्णु खण्ड ही ६,७०० श्लोक परिमित वेकटेश्वर प्रेस मे छपा हुआ हमारे सग्रह मे है। श्री बाल गणक कृत और जयपुर नरेश की प्रेरणा से रचित दो अन्य सस्कृत भक्तमाल का उल्लेख वृन्दावन से प्रकाशित भक्तमाल के पृष्ठ ६५७ मे है।

(१५) भक्ति-रसायनी व्याख्या—श्री रामकृष्णदेव गर्ग की यह आधुनिक व्याख्या वृन्दावन से सन् १६६० मे प्रकाशित हुई है। इसमे भक्तमाल व प्रियादास की टीका भी दी गई है। करीब १००० पृष्ठ का यह ग्रन्थ भी विशेष महत्त्व का है। इसके प्रारम्भ मे श्री उदयशकर शास्त्री ने प्रियादास के बाद उनके पौत्र वैष्णवदास रचित 'भक्ति-उर्वशी' टीका का उल्लेख करते हुये वैष्णवदासजी को मथुरा मे किसी सरकारी पद पर होना बतलाया है। तीसरी टीका सवत् १८६८ मे रोहतक के निवासी

साला गुमानीराम ने की है। 'वार्तिक प्रकाश' नामक टीका अयोध्या के महात्मा रसरंगमणि ने बनाई, जो रामोपासक सन्तों में प्रसिद्ध हुई। श्री मार्तण्ड बुधा ने सं० १९११ में मराठी भाषा में छन्दोबद्ध टीका की, लिखा है।

वृन्दावन से प्रकाशित श्री भक्तमाल के पृष्ठ ६५५ में लिखा है—"मार्तण्ड बुधा कृत भक्त प्रमामृत' नामक मराठी टीका जो सं० १९३८ में पूर्ण हुई, सं० १९८४ मे चित्रशाला छापाखाना में मुद्रित हुई है। मराठी में महीपति कृत भक्त-लीलामृत' महीपति बुधा कृत 'भक्ति-विजय' नामक ग्रन्थ भी उल्लेखनीय हैं। इनमें से भक्ति विजय' में नामाजी की भक्तमाल को भाषा ग्वालियेरी बतलाई है। हिन्दी को मराठी सन्तों की देन' शोध-प्रबन्ध में 'भक्ति-विजय' १७ वी शताब्दी मे रचित बतलाने से यह उल्लेख महत्वपूर्ण है।

(१६) बंगला भक्तमाल—लालदास या कृष्णदास बाबाजी रचित। हिन्दी और बंगाली वैष्णव कवि' नामक शोध प्रबन्ध में रत्नकुमारी ने इसका विवरण देते हुये लिखा है—'बंगला के दो कवियों ने भक्तमाल का अनुकरण किया। ये दोनो ही १६ वीं शती के परवर्ती कवि हैं। एक तो लालदास या कृष्णदास बाबाजी रचित ग्रन्थ है जिसका नाम भी श्री भक्तमाल[1] ही है। इसमें मूल हिन्दी छप्पय देकर फिर उसका बंगला में भाष्य सा किया गया है। उन सम्पूर्ण भक्तों की नामावली तो बंगला भक्तमाल' में नही है जो 'हिन्दी भक्तमाल' मे है। थोड़े से मुख्य हिन्दी भाषा-भाषी वैष्णव भक्तों का परिचय है। दूसरी रचना जगन्नाथदास कृत भक्तचरितामृत है। यह भी भक्तमाल का अवलम्बन लेकर रची गई है।

लालदास बाबा की उक्त भक्तमाल अविनाशचन्द्र मुखोपाध्याय सम्पादित पूर्णचन्द्र घोस कलकत्ता द्वारा बंगाब्द १३५० साल में प्रकाशित हो चुकी है।

(१७) गुरुमुखी भक्तमाल—कीर्तिसिंह रचित इस ग्रन्थ का उल्लेख वृन्दावन से प्रकाशित भक्तमाल के पृष्ठ ६५६ मे किया गया है।

(१८) अरिल भक्तमाल—१४२ अरिल छन्दों में रचित इस भक्तमाल की प्रति गोस्वामी गोवर्धनलाल राधारमण का मंदिर मिमुहानी मिर्जापुर में है।

---

[1] पूर्णचन्द्र वाहिड़ी सम्पादित कलकत्ते से (प्रथम संस्करण बंगाब्द १३१२) द्वितीय संस्करण १३१ में प्रकाशित हुआ।

व्रजजीवनदास की (माझा) भक्तमाल (इश्कमाला) के साथ ही इसका उल्लेख उक्त श्री भक्तमाल ग्रन्थ के पृष्ठ ६५८ मे एव खोज रिपोर्ट मे छपा है।

(१६) भक्तमाला-रामरसिकावली—श्री रघुराजसिंह रचित यह महत्त्वपूर्ण और बडा ग्रन्थ लक्ष्मी वैंकटेश्वर प्रेस से स० १६७१ मे छपा था। इसकी पृष्ठ सख्या उत्तर-चरित्र के साथ ६८६ है।

(२०) भक्तमाल के अनुकरण मे सवत् १८०७ मे हँसवा (फतेहपुर) के चन्ददास ने भक्तविहार नामक ग्रन्थ की रचना की।

इस तरह की और भी अनेक रचनाये हैं। जिनमे दुःखहरण की भक्तमाल का उल्लेख 'उत्तर भारत की सन्त परम्परा' और माझा भक्तमाल का उल्लेख 'खोज विवरण' मे पाया जाता है।

(२१) उत्तरार्द्ध भक्तमाल—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने इसकी रचना की है। 'कल्याण' के भक्त-चरिताक के प्रारम्भ मे नाभादास की भक्तमाल के बाद इसे भी दे दिया गया है। गोस्वामी राधाचरण तथा गोपालराय कवि वृन्दावन वाले ने एक भक्तमाल बनाई है। उपरोक्त तीनो रचनायें २० वी शताब्दी की हैं। इससे स्पष्ट है कि नाभादास की भक्तमाल[1] का अनुकरण आज तक होता रहा है। गुजरात, पजाब, महाराष्ट्र, बगाल, आदि प्रदेशो मे भी भक्तमाल का बडा प्रचार रहा है।

अब विभिन्न सम्प्रदायो की भक्तमालो का सक्षित विवरण दिया जा रहा है।

दादूपंथी सम्प्रदाय

१. जग्गाजी रचित भक्तमाल

दादू शिष्य जग्गाजी रचित भक्तमाल, जिसमे केवल भक्तो की नामावली दी है, ६६ चौपाई छन्दो में है। उसकी प्रतिलिपि स्वामी मगलदासजी ने अपने हाथ से करके मुझे भेजी है। उसमे पुराने भक्तो की नामावली ३२ पद्यो मे देने के बाद दादूजी के शिष्य आदि सतो के नाम साढे पैंसठ पद्यो तक मे ठूस-ठूस के भर दिये हैं। यह भक्तमाल प्रस्तुत ग्रन्थ के परिशिष्ट न० २ मे दे दी गई हैं।

२ चैनजी की भक्तमाल

६१ पद्यो की इस भक्तमाल की प्रतिलिपि भी स्वामी मगलदासजी ने स्वय करके भेजी है। इसमे भी सतो एव भक्तो की नामावली ही दी है। अंतिम

---

[1] भक्तमाल के मूल पद्यों और नये तथ्यों के सम्बन्ध मे मेरा एक लेख "सप्त सिन्धु" मे शीघ्र ही प्रकाशित होगा।

लाला गुमानीराम ने की है। 'वार्तिक प्रकाश' नामक टीका अयोध्या के महात्मा रसरंगमणि ने बनाई, जो रामोपासक सन्तों में प्रसिद्ध हुई। श्री मार्तण्ड बुआ ने सं० ११३३ में मराठी भाषा में छन्दोबद्ध टीका की, लिखा है।

वृन्दावन से प्रकाशित श्री भक्तमाल के पृष्ठ ६५५ में लिखा है— 'मार्तण्ड बुआ कृत 'भक्त प्रेमामृत' नामक मराठी टीका जो सं० १६३८ में पूर्ण हुई, सं० ११८४ में चित्रशाला छापाखाना में मुद्रित हुई है। मराठी में महीपति कृत भक्त-लीलामृत' महीपति बुआ कृत 'भक्ति विजय' नामक ग्रन्थ भी उल्लेखनीय हैं। इनमें से भक्ति-विजय' में नाभाजी की भक्तमाल की भाषा ग्वालियेरी बतलाई है। हिन्दी को मराठी सन्तों की देन' शोध प्रबन्ध में 'भक्ति विजय १७ वीं शताब्दी में रचित बतलाने से यह उल्लेख महत्त्वपूर्ण है।

(१६) बंगला भक्तमाल—लालदास या कृष्णदास बाबाजी रचित। 'हिन्दी और बंगाली वैष्णव कवि' नामक शोध प्रबन्ध में रत्नकुमारी ने इसका विवरण देते हुये लिखा है— 'बंगला के दो कवियों ने भक्तमाल का अनुकरण किया। ये दोनों ही १९ वीं शती के परवर्ती कवि हैं। एक तो लालदास या कृष्णदास बाबाजी रचित ग्रन्थ है जिसका नाम भी श्री भक्तमाल[1] ही है। इसमें मूल हिन्दी छप्पय देकर फिर उसका बंगला में भाष्य सा किया गया है। उन सम्पूर्ण भक्तों की नामावली तो बंगला भक्तमाल' में नहीं है जो हिन्दी भक्तमाल' में है। थोड़े से मुख्य हिन्दी भाषा-भाषी वैष्णव भक्तों का परिचय है। दूसरी रचना जगन्नाथदास कृत भक्तचरितामृत है। यह भी भक्तमाल का अवलम्बन लेकर रची गई है।

लालदास बाबा की उक्त भक्तमाल अविनाशचन्द्र मुखोपाध्याय सम्पादित पूर्णचन्द्र शील कलकत्ता द्वारा बंगाब्द १३४० साल में प्रकाशित हो चुकी है।

(१७) गुरुमुखी भक्तमाल—कीर्तिसिंह रचित इस ग्रन्थ का उल्लेख वृन्दावन से प्रकाशित भक्तमाल के पृष्ठ ६२६ में किया गया है।

(१८) फारसि भक्तमाल—१४२ फारसि पद्यों में रचित इस भक्तमाल की प्रति गोस्वामी गोवर्द्धनलाल, राधारमण का मंदिर मिमुहानी मिर्जापुर में है।

[1] दुर्गादास लाहिड़ी सम्पादित कलकत्ते से (प्रथम संस्करण बंगाब्द १३१२) द्वितीय संस्करण १३१ में प्रकाशित हुआ।

व्रजजीवनदास की (माझा) भक्तमाल (इश्कमाला) के साथ ही इसका उल्लेख उक्त श्री भक्तमाल ग्रन्थ के पृष्ठ ९५८ मे एव खोज रिपोर्ट मे छपा है।

(१९) भक्तमाला-रामरसिकावली—श्री रघुराजसिंह रचित यह महत्त्वपूर्ण और बडा ग्रन्थ लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस से स० १९७१ मे छपा था। इसकी पृष्ठ सख्या उत्तर-चरित्र के साथ ९८९ है।

(२०) भक्तमाल के अनुकरण मे सवत् १८०७ मे हँसवा (फतेहपुर) के चन्ददास ने भक्तविहार नामक ग्रन्थ की रचना की।

इस तरह की और भी अनेक रचनाये हैं। जिनमे दु.खहरण की भक्तमाल का उल्लेख 'उत्तर भारत की सन्त परम्परा' और माझा भक्तमाल का उल्लेख 'खोज विवरण' मे पाया जाता है।

(२१) उत्तरार्द्ध भक्तमाल—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने इसकी रचना की है। 'कल्याण' के भक्त-चरिताक के प्रारम्भ मे नाभादास की भक्तमाल के बाद इसे भी दे दिया गया है। गोस्वामी राधाचरण तथा गोपालराय कवि वृन्दावन वाले ने एक भक्तमाल बनाई है। उपरोक्त तीनो रचनायें २० वी शताब्दी की हैं। इससे स्पष्ट है कि नाभादास की भक्तमाल[1] का अनुकरण आज तक होता रहा है। गुजरात, पजाब, महाराष्ट्र, बगाल, आदि प्रदेशो मे भी भक्तमाल का बडा प्रचार रहा है।

अब विभिन्न सम्प्रदायो की भक्तमालो का सक्षित विवरण दिया जा रहा है।

दादूपंथी सम्प्रदाय

१. जग्गाजी रचित भक्तमाल

दादू शिष्य जग्गाजी रचित भक्तमाल, जिसमे केवल भक्तो की नामावली दी है, ६९ चौपाई छन्दो में है। उसकी प्रतिलिपि स्वामो मगलदासजी ने अपने हाथ से करके मुझे भेजी है। उसमे पुराने भक्तो की नामावली ३२ पद्यो मे देने के बाद दादूजी के शिष्य आदि सतो के नाम साढे पैसठ पद्यो तक मे ठूस-ठूस के भर दिये हैं। यह भक्तमाल प्रस्तुत ग्रन्थ के परिशिष्ट न० २ मे दे दी गई हैं।

२ चैनजी की भक्तमाल

९१ पद्यो की इस भक्तमाल की प्रतिलिपि भी स्वामी मगलदासजी ने स्वय करके भेजी है। इसमे भी सतो एव भक्तो की नामावली ही दी है। अतिम

[1] भक्तमाल के मूल पद्यों और नये तथ्यों के सम्बन्ध मे मेरा एक लेख "सप्त सिन्धु" में शीघ्र ही प्रकाशित होगा।

उपसंहार का पद्य प्राप्त प्रतिलिपि में नहीं है। यह भक्तमाल भी प्रस्तुत ग्रन्थ के परिशिष्ट नं० ३ में दे दी गई है।

३ राघवदास की भक्तमाल—

प्रस्तुत दादूपंथी कवियों में राघवदास ने ही सब से बड़ी और महत्त्वपूर्ण भक्तमाल बनाई। नाभादास की भक्तमाल के बाद यही सर्वाधिक उल्लेखनीय रचना है। सं० १७१७ में इसकी रचना हुई है। अब से ४८ वर्ष पूर्व इस रचना का परिचय श्री अम्बिकाप्रसाद त्रिपाठी ने सरस्वती पत्रिका के अक्टूबर सन् १९१६ के अंक में प्रकाशित 'दादू-पंथी सम्प्रदाय का हिन्दी-साहित्य' नामक लेख में दिया था। उनका दिया हुआ विवरण इस प्रकार है—

स्वामी दादूदयाल के सम्प्रदाय में एक सन्त राघवदासजी हो गये हैं। उन्होंने भक्तमाल नाम का एक ग्रन्थ रचा है। उसमें शिवजी प्रजामिल, हनुमान्, विभीषण आदि से लेकर जितने भक्त हुए हैं सब का वृत्तान्त पद्य में दिया है। इस ग्रन्थ में १७५ भक्तों के चरित्र हैं और निम्नलिखित चार सम्प्रदाय और द्वादश पंथ शामिल हैं—

(१) स्वतन्त्र भक्त ११।

(२) चार सम्प्रदायी भक्त—(क) रामानुज सम्प्रदाय के १० भक्त। (ख) विष्णुस्वामी सम्प्रदाय के ६ भक्त। (ग) मध्वाचार्य सम्प्रदाय के १५ भक्त। (घ) निम्बादित्य सम्प्रदाय के ६ भक्त।

(३) द्वादश पंथी—(क) षटदर्शन सन्यासी योगी जङ्गम जैन, बौद्ध, अन्यान्य। (ख) समुदायी भक्त ४ । (ग) चतुःपन्थी गुरु नानक साहब के पन्थ के कबीर साहब के पन्थ के दादूदयाल के पंथ के तिरञ्जन के पंथ के। (घ) माधीकाणी। (ङ) चारण।

इस ब्योरे से विदित हो जावेगा कि भारतवर्ष की सम्पूर्ण सम्प्रदायों से दादूपन्थियों का मेल है।

४ चारण ब्रह्मदासजी की भक्तमाल—

राजस्थानी भाषा में रचित ६ भक्तमालों का समूह राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर से प्रकाशित हो चुका है। ब्रह्मदासजी दादूपंथी साधु थे उनका समय सं १८१६ के लगभग का है।[†]

[†] लघु भक्तमाल के नाम से इसकी १ हस्तलिखित प्रति जयपुर सरस्वती भण्डार में है उससे मिलान करने पर कुछ नये पद्य मिलने की सम्भावना है।

रामस्नेही सम्प्रदाय

(१) रामदासजी रचित भक्तमाल १७६ पद्यो की है। जिनमे से १२४ चौपाइयो मे अनेक सत एव भक्तो के नाम दिये गये है। यह रचना 'श्री रामस्नेही धर्मप्रकाश' नामक ग्रथ मे सन् १९३१ मे प्रकाशित हुई थी। अब पुन "श्री रामदासजी की वाणी" मे भी प्रकाशित हो चुकी है।

२ रामदासजो के शिष्य दयालदासजी ने एक विस्तृत भक्तमाल स० १८६१ मे वनाई है जिसमे सभी प्रचलित पथो के महात्माओ का निरूपण किया गया है। इस ग्रन्थ का आवश्यक विवरण मैंने अपने अन्य लेख में दिया है।

३ रामस्नेही सम्प्रदाय की रैण शाखा (दरियावजी की) के सुखशारणजी ने भक्तमाल की रचना स० १९०० में की, जिसका परिमाण १७३५ श्लोको का है। यह अभी-अभी स्वामी युक्तिरामजी, जोधपुर से प्रकाशित 'श्री सन्तवाणी' ग्रन्थ के पृष्ठ १३९ से ३०६ मे प्रकाशित हो चुकी है।

निरञ्जनी सम्प्रदाय

महात्मा प्यारेरामजी ने स० १८८३ मे भक्तमाल की रचना की। इसका विवरण देते हुए स्वामी मगलदासजी ने अपनी सम्पादित "श्री महाराज हरिदासजी की वाणी" में लिखा है–कि "इस भक्तमाल की रचना मोरिड मे हुई। प्यारेरामजो ने अपने गुरु की आज्ञा से इसकी रचना की। अवतारो का निरूपण करने के बाद खेमजी, चत्रदासजी, पोकरदासजो, दयालदासजी, सेवादासजी, अमरपुरुषजी व दर्शनदासजी तक का निरूपण किया है। पश्चात अन्य भक्तो का विवेचन किया है। २०४ मनहर कवित्त इस भक्तमाल के हैं, अन्त मे ४ दोहे हैं।" इसकी प्रतिलिपि हमारे सग्रह में भी है।

राधावल्लभ सम्प्रदाय

(१) गोस्वामी हितहरिवश के शिष्य ध्रुवदासजी ने "भक्तनामावलि" नामक ग्रथ की रचना की, जिसमें १२३ व्यक्तियो की नामावली दी हुई है। मूल ग्रथ ११४ पद्यो का है। इसे श्री राधाकृष्णदास ने बहुत अच्छे रूप में टिप्पणी सहित सम्पादित करके सन् १९२८ में प्रकाशित किया, जो नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से अब भी प्राप्त है। ध्रुवदासजी की अनेक रचनाओ में से "सभा-मडली" में

१६८१ वृन्दावनशत' में १६८८ और 'रहसिमंजरी' में १६९८ रचना काल दिया है। इससे उक्त 'भक्त-नामावलि' की रचना नाभादास की भक्तमाल के थोड़े वर्षों के बाद ही हुई प्रतीत होती है।

(२) रसिक अनन्यमाल—भगवत मुदित रचित इस ग्रंथ का प्रकाशन वृन्दावन से हो चुका है। इसका सम्पादन श्री ललताप्रसाद पुरोहित ने किया है। इसमें ३४ व्यक्तियों की परिचयी पाई जाती है। इसका रचना काल सं० १७०९ से १७२ के मध्य का बतलाया गया है।

इसकी पूर्ति रूप में उत्तमदासजी ने अनन्य-माल की रचना की।

वल्लभसम्प्रदाय की ८४ २५२ वैष्णवन की वार्ता भी इसी तरह की गद्य रचनाएँ हैं।

गौड़ीय-सम्प्रदाय

देवकीनन्दन कृत वैष्णव-वन्दना—वैष्णव-वंदना में अनेक वैष्णव भक्तों की वंदना की गई है। इन व्यक्तियों की जीवनी पर तो विशेष प्रकाश इस रचना से नहीं पड़ता नाम बहुत से मिल जाते हैं। यही इसका ऐतिहासिक मूल्य है। यह रचना अत्यन्त लोकप्रिय है।

माधवदास कृत वैष्णव-वंदना—इस रचना का प्रचार उस वैष्णव-वंदना की अपेक्षा जो देवकीनन्दन की रचना है कम है। बंगीय साहित्य-परिषद् ने शिवचन्द शील द्वारा सम्पादित इस रचना को १३१७ बंगाब्द (१९१ ई) में प्रकाशित किया है। इसमें श्री चैतन्य नित्यानंद अद्वैत हरिदास श्रीनिवास रामचन्द्र कविराज मुरारिगुप्त वासुदेव इत्यादि का उल्लेख है।

रामोपासक-सम्प्रदाय

रसिकप्रकाश भक्तमाल—इसकी रचना छपरा निवासी शंकरदास के पुत्र एवं अयोध्या के श्री रामचरणजी के शिष्य जीवाराम (जुगलप्रिया) ने सं० १८९६ मे की। इसमे रामोपासक रसिक-भक्तों का इतिवृत्त संग्रह किया गया है। उनके शिष्य जानकीरसिकशरणजी ने सं० १९११ में रसिक-प्रबोधिनी नामक टीका लिखी। २३१ छप्पय और ५ दोहों के मूल ग्रन्थ पर ६११ कवित्तों में यह टीका पूर्ण हुई है।

उक्त रसिक-प्रकाश भक्तमाल लक्ष्मण किला अयोध्या से प्रकाशित हो चुकी है।

हितहरिवंश–सम्प्रदाय

श्री उदयशंकर शास्त्री ने श्री कृष्ण पुस्तकालय विहारीजी के मन्दिर के पास, वृन्दावन मे प्रकाशित "केलिमाल" नामक ग्रन्थ की सूचना दी है, जो हितहरिवश सम्प्रदाय के भक्तो के सम्बन्ध मे है तथा आगरा से प्रकाशित (भारतीय-साहित्य वर्ष ७ अक १ मे) भक्त-सुमरणी-प्रकाश, महर्षि शिवव्रतलाल रचित सन्तमाल, (सत नामक पत्रिका के ३ जिल्दो मे प्रकाशित) और खाडेराव रचित भक्त-विरुदावली (खडित रूप मे हिन्दी विद्यापीठ आगरा के सग्रह मे) आदि रचनाओ की जानकारी भी दी है, पर ये ग्रन्थ मेरे अवलोकन मे नही आये।

जैन-धर्म मे भक्तमाल जैसी रचनाओं की परम्परा—

जैन-धर्म म सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्र को मोक्ष का मार्ग बतलाया है। सम्यक् दर्शन को सर्वाधिक महत्त्व देने पर भी सम्यक् चारित्र अर्थात् आचार को ही प्रधानता दी गई दिखाई देती है। अत सम्यक् चारित्र की आराधना करने वाले तीर्थंकरो व मुनियो के प्रति विशेष आदर व्यक्त किया गया है। उनके नाम-स्मरण, गुण-स्तुति और चैत्य-निरूपण सम्बन्धी जैन-साहित्य बहुत विशाल है। नाभादास की भक्तमाल की तरह तीर्थंकरो व मुनियो के नाम स्मरणपूर्वक उनको वन्दना करने वाली रचनायें 'साधु-वन्दना' के नाम से प्राप्त होत है। १६ वी शताब्दी से लेकर २० वी शताब्दी तक साधु-वन्दना या मुनि-नाममाला जैसी रचनाओ की परम्परा बराबर चली आ रही है। १६ वी शताब्दी के कवि विनयसमुद्र और पार्श्वचन्द्र की साधु-वन्दना प्राप्त है। १७ वी शताब्दी के प्रारम्भ के कवि ब्रह्म, विजयदेवसूरि, पुण्यसागर, कुवरजी, नयविजय, केशवजी, श्रीदेव, समयसुन्दर आदि कवियो की साधु-वन्दना नामक रचनाये प्राप्त हैं। इनमे से समयसुन्दर की रचना सबसे बडी है। ५९१ पद्यो की इस साधु-वन्दना की रचना स० १६९७ अहमदाबाद मे हुई है। १८ वी शताब्दी के कवि यशोविजय और देवचन्द्र तथा १९ वी शताब्दी के कवि जयमल रचित साधु-वन्दना छप चुकी हैं।

माला या मालिका सज्ञक रचनाओ मे खरतर-गच्छीय कवि चारित्रसिंह रचित मुनिमालिका स० १६३६ की रचना है, जो हमारे प्रकाशित 'अभय-रत्नसार' में छप चुकी है। २० वी शताब्दी के मुनि ज्ञानसुन्दर रचित मुनि-नाममाला भी प्रकाशित हो चुकी है, उसमे करीब ७५० मुनियो के नाम हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सन्त एवं भक्तजनों के नामों के संग्रह रूप या उनके चरित को संक्षिप्त या विस्तार से प्रकट करने वाली रचनाओं की परम्परा बहुत लम्बी है। जैन, जैनेतर सभी धर्म-सम्प्रदायों में ऐसी रचनायें बनाई गई हैं। उनमें से बहुत-सी रचनाओं का तो अच्छा प्रचार रहा है। छोटी छोटी रचनाओं को तो लोग नित्य-पाठ के रूप में पढ़ते रहते हैं। महान् पुरुषों के जीवन से प्रेरणा मिलती रहती है। अतः ऐसी रचनाओं का विशेष महत्व है। प्रस्तुत राघवदास की भक्तमाल भी इसी परम्परा की एक विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण रचना है। उसी के सम्पादन प्रसंग से ऐसी ही अन्य रचनाओं की परम्परा की कुछ जानकारी यहाँ विशेष प्रयत्नपूर्वक देदी गई है।

अब प्रस्तुत संस्करण में प्रकाशित "भक्तमाल" के रचयिता राघवदास व उनकी रचनाओं का स्वामी मंगलदासजी से प्राप्त विवरण दिया जा रहा है।

राघोदासजी

दादूजी महाराज के प्रमुख बावन शिष्यों में बड़े सुन्दरदासजी व प्रह्लादवदासजी का समुचित निरूपण है जैसा कि भक्तमाल टीकाकार चतुरदासजी ने व स्वयं राघोदासजी ने ५२ शिष्यों के निरूपण प्रसंग में "सुन्दर प्रह्लादवदास घाटडे सु मीडे मधि' (दे पृ २७) ऐसा उल्लेख किया है। किन्तु यहाँ दादूपन्थ का विवरण है वहाँ प्रह्लादवदासजी का विवरण पोता-शिष्यों में है। स्वयं प्रह्लादवदासजी ने अपनी वाणी की रचना में सुन्दरदासजी महाराज को गुरु माना है। इस विवरण से (१) दादूजी (२) सुन्दरदासजी (बड़े), (३) प्रह्लादवदासजी (४) हरीदासजी (हापीजी) (५) राघोदासजी—यह क्रम है।

राघोदासजी का जन्म सत्रहवीं सदी के उत्तरार्द्ध का होना चाहिये। वे सत्रहवीं सदी के अन्तिम चरण मे हरीदासजी के शिष्य हुये है। उनकी रचना का काल अट्ठारहवीं सदी है। राघोदासजी ने दादूजी की परम्परा में शिष्यों तथा पोता-शिष्यों का भक्तमाल में वर्णन किया है। इससे सिद्ध होता है कि उनके जीवन-काल में जो प्रशिष्य मौजूद थे उन्हीं तक का निरूपण भक्तमाल में आया है।

वे किस सम्वत में किस स्थान में उत्पन्न हुये? यह ज्ञात नहीं होता। प्रह्लादवदासजी महाराज घाटडेम में विराजते थे वहीं उनकी चरणपादुका व छत्री आज भी मौजूद है। यह स्थान पहिले अलवर स्टेट में था अब वह शायद अलवर

जिले मे सम्मिलित हो। राजगढ से रहले तथा रहले से घाटडे जाया जाता है। अब भी घाटडे मे प्रह्लाददासजी महाराज की परम्परा का मान्य स्थान है, जिस परम्परा मे इस समय महन्त आशारामजी विद्यमान हैं।

प्रह्लाददासजी के कई शिष्य हुये थे, उन्ही मे प्रमुख थे हरिदासजी महाराज। इन्ही के अनेको शिष्यो मे अन्यतम शिष्य राघोदासजी हुये हैं। ये पीपावशी चागल गोत मे उत्पन्न हुये थे। इनके पिता का नाम हरिराज तथा माता का नाम रतनाई था। शायद इनकी बहन का नाम केसीबाई था। इन्ही की प्रेरणा से इन्होने शिकार तथा मद्य-मास का परित्याग किया था, जैसा कि इनने स्वयं उल्लेख किया है —

नमो तात हरिराज नमो रतनाई माई।
जीव वध मद मास छुडायो केसीबाई।
सत सगति गति ग्यांन ध्यांन धुनि धर्म बतायो।
हरीदास परमहस परष पूरो गुरु पायो॥
राघो रज मो पायकै रामरत उमग्यो हियो।
दादूजी के पंथ को तव ही तनक वर्णन कियो॥३५॥

चौपाई पीपावशी चांगल गोत। हरि हिरदै कीनौ उद्योत॥
भक्तिमाल कृत कलिमल हरणी। आदि अन्त मध्य अनुक्रम वरणी॥
साध सगति सति स्वर्ग निसेणी। जन राघव अगतिन गति देणी॥

उक्त सदर्भ से उपरोक्त विवरण की पुष्टि होती है। राघोदासजी घाटडे से फिर "उदई" ग्राम चले गये थे। वही उनका समाधि-स्थान है। राघोदास जी के पश्चात् उनकी परम्परा मे महात्मा कुञ्जदासजी सिद्ध पुरुष हुये। करोली नरेश उनमे अत्यन्त श्रद्धा रखते थे। करोली मे महाराज कुञ्जदासजी का स्थान आज भी 'कुञ्ज' के नाम से प्रसिद्ध है। कुञ्जदासजी के पश्चात् राघोदासजी की परम्परा का स्थान करोली मे ही आ गया। 'उदई' की जमीन आदि सब अब इसी स्थान के अधीन है। वर्तमान मे, राघोदासजी की परम्परा का यही स्थान है। महाराज करोली ने एक ग्राम भी कुजदासजी महाराज को समर्पित किया था, जो राजस्थान के एकीकरण होने से पहिले तक 'कुज' के महन्तजी के अधिकार में था।

महाराज राघोदासजी अच्छे सुशिक्षित व कवि-गुणो से विभूषित थे—यह उनकी रचना से स्पष्ट है। उन्होंने महाराज प्रह्लाददासजी की प्रेरणा से प्रेरित हो "भक्तमाल" की रचना की थी, जेसा कि टीकाकार चत्रदासजी व्यक्त करते हैं:—

मनहर
अग्र गुरु नाभाजु कं आज्ञा दिन्ही कृपा करि,
प्रथम ही साखी छप्पै कीन्ही भक्तमाल है।
तैसे प्रभु प्रहलादजु विचार कही राघो यु सौं,
करी सन्त-भावनो यु बात यौ रसाल है।
भई मान करी ध्यान धरे ध्यान भक्त सब
निर्गुण सगुण पट-बरनन विशाल है।
साखी छप्पै मनहर इन्दव अरेल चौपे
निसामी सवईया छंद वान यौं हंसाल है॥

राघोदासजी ने भक्तमाल की समाप्ति पर कालज्ञापक दोहा भी लिखा है—

दोहा
सम्वत् सत्रह से सत्रहोतरा शुक्ल पक्ष शनिवार।
तिथि तृतिया आषाढ़ की राघो कियो उचार॥

सत्रह सै सत्रोहतरे से १७७७ तो स्पष्ट प्रतीत होता है। पुरोहित हरिनारायणजी ने सुन्दर ग्रन्थावली की भूमिका में सत्रह सो सत्रोहतरे को १७७० माना है। मेरी समझ से १७१७ ही अधिक उपयुक्त है क्योंकि भक्तमाल में प्रशिष्यों तक का ही उल्लेख है। १७७ सम्वत् यदि भक्तमाल की रचना का हो तो तब तक तो प्रशिष्यों के भी प्रशिष्य हो गये थे। भक्तमाल का रचनाकाल अट्ठारहवीं सदी का प्रथम चरण ही संगतिपरक है।

राघोदासजी ने भक्तमाल से भिन्न वाणी तथा लघु ग्रन्थों की भी रचना की है। उनकी वाणी में साखी अरिल तथा पद भाग हैं। पद अंगों में १६३७ साखियें हैं। अरिल के १७ अग हैं तीन सौ सत्तर अरिल हैं। राग २१ में १७६ पद हैं। लघु ग्रन्थावली में १ हरिश्चन्द्र सत २ ध्रुव चरित्र ३ गुरु-शिष्य सम्वाद ४ गुरुदत्त रामरक्षा ५ पन्द्रहा तिथि विचार ६ सतवार ७ भक्ति योग ८ चिन्ता मणि ज्ञान निषेध है। १३ अग कवित्तों के हैं जिनमें करीब सवा-सौ कवित्त है।

भक्तमाल से भिन्न रचनाओं के कुछ उद्धरण नीचे दिये जाते हैं जिनसे राघोदासजी के रचनाकार के रूप का और भी विशद परिचय प्राप्त होगा:—

वाणी अंग साखी भाग

साध महिमा अंग

गगन गिरासी विमल चित, अजर जरावण हार।
जन राघो वे सन्त जन, छम्ब मुक्ति ससार॥४॥

पारस रूपी पादुका, चम्बक रूपी बैन।
राघो सुनि मृतक जिये, भागे मिथ्या दैन ॥५॥
मृतक लोचें (?) मुनि भजै, देव करैं आराध।
जन राघो जगपति खुसी, भक्ति उजागर साध ॥६॥

अंग विरक्तताई

जे जन आसाजित भये, ता जन कौ जुग दास।
राघो जे आसा सुरत्त, ते करहिं जगत की आस ॥६॥
आसा तृष्णा जिन तजी, जे त्रिभुवन पुजि पीर।
राघो शोभित अति खरे, हरि सुमरण कठ हीर ॥८॥
इन्द्रीजीत विज्ञान मे, हृदं रह्यौ हरि पूरि।
जन राघो रुचि राम सौं, माया निकट न दूरि ॥१२॥

शब्द को अंग

वह पुदगल वह प्राण मन, वह नख नासा नैन।
हाथ पाव पलटै नहीं, राघो पलटै बैन ॥३॥
शब्दै हु निपजै साध, शब्द सु सेवग सीझहिं।
राघौ शब्द सु वस्तु, शब्द सु साहिब रीझहिं ॥१०॥
राघो बोलत परखिये, बोल मनुष को मोल।
इक मुख तें मोती झर्डहिं, इक मुख सेती टोल ॥१७॥

उपदेश को अग

धर्म बडो धर ऊपरं, जे करि जाणै कोइ।
राघो जग मे जस रहै, हरि दर कष्ट न होइ ॥ ३॥
आसा भग अतीत की, गृह आये जे होइ।
राघो सुकृत ले गयै, अकृत जाइ समोइ ॥१५॥
सत सुकृत दोऊ बडे, सत तैं बडो न कोइ।
राघो सत तप रूप है, सत तैं सब कुछ होइ ॥१८॥
भौ जल सिन्धु अगाध है, बूडत अदत अकाज।
राघौ धन धर्मातमा, बान्धी धर्म की पाज ॥२०॥

राघोदासजी की वाणी

कलजुगी को अंग

अरिल
कलजुग कठिन कठोर न कसके पाप सौं।
सुत सैतान्यां कर प्रबल मां बाप सौं॥
चेला गुरु सु गुप्त बुरावे झीम रे।
परि हां ! राघो एतो रीति मिस क्यों राम रे॥ १॥

कलि अपने मन जीति राज अपनो थप्यो।
तिन सौं बैर प्रसिद्ध राम जिन जिन जप्यौ॥
हरिजन हरि की ओट सबन के आस रे।
परि हां ! राघो कलि के रोर न आवे पास रे॥ ४॥

कलि केवल हरि नाम रटत रोती मिले।
विघ्न दोष दुख दुमति होत विग्रह दले॥
और जुगनि मधि जोग जाप जप तप सरे।
परि हां ! राघो कलि मधि राम जपत नर निसतरें॥ ६॥

पाखंड प्रपंच झूठ कपट कलि मैं घनो।
प्रवेस्यो अहंकार बहोत कहां लग गिनौं॥
परनिन्दा परद्रोह छिद्र पर नित तकें।
परि हां ! राघो राम बिसारि अधम आनहि बकें॥१०॥

चितावणी को अंग

कोडीवाज बाजार बैठते वाणियें।
दुनियादार सराफ जगत में जांणिये॥
हीरा मोती लाल मुहर बेसी भरी।
परि हां ! राघी नांवें नाम कास करियां बुरो॥ ११॥

कर कछु नेकी नीति बदी बेराह तजि।
परवरदियार खुदाइ प्रेम परिपूर भजि॥
करि मैं खूबी और खुमी है पेखनां।
परि हां ! राघौ दोजख भिस्त यहां ही देखनां॥१२॥

राम बिना सब धन्ध अन्ध कछु खेल रे।
तन मन धन सर्वस्व अर्प हरि हेत रे॥

आंन धर्म दिन चारि इरंड को मौरनो।
परि हाँ ! राघो किती बुनियाद वान को दौरनो ॥१६॥
ग्रह चहल पहल दिन चारि दुनी की चिलक है।
कनक कामनी रूप कांम की किलक है ॥
जन राघो रुचि राग कुरग उर सर सह्यो।
परि हाँ ! ऐसै जग को अग्नि अज्ञानी नर दह्यौ ॥२६॥

न्यायमार्गी अङ्ग

हिन्दू के हद वेद रहै मर्याद मैं।
खडै न खोटो खाय वस्त नहिं वाद मैं ॥
तज असार गहि सार रांम रस पीजिये।
परि हाँ ! राघो जुक्ति विचारि जोग जिग कीजिये ॥४॥
मुसलमान मुस्ताक सरै कै हक चलै।
हाथ न छुवै हराम रहै उजले पलै ॥
हक हलाल टुक खुर्दनी जिकर फिकर विसियार।
परि हाँ ! राघो खडा रहीम दर बन्दा है हुशियार ॥५॥

ज्ञान उपदेश को अङ्ग

जैसी सगति करै तिसे फल आखिर पावै।
कहत सयाने साध साषि पुनि आगम गावै ॥
जांण पडही मति जगत मैं जाग भागि जिन व्है सतो।
परि हाँ ! राघी रही रुचि रांम सू रैण दिवस धरि द्रढ़ मतो ॥५॥
ग्यानी गुण की रास निर्गुण सौं व्है रहे।
गहै शील सन्तोष काम क्रोधहि दहे ॥
खिझै न रीझै चाह चित्र को पेखणौ।
परि हाँ ! राघो हर्ष न शोक तमासौ देखणौ ॥११॥

धर्म कसौटी को अङ्ग

षलक खूब दिन दोइ सुनो सब लोइ रे।
तन धन अपना नांहि विछोहा होइ रे ॥
सत करि सुणवे जोग यहै इतिहास रे।
परि हाँ ! राघो वित उनमान वाटियो गास रे ॥२॥

नर तन पाइ उपाइ यहै गुरु बूझिये।
तजि भूतागति भर्म धर्म कछु कीजिये॥
सुबस रहै संसार अगम आवर घणौ।
परि हाँ! राघो करै निहाल इष्ट भज आपणौ॥११॥
विमुख काम जिन देहु अतिथि गृह बार पे।
टूक मास घटि खाउ स्वकीय अहार पे॥
सत मैं सु सत बाँटि सत्य हरि राखि है।
परि हाँ! अस राघो धर्मराइ धर्म को साखि है॥१२॥

राग-रामगिरी

त्राहि त्राहि त्राहि नाथ हाथ गहो दास को।
नीर परे बीर धरो टेकू बिरद तास को॥टेक॥
काम क्रोध लोभ मोह मर्कट नचावे मोहि
भूमि गयो ग्यान ध्यान मारे डर त्रास को॥१॥
त्रिगुण त्रिदोष भर्म प्रेरिके करावे कर्म,
काम यौं पसारे पास करमहार माया को॥२॥
राघो यों पुकारे राम यही डर आठों जाम
पारे सो न मारे हौं तौ पारधी तेरे गास को॥३॥

राग—टोडी

सकल सिरोमणि नाँव खरी।
ज्यौं बसि जावै त्यौं सुख पावै मन ही माँहि रहत परी॥टेक॥
ज्यों सेती मृतक मुख बोल अमृत गुणी भरी॥
भावत जिम रहे नहिं कबहूँ आतम होत हरी॥१॥
पांचो तत तीनों गुण तजि, महोत्तम पांठ परे॥
लोभे सोई सपूत सिरोमणि भावत बसत परी॥२॥
पठि इकान्त प्रास जब रावै निस-दिन साखि परी॥
राघो कहै नहीं सोई गुरधमि, सुसम सुसम करी॥३॥

राग—आसावरी

हरि परदेश हूँ काहे देऊँ पाती कोई न मिलै एसा सजन समाती॥टेक॥
हा! हा! करि करि हौं हरि हारी कोई न कहै मोहे बात तुम्हारी॥१॥
आरति अधिक बहुत उर मेरे अहोनिस जिस चातक ज्यूं टेरे॥२॥

मो उर करक काठ ज्यूं वीझै, का जाणौं हरि का विधि रीझै ॥३॥
जन राघो विरहनी विललावे, थाकी रसना राम कब आवे ॥४॥

राग-नट नारायण

अब तौ आई वनी जिय मेरे !
चित चकचाल काल के डर तैं, कर्म दसौं दिस फेरे ॥टेक॥
त्रिगुणधार पार परमेश्वर, चौथे गुण थै नेरे ॥
दीनानाथं हाथ दै अबकै, करुणा करि करि टेरे ॥१॥
भयो भैंकप स जौनी सुनि कै, दइया न्याव नवेरे ॥
दाँवणगीर दर्द नहिं समझै, लगे ही रहतु है केरे ॥२॥
परिहरि पाप परमारथ कर लै, जो कछु हाथि है तेरे ॥
विन जगदीश जक्त मधि जोख्यो, जैहै जम कै डेरे ॥३॥
तीनों लोक सकल जल थल मधि, बचे जीव मैं मेरे ॥
राघोदास राम अघमोचन, रट ज्यौं तोहि निवेरे ॥४॥

राग-सारंग

ऐसो राम गरीवनिवाज है !
भक्तवत्सल सरणाई समरथ, सारण जन कै काज है ॥टेक॥
आदि अन्त मधि अखंड अहोनिशि, अनन्त लोक जा कौ राज है।
सुर नर असुर नाग पशु पछी, देत सबनि जल नाज है ॥१॥
रिधि सिधि भक्ति मुक्ति कौ दाता, पूर्णब्रह्म जहाज है।
निर्बल को बल निर्धन को धन, वहत विरद की लाज है ॥२॥
कर्त्ता पुरुष अनातम आतम, सन्तन मध्य समाज है।
राघौ तन मन करि नौछावर, मिलन महातम आज है ॥३॥

राग मलार

मौज महाप्रभु तेरी हो !
खानांजाद इन्द्र से अधिपति, अष्ट सिधि नव निधि चेरी हो ॥टेक॥
तीन लोक ब्रह्माड पचीसौं, एक शब्द सर्व साजे।
सुर नर नाग पुरुष मुनिपतनि, रचि रचि रूप निवाजे ॥१॥
सूरति अनन्त सुभाव सुरति अति, शब्द भेद बहु वांणी।
मूर्ख चतुर निर्धन धनवन्त किये, करता पुरुष विनांणी ॥२॥

चतुरासि लषि सिरजि चराचर, रिजक सबनि कौ मेलै।
व्यापक ब्रह्म सकल जल थल मधि, जीव सीव संग खेलै ॥३॥
बिधि संकर सनकादिक नारद भक्त पारवद लगी।
त्रिगुण रहित भयकाल कला प्रति तारणतिरण त्रिभंगी ॥४॥
चार वेद कहै जुग जस गावत, पावत पार न कोई।
राघौदास सुमरि निसवासर, यौं बिन मुक्ति न होई ॥५॥

राग-मारू

चरण बसे हिरदै गुरु कै।
परा परी दायक उघायक, कहे हुते पुर कै ॥टेक॥
षटदल चतुर अष्ट दस द्वादश, षोडस ऊर्ध मुहुर कै।
ध्यान ध्यान उनमान गावएं, हरि हरि कहत निघरकै ॥१॥
अमृत भई अचानक अन्तर अघ मेटे उर के।
सोई अब साधि राधि मन माँही, दास भये वा घर के ॥२॥
राम रमापति सुमर रैण दिन, भ्रम भंजन भव तर के।
राघौ हाथ गहे जन हित करि भाग जगे भये नर के ॥३॥

राग-सौरठि

हरि मन भ्रमवि पुरी भाव।
काम निकस नहीं तुम बिन, राखि बूडत नाव ॥टेक॥
महा बिपति बिदेस लोई रहत चिन्ता ताव रे।
मो अनाथ अतीतनो पर, करो राम पसाव ॥१॥
तरस मेटौ माइ भेटी बिरहनी बहु दाव।
पीव पावन जीव कीजे परौं तेरे पाव ॥२॥
पपीहरा ज्यौं प्राण टेरे अखंड एक लाव।
दास राघौ करै बिनती सुनि विश्व भर राव ॥३॥

हरिश्चन्द्र सत

मनहर बिस्वामित्र चले जब हरिश्चन्द्र देषन को
घटक अयोध्यापुरी भाव ब्रह्म देखनौ।
राह मधि राहो कीन्हो काम यहु कसौटी दई
धमित अगाध दुख नाहं लिखि लेखनौ ॥

वैर कियो विश्वामित्र विष्णुजी की आज्ञा पाय,
त्राहि त्राहि त्राहि नाथ तीनों लोक पेखनो ।
राघौ कहै राम काम एसो विधि कीजिये तु,
कासी कै नखासै विकै विप्र विण वेकनो ॥३०॥
राजा मोल लीयो काल दमन ही नामा डौम,
कहर कसौटी नाम लेत लाज मरिये ।
जाचक के द्वार जल भरवायो हरिचन्द,
धरम-धुरीण वैसे आलोकन करिये ॥
छितभुज छेत्रन को राख्यो रखवारो वनि,
माया मौण माथे धरि सन्ध्या प्रात भरिये ।
सेर चून पावे समसान भूमि भोजन व्है,
राघौ अवगति गति सेति ऐसे डरिये ॥३५॥
तक्षक भये हैं ततकाल विश्वामित्र मुनि,
राघौ चढि रूख रोहितास वन डस्यो है ।
जाकै जी मे कसर कटाक्ष नांही कामना की,
को जानें कर्त्तार गति काहे कौं धो कस्यौ है ॥
बालक विलाप करै तो वा त्रयलोक नाथ,
धर्म की जहाज बूडी ऐसौ ज्ञानी ग्रस्यौ है ।
बोल्यौ रोहितास जिन रोवो मुनि मेरी सोह,
पाहुणें सों देख पेख काको घर वस्यौ है ॥४३॥
कंचन किरच सुमेरु को, सापर सरवा नीर ॥
सूरज वाती ससि दसी, कल्पवृक्ष चव चीर ॥
इकलव गिरा गणेश को, वाणी र वारतीक ॥
पित्रण कु जल अजियां, देवन फूल पतीक ॥
यों रघवाने रचक कथ्यो, गुण हरिचद हेट अनेक ॥
सब कवि पडित सुरता सुघर, सुन कीजो छमा छनेक ॥६४॥

ध्रुव चरित्र

इन्दव ध्रुव की जननी ध्रुव को समभावत रोवे कहा रटि राम धणी को ।
केतोक राज कहा नृप आसन का पर तूं कर मेलव नीको ॥

मह सास मिटे ततकाल करो तप मृतक ह्वै पुत धाम धनी कौ ।
राघो कहै कुल की ममता तजि ग्यान के खड़ग सू मार मनी कौ ॥६७॥

मनहर सग गयो राम रंग रथबा रिखक मधि
कयर कलेश तजि ग्यानी गच्छ्यो बन कों ।
मंत्रिन सुनायो बाय नृपति सौं ततखण
प्र ुव मन चल्यो कहा हुकम है हम कों ॥
राजा पूछी राणी उन बात जानी हँसी खेम
बो बो सेर पय दे संतोषो बाके मन कों ।
एते पर पूर्ने कही द्वार ही में धून भई
धन धन धन जगदीश दियो जन को ॥११॥

छप्पय पूर्ने कही नृप सौं कर छाड़िये मैं मरिहों बपयास को धायो ।
सेरहू माझ में फेर करी तुम बेन मगे धब राज सवायो ॥
ता बेर क्यों न बिचार कियो तुम गोद में से गबका दे उठायो ।
राघौ गच्छ्यो प्र ुव राम के काम को धाप रह्यौ रुप बाप भुठायो ॥१७॥

मनहर लियो पय पंचमास फल मूल पाणी पौन
छठे मास संयम संतोष मन मारचौ है ।
जप नेम प्राणायाम आसन आहार अरु
प्रत्याहार धारणा समाधि ध्यान धारचौ है ॥
माया छलबे को छलबल बहुतेरे किये,
मन रही रंग बिन रोमहू न टारचौ है ।
राघो तब मेटे रोम मन वच कर्म करि
प्रू को दीजै राज धाज या बे यौं बिचारचौ है ॥२१॥
रामजी नें राज दियो रामजी मनायो साज
धन तप प्रू की माज भवन पधारे हैं ।
धष्ट सिद्धि नव निधि धाप पुरी सारी विधि
समर्थ धणी न एक सेर-सौं बधारे है ॥
गरीबनिवाज नै गरीब जाम बाद दई
राम रय बेठ हलके सें भये भारे हैं ।

तात मात भ्रात कुल कुटुम्ब छतीसौं पौंन,
राघौं गनि घूनै सब ही कै काज सारे हैं ॥३५॥

ग्रन्थ करुणा-वीनती

इन्दव ब्रह्मा शिव शेष गणेश नमो सनकादिक नारद पाँय परौं।
प्रणाम कहौं परमेश्वर सौं जिन छाडहू नाथ अनाथ डरौं॥
हरि मैं गुलमा सुनि हौं वलमां तुम को दे पीठ यो गात गरौं।
कर्त्तार पुकार लगौं अब कै जन राघौ कहै शरणं उवरौं॥१॥
हा! हा! धनी दुख देत गनी तुम ही तुम एक अधार हौ मेरे।
जानत हो परवेदन की परमेश्वरजी प्रभु न्याव है तेरे॥
जोर करे जिन को समझावहु साहबजी चढि साक कै केरै।
राघौ अनाथ अतीत की हे हरि भीर परे भगवन्त निवेरै॥४॥
कौन उपाय करौं हरिजी वरजी न रहैं मनसा विगरानी।
भ्रमित अभक्ष अहार अहोनिशि नीच क्रिया करि पीवत पांणी॥
धर्म कै पथ मे पाव धरे नहि पाप की गैल फिरै फहराणी।
राघौ कहे विपरीत विकारणि चाल कुचाल मिथ्या मुख वाणी॥१४॥

मनहर बन्दगी तुम्हारी बीच अन्तर करत नीच,
जानत हो जानराय कहूं कहा टेरि कै।
मोह करे द्रोह गति काम की कटाक्ष अति,
क्रोध वडो जोध जुग लोभ मारै हेरि कै॥
मैं तो रावरो गुलाम वीनती सुनो हो राम,
पारत है मेरी मांम दशो-दिशि घेर कै।
रघवा दुरयौ है भाजि शरणैं तुम्हारै राजि,
दीनबन्धु दीन जान राखल्यौ निवेरि कै॥१८॥

इन्दव भीर परे भगवन्त भली विधि देहु यहै तुम की न विसारै।
जाव शरीर सबै धन सर्वस जो जिये थे जगदीश न टारै॥
खार अनी वहनी विषहू विष पत्र म परे कहूँ धर्म न हारै।
रघवा सिदकै कियो साहबजी वरिया शत सहस्रहू प्राण तुम्हारे॥२१॥

मनहर कामरी कै भौरे हाथ मेल्यौ दीनानाथ जी मैं,
मैं ते माया मोह द्रोह रींघ घट घेरो है।

यह साल मिटे ततकाल करो तप मृतक व्है सुत धाम धनी कौ।
राघो कहे कुल की ममता तजि ग्यांन के खड्ग सू मार मनी कौ ॥१६॥

मनहर लग गयो राम रंग रचना रसिक मधि
कवर कलेश तजि ग्यांनी गमझ्यो बन कौं।
मंत्रिन बुलायो आय भूपति सौं ततक्षण,
प्रभु वन बस्यौ कहा हुकम है हम कौं ॥
राजा पूछी रांणी उन बाल बानीं हँसो खेल,
दो दो सेर अन्न दे संतोषो वाके मन कौं।
एते पर पूर्ने कहो हार ही में मूल भई
धन धन धन जगदीश दियो जन को ॥११॥

इन्दव पूर्ने कही नृप सौं नर छाडिये मैं मरिहौं अपघात को पायो।
तेरहू मास में फेर करो तुम वेन सभे अब राज सवायो ॥
ता बेर क्यौं न विचार कियो तुम गोद में से लड़का दे उठायो।
राघौ गयछ्यो प्रभु राम के काम को आप रह्यो तप आप भुलायो ॥१७॥

मनहर लियो पन पंचमास फल मूल पाली पौन
छठ मास संयम संतोष मन मार्यो है।
जप नेम प्राणायाम आसन आहार अरु
प्रत्याहार धारणा समाधि ध्यान धार्यो है ॥
माया छलबे को छलबल बहौतेरे किये,
पच रही रैण दिन रोमहू न टार्यो है।
राघौ तब भेटे राम मन बच कर्म करि
धू को दीजे राज प्राज ना ये यौं विचार्यो है ॥२१॥
रामजी ने राज दियो रामजी बनायो साज
धन तप धू की आज भवन पधारे हैं।
अष्ट सिद्धि नव निधि आय जुरी सारी विधि
समर्थ धणी न एक सेर-सौं पधारे है ॥
गरीबनिवाज न गरीब जान बार दई
राम रथ बैठ हरिके सें भये भारे हैं।

गुरु वचन

धर्म विना धरती सकुचानी । धर्म विना घट वरसै पाणी ॥
धर्म विना कलि मैं घन थोरा । राजा लोभी दुष्ट डडोरा ॥२१॥
परजा चोर चुगल विसतारी । साचे हू को मुशकिल भारी ॥
मत्री दुष्ट करावण मूढा । परजा कै ल्यै दोऊ कूढा ॥२२॥
काचे जती कलेश न त्यागै । करै मोह माया सू लागै ॥
कलि मे कल सौं वरतत रहिये । सनै सनै सत-सगति गहिये ॥२४॥
साकत को अन्न पान न लीजै । हत्याकार ठै पांव न दीजै ॥
नुगरा नर को अन्न रु पाणी । लियाँ होय क्षय बुधि अरु वाणी ॥
अब कछु बात कलू मैं नीकी । सो तू सुन सिख जीवन जीकी ॥
नांव लेत नरक न जाई । और जुगन सू या अधिकाई ॥२७॥
एसो नांव कलू मे राख्यौ । शुक मुनि परिक्षत सौं यू भाख्यौ ॥
जिहिं वन सिंह सहज मै गाजै । जबुक सुनत जीव ले भाजै ॥३०॥

दोहा राघौ आघो सुण सरचौ, सुन सतगुरु कै वैन ॥
हृदै कमल मधि कर्णिका, तहां हेरि हरि सैन ॥३२॥

ग्रन्थ उत्पत्ति-स्थिति चिंतामणि—दोहा चौपाई में—समाप्ति स्थल

दोहा श्रीहरि श्रीगुरु सो कही, सो श्री गुरु कहि मुझ ।
रघवा रचक गम भई, श्रीगुरु पै पायो गुझ ॥३६४॥
ब्रह्मा व्यास वशिष्ठ दिग, वालमीक शुक सूत ।
ब्रह्मसुता शभुसुवन, गुणग गवरि को पूत ॥३६५॥
रवि रविसुत को मान गुण, उपगारी शिव शेष ।
इन मिलि मोहे आज्ञा दई, रटि राघव राम नरेश ॥३६६॥
कहि उत्पति स्थिति कथा, सकल वतायो भेव ।
जन राघौ कै हिरदै वसै, श्री हरीदास गुरुदेव ॥३६७॥
याहि वाचि सीखै सुनै, गुण ते उपजे ज्ञान ।
राघौ यौं रामहि रटं, धरै निरन्तर ध्यान ॥३६८॥
कवि कोविद पडित मिसर, सुनि जनि डाटहु मोहि ।
मम वांणी वालक वचन, जनि कोई मानो द्रोहि ॥३६९॥

॥ इति ॥

पूजन ही आवत हू अब पछतावत हूँ,
　　न तो भानी हार हरि भारग मैं पैरो है ॥
भगतवछल भगवन्त महि सेहु अन्त,
　　ऊबरौं न और ठौर एक बल तेरो है।
रघवा बिचारो रंक मन में अरयस अक,
　　राम भरि लेहु अक काल आयो नेरो है ॥११॥

ग्रन्थ चितावणी

इन्दव　समये सुमरयो नहि राम धणी सु धणी जम की तन त्रास सहैगो।
　　आठ र बीस में सोस ज्यूं सुम को व बसहू बिधि भाग बहैगो ॥
　　जोजन द्वादस आठ परे की सौ ता मधि मूरख मूरि मरैगो।
　　राघो कहै निम्रुरैमि गुसांइ को आवत ही जम कंठ गहैगो ॥१॥
　　मै मन देख्यो महा निरपक्ष एक रती हू भिया नहि तार्के।
　　प्रेत ज्यों प्राण को नाच नचावत कामना सूं कबहू नहि थाकै ॥
　　इन्द्रिन हार अनीति करै अति पापि परनारि परद्रव्य को ताकै।
　　राघो कहै अपस्वारथ सौं चवि प्रीति नहीं परमारथ मार्के ॥७॥

कवित्त साधु संगति कौ

मनहर　　दास को पूरण आस संगति करै निवास,
　　　　पाप ताप होत नाश गहै गुणसार की।
पाय है परम सुख राम नाम जाकै मुख
　　बीसरै न एक चुख प्राणन आधार की ॥
सोई जन जाकै तन मांव सौं रहै लगन
　　पर बस राखे मन सोई स्वामी कार की।
राघो गुरु-मन्त्र अति राखे रैन-दिन रति
　　सुमरि सुमरि सिष साध भये पार की ॥३॥

गुरुसिख सम्वाद ग्रन्थ — शिष्य वचन

चौपई　नमो नमो मम गुरु सत स्वांमी। देव निरंजन अन्तर्यामी ॥
　　आनन्दरूप महा सुखसागर। सदा मगन हिरदै हरि नागर ॥१॥
　　तुम भजनीक परम ततवेता। स्वामी कहि समझावो एता ॥
　　वर्तमान अति विकट गुसाईं। कैसे करि रहिये या माई ॥२॥

प्रहलाददासजी के शिष्य हरिदासजी के शिष्य थे। राघवदास की रचनाओ मे उनकी वाणी, १, (अग १७), साखी भाग, २, (सा० १६३७), अरिल ३७०, ३, (पद १७६ राग २९), ४, लघु ग्रन्थ २० (छन्द ५०४)५, ग्रन्थ उत्पत्ति, स्थिति, चितावणी, ज्ञान, निषेध, (छन्द सख्या ४००-७२) की सूचना स्वामी मगलदासजी ने दी है। भक्तमाल काफी प्रसिद्ध ग्रन्थ है ही। करौली मे उनकी परम्परा का स्थान है।

मगलाचरण के ७ वे पद्य मे राघवदासजी का भी वर्णन है। प्रस्तुत ग्रन्थ के पृष्ठ २४० मे राघवदास के गुरु, बाबा गुरु, काका गुरु, गुरु भ्राता आदि का विवरण भी उन्होने दिया है। उन पक्तियो की ओर पाठको का ध्यान आकर्षित किया जाता है।

टीकाकार चतुरदास—

प्रस्तुत भक्तमाल के टीकाकार चतुरदास हैं। संवत् १८५७ के भादवा वदि १४ मगलवार को उन्होने यह टीका बनाई। प्रशस्ति मे उन्होने नारायणदास की भक्तमाल को देखकर राघवदास ने भक्तमाल बनाई और प्रियादास की टीका को देखकर चतुरदास ने इन्दव छन्द में इस टीका की रचना की, लिखा है। अपनी परम्परा बतलाते हुये वे अपने को सतोषदास के शिष्य बतलाते हैं। प्रारम्भ मे भी दादू के बाद सुन्दर, नारायणदास, रामदास, दयाराम, सुखराम और सतोष मामोल्लेख किया है।

चतुरदासजी की अन्य किसी रचना की जानकारी नही मिली। स्वामी मगलदासजी ने दादूद्वारा, रामगढ के महन्त शिवानन्दजी से विशेष जानकारी प्राप्त करने के लिये लिखा था, उन्हे पत्र भी दिया गया और "वरदा" के सम्पादक श्री मनोहर शर्मा को भी चतुरदासजी सम्बन्धी विशेष जानकारी उनसे प्राप्त कर भेजने के लिये लिखा गया, पर सफलता नहीं मिली।

इस तरह यथा-साध्य लम्बे समय तक प्रयत्न करने पर भी जो सामग्री प्राप्त नही हो सकी, उसके लिये विवशता है। खोज चालू है, अतः फिर कभी प्राप्त होगी, तो उसे लेख द्वारा प्रकाशित की जायगी। चतुरदासजी की टीका मे मूल ग्रन्थ की अपेक्षा विशेष और नई जानकारी भी है, इसलिये इस टीका की महत्ता स्वय सिद्ध है।

ग्रन्थ के अन्त में मूल भक्तमाल और टीका मे आये हुये नामो की सूची देने का विचार था, जिससे इस ग्रन्थ मे कितने सन्त एवं भक्तजनो का उल्लेख हुआ

राघवदास की भक्तमाल—

यद्यपि नाभादास की भक्तमाल के अनुकरण में ही राघवदास ने अपनी भक्तमाल बनाई पर एक तो यह उससे काफी बड़ी है और दूसरा इसमें ऐसे अनेक सन्त एवं भक्तजनों का उल्लेख है, जिनका नाभादास की भक्तमाल में उल्लेख नहीं है। कवि राघवदास दादूपन्थी सम्प्रदाय के थे, इसलिए उक्त सम्प्रदाय के सन्तजनों का विवरण तो इसमें विशेष रूप से दिया ही गया है और इसमें मुसलमान चारण आदि ऐसे अनेक भक्तों का विवरण भी है, जिनके सम्बन्ध में और किसी भक्तमालकार ने कुछ भी नहीं लिखा है। इसलिये इस भक्तमाल की अपनी विशेषता है और यह ग्रन्थ बहुत ही महत्वपूर्ण है।

डॉ मोतीलाल मेनारिया ने अपने 'राजस्थान का पिंगल-साहित्य नामक शोध-प्रबन्ध में इस ग्रन्थ का महत्व बतलाते हुये लिखा है कि 'यह ग्रन्थ नाभादास की भक्तमाल की शैली पर लिखा गया है पर उसकी अपेक्षा इसका दृष्टिकोण कुछ अधिक व्यापक और उदार है। नाभादास ने अपने भक्तमाल में केवल वैष्णव भक्तों को स्थान दिया है। परन्तु, इन्होंने दादूपन्थी सन्तों के अतिरिक्त रामानुज विष्णुस्वामी कबीर नानक आदि अन्य मतावलम्बियों का भी विवरण दिया है और यह इसकी एक प्रधान विशेषता है। यह ग्रन्थ बहुत प्रौढ़ और उपयोगी रचना है।"

वृन्दावन से प्रकाशित श्री भक्तमाल ग्रन्थ के पृष्ठ ११८ में लिखा है कि इस भक्तमाल में चतुस्सम्प्रदायी वैष्णव भक्तों के साथ सन्यासी योगी जैनी बौद्ध, यवन फकीर नानकपन्थी कबीर दादू, निरञ्जनी आदि सम्प्रदायों के भक्तों का भी उल्लेख है।

स्वामी मंगलदासजी ने राघवदास की भक्तमाल की विशेषता के सम्बन्ध में लिखा है कि "इसमें सगुण भक्तों के वर्णन के साथ-साथ निर्गुण भक्तों का भी निरूपण किया गया है।" उक्त ग्रन्थ में इसका रचनाकाल सम्वत् १७७७ बतलाया गया है पर वास्तव में 'सप्तोतरा' शब्द से १७ की संख्या लेना ही अधिक संगत है।

राघवदास व उनकी रचनाएँ—

राघवदासजी का विशेष परिचय प्रयत्न करने पर भी प्राप्त नहीं हो सका। इस ग्रन्थ की प्रशस्ति के अनुसार वे दादूजी के शिष्य बड़े सुन्दरदासजी उनके शिष्य

सबसे प्राचीन थी, उसकी नकल करवा ली गई। यह प्रति चतुरदासजी की टीका की रचना (सवत् १८५७) के केवल ३।। बरस बाद की ही (सवत् १८६१ के वैशाख वदि ३ डीडवाणा मे) लिखी हुई है। चतुरदासजी के शिष्य नन्दरामजी के शिष्य गोकलदास की लिखी हुई होने से इस प्रति का विशेष महत्व है। अत. इसका पाठमूल मे रखकर (२) सवत् १८६७ की लिखी हुई दूसरी (B) प्रति से पाठ भेद देने का विचार किया गया, पर मिलान करने पर वह प्रति भी सवत् १८६१ वाली प्रति की नकल-सी मालूम हुई, अत. कोई खास पाठभेद प्राप्त नही हो सका। इन दोनो प्रतियो की लेखन-प्रशस्ति इस ग्रन्थ के पृष्ठ २४८ मे छपी हुई है।

(३) इसी बीच बीकानेर राज्य के एक प्राचीन नगर रिणी (तारानगर) मेरा जाना हुआ, तो वहाँ के तेरहपथी सभा के ग्रन्थालय मे कुछ हस्तलिखित प्रतियाँ यो ही पडी हुई थी, उनको मै सभा के सचालको से नोट करके ले आया। उसमे प्रस्तुत भक्तमाल की एक प्रति सवत् १८८६ की लिखी हुई प्राप्त हुई। इस (C) प्रति से मिलान करके जो पाठ-भेद प्राप्त हुये, उन्हे टिप्पणी मे दे दिया गया है। ६० पत्रो की इस प्रति की लेखन-प्रशस्ति भी प्रस्तुत सस्करण के पृष्ठ २४८ की टिप्पणी मे दे दी गई है। प्रस्तुत ग्रन्थ के सम्पादन मे प्रधानतया इन तीनो प्रतियो का ही उपयोग किया गया है। मूल पाठ सवत् १८६१ की प्रति का प्राय. ज्यो का त्यो छापा गया है।

(४) प्रस्तुत ग्रन्थ छप जाने के बाद स्वामी मगलदासजी की प्रेसकॉपी से भी मिलान करना जरूरी समझा, अत उनके वहाँ से उक्त प्रेसकॉपी फिर से मगवाई गई। मिलान करने पर विदित हुआ कि उसमे काफी पद्य अधिक हैं। अतः जहाँ-जहाँ जो पद्य अधिक हैं, उन्हे नकल करवाके परिशिष्ट मे दे दिया गया है।

(५) जोधपुर जाने पर श्री गोपालनारायणजी बहुरा से विदित हुआ कि राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान मे इसकी एक प्रति और खरीदी गई है, तो उसे मगवाकर देख लिया गया। पहले की तीनो प्रतियो मे ग्रन्थ की श्लोक सख्या ४१०१ लिखी हुई थी, इस प्रति मे वह सख्या ४५०० तक लिखी हुई है अर्थात् यह प्रति भी परिवर्द्धित सस्करण की ही है। ९२ पत्रो की यह प्रति स० १९०० की लिखी हुई है।

(६) छठी प्रति भारतीय विद्या मंदिर शोध सस्थान, बीकानेर मे देखने को मिली। यह प्रति पूर्व प्राप्त तीन प्रतियो जैसी ही है। पर हाँसिये मे अनेक जगह

है उसकी जानकारी मिल जाती। पर उन नामों की अधिकांश सूचना आगे विस्तृत अनुक्रमणिका में दे ही दी गई है, इसलिये अन्त में नामानुक्रमणिका देने की उतनी आवश्यकता नहीं रह गई।

चतुरदास ने मंगलाचरण में राघवदासजी का वर्णन करते हुवे ठीक ही लिखा है कि इसमें सन्तों का यथार्थ स्वरूप बहुत थोड़े में कह दिया गया है —

सन्त सरूप जथारथ गाइउ कीन्ह कवित्त मनू यह हीरा।
साध अपार कहे गुण ग्रन्थन थोरहु आंकन में सुख सीरा।
सन्त सभा मुनि है मन साइ र हंस पिवे पय छाडि र नीरा।
राघवदास रसाल विसाल सु सन्त सबै धसि आवत क रा॥

प्रस्तुत ग्रन्थ का सम्पादन और प्राप्त हस्तलिखित प्रतियाँ—

करीब १५-२० वर्ष पहले की बात है मेरे विद्वान् मित्र श्री नरोत्तमदासजी स्वामी के पास स्वामी मंगलदासजी के यहाँ से आई हुई राघवदास के भक्तमाल की टीका सहित प्रेस कापी मुझे देखने को मिली। मुझे यह ग्रन्थ बहुत ही उपयोगी और महत्व का लगा इसलिये उसकी प्रतिलिपि मैंने उसी समय करवा ली। तदनन्तर स्वामी मंगलदासजी को प्रेरणा दी कि वे इस महत्वपूर्ण ग्रन्थ को शीघ्र ही प्रकाश में लावें। पर उन्होंने कहा कि इसके प्रकाशन का प्रयत्न किया गया, पर अभी तक कहीं से कोई भी व्यवस्था नहीं हो पाई। इसके कुछ समय बाद मुनि जिनविजयजी से मैंने इस ग्रन्थ के प्रकाशन की चर्चा की और उन्होंने राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान की ग्रन्थमाला द्वारा इसे प्रकाशित करना स्वीकार कर लिया। मैंने उन्हें अपनी करवाई हुई प्रतिलिपि को भेज दिया और प्रेस की व्यवस्था भी कर दी गई। फर्मा कम्पोज भी हो गया इसी बीच मुनिजी ने पुरोहित हरिनारायणजी के संग्रह में इसकी दो महत्वपूर्ण हस्तलिखित प्रतियाँ देखीं तो उनका आदेश हुआ कि उन प्रतियों के आधार से पाठ-भेद सहित इसका पुन सम्पादन किया जाय क्योंकि स्वामी मंगलदासजी वाली प्रेस-कॉपी में हस्तलिखित प्रतियों से प्राप्त पाठ से कुछ भिन्नता थी।

प्राचीनतम प्रति—

मुनिजी के आदेशानुसार गोपालनारायणजी बहुरा द्वारा पुरोहित हरि नारायणजी के संग्रह की उपरोक्त दोनों प्रतियों को प्राप्त करके उनमें से एक प्रति

उसमे ६२१ टीका की पद्य सख्या बाद देने पर मूल के ५६४ पद्य रहते है, जबकि अलग-अलग छन्दो को सख्या लिखी गई है। उनको मिलाने से ५६४ की सख्या बैठती है, अर्थात् ३० पद्यो का फर्क रह जाता है। प्रतिलिपि करने वालो ने, पता नही, ऐसी गडबडी क्यो कर दी है।

अभी तक राघवदास के भक्तमाल के केवल मूलपाठ की एक भी प्रति प्राप्त नही हुई और न टीकाकार चतुरदास के समय के पहले की लिखो हुई प्रति ही मिल सकी, इसलिए यह निर्णय करना कठिन है कि राघवदास ने मूल मे कितने पद्य बनाये थे और उसमे कब कितने पद्य बढाये गये ? प्रस्तुत सस्करण मे मूल और टीकाकार के पद्यो की जो सख्या छपी है, उसमे भी कुछ गडबडी रह गई है। क्योकि जिन प्रतियो की नकल की गई थी, उन्ही मे पद्यो की सख्या देने मे गडबड कर दी गई है। प्रति नम्बर A और B के अनुसार मूल पद्य सख्या ५५५ और टीका के पद्यो की सख्या ६३६ छपी है। C प्रति मे मूल पद्यो की सख्या ५४४ दी हुई है और टीका के पद्यो की सख्या ६४१। यह दोनो सख्यायें मिलाकर लेखन-प्रशस्ति मे दी हुई कुल पद्यो की सख्या मे भी अन्तर रह जाता है। केवल C प्रति को ही लें, तो ५४४ और ६४१ दोनो को मिलाकर ११८५ की सख्या तो ठीक बैठ जाती है, पर इसी प्रति की प्रशस्ति मे मूल पद्यो की सख्या ५५३ और टीका के पद्यो की सख्या ६२१ लिखी है, उससे मिलान नही बैठता। मालूम होता है कि टीका की पद्य सख्या तोनो प्रतियो मे ६२१ बतलाने पर भी उससे अधिक है, क्योकि A और B प्रति मे पद्य सख्या ६३६ और C प्रति मे ६४१ दी हुई है। अतः मूल की तरह टीका मे भी कुछ पद्य पीछे से बढाये गये हैं, यह तो निश्चित-सा है। परिवर्द्धित सस्करण मे तो काफी पद्य बढे हैं।

उपरोक्त प्रतियो के अतिरिक्त दो अन्य प्रतियो को जानकारी भी मुझे है, पर उनको मैं प्राप्त नही कर सका। उनमे से एक प्रति का विवरण ना० प्र० सभा के सन् १९३८ से ४० तक के १७ वें त्रैवार्षिक विवरण के पृष्ठ ३०२ मे छपा है। उस प्रति की पत्र सख्या १३९ और ग्रन्थ-परिमाण ६५१६ श्लोको का बतलाया गया है, जो ऊपर दी गई प्रतियों के परिमाण से करीब डेढा बढ जाता है। इसकी भी लेखन-प्रशस्ति मे गडबड है, उसमे श्लोक सख्या ५००० की बतलाई है। छन्द सख्या भी बढ गई है। यथा—

छप्पय ३५३, मनहर १८७, हसाल ४, साखी ८५, चौपाई २, इन्दव १००२ (?) और टीका की इन्दव और मनहर छन्दो की सख्या ६६६ लिखी है।

टिप्पण लिखे हुये हैं और ग्रन्थ में टीकाकार की प्रशस्ति के पद्य इसमें नहीं लिखे गये हैं। कुल पद्यों की संख्या ११८५ दी हुई है। लिखने का समय दिया नहीं गया है पर १९वीं शताब्दी की है।

पद्यों की कमी-बेशी व संख्या में गड़बड़ी—

स्वामी मगनदासजी वाली प्रेस-कापी में पद्यों की संख्या १२८६ दी गई है। इससे मालूम होता है कि करीब १०० पद्य पीछे से बढ़ाये गये हैं। इन पद्यों को स्वामी राघवदासजी या टीकाकार ने बढ़ाया है या और किसी ने—यह अभी निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता। पर यह निश्चित है कि संवत् १८६१ और संवत् १९०० के बीच में यह परिवर्तन हुआ है। प्रस्तुत ग्रन्थ के पृष्ठ २४८ में तीन प्रतियों की लेखन प्रशस्ति में ग्रन्थ की श्लोक संख्या यद्यपि ४१०१ समान रूप से लिखी हुई है पर प्रति नं० १-२ से प्रति नं० तीन में दी हुई छन्दों की संख्या भिन्न प्रकार की है। चतुरदास की टीका के इन्दव छन्दों की पद्यसंख्या तो तीनों प्रतियों में ६२१ दी हुई है, पर राघवदास के मूल पद्यों की संख्या में अन्तर है और लेखन प्रशस्ति में छन्दों के नाम के साथ जो संख्या अलग-अलग दी हुई है वह कुल पद्यों की संख्या से मेल नहीं खाती। जैसे—

A और B प्रति छप्पय १२८ मनहर १५२, हंसाल ४, साखी ३८ चौपाई २, इन्दव ७५।

C प्रति दोहा १ छप्पय १११, मनहर १४१, हंसाल ४ साखी १८ चौपाई २ इन्दव ७५।

अर्थात् C प्रति में छन्दों की संख्या में ५ छप्पय और ११ मनहर छन्दों की संख्या १ बतलाई गई है, पर कुल पद्यों की संख्या ११८५ बतलाई है जो A और B में १२०४ बतलाई गई है। अर्थात् १९ पद्यों की संख्या में कमी बतलाने पर भी वास्तव में अलग-अलग छन्दों के संख्या विवरण में छप्पय ५ और मनहर ११ कुल १६ ही कम होते हैं। आश्चर्य की बात है कि अलग-अलग छन्दों की संख्या का मिलान कुल छन्दों की संख्या से भी ठीक नहीं बैठता। जैसे प्रति नम्बर A और B में कुल पद्यों की संख्या १२ ४ बतलाई है उसमें से टीका के ६२१ पद्यों के बाद देने पर मूल ग्रन्थ के पद्यों की संख्या ५८३ रह जाती है। पर छन्दों के विवरण के अनुसार वह संख्या ६ ९ बैठती है। अर्थात् २६ पद्यों का फर्क पड़ जाता है। इसी तरह प्रति नम्बर C में कुल पद्यों की संख्या ११८५ दी गई है

में मूल और टीका के पद्यो को अलग से चिह्नित कर देने का कहा और आपने उसे अपना ही काम समझ कर कर दिया--इसके लिये मैं आपका आभारी हूँ।

ग्रन्थ का मुद्रण जोधपुर मे हो रहा था, वहाँ से प्रूफ बीकानेर आने-जाने से अधिक विलम्ब होता, इसलिये प्रूफ सशोधन का कार्य मैंने महोपाध्याय मुनि विनयसागरजी को सौंपा और उन्होने बडो आत्मीयता के साथ सारे ग्रन्थ का प्रूफ सशोधन कर दिया। उनका और मेरा वर्षों से धर्म-स्नेह का सबध रहा है, फिर भी उनका आभार प्रकट करना मेरा कर्त्तव्य है। प्रूफ सशोधन मे उन्हे श्री गोपालनारायणजी बहुरा का मार्ग-प्रदर्शन भी मिलता रहा है।

ग्रन्थ छप जाने के बाद इसकी अनुक्रमणिका बनाना प्रारभ किया, तो एक और दिक्कत सामने आई कि ग्रन्थ मे यद्यपि बहुत-सी जगह तो पद्यो के प्रारम्भ मे भक्तो के नाम दिये हुये हैं, पर ऐसे भी बहुत से पद्य हैं, जिनमे शीर्षक का अभाव है। इसलिये उन पद्यो को पढ कर शीर्षक लगाते हुये विस्तृत अनुक्रमणिका बना देने का काम सिंहस्थल के रामस्नेही सम्प्रदाय के महन्त स्वामी भगवत्दासजी महाराज को दिया गया और उन्होने बड़े परिश्रम से मेरी सूचनानुसार दो बार जाँच कर के अनुक्रमणिका तैयार कर दी, जिसे विद्वद्वर नरोत्तमदासजी स्वामी ने भी देख लेने की कृपा की है। इस सहयोग के लिये मैं महन्तजी व स्वामीजी का आभारी हूँ। श्री गोपालनारायणजी बहुरा ने भक्तमाल की जो प्रति बाद मे राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान मे खरीदी गई, उसकी सूचना दी और प्रति को बीकानेर के शाखा कार्यालय मे भिजवा दी तथा प्रूफ सशोधन मे भी सहायता की, इसलिये उनका भी आभार मानना मैं अपना कर्त्तव्य मानता हूँ।

मेरी इच्छा थी कि ग्रन्थ मे जिन जिन भक्तो एव सन्तो का उल्लेख है, उनके सम्बन्ध मे अन्य सामग्री के आधार से विशेष प्रकाश डाला जाय, पर यह कार्य बहुत समय एव श्रम-सापेक्ष है। और चूकि मूल ग्रन्थ गत वर्ष ही छप चुका था, इसलिये अधिक रोके रखना उचित नही समझा गया। सम्बन्धित सामग्री को जुटाने मे भी कई महीने लगे। फिर भी पूरी सामग्री नही मिल सकी। अत अपनी उस इच्छा का सवरण करना पडा। पाठको को यह जानकारी दे देना उचित समझता हूँ कि प्रस्तुत ग्रन्थ को हिन्दी विवेचन या अनुवाद के साथ प्रकाशित करने का प्रयत्न श्री सुखदयालजी एडवोकेट कर रहे हैं। उन्होने उसके कुछ पृष्ठो की प्रेस-कॉपी स्वामी मगलदासजी को भेजी थी और मैंने उसे स्वामीजी के पास देखी थी। पता नही, वे उस कार्य को पूर्ण कर पाये या नहीं।

यह प्रति सं० १९३३ में साध भगतराम ने रोमझी गांव में साध मीजीराम के लिये लिखा है। अभी यह प्रति भरतपुर राज्य के श्री कामवन के श्री गोकुल चन्द्रमा मंदिर के पुस्तकालय में गो० देवकीनन्दन आचार्य के पास है।

विवरण संशोधन --

खोज विवरण में टीका का रचना काल सं १८१८ लिख दिया गया है पता नहीं इसका आधार क्या है। नीचे जो टीका के रचनाकाल सबंधी पद्य उद्धृत हैं उससे तो १८५७ ही सिद्ध होता है। दूसरी महत्वपूर्ण गलती राघवदास का गोत्र 'भांडास' लिख देना है। वास्तव में 'भांगल' शब्द को 'भांडास' पढ़ लिया गया है और इसी से इतनी सोचनीय गलती हो गई है उद्धृत पाठ भी अशुद्ध और त्रुटित है। प्रति बृहद् सस्करण की है ही। सम्भव है, परिवर्द्धित सस्करण के जो पद्य मैंने परिशिष्ट में दिये हैं, उनमे आगे चलकर फिर परिवर्धन हुआ होगा।

'राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान' से प्रकाशित विद्याभूषण ग्रन्थ-संग्रह सूची के पृष्ठ १० में प्रति नं० ११९ संवत् १९८३ की गोपीचन्द शर्मा लिखित है। इसकी पृष्ठ सख्या २४ बतलाई गई है, बीच के ४ पृष्ठ नहीं हैं। वास्तव में यह किसी हस्तलिखित प्रति की आधुनिक प्रतिलिपि ही है। सम्भव है, नम्बर A और B की ही यह नकल पुरोहित हरिनारायणजी ने करवाई हो। खोज करने पर और भी कुछ प्रतियाँ मिल सकती हैं।

आभार प्रदर्शन—

सर्वप्रथम मैं स्वामी मगलदासजी का विशेष आभार मानता हूँ जिनकी प्रेरणा से ही इस ग्रन्थ के सम्पादन का काम मैंने हाथ में लिया और समय-समय पर विविध प्रकार की सूचनायें व सहायता भी वे देते रहे। तत्पश्चात् मुनि जिनविजयजी का मैं आभारी हूँ जिन्होने इस ग्रन्थ के प्रकाशन की स्वीकृति दी और पुरोहितजी के सग्रह की प्रतियाँ भिजवाईं।

ग्रन्थ की प्रेस-कॉपी तैयार हो जाने पर मेरे सामने यह दुविधा उपस्थित हुई कि हस्तलिखित प्रतियों में मूल और टीका के पद्यों का सर्वत्र स्पष्टीकरण नहीं था अतः इसकी छंटाई कैसे की जाय? संयोग से श्री सुरजनदासजी स्वामी बीकानेर डूगर कॉलेज में प्राध्यापक के रूप में पधार गये। उनको मैंने प्रेस कॉपी

में मूल और टीका के पद्यो को अलग से चिह्नित कर देने का कहा और आपने उसे अपना ही काम समझ कर कर दिया--इसके लिये मै आपका आभारी हूँ।

ग्रन्थ का मुद्रण जोधपुर मे हो रहा था, वहाँ से प्रूफ बीकानेर आने-जाने मे अधिक विलम्ब होता, इसलिये प्रूफ सशोधन का कार्य मैंने महोपाध्याय मुनि विनयसागरजी को सौंपा और उन्होने बडो आत्मीयता के साथ सारे ग्रन्थ का प्रूफ सशोधन कर दिया। उनका और मेरा वर्षों से धर्म-स्नेह का सबध रहा है, फिर भी उनका आभार प्रकट करना मेरा कर्त्तव्य है। प्रूफ सशोधन मे उन्हे श्री गोपालनारायणजी बहुरा का मार्ग-प्रदर्शन भी मिलता रहा है।

ग्रन्थ छप जाने के बाद इसकी अनुक्रमणिका बनाना प्रारभ किया, तो एक और दिक्कत सामने आई कि ग्रन्थ मे यद्यपि बहुत-सी जगह तो पद्यो के प्रारम्भ मे भक्तो के नाम दिये हुये हैं, पर ऐसे भी बहुत से पद्य हैं, जिनमे शीर्षक का अभाव है। इसलिये उन पद्यो को पढ कर शीर्षक लगाते हुये विस्तृत अनुक्रमणिका बना देने का काम सिंहस्थल के रामस्नेही सम्प्रदाय के महन्त स्वामी भगवत्दासजी महाराज को दिया गया और उन्होने बड़े परिश्रम से मेरी सूचनानुसार दो बार जाँच कर के अनुक्रमणिका तैयार कर दी, जिसे विद्वद्वर नरोत्तमदासजो स्वामी ने भी देख लेने की कृपा की है। इस सहयोग के लिये मैं महन्तजी व स्वामीजी का आभारी हूँ। श्री गोपालनारायणजी बहुरा ने भक्तमाल की जो प्रति बाद मे राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान मे खरीदी गई, उसकी सूचना दी और प्रति को बीकानेर के शाखा कार्यालय मे भिजवा दी तथा प्रूफ सशोधन मे भी सहायता की, इसलिये उनका भी आभार मानना मैं अपना कर्त्तव्य मानता हूँ।

मेरी इच्छा थी कि ग्रन्थ मे जिन जिन भक्तो एव सन्तो का उल्लेख है, उनके सम्बन्ध मे अन्य सामग्री के आधार से विशेष प्रकाश डाला जाय, पर यह कार्य बहुत समय एव श्रम-सापेक्ष है। और चूंकि मूल ग्रन्थ गत वर्ष ही छप चुका था, इसलिये अधिक रोके रखना उचित नही समझा गया। सम्बन्धित सामग्री को जुटाने मे भी कई महीने लगे। फिर भी पूरी सामग्री नही मिल सकी। अत अपनी उस इच्छा का सवरण करना पडा। पाठको को यह जानकारी दे देना उचित समझता हूँ कि प्रस्तुत ग्रन्थ को हिन्दी विवेचन या अनुवाद के साथ प्रकाशित करने का प्रयत्न श्री सुखदयालजी एडवोकेट कर रहे हैं। उन्होने उसके कुछ पृष्ठो की प्रेस-कॉपी स्वामी मगलदासजी को भेजी थी और मैंने उसे स्वामीजी के पास देखी थी। पता नही, वे उस कार्य को पूर्ण कर पाये या नही।

मेरी यह भी इच्छा थी कि जिस प्रकार नाभादास की भक्तमाल का व्याख्यान करने वाले कई भक्तमाली सन्त हैं इसी तरह राघवदास की इस भक्तमाल के व्याख्याता सन्त भी हों, तो उनके पास से इस ग्रन्थ में वर्णित भक्तों की विशेष जानकारी प्राप्त की जाय। स्वामी मंगलदासजी को पूछने पर उन्होंने यह सूचना दी कि "राघवदासजी की भक्तमाल के जानकार दादूपन्थी सम्प्रदाय में २१ हैं, उनमें तपस्वी भूरारामजी प्रमुख हैं। भक्तमाल पर महात्मा रामदासजी दुधम धमिये ने अपने शिष्य कृपाराम को भक्तमाल की कथाओं का विवरण लिखा दिया था वह शायद उसी के पास वाराणसी में है।" पर मैं इन दोनों सन्तों से लाभ नहीं उठा पाया। अतः जैसा भी बन पड़ा है, इस ग्रन्थ को पाठकों के हाथों में उपस्थित करते हुये सन्तोष मान रहा हूँ।

—अगरचन्द नाहटा

अनुक्रमणिका

[1] नाभादास कृत भक्तमाल में मूल पद्य सख्या ७-८ देखें।

[1] यहाँ ६ मनहर छदों का टिप्पणी मे फरक है अन्यथा १०४ होते है ।

† यह छंद पहिले पद्यांक ४० पृष्ठ १५ पर आ चुका है

† यह छंद पहिले पद्यांक ४० पृष्ठ १५ पर आ चुका है

राघवदास कृत भक्तमाल

चतुरदास कृत टीका सहित

टीका-कर्त्ता को मंगलाचरण

साखी (दोहा) गुर गनेस जन सारदा, हरि कवि सवहिन पूजि।
भक्तमाल टीका करू[1], मेटहु दिल की दूजि ॥

इदव छंद
पैल निरजन देव प्रणामहि, दूसर दादुदयाल मनाऊ।
सुन्दर कौं सिर ऊपरि धारि रु, नेह निराइणदास लगाऊ।
राम दया करिहै सुख सपति, मैं सु सतोष जु सिष्य कहाऊ।
राघवदास दयागुर आइस, इदव छद सटीक वनाऊ ॥१

टीका सरूप-वर्णन

कावि वनावत आनददाइक, जो सुनिहै सु खुसी मन माही।
माधुरता अति अक्षर जोडन, आइ सुनै सु घने हरखाही।
जोड सराहत जे अपने[2] कवि, ताहि सबै कहि सो कछू नाही।
ह्वै उर भाव र ग्यान भगत्तन, राघव मो[3] तन टीक कराही ॥२

भक्ति-सरूप वर्णन

भावत भगति तिया अव सतनि, तास सरूप सुनौ नर लोई।
नाव सुनीर नवन्य नहावन, वेस विवेक बन्यौ वप वोई।
भूषन भाव चुरा चित चेतन, सौंध सतोष सु अग समोई।
अजन आनद पान[4] सचौपन, सेज सदा सतसगति सोई ॥३

भक्ति पच रस-वर्णन

पाच भगत्य कहे रस सतन, सो विमतार भली विधि गाये।
१बाछलि २दास्य ३सखापन ४सात रु और ५सिंगार सरूप दिखाये।
टिप्पण[5] को उर स्वाद लहौ जव, बैठि बिचार करौ मन भाये।
रोम उठै न बहै द्रिग तै जल, अैसिनु प्रेम समुद्र वुडाये ॥४

---

१ करौं। २. अपनी। ३ सो। ४ आनन्दयान। ५ टप्पण।

राघवदासजी द्वारा

ग्रन्थ समर्पण

सगम महोदधि है भरयो जन पूजत अरपै।
यह गंभीर गहरो भरयो यह पुष्प जल अरपै।
रती एक किरची कंचन की, ले मेरहि परसै।
पेचस निकर न ठाहरै, कंचनमय दरसै।
जैसे सुरतर कौं धना, रचि पचि अरपै भक्त नर।
त्यूं रघवा इस पूजिये है उत हरिजन त्रिय-ताप-हर॥

मूल . मंगलाचरण-वर्णन

दोहा छंद
नमो परम गुर सुद्ध कर, तिमर अग्यांन मिटाइ।
आदि अजन्मां पुरुष कौं, किंहि विधि नर दरसाइ ॥१
नरपद सुरपद इद्रपद, पुनि हि मोक्षपद मूर।
सदगुर सो द्रिव द्रिष्टि द्यौ, अन्तर भासै नूर ॥२
(अब) कहत परमगुरु प्रपण[1] ह्वै, दयौ परमधन दाखि।
भक्त भक्ति भगवत गुर, राघव अै उर राखि ॥३
प्रथम प्रणम्य गुर-पादुका, सब सतन सिर नाइ।
इष्ट अटल परमातमां, परमेसुर कुल गाइ ॥४
विष्णु बिरचि सिव सेस जपि, जती सती सिद्धिसैण।
बागी गणपति कविन कौं, स्वै चतुर विग-वैण ॥५
अब अरज भक्त भगवंत सौं, गरज करौ गम होइ।
हरि गुर हरि के आदि भृति, जन राघव सुमरै सोइ ॥६
व्यापिक ब्रह्मण्ड पच्चीस मधि, सुरग मृति पाताल।
भक्तन हित प्रभु प्रगट ह्वै, राघव राम दयाल ॥७
सत त्रेता द्वापर कलू, ये अनादि जुग च्यारि।
राघव जे रत रांम सू, संत महंत उर धारि ॥८
भक्त भक्ति भगवंत गुर, अै मम मस्तक मौर।
राघव इनसौं बिमुख ह्वै, तिनकू कतहु न ठौर ॥९
भक्त भक्ति भगवत गुर, ये उर मधि उपवासि।
राघव रीझै रामजी, जाहि विघन-क्रम नासि ॥१०
भक्त बडे भगवत सम, हरि हरिजन नहीं भेद।
अरस परस जन जगत गुर, राघव बरणत बेद ॥११
हरि गुर आज्ञा पाइकै, उद्यम कीनों ऐह।
जन राघौ रामंहि रुचै, सतन कौ जस प्रेह ॥१२
भक्तमाल भगवत कौं, प्यारी लगे प्रतक्ष।
राघव सो रटि राति दिन, गुरन बताई लक्ष ॥१३

---

१. प्रसन्न।

फूल भये रस पंचम रंगन थाकद्र[1] यह दाम बनाई।
राघव मालनि लै करि साम्हनि सुन्दर देखि हरि मन भाई।
डारि लई गरि प्रीति भरी करि काढ़त माहि न[2] भ्रैन सुहाई।
भार भयो बहु भक्तन की छबि जानत हैं इन पाइन धाई ॥५

सतसंग-प्रभाव

पौषि भगत्य बिपन सबाकर मोत विचार सु बारि लगाई।
साध समागिम पाइ वहै जल प्रौढ भयौ अति डार बधाई।
भावस संत रिदौ बिसतीरन जीव जिये दुख ताप नसाई।
खेरनि को डर जाहि हुतौ बहु ज्यौरि अस्यौ मतगैद मुलाई ॥६

राघवदासजी को वर्णन

संत सरूप अपारस गाइउ कीन्ह कवित्त मनूं यह हीरा।
साध अपार कहे गुन ग्रंथन थोरहु आंकन मे सुख सीरा।
संत सभा सुनिहै मन लाइ र हंस पिवै पय छाड़ि र नीरा।
राघवदास रसाल बिलास सु संत सबै भलि भावत कीरा ॥७

श्री भक्तमाल-सरूप-वर्णन

दीरघदास पढै निसबासुर, पाप हरै जग जाप करावै।
जानि हरी सनमान करै जन प्रीत धरै जग रीति मिटावै।
कौन अराधि सकै उन भक्तन ठीक न ठाक मनों भय भावै।
माल गरै तिलकादिक भास सु, माल भगत्त बिना रुलि जावै ॥८
संत हरी गुर सौं जन सौ मुख टेक गही यह भक्त सही है।
रूप भगत्य सुनौ चित लाइ र, नांव नये द्रिग धार बही है।
भक्तन प्रीति बिचार तवै हरि झूठि उठावन कृष्ण कही है।
लै गुर की गुरताइ दिखावत श्री पयहारि निहारि मही है ॥९

---

१ भावन्वे पुष्प। २ माहि न।

मूल मंगलाचरण-वर्णन

दोहा छंद

नमो परम गुर सुद्ध कर, तिमर अग्यांन मिटाइ।
आदि अजन्मा पुरुष कौं, किंहि विधि नर दरसाइ ॥१

नरपद सुरपद इंद्रपद, पुनि हि मोक्षपद मूर।
सदगुर सो द्रिव द्रिष्टि द्यौ, अन्तर भासै नूर ॥२

(अब) कहत परमगुरु प्रप्रण[1] ह्वै, दयौ परमधन दाखि।
भक्त भक्ति भगवत गुर, राघव अै उर राखि ॥३

प्रथम प्रणम्य गुर-पादुका, सब संतन सिर नाइ।
इष्ट अटल परमातमां, परमेसुर कृत गाइ ॥४

बिष्णु विरचि सिव सेस जपि, जती सती सिद्धिसैण।
बागी गणपति कविन कौं, चवै चतुर विग-बैण ॥५

अब अरज भक्त भगवत सौं, गरज करौ गम होइ।
हरि गुर हरि के आदि भृति, जन राघव सुमरै सोइ ॥६

व्यापिक ब्रह्मण्ड पच्चीस मधि, सुरग मृति पाताल।
भक्तन हित प्रभु प्रगट ह्वै, राघव राम दयाल ॥७

सत त्रेता द्वापर कलू, ये अनादि जुग च्यारि।
राघव जे रत रांम सू, सत महत उर धारि ॥८

भक्त भक्ति भगवत गुर, अै मम मस्तक मौर।
राघव इनमौं विमुख ह्वै, तिनकू कतहु न ठौर ॥९

भक्त भक्ति भगवत गुर, ये उर मधि उपवासि।
राघव रीझै रांमजी, जाहि विघन-क्रम नासि ॥१०

भक्त बड़े भगवंत सम, हरि हरिजन नहीं भेद।
अरस परस जन जगत गुर, राघव बरणत बेद ॥११

हरि गुर आज्ञा पाइकै, उद्यम कीनों ऐह।
जन राघौ रांमहि रुचै, संतन कौ जस प्रेह ॥१२

भक्तमाल भगवंत कौं, प्यारी लगै प्रतक्ष।
राघव सो रटि राति दिन, गुरन बताई लक्ष ॥१३

---

१. प्रसन्न।

समब समाइ न पेट में, को सिर धरे सुमेर।
ऐसो बकता कौन है अनुक्रम बरण सेर ॥१४
गुर दादू गुर परमगुर, सिष पोता परपोत।
आगे पीछे बरनते मति कोई दूषी सत ॥१५
हू कछू समझत हू नहीं, महल मिसली की बात।
जगतपिता सम जपत हूँ, हरि हरिजन गुरु तात ॥१६

छपै छंद
गुर उर मधि उपगार करत, कछू तथा न राखी।
भव[1]सज्जन भव कृपा[2] सकल भिन भिन करि भाखी।
रती एक रस (सो) आपि, काच तै कंचन कीनौं।
ग्यान सत मांन बिबेक, धर्म धीरज व्रत दीन्हौं।
श्री गुर सुर तारण-तिरण, हरण बिघन त्रिय ताप दुख।
(अब) राघव के रक्षपाल तुम, बिकट बैर मधि बाप सुख ॥१

नीसाणी छपै
दिनकर को जो दीवो जिती से जोति दिखावै।
ससि कौं सीरक सींक भरे, सनमुख सिर नावै।
बाणी गणपति कौं ज, गुणी हूं[3] अक्षर चढावै।
सज्जन भक्ति जग जोग कृत सिब सेस मनावै।
श्रोत्र वृत्ति सनकादिक, मुनि नारद ज्यूं गाव।
राघव रीति अद्वैत की जा पै बनि आवै ॥२
गगन महोदधि है भर्यो जन पूजत अरपै।
बहु गम्भीर गहरो भर्यो मह कुछ जस अरपै।
रती यक निरखी कंचन को ले मेरहि परसै।
देखत निझर न ठाहरै, कंचनमय दरसै।
जैसे सुरतर कौं पत्रा रवि पवि अरपै नेक नर।
रय रघवा इत पूजिक है उत हरिजन त्रिय ताप हर ॥३
गुर गोबिंद प्रणाम करि तबहि गम तीकौं होइ है।
ज्यारयौं जुग के सत मगन माला[4] ज्यौं पोइ है।
मन रूपी निज संत पोइ प्रगट करि बांणी।
गगन मगन गलतांन हेरि हिरदा मधि आणी।

१ भव। २ कृपा। ३ हूं। ४ कही। ५. माया।

मगल रूपी मांड महि, हरि हरिजन तारन तिरन।
भृत्य करत बिरदावली, जन राघव भरिण भव दुख हरन ॥४

नमो नमो कवि ईस, भये जेते सत त्रेता।
द्वापर कलिजुग आदि, तिरन तारन ततवेता।
नमो स्रुति समृति, नमो सास्त्र पुरांनन।
नमो सकल वकताव, नमो जे सुनत सुकानन।
मै गम्म बिन ग्रंथ आरभियो, कविजन करिहैं हासि।
अव सिलहारे कौं को गिनै, जन राघव ताकै[1] रासि ॥५

ॐ चतुर निगम षट सास्त्रह,गीता अरु बिसिष्ट बोधय।
बालमीक कृत व्यास कृत, जपै जो करहि निरोधय।
प्रथम आदि नवनाथ, भरणहु चतुरासी सिधय।
सहस अठ्यासी रिष, सुमरि पुनरपि कवि बिधिय।
सिध साधिक सुरनर असुर, अब मुनि सकल महत।
अव अब अरज अवधारिज्यौ, जन राघवदास कहत ॥६

मनहर छद

अगीकार आप अविनासी जाकौं करत है,
सोई अति जान परवीन परसिधि है।
सोई अति चेतन चतुर चहुं चक्रँ मधि,
बांणीं को बिनांणी बिस्तार जैसै दधि है।
जोई अति कोमल कुलीन है कृतज्ञ बिज्ञ,
रिद्धि सिद्धि भगति मुगती जाकै मध्य है।
राघौ कहै रामजी के भाव सौं भगत भरिण,
बात तेरी जैहै वरणी वाणी तेरी बृधि है ॥७

मया दया करिहैं देवादिदेव दीनबंधु,
तब कछु ह्वैहै बुधि बाणी की बिमलता।
जैसी शसि कातिग मे श्रवता अमि असंख,
निखरि कै होत नीकी नीर की नृमलता।
रजनी कौ तिमर तनक मधि दूरि होत,
दीसै वित वस्त भाव दीपक ह्वै जलता।

---

1 जिनकै।

समद समाइ न पेट में, को सिर धर सुमेर।
ऐसो बकता कौन है, अनुक्रम बरण लेर ॥१४
गुर दादू गुर परमगुर, सिष पोता परनत।
आगैं पीछै बरनतै, मति कोई धूपौ संत ॥१५
हूं कछु समझत हूं नहीं महम मिसली की बात।
जगतपिता सम जपत हूं, हरि हरिजन गुर तात ॥१६

छपै छंद
गुर जर मथि उपगार करत कछु तमा न राखी।
अब[1]लखन अब कुना[2] सकल भिन भिन करि भाखी।
रती एक रज (भी) आमि काच तै कंचन कीनौं।
जत सत साम बिवेक, धर्म धीरज दत दीन्हौं।
श्री गुर धुर तारण तिरण, हरण बिघन त्रिय ताप दुख।
(अब) राघव के रखपाल तुम, बिकट बेर मधि आप सुख ॥१

चौसाणी छपै
दिनकर को जो दीवो जिती ले जोति दिखावै।
ससि कौं सीरक सींच भरे सनमुख सिर नावै।
बाणी गणपति कौं ज्ञ, गुणी ह्व अक्षर पढावै।
भजन भक्ति जग जोग कृत सिव सेस मनावै।
श्रोत्र श्रुति सनकादिक मुनि नारद ज्यूं गावै।
राघव रीति बड़ेन की का पै बनि आवै ॥२
मगन महोदधि है भर्‍यो, जन पूजत अर्पे।
बह गंभीर गहरी भर्‍यो यह तुच्छ जल अर्पे।
रती यक मिरची कंचन की, ले मेरहि परसै।
देखत मिभर न ठाहरै कंचनमय दरसै।
जसे सुरतर कौं मना रचि पचि अर्पै नेम नर।
त्यं राघवा दत पूजिक है जत हरिजन त्रिय ताप हर ॥३
गुर गोविंद प्रणाम करि तबहि गम तौकौं होइ है।
च्यार्‍यौं जुग के संत मगन माला[5] ज्यौं पोइ है।
भग रूपो निज सत पोइ प्रगट करि वाणी।
गगन मगन गलतान हेरि हिरदा मधि आणी।

---
१ अब। २ हुना। ३ हैं। ४ बहै। ५. माया।

राघौ कहै सबद सपरस रूप गंध,
दूरि कीजे दीनबंधु ये तौ दोष मेरौ है ॥१२

नमो बिधि बिबधि प्रकार के रचनहार,
आदि ततवेता तुम तात त्रिहूँ लोक के।
जप गुर तप गुर जोग जज्ञ व्रत गुर,
आगम निगम पति जाण सब थोक के।
नर पुजि सुर पुजि नागहूँ असुर पुजि,
परम पवित्र परिहारि सर्व सोक के।
ऊपजे कवल मधि नाभि करतार की सूं,
राघो कहै मांनियो महोला मम थोक के ॥१३

अरक अहार सिणगार भसमी को भर,
अैसो हर निडर निसंक भोला चक्कवै।
पूरक पवन प्राण-वायु को निरोध करै,
जपति अजपा हरि रहे थिर थक्कवै।
गौरी अरधंग सग कीयो है अनंग भंग,
कालहू सूं जीत्यो जंग पूरा जोगी पक्कवै।
राघौ कहे जगै न[1] जगतपति सेती ध्यांन,
अडिग अडोल अति लागी पूरी जक्कवै ॥१४

आदि अनभूत तू अलेख हैं अद्वीत गुन,
नमो निराकार करतार भनै सेस है।
हारे न हजार मुख रांम कहै राति दिन,
धारें धर सीस जगदीशजी के पेस है।
दुगण हजार हरि नांव निति नवतम,
रटत अखड व्रत भगत नरेस है।
राघो कहै फनिपति अैसौ अन्य न अति,
केवल भजन बिन आंनन प्रवेश है ॥१५

छपै छंद चतुरबीस अवतार जो, जन राघो कै उर बसौ ॥टे०
कछ मछ वाराह, नमो नरस्यंघ बांवन वलि।
रघुवर फरसाधरन, सुजस पिवत्र[2] कृष्ण कलि।

---

१ छुट नहीं। २ पित्र।

राघौ कहै जाकी वाणी सुणि गुणि होत सुधि,
नीति के बिचारे बिन धर्म नाहीं पसता ॥८

कुंडलीया छंद
नमो नमो करि मान दे, अंतरजामी आप।
सोई कवि कोविद सिरै, जपै अजपाजाप।
जपै अजपाजाप, पाप त्रिय-ताप न व्याप।
आसा जीत अतीत, भजन सूं कबहुं न धापै।
त्रिपति हांण विश्राम सु अघ नख-सख धुनि होई।
जन राघौ रटि सोई रांम जन, यौं भक्तमाल उर पोई ॥९
अब राघव नमो निरंजन, मेटहु अंग अंधेर कौं।
नमो बिष्णु-बिधि सिवहिं, सेस सनकादिक नारद।
नमो पारषद भक्त, नमो गणपति गुण सारद।
स्वांभू मनु कासिब, जम दधीचहिं जनक।
ऋषभ अपरबा धर्म, करन सो क्रम निकंदन।
नमो सुराधिपति सूर ससि, नमो सुबरण कुबेर कौं।
अब राघव नमो निरंजन मेटहु अग अंधेर कौं ॥१०

मनहर छंद
नमो नमो नमो निराकार करतार अपि
बिष्णु बिरंचि सिव सेस सीस नाई हूं।
द्वादस भक्त नमो दस षट पारषद
नमो नव नाथ जु चौरासी सिध भाइ हूं।
देव सर्व रिष सर्व निरखी नखत्र अब
जती षट सती सप्त बीस हूं नमाई हूं।
तत्व कोंन बीस बयलोक मध्य के प्रसिधि
रघवा रटत अस्तस कब पाई हूं ॥११
नमो बिस्वभरन बिसंभर बिधाता दाता,
बिष्णु जु बैकुंठनाथ मेरी बात तेरी है।
लक्ष्मी चरणसेव बाहण मधुदेव
आयुध चक्र कर तीनों लोक केरी है।
द्वादस भक्त संग दस षट पारषद
भगतबछल ध्रुव भीर परे मेरी है।

राघौ कहै सबद सपरस रूप गंध,
दूरि कीजे दीनबंधु ये तौ दोष मेरौ है ॥१२

नमो बिधि बिबधि प्रकार के रचनहार,
आदि ततवेता तुम तात त्रिहूं लोक के।
जप गुर तप गुर जोग जज्ञ व्रत गुर,
आगम निगम पति जाण सब थोक के।
नर पुजि सुर पुजि नागहूं असुर पुजि,
परम पवित्र परिहारि सर्व सोक के।
ऊपजे कवल मधि नाभि करतार की सूं,
राघो कहै मांनियो महोला मम थोक के ॥१३

अरक अहार सिणगार भसमी को भर,
अैसो हर निडर निसंक भोला चक्कवै।
पूरक पवन प्राण-वायु को निरोध करै,
जपति अजपा हरि रहे थिर थक्कवै।
गौरी अरधंग सग कीयो है अनग भग,
कालहू सूं जीत्यो जंग पूरा जोगी पक्कवै।
राघौ कहे जगै न[1] जगतपति सेती ध्यांन,
अडिग अडोल अति लागी पूरी जक्कवै ॥१४

आदि अनभूत तू अलेख हैं अद्वीत गुन,
नमो निराकार करतार भनै सेस है।
हारे न हजार मुख रांम कहै राति दिन,
धारें धर सीस जगदीशजी के पेस है।
दुगण हजार हरि नांव निति नवतम,
रटत अखंड व्रत भगत नरेस है।
राघो कहै फनिपति अैसौ अन्य न अति,
केवल भजन बिन आंनन प्रवेश है ॥१५

छपै छद चतुरबीस अवतार जो, जन राघो कै उर बसो ॥टे०
कछ मछ वाराह, नमो नरस्यंघ बांवन वलि।
रघुवर फरसाधरन, सुजस पिवत्र[2] कृष्ण कलि।

---

१ छुट नहीं। २. पित्र।

ब्यास कलंकी बुद्ध मनुंतर, पृथु हरि हंसा।
हयग्रीव जग्य रिषभ धमुन्तर, ध्रुव वरदंसा।
दस कपिल सनकादि मुनि, नर नारांइन सुमरि सो।
चतुरबीस अवतार जो, जन राघो कै उर बसौ ॥१६

टीका

इंदव छंद
कूरम ह्वै गिर मन्दर धारि मथ्यौ सब देव दयन्त समुद्रा।
मींन भये सतिवर्त सु अंजलि मैं परसै दिपराइहु क्षुद्रा।
सूकर काढि[1] मही जल मांहि र मारि हिरनाक्षस थापि र दुद्रा।
सिंघ सरूप प्रलाद उधारन दैंत हिरण्यांकुस फारन उग्रा ॥१०
वावन रूप छले बलिराजन इन्द्रहि राज दियो इकतारा।
मात पिता दुखदाइक जो प्रसरांम खित्री न रख्यौ जग सारा।
रांम भये दसरत्थ तणै वर रांवन कुंभकरन्न विडारा।
कृष्ण जरासुत कंस हने मुरि सास्वहि मारि भगत्त उधारा ॥११
बुद्ध छुड़ाइ जग्यादिक जीवन जैन दया ध्रम कौ बिसतारा।
रूप कलंकि जवै धरिहैं हरि भूप करैं अपराध अपारा।
ब्यास पुरांनन बेद सुधारन भारत आदि विर्वात उचारा।
दोहि धरा अन्न वांटि दई रिषि गांव पुरादिक प्रिथु सुधारा ॥१२
ग्राह गह्यौ गज कू बल भीतरि राम कह्यौ हरि बेग उधारयौ।
हंस सरूप धरयौ अज कारनि प्रश्न करी सुत हंस विचारयौ।
रूप मनुंतर धारि भवद्दह इन्द्र सुरेसहु कारिज सारयौ।
जग्य भये मनु रांखन मंजुल आदि र अंति जगें बिस्तारयौ ॥१३
ब्रह्महि बांम विलांइ सबै जग देव रिषभ्भ सरीर धरायो।
बेद हरे मधुकैटभ दांनव सौं हयग्रीव हन्यौ श्रुति ल्यायो।
बालक ध्रारम भक्ति करी अति ध्रू वर दे हरि राज करायो।
रोग र भोग धरयौ दुख सूं जम होइ धनुंतर बैद स आयो ॥१४
आतमग्यांन उचित्त कियो जिन सो बद्रिनाथ या कड़[2] के स्वामी।
ग्यान कह्यौ सुर कौ चतुराजहि आनंद मैं दत अंतरजामी।

---
१ काढि। २ या कांड।

मात मुक्कति करी उपदेसि र, साखि सुनाइ कपिल्ल सो नामी।
च्यारि सरूप धरे सनकादिक, ऐक दिसा इकही लछि प्रामी ।।१५
जो अवतार सबै सुखदाइक, जीव उधारन कौं क्रम कीला।
तास सरूप लगै मन आपन, जासहि पाइ परै मति ढीला।
ध्यान करे सव प्रापति है निति, रकन ज्यौ वित ल्यावन हीला।
च्यारि रु वीस करौ वकसीस, सुदेवन ईस कही यह लीला ।।१६

मूल छपै

अवतारन के अघ्रि द्वै, इते चहन नित प्रति बसै ॥ टे०
ध्वजा सख षटकौंरण, जबु फल चक्र पदम जव।
वज्र अम्बर अकुश, घेन पद धनुष सुबासव।
सुधा-कुम्भ सुस्त्यक, मंछ बिंदु तृय कौंरणा।
अरध-चन्द्र अठ-कौंरण, पुरष उरध-रेखा होरणां।
राघव साध सधाररणा, चरनन मैं अतिसै लसै।
अवतारन के अघ्रि द्वै, इते[1] चिहनि निति प्रति बसै ॥१७

टीका

इदव छद
साध सहाइन कारन पाइन, राम चिहन्न सदाहि बसाये।
मन मतग स हाथि न आवत, अकुस यौ उर ध्यान कराये।
सीत सतावत है जडना नर, अम्बर ध्यान धरे मिटि जाये।
फोरन पाप पहारन बज्रहि, भक्ति समुद्र कवल्ल बुडाये ।।१८
जौ जग मैं जन देत बहौ गुन, जो चित सौ निति प्रीति लगावै।
होत सभीत कुचाल कलू करि, ध्यान धुजा निरभै पद पावै।
गो-पद ह्वै भव-सागर नागर, नैन लगे हरि त्रास मिटावै।
माइक जाल कुचाल अकालन, सख सहाइ करै मन लावै ।।१९
काम निसाचर मारन चक्रहि, स्वस्तियक मगलचार निमत्ता।
च्यारि फलै करि है निति प्रापति, जबु फलै धरि है सुभ चित्ता।
कुम्भ सुधा हरिभक्ति भरचौ रस, पान करै पुट नैननि नित्ता[2]।
भक्ति वढावन ताप घटावन, चन्द्र धरचौ अछ जानि सु बित्ता ।।२०

---

१. हवै। २ निमित्ता।

व्यास कलंकी बुद्ध मनंतर, पृथु हरि हंसा।
हयग्रीव बल रिषभ धनुन्तर, ध्रुव वरदंसा।
दत्त कपिल सनकादि मुनि, नर नाराइन सुमरि सो।
चतुरबीस अवतार जो, जन राघो के उर बसौ॥१६

टीका

८दव कूरम ह्वै गिर मन्दर धारि मथ्यो सब देव दयन्त समुद्रा।
छद मीन भये सतिवर्त सु अंजलि लै परस दियराइहु क्षुद्रा।
सूकर काढि[१] मही जल मांहि र मारि हिनाक्षस धापि र कुद्रा।
सिंघ सरूप प्रलाद उधारन दैत हिरण्यंकुस फारन उग्रा॥१०
बावन रूप छले बलिराजन इन्द्रहि राज दियो इकतारा।
मात पिता दुखदाइक जो प्रसरांम खित्री न रख्यौ जग सारा।
रांम भये दसरत्थ सुतौ वर रांवन कुंभकरन्न बिडारा।
कृष्ण जरासुत कंस हने मुरि सास्वहि मारि भगत्त उधारा॥११
बुद्ध छुड़ाइ जग्यादिक जीवन जैन दया ध्रम की बिसतारा।
रूप कलंकि जवै धरिहैं हरि भूप करे अपराध अपारा।
व्यास पुरांनन बेद सुधारन भारत आदि बिथांत उधारा।
दोहि धरा अन्न बांटि दई रिषि गांव पुरादिक प्रिथु सुधारा॥१२
ग्राह गह्यौ गज कू जल भींतरि रांम कह्यौ हरि बेग उधारयौ।
हंस सरूप धरयौ अज कारनि प्रश्न करी सुत हेत बिचारयौ।
रूप मनुंतर धारि चवदहु इंद्र सुरेसहु कारिज सारयौ।
जग्य भये मनु रांम मंजुल आदि र अंसि जगै बिस्तारयौ॥१३
ब्रह्महि ग्यांन दिखाइ सबै जग देव रियम्म सरीर जरायो।
बेद हरे मधुकैटक दानव सो हयग्रीव हन्यौ श्रुति ल्यायो।
बालक आरत भक्ति करी अति ध्रू वर दे हरि राज करायो।
रोग र भोग भरयौ दुख सूं जग होइ धनुंतर बैद स आयो॥१४
आतमग्यांन उदित्त कियो जिन सो बद्रिनाथ या रजा[२] के स्वांमी।
ग्यान कह्यौ गुर को अनुरागहि आनंद मैं दत अंतरजांमी।

१ काढि। २ या पाठांतर।

मात मुक्ति करी उपदेसि र, साखि सुनाइ कपिल्ल सो नामी।
च्यारि सरूप धरे सनकादिक, ऐक दिसा इकही लछि प्रामी ।।१५
जो अवतार सबै सुखदाइक, जीव उधारन कौ क्रम कीला।
तास सरूप लगै मन आपन, जासहि पाइ परै मति ढीला।
ध्यान करे सव प्रापति है निति, रकन ज्यौं वित ल्यावन हीला।
च्यारि रु बीस करौ बकसीस, सुदेवन ईस कही यह लीला ।।१६

मूल छपै

अवतारन के अंघ्रि द्वै, इते चहन नित प्रति बसै ।। टे०
ध्वजा सख षटकौंण, जबु फल चक्र पदम जव।
वज्र अम्बर अकुश, घेन पद धनुष सुबासव।
सुधा-कुम्भ सुस्त्यक, मंछ बिंदु तृय कौंणा।
अरध-चन्द्र अठ-कौंण, पुरष उरध-रेखा ह्वोणां।
राघव साध सधारणा, चरनन मैं अतिसै लसै।
अवतारन के अंघ्रि द्वै, इते[1] चिहंनि निति प्रति बसै ।।१७

टीका

इदव छद साध सहाइन कारन पाइन, राम चिहन्न सदाहि बसाये।
मन मतग स हाथि न आवत, अकुस यौं उर ध्यान कराये।
सीत सतावत है जडना नर, अम्बर ध्यान धरे मिटि जाये।
फोरन पाप पहारन वज्रहि, भक्ति समुद्र कवल्ल बुडाये ।।१८
जौ जग मैं जन देत वही गुन, जो चित सौं निति प्रीति लगावै।
होत सभीत कुचाल कलू करि, ध्यान धुजा निरभै पद पावै।
गो-पद ह्वै भव-सागर नागर, नैन लगे हरि त्रास मिटावै।
माइक जाल कुचाल अकालन, सख सहाइ करै मन लावै ।।१९
काम निसाचर मारन चक्रहि, स्वस्त्यिक मगलचार निमत्ता।
च्यारि फलै करि है निति प्रापति, जवु फलै घरि है सुभ चित्ता।
कुम्भ सुधा हरिभक्ति भरयौ रस, पान करै पुट नैननि निन्ता[2]।
भक्ति वढावन ताप घटावन, चन्द्र धरयौ अछ जानि सु वित्ता ।।२०

---

१. हवै। २ निमित्ता।

ब्यास कलंकी बुद्ध मनंतर, पृथु हरि हंसा।
हयग्रीव जग्य रिषभ धनुन्तर, ध्रुव बरदंसा।
दत्त कपिल सनकादि मुनि, नर नाराइन सुमरि सो।
चतुरबीस अवतार जो, जन राघो के उर बसौ ॥१६

टीका

इंदव कूरम ह्वै गिर मन्दर धारि मथ्यौ सब देव दयन्त समुद्रा।
छंद मीन भये सतिव्रत सु ग्रजलि म परसै दिपराइहु क्षुद्रा।
सूकर कादि[1] मही जल मांहि रु मारि हिरनाक्षस थापि र दुद्रा।
सिंघ सरूप प्रलाद उधारन दैंत हिरणांकुस फारन उद्रा॥१०
बावन रूप छले बलिराजन इन्द्रहि राज दियो इकसारा।
मात पिता दुखदाइक जो प्रसरांम खिमी न रख्यौ जग सारा।
रांम भये दसरत्थ तणै बर रांवन कुंभकरन्न बिडारा।
कृष्ण जरासुत कंस हने मुरि, साल्वहि मारि मगत्त उधारा॥११
बुद्ध छुड़ाइ जग्यादिक जीवन जैन दया भ्रम की बिसतारा।
रूप कलंकि जबै धरिहै हरि भूप करैं अपराध अपारा।
ब्यास पुरांनन बेद सुधारन भारत आदि बिदांत उधारा।
दोहि धरा अन्न आंटि दई रिषि गांव पुराग्नि प्रिथु सुधारा॥१२
ग्राह गह्यौ गज कू जल भीतरि रांम कह्यौ हरि बेग उधारयौ।
हंस सरूप धरयौ अज कारनि प्रश्न करी सुत हेत बिचारयौ।
रूप मनंतर धारि चवद्दह इंद्र सुरेसहु कारिज सारयौ।
जज्ञ भये मनु राखन मंजुल आदि र भक्ति जगैं बिस्तारयौ॥१३
ब्रह्महि ग्यांन दिखाइ सबै जग देव रिषभ्भ सरीर धरायो।
बेद हरे मधुकैटक दानव सों हयग्रीव हन्यौ श्रुति ल्यायो।
बालक मारन भक्ति करी अति ध्रू बर दे हरि राज करायो।
रोग र भोग भरयौ दुख सूं जग होइ धनुंतर बैद स आयो॥१४
आतमग्यांन उचित्त कियो जिन सो बद्रिनाथ या खंड[2] के स्वामी।
ग्यान कह्यौ गुर को जदुराजहि आनंद मे दत अंतरजामी।

१ कादि। २ या खंड।

राघौ धनि ध्रू से देखो अटल अकास तपे,
नारद निराट नग नाव देत चुनि कै ॥२०

आदि अति मध्य वडे द्वाद भक्त रत तहां,
सत्य स्वांभू-मनु अखंड अजपा जपै।
जाके सुत उभये उद्यौत ससि सूर समि,
नाती ध्रूव अटल अकास अजहूं तपै।
दिव्य तन, दिव्य मन, दिव्य दृष्टि, दिव्य पन,
अन्य भगत भ[ग]वतजी ही कौं थपै।
राघो पायो अजर अमर पद छाड़ी हद,
अरस परस अविनासी सग सो दिपै ॥२१

सनका सनदन सनातन सत कुमार,
करत तुम्हार त्रियलोक मधि ज्ञांन कौं।
वालक विराजमान सोभै सनकादिक अैसै,
प्रात मुख सेस कथा सुनत नित्यांन कौं।
मन वच क्रम मधि बासुर बसेख करि,
धारत विचार सार स्यंभूजी के ध्यांन कौं।
राघो सुनि साझ काल विष्णुजी के बैन बाल,
रहै छक छहूं रति श्रुति बृति पांन कौं ॥२२

नमो रिष क्रदम देहूति जननी कूं ढोक,
तारिक तृलोक जिन जायो है कपिल मुनि।
कांम जि क्रोध जित लोभ जि मोह जित,
तपोधन जोग बित माता उपदेसी उनि।
सील कौ कलपवृक्ष हरत बिषै की तप,
ब्रह्म की मूरति आप अतरि अखंड धुनि।
राघो उनमत प्रमतत मिलि येक भये,
तावत उत्म कृत कीन्हे यौं मुनिंद्र पुनि ॥२३

भगतन हित भागवत बित कृत कीन्हौं,
व्यासजी बसेख खीर नीर निरवार्यौ है।

सांप विषे बपु मांहि रहे बसि साध डसैं न उपाइ करे हैं।
मच्छ कौंण भिकौंण पुनें पट जीव जिवावन जत्र करे हैं।
मीन र बिन्दु ससीक्रम यौ पद रांम धरे जन प्रांन हरे हैं।
सागर पार उतारन कौं धन ऊरध-रेख सु-सेत धरे हैं ॥२१

इन्द्र-धनुष धरयौ पद मैं हरि गंधन आदिक मांन निवारयौ।
मांनुष रूप असेष सुनौ पद सुन्दर स्यांम जु हेत बिचारयौ।
जो मन शुद्ध करै सुम क्रमन या जन ज्यौं रचि हो सु उधारयौ।
जो बुधिवंत सदा सुख सम्पति मैं गुन गाइ यहै पन पारयौ ॥२२

मूल-छपै

कमला कपिल बिरंच, सेस सिव भव सुखकारी।
भरिए भीषम प्रहलाद, सुमरि सनकादिक ब्यारी।
ब्यास जनक नारद मुनी धरम परम निरमे कीयो।
अजामेल कौं मारतें, जमदूतन कौं दंड दीयो।
द्वादस भक्तन की कथा, श्री सुकमुनि प्रीखत सू कही।
जन राघो सुनि श्रवि बढी, नृप की बुधि निर्मल भई ॥१८

मनहर छंद

मीन बरा कमठ नृस्यंघ बलि बांवन जू
छल करि आय देवकाज कौं सवारे हैं।
रांम रघुबीर कृष्ण बुध कलकी धीर ब्यास,
पृथु हरि हंस धीर नीर निवारे हैं।
मनुंम जग्य रिषभ मनुंम हयग्रीव
श्रीपति दत्त बद गुर-धामतें उधारे हैं।
ध्रुव बरदांन सनकादि कपिल ग्यांन
जन राघो भगवांन भक्तकाज रखवारे हैं ॥१९

केते नर नारद मैं नांव सूं नृमल कीये
दास-सुत सील भये दीन सुर मुनि कै।
नरपति उलटि पलटि देखौ नारि भयौ
तहां रिष आप भयो भूरि भागि[1] उनि कै।
असुर की नारि सुर साहि बदि तें छुड़ाइ,
तहां प्रहलादजी प्रगट भये मुनि कै।

---
१ भागि।

राघौ धनि ध्रू से देखो अटल अकास तपे,
नारद निराट नग नांव देत चुनि कै ॥२०

आदि अति मध्य बड़े द्वाद भक्त रत तहां,
सत्य स्वांभू-मनु अखंड अजपा जपै।
जाके सुत उभये उद्योत ससि सूर समि,
नानी धूव अटल अकास अजहूँ तपै।
दिव्य तन, दिव्य मन, दिव्य दृष्टि, दिव्य पन,
अन्य भगत भ[ग]वतजी ही कौं थपै।
राघो पायो अजर अमर पद छाडी हद,
अरस परस अबिनासी सग सो दिपै ॥२१

सनका सनदन सनातन संत कुमार,
करत तुम्हार त्रियलोक मधि ज्ञांन कौं।
वालक विराजमान सोभै सनकादिक अैसै,
प्रात मुख सेस कथा सुनत नित्यांन कौं।
मन बच क्रम मधि बासुर बसेख करि,
धारत विचार सार स्यंभूजी के ध्यांन कौं।
राघो मुनि सा‍झ काल बिष्णुजी के बैन बाल,
रहै छक छहू रुति श्रुति बृति पांन कौं ॥२२

नमो रिष क्रदम देहूति जननी कूं ढोक,
तारिक तृलोक जिन जायो है कपिल मुनि।
कांम जि क्रोध जित लोभ जि मोह जित,
तपोधन जोग बित माता उपदेसी उनि।
सील कौ कलपवृक्ष हरत विषै की तप,
ब्रह्म की मूरति आप अतरि अखड धुनि।
राघो उनमत प्रमतत मिलि येक भये,
तावत उत्म कृत कीन्हे यौं मुनिंद्र पुनि ॥२३

भगतन हित भागवत वित कृत कीन्हौं,
व्यासजी बसेख खीर नीर निरवारयौ है।

व्यास प्रति सुक मुनि आदि अति पढि गुनी
प्रथम सुनाइ नृप परीक्षत उधार्यौ है।
सूत कौं सर्वज्ञ थार भयो वर ताही बार,
श्रोता सौनकादि सो सर्वज्ञ पद पार्यौ है।
राघो कहै सार है संघार करै पापन कौं,
आपन कौं उत्तम सुने ते फल प्यार्यौ है ॥२४

गगन मगन महा गंगेव गंगासौं भयो,
देखि सुत सातम प्रवीन परवार्यौ है।
धीवर की कन्या मांगि विरक्त प्रणायो जिन,
प्रथम प्रमार्यौ पिता के काज आयौ है।
व्याह तज्यौ बल तज्यौ, राज तज्यौ, रोस तज्यौ
धनि धनि जननी गंगेव जिनि जायौ है।
राघो कहै सील कौ सुमेर है गंगेव गुर,
काछ-बाछ नि-कलंक मोक्ष पद पायौ है ॥२५

धनि धरमराइ कह्यौ आप मत सूरज सौं,
मारेंगे कपूत मम पूत संधि तोरिकैं।
मन बच क्रम कयु धर्म करि धीरज सूं,
राम राम राम गुन गाइ सुति जोरिकै।
काम क्रोध लोभ मोह मारिकै[1] निसंक होइ
साहिब सौं सांनकूल राखि चित्त चौरिकै।
राघो कहै रवि-सुत मेटियो कर्म-कुल,
रामजी मिलायो बरवाता बंधि छोरिकैं ॥२६

तमकै बिमान तिहूं लोक के बाकानबीस
चित्रगुपतर नमो कायथी करतार के।
बीनती करत हूं बिलग जिनि मांनौ मेरौ
टेक मो अधमकम आंक अहंकार के।
लिखियो मरज असतुति अति बार बार,
बाइक बमाई कही प्रभुजी सूं प्यार के।

---
१ उधार्यौ है। २ मोरि कै।

राघो कहै अतिकाल कीजियो मदति हाल,
बाचियो अकूर अति उत्म लिलार के ॥२७

नमो लक्ष लक्षमी पलोटे प्रभुजी के पग,
राति दिन येक टग भक्तन की आदि है।
रहै डर सहत कहत नमो नमो देव,
अलख अभेव तब देत ताकों दादि है।
जत बिन, सत बिन, दया बिन, दत्त बिन,
जीवन जनम जगदीस बिन बादि है।
राघो कहै रामजी के निकटि रहत निति,
आदि माया ऊँकार सहज समाधि है ॥२८

सिव जू की टीका

इदव छंद
द्वादस भक्त कथा सु पुरानन, है सुखदैन बिबिद्धिन गाये।
सकर बात घने नहि जानत, सो सुनि कै उर भाव समाये।
सीत बियोगि फिरै बन राम, सती सिव कों इम बैन सुनाये।
ईसुर येह करों इन पारिख, पालत अग वसेहि बनाये ॥२२
सीय सरूप बना इन फेरउ, राम निहारि नही मनि आई।
आइ कही सिव सू जिम की तिम, आच लगी खिजिकै समझाई।
रूप धरयौ मम स्वामिन कौ सठि, त्याग करयौ तन सोच न माई।
भाव भरे सिव ग्रथ धरे जन, बात सु प्यारनि रीझि क गाई ॥२३
जात चले मग देखि उभै धर, सीस नवावत भक्ति पियारी।
पूछत गोरि प्रनाम कियो किस, दीसत कोउ न येह उचारी।
बीति हजार गये ब्रखहु दस, भक्त भयो इक होत तयारी[1]।
भाव भयौ परभाव सुन्यौ जन, पारबती लगि यो रग भारी ॥२४

अजामेल की टीका

मात पिता सुत नाम धर्यौं, अजामेल स साच भयो तजि नारी।
पान करै मद दूरि भई सुधि, गारि दयो तन वाहि निहारी।
हासिन मै पठये जन दुष्टन, आइ रहे सुभ पौरि सवारी।
संत रिझाइ लये करि सेवन, नाम नराइन बालक पारी ॥२५

---

१ वयारी=रखि पण में मढी में अस्त्री राखी। पीछै ब्राह्मण भयो। वन में गयो। फूला में वेस्यां मेली।

भाइ गयो बस काल महावस मोह जजाल परयौ धम माये।
नाम नराइन पुत्र लयो उरि मारतिवस स बैन सुमाये।
देव सुन्यौ सुर वौरि परे जमदूतन कूं हरि धर्म्म बताये।
हारि गये तब ताड़ि दये भ्रम में भट मापन हू समझाये ॥२६

मूल छप्पै

राघो रांम मिलांवही अंतिकालि परमारथी ॥
नन्द सुनन्द सुप्रबल बल, कुमुद कुमुदाइक भारी।
चंड प्रचंड बे विजे, विरामें भले सु द्वारी।
बिष्वकसेन सुसेन, सील सुसील सुनीता।
भद्र सुभद्र गुरणश, गाइये प्रम[1] पुनीता।
येते पोड़स पारषद, भक्त भजन के सारथी।
राघव रांम मिलांवही, अंतकालि परमारथी ॥२६

टीका

इंदव सोरह पारषदे मुखि जांनहु सेवक भाव सु ये रिषि जोरी।
छन्द श्रीपति कूं करि है निति प्रीतम ध्यांन धरै बन पारत[2] कोरी।
आप दिवाइ बनाइ कही हरि आइस पांन धमी जिम घोरी।
दोष सुभाव गह्यौ उर अन्तर, रीति भली सुघरी बुध मोरी ॥२७

मूल-छपै

विष्णु बल्लभ की चरण रज निस दिन प्रारथना करू ॥
लक्ष्मी बिहंग सुनन्द आदि षोडष बचि हरि पग।
सुग्रीव हनुमांन जांबवत बिभीषन ग्यौरी जग।
सुदांमा बिद्र अक्रूर[3], ध्रूव अबरीष सु ऊघो।
चित्रकेत धरहास पहू सब कीयो सूधौ।
द्रुपद-सुता कौं आर दै राघव सब को उर धरू।
बिष्णु बल्लभ की चरण रज निस दिन प्रारथना करू ॥३०

टीका-हनुमांन जू को

इंदव सागर सार उधार किये नग मास बिभीषन भेट करी है।
छंद सो बहु ले करि ईस निसाचर, आइ सियावर पाइ[4] धरी है।

---

१ प्रेम। २ पावत। ३ अक्रूर। ४ आप।

चाहि सभा मनि देखि हनूं गरि, डारि दई चित चौकि परी है।
राम बिना मनि फोरि दिखावत, काटि तुचा यह नाम हरी है ॥२८

बिभीषन जू की टीका

इदव छंद
भक्ति बिभीषन कौंन कहै जन, जाइ कहीस सुनौ चित लाई।
चालत झ्याझि अटक्कि परी, बिचि मानुष येक दयोल वहाई।
जाइ लग्यौ तटि राक्षस गोदन, ले करि दौरि गये जित राई।
देखि र कूदि परयौ सु ठरयौ जल, आजहिं राम मिले मनु भाई ॥२६
ता छिन रीझि दई वहु दैतन, आसन पै पधराइ निहारै।
आनन अबुज चाहि प्रफुल्लत, आप खडौ[1] कर दड सहारै।
होत प्रसन्न न माहि डरै अति, धाम रहौ मम राइ उचारै।
पार करौ सुख सार यही बड, दे रतनादिक सिंध उतारै ॥३०
नाम लिख्यौ सिर राम सिरोमनि, पार करै सति-भाव उचारै[2]।
ठौर वही नर रूप भयो फिर, झ्याज हु आइ गई सु किनारै।
जानि लयो वह पूछत है सव, बात कही यन लेहु बिचारै।
कूदि परयौ जल देखि कुबुद्धिन, जाइ चल्यौ हरि नाम उघारै ॥३१

सवरी जू की टीका

आरनि मैं सवरी भजि है हरि, सतन सेव करयौ निति चावै।
जानि तिया तन नूंन किया कुल, या हित तें किन हू न लखावै।
रैनि रहै तुछ माग वुहारत, आश्रम मैं लकरी धरि जावै।
गोपि रहै रिष जानत नाहि न, प्रात उठै सव आश्चर्ज पावै ॥३२
मातग ईंधन बोझ निहारत, चोर यहा जन कौंन सु आयो।
चोरत है निति दीसत नाहि न, येक दिना पकरौ मन भायौ।
चौकस रैनि करी सब सिष्यन, आवत ही पकरी सिर नायौ।
देखत ही द्रिग नीर चल्यौ रिष, बैनन सूं कछु जात कहायो ॥३३
नैन मिले न गिनै तन छोत न, सोच न सोत परी न निकारै।
भक्ति प्रभाव भलै रिष जानत, कोटिक ब्राह्मन या परिवारै।
राखि लई रिष आश्रम मैं उन, क्रोध भरे सव पाति निवारै।
आवत राम करौ तुम द्रसन-मै अलोकउ जात सवारै ॥३४

---

१. पड़ौ। २. उवारै।

भाइ गयो जब काम महावस, मोह अजाल परयौ जम आये।
नाम नरांइन पुत्र भयो उरि, आरतिवत स बैंन सुनाये।
देव सुन्यौ सुर दौरि परे जमदूतन कूं हरि धर्म्म सताये।
हारि गये तब छाड़ि दये प्रभ नै भट आपन हूं समझाये ॥२६

मूल-छप

राघो रांम मिलांवहिं, अंतिकालि परमारथी ॥
नन्द सुनन्द सुप्रबल बल, कुमुद कुमुदाइक भारी।
चंड प्रचंड ज बिजै, बिराजै भल सु द्वारी।
बिष्वकसेन सुसेन, सील सुसील सुमीता।
भद्र सुभद्र गुणग्र, गाइये प्रम[1] पुनीता।
येते षोड़स पारषद भक्त भजन के सारथी।
राघव रांम मिलांवही अंतकालि परमारथी ॥२६

टीका

इंदव छन्द सोरह पारषदै मुक्ति जानहु सेवक भाव सु ये रिषि थोरी।
श्रीपति कूं करि हैं निति प्रीनन ध्यांन धरैं जन पारत[2] कोरी।
आप बिवाइ बनाइ कही हरि आइस पांन अमी जिम घोरी।
वोप सुभाव गह्यौ उर अन्तर रीति भली सुघरी बुध बोरी ॥२७

मूल-छपै

बिष्णु बल्लभ की चरण रज मिस बिन प्रारथना करू ॥
लक्ष्मी बिहंग सुनन्द आदि षोडश चपि हरि पग।
सुग्रीव हनुमांन जांबवत बिभीषण स्यौरी खग।
सुदांमा बिद्र आक्रूर[3], ध्रूव अंबरीष सु ऊधौ।
चित्रकेत चन्द्रहास यह गज कीयो सूधौ।
द्रुपद-सुता कौं आदि दै, राघव सब कौ उर धरू।
बिष्णु बल्लभ की चरण रज मिस बिन प्रारथनां करू ॥३०

टीका-हनुमांन जू को

इंदव छंद सागर सार उधार किये नग मास बिभीषण भेट करी है।
सो गह ले करि ईस मिसाघर, आइ सियावर पाइ[4] धरी है।

१

१ प्रेम। २ पालत। ३ अक्रूर। ४ आप।

कोप्यौ मुनि काल-रूप बरत न छाडै भूप,
कष्ट सह्यौ तन निज धार्यौ ध्रम ईष कौ।
जन परि कोपत[भु]जुलाह ल चिराक्यौ चक्र,
आनि कै पर्यौ है बक्र आगि उद भीष कौ।
राघो दुरबासा दुख पायो अति क्रोध करि,
फेर्यो तिहू लोक हरि मांन मार्यौ तीष कौ ॥३९

टीका

इंद्व छंद
कौंन करै अमरीष बरोवरि, भक्त इसौ उर और न आसा।
सतन पै कछू सीख सुनी नहि, खैचि चलात जटा दुरवासा।
काल-सरूप उपाइ लई, पठई जन पैं वह धीर हुलासा।
चक्र रिषाइ र राख करि रिष, भीर परी डरिकै अब न्हासा ॥४१
जावत लोकन लोकन मैं मम, जारत चक्र सहाइ करौ जू।
सकर वै अज इद्र कहै यम, बानि बुरी उर बेद धरौ जू।
जाइ पर्यौ परमेसुर पाई, कहै अकुलाइ सु ताप हरौ जू।
भक्त अधीन मनू गुन तीनन, भक्त-वछल्ल विड्द खरौ जू ॥४२
सतन कौ अपराध करौ तुम, जात मह्यौ किम भौ अति प्यारे।
बाम धनादिक त्याग करै सुत, मोहि भजै दिन राति बिचारे।
साच कहौं उन साधु बिना रिष, औरन सौ दुख जाइ न टारे।
बेगहि जा अमरीष कनै मम, भक्त दयाल करै जु सुखारे ॥४३
होइ निरास चल्यो नृप पास, उदास भयौ पग जाइ गहे हैं।
भूप लजात करै सनमानहु, चक्र[1] दिसा ढरि बैन कहे हैं।
भक्त न चाहत और पदारथ, ब्राह्मन राखहु कष्ट सहे हैं।
व्याकुल देखि सहाइक सतन, आड गई मनि तेज रहे है ॥४४
भूप-सुता अमरीष सुने जन, चाव भयो उनही वर कीजै।
मात पिता न कही दिल लासिक, पत्ति कीया उर को लिखी दीजै।
कागद ब्राह्मन दै पठ्यो कर, लै नृप वाचिति याहि न धीजै।
जाइ कहै उन जोइ घनी वत, वोल सुहाइन भक्ति भनीजै ॥४५

---

१. चग्र।

दीरघ लाग वियोग भयौ गुर, रांम मिलाप सरीरहि रासै।
घाट बुहारत न्हांवन को निति[1] वेर लगी रिष आवत पासै।
लागि गयौ तन क्रौध करयौ बहु न्हांन गयो सिवरी पग नासै।
रक्त भयो जल मांहि लटै लट गौतम सोच भयौ सब भासै ॥३५

ल्यावत बेर बसेर लगी हरि चाखि धर फल रांमहि मीठे।
मारग नैन बिछाइ रहे रघुराई चले कब आइसि ईठे।
देखत आग भएे दिन बीतत दूरि गये दुख आवत बीठे।
नून सरीरहि जांनि छिपि जिहि बूझत आपन त्यौंरि कई ठे ॥३६

बूझत बूझत आइ रहे जित रांम सनेह भरे हित त्यौरी।
आश्रम मैं तब जानि भय हरि, भग नमावत लावत त्यौरी।
आप उठाइ मिले भरि अकन नैंन ढरै जल प्रेम पग्यौ री।
बेरन खाइ सराहत भोजन और कहू न सवादि सम्यौ री ॥३७

सोच करै रिष आश्रम मैं सब नीर बिगार सह्यौ महि जावै।
आवत राम सुने बन मारग जाइ वसैं उन भेद सुनावैं।
आज बिराज रहे सिवरी-गृह मांन मरयौ सुमिकैं दुख पावैं।
जाइ परे पग तोइ करौ सुध, पाव गहौ भिलनी सुध मावैं ॥३८

जटायु को टीका

रांवन सीतहि जात हुरैं खग राव सुन्यौ सुर धीरत आयौ।
राड़ि करी तन मारि हरी परी प्रांन रखैं प्रभु देखन आयो।
आइ र गोद भयो ग्रिम नीरज सीचत घात कही रघरायो।
मांन करयौ दसरत्थ समां जल-दांन दयो पुनि धांम पठायो ॥२९

और कौ गाद भरें प्रतिमा जु मरै हरि छांह करै मुख चोइ निहारैं।
पूंछरू पक्ष न लक्ष न है सुत वा इक चुंगम चौंच सुधारैं।
सोचत आंसुन सोचत रांम सह्यौ दुख मो-हित मीच बिचारैं।
आपन हाथन श्रीरघुनाथ जटायु की धूरि जटांन सु झारैं ॥४

मूल

राघो चू कौ मनहर — ऐसे जगदीस जन कारनै जरायौ मुनि
ईश्वर भ्रमायौ पनि आय अंबरीष कौ।

---

१ निधि।

कोप्यौ मुनि काल-रूप बरत न छाडे भूप,
कष्ट सह्यौ तन निज धारयौ ध्रम ईष कौ।
जन परि कोपत[भु]जुलाह ल चिराक्यौ चक्र,
आनि कै परयौ है बक्र आगि उद भीष कौ।
राघो दुरबासा दुख पायो अति क्रोध करि,
फेरयो तिहू लोक हरि मांन मारयौ तीष कौ ॥३९

टीका

इदव छंद
कौन करै अमरोष बरोबरि, भक्त इसौ उर और न आसा।
सतन पै कछू सीख सुनी नहि, खेंचि चलात जटा दुरबासा।
काल-सरूप उपाइ लई, पठई जन पै वह धीर हुलासा।
चक्र रिषाइ र राख करि रिष, भीर परी डरिकै अब न्हासा ॥४१

जावत लोकन लोकन मैं मम, जारत चक्र सहाइ करौ जू।
सकर वै अज इद्र कहै यम, बानि बुरी उर बेद धरौ जू।
जाइ परयौ परमेसुर पाई, कहै अकुलाइ सु ताप हरौ जू।
भक्त अधीन मनूं गुन तीनन, भक्त-बछल्ल बिडद् खरौ जू ॥४२

सतन कौ अपराध करौ तुम, जात मह्यौ किम भौ अति प्यारे।
बाम धनादिक त्याग करै सुत, मोहि भजै दिन राति बिचारे।
साच कहौ उन साधु बिना रिष, औरन सौं दुख जाइ न टारे।
बेगहि जा अमरीष कनै मम, भक्त दयाल करै जु सुखारे ॥४३

होइ निरास चल्यो नृप पास, उदास भयौ पग जाइ गहे हैं।
भूप लजात करै सनमानहु, चक्र[1] दिसा ढरि बैन कहे हैं।
भक्त न चाहत और पदारथ, ब्राह्मन राखहु कष्ट सहे हैं।
व्याकुल देखि सहाइक सतन, आइ गई मनि तेज रहे हैं ॥४४

भूप-सुता अमरीष सुने जन, चाव भयो उनही बर कीजे।
मात पिता न कही दिल लासिक, पत्ति कीया उर को लिखी दीजे।
कागद ब्राह्मन दै पठ्यो कर, लै नृप वाचिंति याहि न धीजै।
जाइ कहै उन जोइ घनी वत, वोल सुहाइन भक्ति भनीजै ॥४५

---

१ चन्न।

भूप सुताहि कहै सुज नाटस पौन समान गयो घर आयो।
फेरि पठावत आनत पैलहि, भक्त बड़ी विपिया न सुभायो।
जाइ कह्यौ मन भक्ति रिझावत मानि भयो पथि और न भायो।
मोहि न भावरि है मन बाधक प्रान तजौं कहि कै समझायो ॥४६

ब्राह्मन जाइ कही सुनि व्याकुल, भ्रम भयो नृप फेर फिरायो।
ब्याहु भयो न उछाह समावत, देखि छिपी अमरीक सुभायो।
गौतम मंदिर जाइ उतारहु चाहि जिको वह हीन बड़ायो।
पूरब भक्ति हुती हमरे तुछ, या करि भाव अब्यौ र मिलायो ॥४७

सेस निसापति मंदिर मैं मुकि माजत पातर दंत बुहारी।
लेपन धोवन दीपक जोवन प्रेम सनेह लग्यौ अति भारी।
भूपति देखि निमेख न लागत कौन चुरावत सेव हमारी।
तीन दिनां मधि जानि कही उन ओ मनि मूरति ल्यौ सिर भारी ॥४८

मानि लई मनु मग्न दयो यह भोर भये सिर सेवन ल्याई।
बस्तर औ पहराइ अभूषन, देखि रहै द्रिग नीर बहाई।
राग र भोग करै प्रतिभावन भक्ति अभी पुर मैं सब छाई।
भूपति कांनि परी चलि आवत देखन को बुधि हु अकुलाई ॥४९

पाव धरै हरवै हरवै कब देखत मैं उन भाग भरी कौं।
चालि गये अलि ठीक नहा कछु, गाइ रही द्रिग भाइ झरी कौं।
बीन बजावत साम रिझावत ल्यू अति-भावत धन्य घरी कौं।
हूरी रह्यौ नहिं जात गयो ढिग देखि उठी गुर राज हरी कौं ॥५०

बीन बजाइ र गाइ वही बिधि काम परैं सुनि ह्वै मन राजी।
भीजि रही सु कही महि भावत चित्त चुम्यौ मधुरै सुर बाजी।
फेरि अलापि र तान उचारत ध्यान भई मति लै हरि साजी।
भूपति प्रेम मगन्न रह्यौ मिलि और भई सब और बहाजी ॥५१

बात सुनी तिय और न ब्याकुल मौन लगी उन भूपति मोह्यो।
आपन हू मिलि सब करै पति भक्ति हरै विरथा तन खोयो।
भूप सुनी मन माहि खुसी अति चोप लगी पुर भामनि जोयो।
चाव बढ़े दिन-ही-दिन गौतम भाव लिया गुन यौ सुत होयो ॥५२

ध्रूवजी का मूल

ध्रूव की जननी ध्रुव सूज कहै, सुत राम बिनां नर-नारि न वोपै।
रोज तजौ हरि नाम भजौ, खल की वृति त्यागि कहा अब कोपैं।
ध्रुव के मन मैं बन की उपनी अब, ज्ञानी सोई जो अज्ञान कौ लोपै।
राघो मिले रिष नारद से गुर, बोल बढ्यो हरि आंवेगे तोपै ॥३२

सुदामाजी का मूल

मनहर छंद :

पतनी प्रमोधत है पति कौं बिपति मधि,
कत जिन लेहु अन्त कह्यौ मेरौ कीजिये।
आपां हैं नृबल निरधार निरधन अति,
झौंपरा पै नाहीं फूसभ मनमै भीजिये।
कहत सुदांमां सुनि बावरी उघारै अग,
मो पै कछू नाहीं भेट कैसैक मिलीजये।
राघो रौरि चावल कवल-नैन काजै कन,
लूघरे की बांधी गाठि जाहु दिज दीजिये ॥३३
चले हैं सुदांमां दिज द्रुबल दुवारिका कौं,
जाके छुये बेर कोऊ खात नै खलक मैं।
आगै भेटे कृष्णजी कृपाल करुणा-निधान,
लेकै भरि मूठी आप आरोगे हलक मैं।
सदन सुदांमा कै जु अष्ट-सिधि नव-निधि,
इद्र हु कुबेर सम कीयो है पलक मैं।
राघो गयो उलटिउ सास लेत बारू-बार,
देखि दुख भूलो मणि-माया की झलक मैं ॥३४

सुदामाजी की टीका

इदव छद

आपन धाम कनक-मई लखि, मानत कृष्ण पुरी चलि आई।
नीकरि लैंन गईं तिरिया तिहि, माहि चलौ तब मित्र वनाई।
ध्यान वहै हरि माधुरता तन, दे हरखै नव प्रीत वधाई।
चाह नही उर भोगन की वहै, चाल चलै तन कौं निरबाई ॥५३

बिदुरजी की टीका

न्हावत अग पखारि विदुतिय, कृष्ण जु आइर बोल सुनायो।
प्रेम भयो मद पीवत लाज न, दौरि वही बिधि द्वार चितायो।

नाखि दयो पट पीत लयो धरि प्राइ गयी मुखि वेस बनायो।
वैठि संवावत केरन छीलक प्राइ खिज्यो पति यो दुख पायो ॥५४
प्राप लग्यौ फलसार खवावन चैन भयौ तिय कौ समझाई।
कृष्ण कहै यह स्वाद लगै मम प्रेम मिल्यौ वह ह्रौं सरसाई।
नारि कही धरि जाहु महै कर छपौत खवाइ महा पछिताई।
हेत वखांनि करयौ उन दंपति प्रांनत सा हरि भक्ति कराई ॥५५

चंदरहास को टीका

भूपति कै सुत चंदरहास जु बोलि लियो पुर प्रौरस त्याई।
धृष्टि बुधी धरि प्राप रहै सुन बालन मैं निति केलि कराई।
विप्रन कौ सम धाइ भयौ जित जाइ कुमारन धूम मचाई।
बोलि उठे दिज ह्वै क्वर वर बालन यौं सुनि लाज न माई ॥५६
सोच परयौ प्रति येह बिचारत होइ इसौ पति मोर सुता कौ।
प्रांन विनां करिये उर मैं यह मीच बुलाइ लये सउ ताको।
मारनि चालि गये छवि देखि र जो निजरौ हम सोचिहु ताकौ।
मारत हैं प्रव कौन सहाइक वाहन मैं कर नैन जु वाकौ ॥५७
मांनि लई यक गोल कपोलन काटिर[१] सव करी प्रति नीकी।
होइ गयो हरि रूप ततत्तर जोरि सबै कर वाहि कही की।
प्राइ बया मुखाहि परे घर, भक्ति भई क्रम दाट न पीकी।
काटि लई छटाई अगुरी उन प्राइ दई दुखदाइक जी की ॥५८
देस रहै मधु भूप सबै सुख पुत्र बिना दुख पावत भारी।
प्रारनि माहर देखत बालक छांह करै मृग सी रखवारी।
दौरि उठाइ लयो सु गयो पुर, मांनत मोद घणी ग्रियबारी।
होत भये दिन जांनि लयो मन राज दयो इन भक्ति पियारी ॥५९
देसपती कछु भूप न पावत फौज दई र दिवांन पठायो।
प्रानि मिल्यौ बह जानि लयो उन मारन कौं इक फंद उपायो।
कागद हाथि दयो सुत दीजिये वास करी बह मोहि पठायो।
पाति गयो पुर बाग बिराज र सेज करी फिर सैन करायो ॥६

---
१ काटिर।

साथि सहेलिन आवत वागहि, होइ जुदी छवि देखित रीझी।
कागद पाथ लयो झुकि वाचत, देन लिख्यौ विप तातहि खीजी।
नाम हुतौ विषया द्रिग काजल, लै विपया करि कै रस-भीजी।
आनि मिली फिर आलिन मैं मद, लालन ध्यान गई गृह धीजी ॥६१

चदरहास गयो पठ्यो जित, देखि मदन गलै स लगायो।
कागद हाथि दयो उन वाचत, विप्र बुलाइ र व्याह करायो।
रीति करी नृप जीति लिये घन, देत गयो निठि चाव न मायो।
आइ पिता सुनि मीच भई किन, वीदहि देखि घणो दुख पायो ॥६२

वैठि इकात कही सुत वात, करी अति भ्रात सु पत्र दिखायौ।
बाचत आपहि कौं धिरकारत, राड सुता परि मारन भायौ।
नीच वुलाइ कही मढ जा करि, आवत ता नर मारि सुहायौ।
चदरहास करौ तुम पूजन, है कुल-मात सदा चलि आयौ ॥६३

पूजन जात कहै नृप पुत्रन, मैं उन राजहि दे वन जाऊ।
ल्याव वुलाइ मदन भलौ दिन, जाइ महूरति फेरि न पाऊ।
वेगि गयो चलि जाइ लयौ मग, देत पठाइ म सेव कराऊ।
पैठत वद्ध करयौ इन भूपति, राज दयो अव मैं न रहाऊ ॥६४

आइ कहीस मदन मुवो मढ, कापि उठ्यौ र झरी द्रिग लागी।
देखि परयौ सिर पाथर फोरत, मृतु भई समझयौ न अभागी।
चदरहास चले मढ पासहु, मातहि अग चढावत रागी।
मात कहै तव मैं अरि मारत, ह्वै सरजीव उठे वड भागी ॥६५

राज करै इम भक्त किये सव, पासि रहै तिन क्यू र वखानौं।
नाम उचारत धामन धामन, काम न और सु सेव न मानौं।
मोह न लोभ न काम न क्रोध न, है मद नाहि न नैन नसानौं।
आदिर अति कथा उर भावत, प्रात प्रढै[1] फल जै मन जानौं ॥६६

समुदाई टीका

नाम कुखार अपत्ति सुमैत्रिय, राघवदास वखान करयौ है।
कृष्ण कही मम भक्त विदूर जु, दे उपदेसहि भाव भरयौ है।
प्रेम-धुजा चित्रकेत पुरानन, दूसर देह पलट्टि वरयौ है।
ध्रू अकरूर वड़े प्रय उधव, पत्रन पत्रन नाम धरयौ है ॥६७

---

१. प्रढै=पुत्री।

कुंती की टीका

प्रीति न देखत हु पिरथा बिन सूत र देव विपत्ति म मागी।
चाहत है मुख लाल हि देखन होहु दयाल कि यों बन यागी।
व्याकुल देखि भरी प्रभु मांहिम फेरि लये धन प्रान सु प्रागै।
भवर ध्यान भये सुनि कानन ता छिन ही मघ ज्यूं तन त्यागैं ॥६८

द्रोपति की टीका

द्रोपति बात कहै वस कौनस सैवत भवर डेर¹ भयो है।
द्वारिक वासि कह्यौ सु हुतौ छिग स्वैपुर जाइ र प्राइ रह्यौ है।
श्राप दिवावन भेजि दुवासहि जात युधिष्टर सीस नयौ है।
सोइ भंरी तिय प्राइ कही नृप सोच भयो कत कृष्ण गयो है ॥६९
भाव पसी सुनि वाकि भयो मन कृष्ण पधारि कह्यों मन कांम।
भूख लगी कछु देहु कहै हरि सोच हिये मन है नहि धांम।
पूरण ह्वैं जग मांहि रह्यौ पगि नांहि छिपाइ कहै इम स्यांम।
साकहि पात भयौ जल सू सब धापि तिलोक दुर्वासहु नांम ॥७०

मूल छप्पै

भौरांइम त बिढि भयौ बिष तें स्वांमु मनु।
स्वांभू-मन के प्रेय बरत तास के अगनीधर गन।
अगनीधर के नाभि तिम रिख्यौ करतारा।
तास पछोपै प्रगट, रिखभदेव सु अवतारा।
रिखभदेव के सत सुवन जन रायो वीरच भरत पति।
वसवत पुत्र भये नव जोगेसुर भवर इकयासी राज-रिष ॥१५
तम मन धन प्रपि हरि मिले जम रायो येते राज रिय।
उत्तानपाद पृथवरत प्रग मुचकुन्द प्रचेता।
जोगेसुर मिथलेस पृथु प्रसित उपरेता।
हरिचन्दा हरि बिरच रघु गुरु जनक सुधन्वा।
भागीरथ हरिचंद सगर सति भरत सुमन्वा।
प्राचीन बही इक्ष्वाकु रघु, रुकमांगद कुरुपाधि सुचि।
भरथ सुरथ सुमती रिपु भैल ममूरति रैम सुचि ॥१६

---

१ डेर।

सतधन्वा बबस्व नघुष, उतंग भूरद बल।
जदु जजाति सरभाग पूर, दीयो जोबन बल[1]।
गै दिलीप अंबरीष मोर-धुज सिवर पड धुव।
चद्रहास अरुरंत, मानधाता चकवै भुव।
सजै समीक निम भारद्वाज, बालमीक चित्रकेत दक्ष।
तन मन धन अर्पि हरि मिले, जन राघो येते राज-रिष ॥३७

आदि सक्ति ॐ नमो नमो, लक्ष उमा ब्रह्माणी।
नमो तिपुर कन्यां सु, नमो पतिबरता रांणी।
सति रूपा देहूति, सुनीति सुमित्रा अहल्या।
कौसल्या तारा चूड़ाला, कहिये पहल्या।
सीता कुंतां जयती बृंदा, सत्यभामा द्रोपती।
अदति जसोधा देवकी, अब धम सरिवोपती।
मदवरि त्रिजट मदालसा, सची अनसुया अजनीं।
जन राघो रांमहि मिली, पतिबरता पतिरंजनीं ॥३८

मनहर छंद

ॐ कारे आदिनांथ उदैनांथ उत्पति,
ऊंमापति सिंभू सत्य तन मन जित है।
सतनांथ बिरचि सतोषनाथ बिष्णजी,
जगनाथ गणपति गिरा को दाता नित है।
अचल अचभनाथ मगन मिछद्रनाथ,
गोरख अनत-ज्ञान मूरति सु बित है।
राघो रक्षपाल नऊं नाथ रटि राति दिन,
जिनको अजीत अबिनासी मधि चित है ॥३९

प्रेयब्रत प्रगट पसारौ तज्यौ प्रथम ही,
बृकत बैरागी भयो मोक्ष पद कारणं।
ताकौ बिधि बिबिधि सुनायौ मत-मातंग ज्यू,
लेहु सुत राज परकाज तोहि सारणं।
मन बिन जीते न मिटत्त मनसा के भोग,
ह्वै है अगै रोग सोई क्यू न अब टारणं।

---

[1] दल।

पंचादस प्रबंध कीयो है राति दिन राज
राम न बिसारयौ छिन राघो ताकौवारणौं ॥४०

ममो मर्य चक्रवती जिन कीये नवखंड
भरत-खंड भातन के ऐक खंड आप कौ।
सोऊ पुनि पूछन कौं दे गयो नरेस देस
गलका के तटि जाइ कीन्हौं व्रत आप कौ।
निमत हम पाइ मज्जन करत मुनि
मृगी प्रभ टारयौ डरि स्यंघ की प्रताप कौं।
राघो कहै जदपि जंजाल तजि लीन्हौं जोग
मृग छू नों छू वत ही भंग भयो जाप कौ ॥४१

गौंडवारणौं देस तहां देविका विपत ऐक
छठे मास मांग बलि मारणस के सीस को।
रिषसुते चेतनम जिन भुज ताके चर
पकरि लै आये उन पेसि कीयो ईस की।
भूप रीझ्यो देखि रूप पुष्ट हूं कराई पुष्ट[1],
अष्टमी कौं अर्ये मुनि कालका मैं रीस की।
राघो देखि देखि रिष नृपति कौ कीनौं नास
अैसे मुनि मारौं[2] तौं हू चोरि जगदीस की ॥४२

देखी देखि साहिस स हूंस देर की स्तुति
तुम्ह रिष इहां इन मूरजान आने हौ।
तुम्ह भर्ये चक्रवरती हुते चहूं चक मधि
पुनि मृगराज भये तहां हम जांने हौ।
अब दिज देह पाइ जड़-मर्य जोगेसुर
जीवन मुक्ति मुनि मोक्ष पद माने हौ।
राघो रिष ऐक रस मात भई ताकें बसि
धनि रिष तैरौ मौन रिझे न रिसाने हौ ॥४३

मृग मधि भूति रही मृग गयो मृयम मैं
मृग मृग करत ही मृति भई मुनि की।

---

१ पुष्ट। २ मोरौं।

तातैं मुनि मृगी-पेट आइ कै जनम लीयो,
दस ब्रष मृग रह्यौ मांहै बृति धुनि की।
तीसरै जनम निज नेष्टीक विप्र भयो,
देह तैं निसक नहीं सक पाप पुनि की।
राघो रघु नृपति सूं बोले मुनि मौनि तजि,
जांन्यौं जड़ भर्थ अर्थ मोक्ष भई उनि की ॥४४

जनकजी को टीका : [मूल]

मनहर छंद
करम-हरण कवि बरतमान भूत भव्य,
आये नव जोगेसुर जीवन जनक कै।
नाहरी के दूध सम नृबृती धरम धार,
छीजै न लगार राखि पातर कनक कै।
राज तजि, मोह तजि, सुद्ध होह हरि नामं भजि,
कंचन ह्वै छुयें लोह पारस तनक कै।
राघो रह्यौ थकित थिराऊ धुनि ध्यांन लगि,
कीट गही मीट मारचौ भृंगी की भुंनक कै ॥४५
माया मांधि मुकति बहतरि जनक भये,
चित्र के से दीप रहे धारचौ धर्म समता।
सुख-दुख रहत गहत सतसंग सार,
तजे हैं बिकार न काहू सूं मोह ममता।
असैं नग जनम जतन सेती जीति गयो,
बदगी मैं बिघन न पारी कहीं कमता।
श्रवन मनन मन बच क्रम धर्म करि,
राघो असैं राज मैं रिझायो रांम रमता ॥४६

छपै
भृगु मरीच बासिष्ट, पुलस्त पुलह क्रतु अंगिरा।
अगस्त चिवन सौंनक, सहस अठ्यासी सगरा।
गौतम भ्रग सौभरी रिचिक-सृगी समिक गुर।
बुगदालिम जमदगनि, जवलि परबत पारासुर।
बिस्वामित्र माडीफ कन्व, बांमदेव सुख ब्यास पखि।
दुरवासा अत्रे अस्ति, देवल राघो ब्रह्मरिष ॥४७

धरमपाल रसपाल, नमो त्रिगपाल बखांणौं।
नमो सूर सापुरस नमो कवि चतुर सुजांणौं।
नमो सती सरवज्ञ नमो धाता धर्म-धारी।
नमो इंद्रवत मोमि, नमो श्रात्म उपगारी।
नमो अनत जमनी सक्ति, भक्ति सत्त भगवंत पै।
नमो जती जोगेसुरं, राघो बासन-बास है ॥४८

नमो सुवरण कुबेर नमो धर्मराइ मन्वतर।
चित्रगुप्त गणपति, नमो वागी महामतर।
नमो सप्तरिष अनत रिष, नमो त्रिभवन तत-वेता।
बालखल्य रिष अष्ट वसु नृप नवखंड वेता।
विप्र वेद गंगा गऊ, सुमरि सकल सुक्रत लिलो।
राघो जीवन-मुक्ति मत सब बरसन सू मिलि चलो ॥४९

मनहर छंद

नमो इंद्र नरप द सकल सुरपति सत्य जस,
करि लीनो बस विपति निवारणं।
जीव की जीवनि चतुरासी लक्ष लगी तोहि
पीव पीव टेरे जीव लेत मिति धारणां।
सची के नाइक मैना उरबसी रमा के कंत,
सीजियें म अंत भव-जल निस तारणां।
राघो गज ऐरापति कामधेन कल्पवृक्ष
अष्ट सिधि नव-निधि रहै जाके द्वारणां ॥५०

नमो दिव्य देवता कुबेर कुलि भाराकारी,
अब गति नाथ अविनासी को भंडारी है।
मायाधारी मूरति अमत कोटि रवि-छबि
साहिब की साहिबी सकति अति भारी है।
रिधि सिधि अरब खरब जग जामें अब
हरि को हजूरि रासि सौंपी ताहि सारी है।
राघो मेती सहित रहत रत राम की सौं
धनि सो धनादि नृप सोभै अति भारी है ॥५१

नमो बरण देवता बनाइ कहूं कहों लग
तेर पद पूजत पताल नाग भागली।

नवसै निवासी नदी तेरी जीभ जग मध्य,
सप्त साइर उर गावै वाग बागणी।
तेरौ बल ब्रह्मण्ड पचीस लग पूरै जल,
अकल अजीत प्रलै काल पौढी है घणी।
काली गहली बीनती कछूक बनि आई मो पै,
राघो कही सुलप तुम्हारी सोभा है घणी ॥५२

कसिब सुवन तेरे ऊगत[1] ये तो प्रताप,
रजनी के पाप गुर जाप सुनि सटके।
जल सुचि दान असनान षट-क्रम धर्म्म,
खोलत कपाट भाण भूप अब घटके।
मुदित सकल बन गऊ उठि लगी तिन,
राम जन रांम कांम पाठ पूजा अटके।
भगति करत भगवतजी की भासकर,
राघो रटि सुमरिये भाव ये सुभटके ॥५३

छप्पै
बड़ी कला करतार, कीयो ससि सू अब थोक।
रजनी मंडन रतन, सुधा सरबंत[2] अब लोक।
सीतल मिष्ट मयक, चराचर मैं सर्चार है।
रस गोरस अन सकल, चंद सरजीवत करि है।
राघो रुचि राम हि रटै, ससि ब्रह्मण्ड-प्यंड मधि मुदित।
पूरणवासी प्रष्ण अति, बित घटियां बाको उदित ॥५४

मनहर छंद
अपरस उतम उतग जाकै सोभै अति,
बृ चि की सुता बखाणौं वागी ब्रह्मचारणी।
सरस्वती सरल जु सलाघा कीये प्रष्ण ह्वै,
जब ही आराधै कोऊ ह्वै है काज कारणी।
कोमल कुमारजा है न्यारी निकलंक कन्या,
अतुल सकति सु सुफल तत-धारणी।
राघो कहै रुति सूं रहैत तन तेजपुंज,
प्रसन-बदन हरि हित पैज पारणी ॥५५

---

१. ऊगन येता। २ सुधा सरवत।

प्रथम प्रवेस है गनेस गवरी के सुत,
आवै जाहि चंदीमन विद्या को निधान है।
चतुर निगम नव द्रावस पुरांन पढ़ै,
जानैं दस च्यारि छह वेतो गुनगांन है।
सहस बतीस जगदीस के सहस्र-नांम,
पाठ करै आठों जांम ईश्वर प्रमांन है।
राघो कहै सोमर्ज विनायक विद्या के गुर,
मांन नर-नारि-सुर जांनम को जांन है॥२८६

छपै
सत्त लछमनां कुमार रांम के कांमहि लाइक।
हेदि हेदि हनुमत प्रणम्य रघुपति के पाइक।
गरुड़ अतुल-बल बरणि, विष्णु त्रिपथां को बाहन।
कभ स्यांम सिव सुवन, मवन-सित मन अवगाहन।
व्यास पुत्र सुखदेव ऋषि, गोरख शांम गिरापती।
राति दिवस रत रांम सौं, राघो येते यह जती॥२८७

मनहर छंद
मध्ह गोपालजी को आग्याकारी आठों जांम,
सारे हैं अनंत कांम ग्रैसी स्वांमी कारजी।
पल मैं सकल ब्रह्मण्ड सठ आवै फिरि
बठत बैकुंठ-नाथ चलत अपारजी।
सौम्यं गुन कीति गही नीति ज नृपति पद
छाड़े दिये भोग रोग साध्यौ जोग सारजी।
जगपति प्रति भजनीक है रहत दढ़,
राघो कहै राति दिन रटत रकारजी॥२८८

इंदव छंद
जानकी मात महात्मम् को गुन, देसो मती कम स्यांम जती को।
नारी जिती जननी करि देखत रूप सबै ज्यौं पारबती को।
सीस गह्यौ ममता मम जीति क भोग न भावत जोग है नीको।
राघो लगी धुनि ध्यान टरै नहीं आप जपै हरि प्रानपति को॥२८६
कति देख्यो महा बल क्यौं न कहूं गुन के गुर गेरन भेद पुनी को।
धुन की पतिनी सत्रि कै उतनी जति धाई जहां बन-बास मुनी को।

कीये लावन-रूप रिझावन कौं, सुख कै मुख बाइक है जननी कौं।
आगि कौं लागि कहा करै माछर, राघौ कहै सत सूर अनी कौ ॥६०

मनहर छंद
द्वादस अबद राख्यौ सबद पिता कौ पण,
लखि सम लक्षमन दास रामचन्द्र कौ।
फल जेते फूल पात राखे है हजूरि तात,
आप न भक्षण कीन्हौं आप सेती अद्र कौ।
रांवन पलटि भेख सीया हरि लै गयौ,
सु बिपुन मै निपुन निवार्यौ दुख-बध कौ।
राघौ कहै पदम अठारै कपि रहे जपि,
तहां लक्षमन सिर छेद्यौ दसकध कौ ॥६१

इंदव छंद
राम के काम सरे सब ही, जब ही हनुमत लीयो हसि बीरो।
लक प्रजारि सीया कौ सदेस, ले आइ दई रघुनाथ हि धीरौ।
राम चढे जिहि जाम हनू सगि, जाइ परे दल सागर तीरौ।
राघौ कहै जग जीति रमापति, लक विभीषण कौं दई थीरौ ॥६२
हा हा हनू कीयो काम घनौं, रजनी बिचि सैल समूह ले आयौ।
मग दैत कीये छल छद जिते, सुत ते सब जीति कै आतुर धायो।
मुरछे लक्ष बोर से घीर धरा धनि, सेवग प्रात ही भ्रात जिवायो।
राघो कहै रघुनाथ कै साथ, सदा हनुमत कीयो मन भायो ॥६३
इद ज्यौं जिद की जीवनि गोरख, ग्यान घटा बरख्यौं घट धारी।
नृप निन्याणवै कोड़ि कीये सिध, आतम और अनंतन तारी।
बिचरै तिहू लोक नहीं कहू रोक हो, माया कहा बपुरी पचिहारी।
स्वाद न सप्रस यौं रह्यौ अप्रस, राघो कहै मनसा मनजारी ॥६४

मनहर छंद
चले हैं अजोध्या छाडि रामजी पिता कै काज,
भरथ न कीन्हौं राज राखी सिर पावरी।
धृग यह राज तज्यौ नाज रघुनाथ काज,
काहे कौं बिछोहे भ्रात मात मेरी बावरी।
आसन अवनि खनि नीवै सैन कीनौं जिन,
रोवत विवोग मनि रहै तन तावरी।

राघो कहै भरत अरथ गृह मुनि गयौ,
मेरो कछू मांही बस रखा रांम रावरी ॥६५

छपै
राघो रिझ ये रांमजी, भलौ गह्यौं मत मुक्ति कौ ॥
बांणासुर प्रहलाद कहु, बलि मय पुनि त्रबाहुर।
असुर भाव कौं त्यागि, भज्यौ सों निस दिन नरहर।
रांम उपासिक तीन, और रांवण सम है।
लंका लेके रांम, बिभीषन कौं जु दई है।
कीयो मंदोदरी त्रियजटी, मांनि महात्म भक्ति कौ।
राघो रिझ ये रांम जी भलो गह्यो मत मुक्ति कौ ॥६६
अपण विमल जल त्यप, पावक हूं डिगें न धरणी।
तव संगी तजि गये सकल, सुत सबही घरणी।
वरष सहंस युघ कीयो, लीयो तब लजि मांहि जल।
गज कायर ह्वै रह्यौ, गयौ मन कौ सब छल बल।
बल बीत्यौ दूबरा भग्यौ लीति लीयौ जब निपट अरि।
राघो रटत रंकार कै, ततछन बिमुचायो सु हरि ॥६७

अरिल
छपै
दया धर्म चित राखि, सत कौं पोषिये।
कुरबम कुसी अमाप तास कौं तोषिये।
करि लीबै इहि बैर भजन भगवंत कौं।
पीछैं कछु न होइ, बुरी दिन अंत कौं।
जा दिन देह बल घटै भजन बल राखि है।
मन राघो गज गोप अजामिल साखि है ॥६८
गनिका गहबर पाप कीये अविहुत अति औड़े।
पर-पुरषन सूं भोग, रिझाये पापी भौड़े।
हाड़ चांम धर अंत मुख मिष्टा जिन मांही।
गीद रींट रत मास बदन तें नास चुवांहीं।
अंत-काल गुरुत हृदय रटि रांम सनातन मैं भई।
राघो प्रगट प्रलोक कौं, चढ़ि बिमांन गनिका गई ॥६९
उधो बिदुर अक्रूर भये मीतारथ मैंत्रे।
गंधारी धृतराष्टर सज सारथि ए भे।

सु रतिदेव बहुलास, आस मन को सब पूरी।
मित्र सुदामां जानि कीयौ, सब ही दुख दूरी।
सोक समद तै काढ़ि कै, कीये महाजन मुक्ति रे।
राघो सूके काठ सब, होत अवै सतसग हरे ॥७०
नमो सूत बक्तास नमो, रिष सहस अठ्यासी।
सुणी भागौत पुराण भक्ति, उर माहि उपासी।
चटिड़ा द्वादस कोड़ि, रांम सुमर्त कुलि उधरे।
जन प्रहलाद प्रसाद, पाय संगति सौं सुधरे।
साध सती अरु सूरिवां, हीरा खड़ गरू बाज।
राघो अस दधीच कौं, कीयो तिहूं-पुर राज ॥७१
जन राघो रांम अ रीझ है, परि रीझत है सर्वस दीये ॥
उछ वृति जु सिवर सुदरसन, हरिचंद सत गहि।
स्यार सेठ बलत्री[1] ईषण, जित रतदेव लहि।
करन बल्य मोहमरद, मोरध्वज सेद बेद वन।
परबत कुडल धृत बार, मुखी च्यारि मुक्ति भन।
व्याधि कपोत कपोती कपिला, जल-तटांग उपगार जल।
तुलाधार इक सुता साह की, भोज बिक्रमांजीत बीरबल।
ये बड़ सती सताई सौं, जपि उधरे उत्म कृत कीये।
जन राघो रांम अ रीझ है, परि रीझत है सर्बस दीये ॥७२

मोहमरद की टीका [मूल]

अरिल छपै
रिष नारद बैकुंठ, गये हरि पास है।
प्रश्न करी, नहीं मोह, इसौ कोइ दास है।
मोहमरद भणि भूप, रूप रांणी सिरै।
ताके सुत की घरणि, बरणि बकता तिरै।
नारद सौं निरवेद, विष्णजी विधि कही।
राघो भेद न भ्रांति, भगत भगवत सही ॥७३

इदव छंद
ध्यांत धरयौ जन को जगदीसु र, ताही समैं रिष नारद आयौ।
तारि छुटी तबहि लगे बूझन, काहि भजौ हरि को मन भायौ।

---

[1] बलह।

राघो कहै भरत ग्ररण गृह भूमि गयो,
मेरो कछू मांहो बस रजा रांम रावरी ॥६५

छपै राघो रिझ ये रांमजी, भली गह्यौं मत मुक्ति कौ ॥
बांणासुर प्रहलाद कहू, बलि मय पुनि त्यारूर।
असुर भाव कौं त्यागि, भज्यो सों निस-दिन मरहूर।
रांम उपासिक लोग, ग्रौर रांवण सम ईहै।
लंका लंके रांम, बिभीषन कौं पु दई है।
कीयो मंदोदरी त्रिपजटी मांग महात्म भक्ति कौ।
राघो रिझ ये रांम जी मलो गह्यो मत मुक्ति कौ ॥६६
श्रवग बिमल जस स्यप, पावक हू टिकै न धरणी।
तब संगी तजि गये सकल, सुत सबही धरणी।
श्ररय सहस पुम कीयो, लोयो तब बंधि मांहि जल।
यत कायर हूं रह्यो, भयौ मन कौ सब छल बल।
बल थीत्यौ डूबण लग्यौ लीलि लीयौ जब निपट ग्ररि।
राघो रटत रकार क, ततछन विमुचायो सु हरि ॥६७

मरिल छपै छमा धर्म चित राखि, सत कौं पोषिये।
दुरबल दुखी ग्रनाथ, तास कौं तोषिये।
करि लीजै इहि बेर भजन भगवंत कौं।
पीछें कछु न होइ बुरी बिन ग्रंत कौं।
जा बिन देह बल घटै, भजन बल राखि है।
जन राघो भज पीप, ग्रजामिल साखि है ॥६८
गनिका महुवर पाप कीये ग्रबिहत ग्रति ग्रौंड़े।
पर-पुरपन सूं भोग रिझाये पापी मौंड़े।
हाड़ चांम ग्रर ग्रत मुत्र मिष्टा जिन मांही।
पीब रीट रत मास बदन तें लाल चुवांहीं।
ग्रंत-काल सुकृत हृदय रटि रांम सनातन मैं भई।
राघो प्रगट प्रलोक कौं चढ़ि बिमांन गनिका गई ॥६९
ऊधो बिद्र ग्रकूर भये मोक्षारथ मैंबे।
गंधारी धृतराष्ट्र सबै सारथि हूं मैं।

मोरधुज की टीका [मूल]

मनहर मोरधुज तामरधुज हंसधुज सिखरधुज,
नीलधुज ध्रमधुज रतिधुज गनि है।
ताकी राणीं मगन मदालसा मुकति भई,
वैसे सुत च्यारि कोई जननी न जनि है।
हरिचंद सत त्रियलोक मै सराहियत,
संग रुहितास मदनावती जु धंनि है।
सिवर कपोत बलि[1] रंतदेव उंछ[2] वृति,
राघो जाके भूरि भाग जोया[3] जस भनि है ॥७९

छपै इम मन वच क्रम रत राम सौं, जन राघौ कथत कवीस ॥टे०
दीरघ सुघ सुबाहु गरक, आसन जित गादी।
जाकै सत्रु न कोई, सत्रु मरदन सतवादी।
अति बिगि बिम न बिक्रात, जुगति जोगी उर्धरेता।
अलरक अंग है अजीत, सूर सर्बज्ञ ततबेता।
मात सुमगन मदालसा, तात है तत्वनवीस।
इम मन वच क्रम रत राम सूं, जन राघो कथत कबीस ॥८०
हरि हृदै जिनकै रहै, तिन पद पराग चाहूं सदा ॥टे०
प्रेय-व्रत जोगेसुर पृथु, श्रुतिदेव अंग पुनि।
परचेता मुचकंद सूत, सौनक प्रीक्षत सुनि।
[4]सत्यरूपा [5]त्रियसुता[6], मंदालस ध्रुव की माता।
जगपतनी वृज-बधू, कृष्ण बसि कीये विख्याता।
नरनारी हरि भक्त जो, मैं नांहीं बिसरत कदा।
हरि हृदै जिनकै रहै, तिन पद पराग चाहू सदा ॥८१

टीका

इंदव छंद जा जन की पद रैंन अभूषन, अंग करौ हरि है उर जाकै।
स्वाद निपुन्न महाकबि आदि, कहै श्रुति देव बडौ धर्म ताकै।
संत लयें घरि जात भये हरि, फेरत चादरि प्रेम सु वाकै।
साधन कौ परनाम न आदर, आप कही हम सू बड पाकै ॥७१

---

१ कपोत छलि। २ उच्छा। ३ जाया। ४. देवहू। ५ त्रय। ६ आकूती।

मोरधुज की टीका [मूल]

मनहर
मोरधुज तांमरधुज हंसधुज सिखरधुज,
नीलधुज ध्रामधुज रतिधुज गनि है।
ताकी रांणीं मगन मदालसा मुकति भई,
वैसे सुत च्यारि कोई जननी न जनि है।
हरिचंद सत त्रियलोक मैं सराहियत,
संग रुहितास मदनावती जु धंनि है।
सिबर कपोत बलि[1] रंतदेव उछ[2] वृति,
राघो जाके भूरि भाग जोया[3] जस भनि है ॥७९

छपै
इम मन वच क्रम रत राम सौं, जन राघो कथत कबीस ॥टे०
दीरघ सुध सुबाहु गरक, आसन जित गादी।
जाकै सत्रु न कोई, सत्रु मरदन सतवादी।
अति विगि विमन विक्रांत, जुगति जोगी उर्धरेता।
अलरक अंग है अजीत, सूर सर्वज्ञ ततवेता।
मात सुमगन मंदालसा, तात है तत्वनवीस।
इम मन वच क्रम रत रांम सूं, जन राघो कथत कबीस ॥८०
हरि हृदै जिनकै रहै, तिन पद पराग चाहूं सदा ॥टे०
प्रेय-व्रत जोगेसुर पृथु, श्रुतिदेव अंग पुनि।
परचेता मुचकंद सूत, सौनक प्रीक्षत सुनि।
[4]सत्यरूपा [5]त्रियसुता[6], मंदालस ध्रुव की माता।
जगपतनी वृज-वधू, कृष्ण बसि कीये विख्याता।
नरनारी हरि भक्त जो, मै नांहीं विसरत कदा।
हरि हृदै जिनकै रहै, तिन पद पराग चाहू सदा ॥८१

टीका

इंदव छंद
जा जन की पद रेंन अभूपन, अंग करौं हरि हैं उर जाकै।
स्वाद निपुन्न महाकवि आदि, कहै श्रुति देव बडौ धर्म ताकै।
संत लयें धरि जात भये हरि, फेरत चादरि प्रेम सु वाकै।
साधन कौं परनाम न आदर, आप कही हम सू बड पाकै ॥७१

---

१ कपोत छलि। २ उच्छा। ३ जाया। ४. देवहू। ५ त्रय। ६ आकूती।

मूल

छप्पै　चरन-कमल मकरंद कौं जनमांतर मांगत रहौं ॥८०
सति-बरत सगर मिथलेस भरथ हरिचंद रघुगण।
प्राचीन बर्ही इष्वाक भगीरथ, सिबर सुबरसण।
बालमीक दधीच बीभ्रवलि, सुरथ सुधन्वा।
रुक्मांगद रिभु भीस, अमूरति बैबस-मन्वा।
सिपर ताम्रधुज मोरधुज अलरक की महिमा कहौं।
चरन-कमल मकरंद कौं जनमांतर जाचत रहूं ॥८२

टीका

इंदव　धार न देह नहीं अपसोचहु साधन की पद रैंन सुहावै।
छंद　सत्यव्रतादि कथा जग जांनत ह्व बालमीक कथा मन भावै।
भीखम साखि भयं रिष नीलहि रांम चरित्र अदम्भ बनावै।
गावत ताहि सबै सुर नागर, कांन सुनेंत हियो भरि आवै ॥७२

दूजा बालमीक की टीका [मूल]

मनहर　पांडुन की भक्ति जिहाज रच कीनी जग,
छंद　बिप्रन हजार कोड़ि ज्यौं[1]पे नित नेम सौं।
कनक के थार रु कटोरे झारी कनक की
भोजन छपन भोग बीस दीन्हीं हेम सौं।
राजा करै टहल-महल चर चाई चोर[2]
बड़े बड़े ऋषि रिष बेद पढ़ैं प्रेम सौं।
राघो कहै जन बिन ज्यां मे जग पूरौ नांहि
साध बिन बस सब बाजै घुर-खेम सौं ॥८३

हुसाल　पंच-सुत पंच कर जोड़ि कही कृष्ण सूं,
छंद　देव सबिह भम भरी पूरौ।
बिप्र दस कोड़ि रिष राइ राजा घणा
जीमियो तऊ जग रह्यौ अधूरौ।
जब कृष्ण कृपाल ह्व कही जिम की तिम
भक्त भगवंत बिन ह्वै न पूरौ।

---

१ ज्यावें। २ चौर ढ़ौ चौर।

राम भजनीक राघो कहै सुपचतन,
बालमीक जीमतां बजहि तूरौ[1] ॥८४

मनहर छंद
गये है सकल बल डारि कुल राज तेज,
स्वामीजी पधारौ मम काज आजि जांनि कैं।
हस ज्यू हस्त बिग बस्त रूपी आयो द्वारि,
भोजन-छपन भरि थार धरचौ आंनि कैं।
अब अन तीवन र घृत दधि दूध भात,
अर्पि अबिनासीजी कौं ऐक कीये सांनि कैं।
राघो कहै राम धनि राखत है जन पन,
पाचौं ग्रास पच बेर बाज्यौ संख तांनि कै ॥८५
भूधर कहैत तोहि भाजि डारौ भाठिन सौं,
जन कै जीमत कन बाज्यौ क्यूं न पातकी।
देवजी दयाल ह्वै जे मेरौ कछू नांहीं दोष,
द्रौपदी कू आई भिन अंति देखि जातिकी।
बाजतौ असखि बेर भाव मैं परचौ है फेर,
नारि न निहारि देख्यौ साध सील सातकी।
राघो कहै संख नै सुधारि कही साहिब सूं,
मो कौं कित ठौर है जु आज्ञा मेरैं तातकी ॥८६

करन की टीका [मूल]

बासुर की आदि भयें रजनी कौ अंत जबै,
पढत जाचिग अब पहर करन कौ।
सवा भार कंचन क्रिया सूं देतौ निति प्रति,
जासूं होत प्रतिपाल द्रुबल बिप्रन कौ।
अरजन कौ रथ अवटायो जिन अहूठ पेंड,
जामें बठे कृष्ण देव नाइक नरन कौ।
राघो कहै रबि-सुत दाग्यौ हरि हाथन पं,
साधिगौ अबस दे कैं मांमलौ मरन कौ ॥८७

---

१. छजहि सूरौ।

मूल

छपै चरन-कमल मकरंद कौं, अमभांतर भोगत रहौं ॥८०
सति-व्रत सगर मिथलेस, भरथ हरिचंद रघुगण।
प्राचीन बही इष्वाक भगीरथ, सिवर सुधरसण।
बालमीक दधीच बौंम्हावलि, सुरथ सुधन्वा।
रुकमांगद रिषु अैल, अमूरति मैंबस-मन्वा।
सिधर ताम्रध्वज मोरध्वज अलरक की महिमां कहौं।
चरन-कमल मकरंद कौं, अमभांतर चाखत रहूं ॥८२

टीका

इंदव भार न देहु नहीं अपसोचहु साधन की पद रैंन सुहावे।
छंद सत्यव्रतादि कथा जग जानत हूँ वलमीक कथा मन भावे।
भीलन सामि भये रिष भीलहि रांम चरित्र अदुभ्भ बनावे।
गावत साहि सबे सुर नागर कांन सुनेंत हियो भरि आवे ॥७२

दूजा वाल्मीक की टीका [मूल]

मनहर पांडुन की भक्ति मिहाज रूप कीनों जग,
छंद विप्रन द्वादस कोड़ि ज्यों[1] पै जिति नैम सौं।
कमक के थार र कठोरो भारी कनक की
भोजन छप्पन-भोग दीस दीन्हौं हेम सौं।
राजा करै टहल-महल बर बांई ओर[2]
बडे बडे महारिष बेठ पदे प्रेम सौं।
रायो कहै कान बिन क्यो ये जग पूरो नांहि
साध बिन केसें संख बाजे सुख-क्षेम सौं ॥८३

इंदव पंड-सुत पच कर जोडि कहौ कृष्ण सूं
छंद देव संदेह मम करो दूरो।
विप्र दस कोड़ि रिष-राइ राजा घणां
जीमियां तऊ क्यू रह्यौ ऊरो।
जब कृष्ण कृपाल ह्वै कहौ जिम की तिम
भक्त भगवंत बिन हूँ न पूरो।

---
१ ज्यौंपे। २ वोर दो मोर।

राम भजनीक राघो कहै सुपचतन,
वालमीक जीमता वजहि तूरौ[1] ॥८४

मनहर छंद
गये हैं सकल बल डारि कुल राज तेज,
स्वामीजी पधारौ मम काज आजि जानि कै।
हस ज्यूं हस्त विग वस्त रूपी आयो द्वारि,
भोजन-छपन भरि थार धरचौ आंनि कै।
अब अन तीवन र घृत दधि दूध भात,
अपि अविनासीजी कौं ऐक कीये सांनि कै।
राघो कहै रांम धनि राखत है जन पन,
पाचौं ग्रास पच बेर बाज्यौ संख तांनि कै ॥८५
मूधर कहैत तोहि भाजि डारौ भाठिन सौं,
जन कै जीमत कन बाज्यौ क्यूं न पातकी।
देवजी दयाल ह्वै जे मेरौ कछू नांहीं दोष,
द्रौपदी कू आई भिन अति देखि जातिकी।
बाजतौ असखि बेर भाव मैं परचौ है फेर,
नारि न निहारि देख्यौ साध सील सातकी।
राघो कहै सख नैं सुधारि कही साहिब सूं,
मो कौं कित ठौर है जु आज्ञा मेटौं तातकी ॥८६

करन को टीका [मूल]

बासुर की आदि भयें रजनी कौ अंत जबै,
पढत जाचिग अब पहर करन कौ।
सवा भार कचन क्रिया सूं देतौ निति प्रति,
जासू होत प्रतिपाल द्रुबल बिप्रन कौ।
अरजन कौ रथ अवटायो जिन अहूठ पेंड,
जामैं बठै कृष्ण देव नाइक नरन कौ।
राघो कहै रवि-सुत दाग्यौ हरि हायन पै,
साधिगौ अबस दे कै मांमलौ मरन कौ ॥८७

---

१. छजहि सूरौ।

बलि बीझावली की टीका [मूल]

इंदव   माग बड़े बलि के ग्रहै बांवन, ग्रावत ही कोयो सबद उचारा।
छंद   राज गऊ धन धाम कन्या प्रभु, देउ करौ इनकौं ग्रंगीकारा।
भाव सौं भूमि दे पेंड ग्रहौंठक ता मधि ह्वं बिस्राम हमारा।
राघो त्रिलोक त्रिपेंड कीये जिन ग्राघ ग्रमाप बढ्यौ करतारा ।।८८

मनहर   बांध्यौ राजा बलि कसि इन्द्र सौं कीन्ही बिहसि
छंद   रामजी कहत हसि ग्रर्ध-पेंड ग्राप दे।
बोले बलि बींझावली धनि प्रभु कीन्ही भली,
मन की पजोई रती लीजै पेंड माप दे।
जै जै जगदीस कीन्हौं ग्रापनौं बतायौ बोल्हौ,
मेरो निज रूप भूप रहसो ग्रताप दे।
बलि के दरबार प्रतिहार प्रभु प्रानंनाथ
राघो जोरे हाथ यों जग्यासी ठाढो बाप दे ।।८६

हरिचंद की टीका [मूल]

लोकपाल सारे कुमि देवता तेतीस कोडि
ठाढे कर जोरि ह्वं के कही करतार सूं।
हरिचंद को देखि सत हल-चल हमारौ मत,
कीजीये इलाज प्रभु ग्राज माही बार सूं।
तब हरि कृपा करी सबं की दिलासा करी
नारद बुलाइ लीये बूझे है बिचार सूं।
राघो कही रामजी में रिष मिषि पुजी परि
हरिचंद छली बिस्वामित्र ग्रहंकार सूं ।।६०
राघो रिष बीमो रोइ मोहि तौ कठिन दोइ
मत तुम साहिब उत हूं दास रावरौ।
तब बोले बिष्णजी बिसाल नैन नाराइन
रिष मेरौ कीयो देखि हूं तौ नहि बावरौ।
भगतबछल मेरौ बिड़द गावं साध बेद
संत मोहि प्यारे जैसें मात पिता बावरौ।

राघो कहि राम हरिचंद नहीं हारै धर्म,
मेडन कौ भै न मानै स्यघ कौ ज्यू छावरो ॥६१[†]

टीका [मूल]

मनहर छंद

चाले वेग रिष विस्वामित्र बैठे वन आइ,
सूर भयो सूर-देव बाग खोदि डारयौ है।
माली जाइ कही हरिचद चढ़ि आयौ तब,
सूर भग्यौ गैल लग्यौ कहै अब मारयौ है।
दीखवे सौं रह्यौ रिष देखि वैठि गयो सीस,
नाइ करि कह्यौ मम चलौ यौं उचारयौ है।
सकलप लेहु सर्व राज हम देहु तीन,
लाख फिरि येहु दये सत नहीं हारयौ है ॥६२
खोसि लीयो घोरा आप नृप कौं पयादौ कीयौ,
काटा धूप लगै लोग सुनि और ल्याइये।
सर्व ही हमारे ये तौ ल्यावो तीन लाख हारो,
भूप रुहितास रांनी कासीपुरी आइये।
सीस घास लीयें ठाढ़े वेस्या कही नारि देहु,
नकटी बखानी कीस नांक काटि जाइये।
अगनि सुश्रमां रिष रांनी रुहितास लीये,
दीये ड्योढ़ लाख हीयौ फटै बिछुराइये ॥६३
मागत रुपईया डेढ़ लाख रिष राजा पासि,
बचन कौं तजो अजौं नहीं बेगि दीजिये।
अब देऊ झफड़ा सु डौम आयो ताही छिन,
अहट सभारौ हां जू तौ तौ गिनि लीजिये।
रानी रुहितास करै अगनि सुश्रमां सेव,
इंधन वुहारी लेय जल ल्याइ भीजिये।
सुत ल्यावै फल-फूल पूजन करन रिष,
येक दिनां चढ्यौ द्रुम अह काटि खीजिये ॥६४
वालां कही माता सूं सरप डस्यौ रुहितास,
रोवत गई है संग सुत जहां परयौ है।

[†]टिप्पणी . सम्वत् १८८६ की प्रति में इसके वाद के ६ मनहर छंद नहीं हैं।

देखि छाती फटी मैं उठाइ ग्याई मरहट,
सकरी बरैं¹ न मेह हले नहीं बरघौ है।
पूंवां सजि ग्रायो हरिचंद मांगै भूमि माझो,
हयो फारि चीर ग्रायो तब संकै डरघौ है।
गंगा में बहाइ ग्राइ ग्राश्रम मैं रात छिग,
चीस हार ल्याइ रांनी गरै मांझ धरघौ है ॥६५
कासी के राजा-घर वेस्यौ हार गर-मांझ,
मार धर बार-बार ल्यामे भूप पास ही।
माबो मरहट कही काटौ सिर सट फेरि,
चसै नहीं बढ झट-पट करौ मास ही।
सुनौं इक गाय ग्रसि बेहु टैस वाकै हाथ,
छेवें मम माथ बई माथ सेर बास ही।
बिरम्हा बिसन सिव गह्यौ कर मांगि बर
उर नहीं चाहि कलि करो मति ग्रास ही ॥६६
देवतांन भीमो इम सुर भयो वेव मस,
मैं हू बिस्वामित्र रिच बैठो बन मांहि जो।
ग्रगनि सुधर्मा धम मेंपका सो समराज
सत्ति भई बेस्यां पुनि कट्यौ नांक ताहि जो।
सुरपति ग्रप जांनौं चील हू रंभा कौं मांनौं,
कासी-नृप देव जानौं सर्व ही कौ ग्राहि जो।
गंगा पू उसठी बहि रहितास ग्रायो सही,
राज दयो महोराजा रांनी मुक्ति चाहि जो ॥६७

छपै   जै पर्वती-सुत जगतगुर, राघो डडवत निति नमो ॥६०
कबि हरि हरि-रत ग्रंतरीछ नहीं प्रभु सूं ग्रंतर।
चमस प्रबुध परबीए करहिं पुनि ध्यांन निरंतर।
कर भाजन पिपलाइन, द्रुमल रहै राति दिवस रत।
ग्रावहोत्र ग्रसंड नृपि नवम कोदक मत।
नव जोगेसुर नांव भणि मिटै सरम संकट समो।
जै जयती-सुत जगतगुर, राघो डंडवत निति नमो ॥६८

---
१ बैर।

नमो पंडु-सुत पंच, नमो परचंड पर-काजी।
अति क्षत्री अति साध, कृष्ण जिन सूं अति राजी।
नमो जुधिष्टर भूप रूप, धर्म सति के नाती।
नमो भींवभड़ पवन-सुत, पाप कर्मन की काती।
नमो धनंजय धनुष धर, सत्रुन सर सज्या-धरण।
नमो नकुल सहदेव कौं, जन राघो रोगन हरण ॥९९

रिष नारद नै निरभै कीये, प्राचीन बृह के पुत्र दस ॥टे०
कुवरन कौं कैलास, बताई निश्चल ठौरा।
महादेव मन जीत रहै, संग सीतल-गौरां।
बक्ता मगन महेस राज-रिष सनमुख श्रोता।
भक्ति-ग्यांन अतिहास, सार तत निरनै होता।
यौं चकेता प्रसिधि भये, जन राघो पीवत राम-रस।
रिष नारद नै निरभै कीये, प्राचीन बृहै के पुत्र दस ॥१००

अदृष्ट-चक्र इनके चले, रटि राघो षट चक्कवै ॥टे०
प्रथम बेगि धर्म जेठा, दुतीय बलिवंत[1] बलि बहरी।
धुध मारबि सियार, जास रजधांनी गहरी।
मानधाता अति बढ्यौं, प्रसिधि महा भयो पूरवा।
अजैपाल अब तपै, धारि उर भलै गुरदवा[2]।
उदै अस्त लौं राज धरि, करते न्याव हरि हक्कवै।
अदृष्ट-चक्र इनके चले, रटि राघो षट चक्कवै ॥१०१

इदव छंद काक-भुसड र मारकडे मुनि, जागिबलक कृपा क्रम जीते।
सेस सभु वुगदालिम लोमच, ध्यांन समाधिहि मैं जुग बीते।
खडांग दिलीप अजौं अजपाल, रिषभदेव अरिहंत उदोते।
राघो कहै चकवै षट ये[3] दस, रांम परांगमुख ते गये रीते ॥१०२

समुदाई टीका

इद्र अगन्नि गये सत देखन, स्यौर दयो तन काटि र मास[4]।
सुर्त्थ सुधन्वा सुदोष कियो दिज, सख लिखत्त भयो बपु नास।

---

१ छलिवत। २ गुरदेवा। ३ षोडस। ४ हस ध्रु पुत्र।

देह[1] दधीच दई सुरपतिहि, भर्त सु भागवतं प्रकासं।
बिप्र सुदर्सन है इतहासहि, देत तिया धन ग्रौर न वासं ॥७३

रुक्मांगद की टीका

बाग पहौपन म्राइ रह्यौ सुभ देवतिया नहि लैमहि म्राहीं।
बैगन कंटक पाव लग्यौ इक बैठि रही मुनि के नृप जांहीं।
बास कह्यौ ध्रुरगलोक पठाइत, ग्यारसि बास दयें सुख पांहीं।
ग्राम न जानत होत कहा ब्रत कालिह रही इकठी कबि नांही ॥७४
दौड फिरें इक लौडि बनिक्क हु मारि हुती मन लाइ न जागी।
भूपति के ढिंग ल्याइ दयो ब्रत बैठि बिमान सुरग्गहि भागी।
देखि प्रभाव हि भूप बिचारत या दिन ग्रन भखै स ग्रभागी।
यौ नर-नारि करै ब्रत जाबक जाइ पुरी सुरगापुर लागी ॥७५
ग्यारसि को ब्रत सत्य करयौं नृप बात सुनौ इक तास सुता की।
सेम पिता पुर म्राइ सुयबर मांगत ग्रंन सुण्या ग्रति पाकी।
देत नहीं हरि बासु र जांनत भाजि मरै गति ह्वं मन यांकी।
प्रांन तजे उन बेगि मिले प्रभु, भाषि कही पन रीति तिया की ॥७६

मोरध्वज की टीका

रोस भयो ग्रम ग्रर्जन के ग्रति कृष्ण सु जांनि दयो रस भारी।
है मम भक्त सु तोहि दिखावत बालक बृद्ध भये ब्रह्मचारी।
जाइ पहौंचत मोरधुजं गृह, बेगि कह्यौ नृप बात हमारी।
जाइ कही ग्रब सेव करू हरि बैठ हुयौ सुनि ग्रामि प्रजारी ॥७७
ऊठि चले रिस जाइ भई पद जाइ कही नृप दौरत ग्राये।
ग्राप दया करि ग्राहि कृपावत ग्राजि भलौ दिन ये फल पाये।
मोहि कहो स करौं ग्रबही वह बैन रसाल पिढं द्रिग भाये।
रोस गयो सुनि मोद भयो उर, पारिख सैन सु बैन सुनाये ॥७८
दैन सुने न करौ प्रभु करयौ हम जो तुम भावत सो मम भाई।
स्यंघ मिल्यौ इन बालक खावत मोहि भलौ कहियौ सुखदाई।
क्यूं करि छोड्उ भूपति को तन ग्राघ मिलै मम बात जनाई।
बोलि उठि तिय मैं ग्ररधंगनि पुत्र कहै मम दौं सुधि ग्राई ॥७९

---
[1] देहु।

बात सुनौ नृप गात तिया सुन, चीरहि भोरहि नाहि न भाखै।
सीस करौत धरचौ सु चिरचौ मुख, नीर ढरचौ द्रिग भीर न चाखै।
छोडि चले गहि पाव कहै इम, रोवत है बिन कामहि नाखै।
नैन लये भरि रूप धरचौ हरि, दूरि करचौ दुख है अभिलाखै।।८०
द्यौस कहा अति मोहि रिझाइहु, रीझि दिये बिन मोउ रसाल।
लेहु चह्यौ बर साटि न चूकत, सूकत है मुख देखि बिहाल।
भूप कहै तुम दीन-दयाल, करै कछु नून लखौ सु विसाल।
देहु यहै बर मागि सिताव, करौ मति पारिप यौं कलिकाल।।८१

अलरक की टीका

[†]मैं अलरक्क सु बात वखानत, ग्यान दये नहि जाइ बिषै है।
जन्महि आइ मदालस कै तन, सो ग्रभ वासहि नाहि पिषै है।
पीव कहे लघु छोडि गई वन काढि[1] लयो नृप त्रास दिषै है।
छाप उपाडि र बाचि सिलोकन, दौरि गयो दत देव नखै है।।८२

रंतदेव की टीका

देवसु रतकुले दुसकतहु,[‡] वृत्य अकासहि धारि लई है।
खात नहीं बिन दीन अभ्यागत, वास करै यह बात नई है।
ह्वै अठचालिस द्यौस मिली रिधि, ब्राह्मन शुद्र सुपाक दई है।
राम बिचारी चहू जनमैं हरि, देन लगे दुख देहु कही है।।८३

[मूल]

छपै **जन राघो निज नवधा भक्ति, करत मिटै जामरण मरण ।।९०**
श्रवण परीक्षत तरचौ सबद-धुनि सुख मुनि गावै।
चरण पलौट लक्ष आदि, अब गतिहि रिझावैं।

[†]सग सर्वात्मना त्याज्यौ, यदि त्यक्तु न शक्यते।
स एव सत्सु कर्त्तव्य, सत ससारभेषज ।।१
काम सर्वात्मना हेयो, यदि हातु ना शक्यते।
स कर्तव्यो मुमुक्षाय, सैव तस्याभिभैषज ।।२

[‡]सकूली मीता माग कन्या।

---

१. काढि।

भजन सुदिढ़ प्रहलाद, सु धनक[1] सुत ब्रह्मचारी।
दासातन हनुमंत, सखा पारथ परण धारी।
पृथु अर्चा बलिअर्पन महाज, श्रवन है गयो हरिसरण।
जन राघो निज नवधा भक्ति, करत मिटे जामरण मरण ॥१०३[1]

गोह भीलों को राजा सिंगवेर[2] (पुर) की टीका

गोह किरातन को पति रामहि आइ मिल्यौ बनवास सुन्यौ है।
राज करौ यह मौ सुख यौ प्रभु साज तज्यौ पितु बैन सुन्यौ है।
दीरघ दुक्ख बिछोह बढ़े दृग लोहु चल्यौ फिर सीस धुन्यौ है।
नांक न खोलत राम बिनां मुख और न देखत प्रेम पुन्यौ है ॥८४

संवत चौदह बीति गये हरि आय कहै अब रामहि देखौ।
मोनस नांहि न राम कहां अब नाव मिल कहि मोहि परेखौ।
अंग पिछानि भये पहिचानि जिमे मनु जांनि नहीं सुख लेखौ।
प्रीति क रीति कही नहिं जात हिये अकुलात सु प्रेम बसेषौ ॥८५

प्रहलादजी को मूल

मनहर छंद

धनि प्रहलाद कीन्हीं बाद बिषमां के काज
जाहू तन प्रान में न छाडू टेक रांम की।
अगनि तपायो तन जिय माहीं एक पन,
हरि बिन जाहु जरि देही कौंन काम की।
देख्यौ कसि जल-थल ऊपरयौ भजन बल
रटत अखंड सरनाई स्याम की।
असुर का कसर पुरषप को सरूप धरयौ
राघो कहै जीत्यो जन जाहु धर धांम की ॥८८

[टीका]

इंदव छंद

संकर आदि डरे न इसो रिषि पासि न आवत श्री हु डरी है।
भेज दयो प्रहलाद प्रभु ढिग आइ पगौं परनाम करी है।

---

१ धनूर। २ सिगबेरपु।

---

[1] यहां संख्या में ६ का फरक पड़ने का कारण ग्रन्थ प्रति मे ९१ से ९७ तक के मनहर छंदों का न होना है।

गोद उठाइ दयो सिर पै कर, देखि दया उर येह धरी है।
दूरि करौ दुख या जग कौ सब, मो अब द्यौ तव माय[1] बुरो है ॥८६

अक्रूरजो को टोका

अक्रूर चले मथुरा पुर तै, द्रिग नीर बहै हरि कौ कब देखौं।
सौंग मनावत देखन भावत, लोटत है लखि चिन्ह बसेखौं।
बदन भक्ति प्रवीन महा सुख, देव कही यह जीवन भेखौ।
राम रु कृष्ण मिले सु फले मन, स्वारथ लाख जनमहि लेखौं ॥८७

प्रीक्षत को टोका

प्रीक्षत पीवन श्रुति कथामृत, बाढत है निति कोटि पियासा।
जोगिन कै उर ध्यान न आवत, सो हरि देखि मया[2] ग्रभवासा।
भूप कहै सुखदेव सुनौं यह, चित्त कथा नही तक्षक त्रासा।
पारिष ल्यौ मम बुद्धि रही पगि, जाहु जबै थमि होत उदासा ॥८८

सुकदेवजी को टोका

होत जनम चले भजि आरन, ब्यास पिता हि सभाष न दीयौ।
कान परे सुस-लोक दसमहि, बुद्धि हरी सुनि भागुत लीयौ।
जोगुन रूप करम्म करे हरि, भूप सभा कहिनै भय हीयौ।
बूझत सत उन्हैं करि उत्तर, वाचित है सु जबै झर कीयौ ॥८९

मूल

छपै **हरि बिमुखन दड देत है, जन राघो पाइक[3] रांम के ॥**
नमो नव-गृह देव, आदि अनुचर हरिजी के।
पीडत आज्ञा पाई, रांम अनुग्र तै नीके।
नमो बृहस्पति बुद्ध, नमो सनि सोम सहाइक।
नमो भासकर सुकर, नमो मगल बरदाइक।
नमो राह धड-केत, सिर आज्ञाकारी स्याम के।
हरि बिमुखन दड देत है, जन राघो पाइक राम के ॥९९

---

१ माया। २. उत्तरा। ३ पाई।

मथन सुबुद्धि प्रहलाद, सु पसक[1] सुत मदनकारी।
दासातन हनुमत, सखा पारथ पग धारी।
पृथु अर्चा बलिप्पंड ब्रह्म ड, श्रवस बे गयो हरिचरण।
जन राघो मिश्र नवधा भक्ति, करत मिट आमण मरण ॥१०३[1]

गोह भीलां को राजा सिंगबेर[2] (पुर) की टीका

गोह किरातन को पति रामहि आइ मिल्यौ बनवास सुन्यौ है।
राज करौ यह मौ सुख द्यौ प्रभु साज तज्यौ पितु बैन सुन्यौ है।
दीरघ दुक्ख बिछोह बहै दृग सोहु चल्यौ फिर सीस धुन्यौ है।
आंख न खोलत राम बिनां मुख और न देखत प्रेम पुन्यौ है ॥८४
अवत चौदह बीति गये हरि, आय कहै चर रामहि देखौ।
मानत नांहि न राम कह्यौ अब नाथ मिल कहि माहि परेखौ।
अग पिछानि लये पहिचानि जिये मनु जानि मही सुख लेखौ।
प्रीति क रीति कही नहिं जात हिये अनुसात सु प्रेम बसेपौ ॥८५

प्रह्लादजी को मूल

मनहर छंद
धनि प्रहलाद कीन्हौं बाद बिषमां के काज
काहू तन आज मैं न छाड़ू टेक राम की।
अगनि तपायौ तन जिय मांहीं एक पन,
हरि बिन काहु अरि देही कौन काम की।
देख्यौ कसि जल-थल ऊबरयौ भजन बल
रटत अखंड सरनाई सत्य स्याम की।
असुर का कसर नृस्यंघ को सरूप धरयौ
राघो कहै लीयौ जन बांह बर धांम की ॥१८

[टीका]

इंदव छंद
संकर आदि डरे न हसो रिसि पासि न आवत श्री हु डरी है।
भेज दयो प्रहलाद प्रभु ढिग आइ पगौं परनाम करी है।

---

१ प्रकूर। २ शृंगबेरपु।

[1] पृष्ठ संख्या में ६ का फरक पड़ने का कारण अन्य प्रति में ९२ से ९७ तक के मनहर छंदों का न होना है।

मन बच क्रम राघो कहै, प्रेम सहित सुणि है करण।
ये अष्टादस पुराण, जे जगत मांहि तारण तिरण॥१०३
ये अष्टादस समृति भली, तिन सुनत नसै अज्ञांन॥टे०
बैष्णवी, मनुसमृति†, आत्री, जामी, हारतिक‡।
आग्री, जागिबलकि, सांनी, श्री-नांमी, सांमृतक।
कात्याइन, गौतमी, बसिष्ठी, दाखी, साखिल।
आसतापि, सुरगुरी, परासुर, कृत मुनि बहुफल।
आसा पासि उदारमति, हरत परत साधन सघनान[1]।
ये अष्टादस समृति भली, तिन सुनत नसै अज्ञांन॥१०४
राम सचिव नाम ही लीये, अनन्य भक्ति कौं पाइ है॥टे०
सुमत पुनि जैयंत सृष्ट, बिजई र सुचिर मति।
राष्ट्रबरधन चतुर, सुराष्ट्र मैं बुधि अति गति।
असोकबरज सुख-क्षेम, सदा रघुपति मन भाइक।
परम धरम-पालक, प्रजा कौं सर्ब सुखदाइक।
राघो अैसे प्रसन्न कर, सेवति मन बच काइ है।
राम सचिव नांम हि लीये, अनन्य भक्ति कौं पाइ है॥१०५
पद्म अठारह जूथपाल, तिनके सुमरू नांम॥
सुग्रीव, बालि, अगद, केसरी बच्छ हनुमांनां।
उलका, दधिमुख, दुब्यंद, बहुत पौरष जबुबांना।
सुभट सुषेण, मयंद, नील, नल, कुंमद, दरीमुख।
गधमादन, गवाक्ष, पणस, सरभांग व हरिरुख।
भीर परें भाजै नहीं, रघुनन्दन कै काम।
पद्म अठारह जूथपाल, तिनके सुमरूं नाम॥१०६
नाग अष्ट-कुल सुचित ह्वै, राति-दिवस हरि कौ भजै॥
इलापत्र, मुखसहंस, अनंतकीरति निति गावैं।
सकु, पद्म, बासुकी, हृदै मैं तालो लावैं।

---

१ स ध्यान।

---

†स्वामूभर।
‡जम।

भगवत आज्ञा मैं रहैं ये नक्षत्र अठ्ठावीस ॥
अस्वनी, भरनी कृतका, रोहुणी मृगसर, आद्रा।
पुनरबसु अरु पुक्ष, असलेखा मघा सु साद्रा।
पुरबा उतरा-फाल्गुनी पुनि, हस्त, सु चित्रा।
स्वात, बिसाषा, अनुराधा, जेष्टा अतिमित्रा।
मूल, पूरबाषाढ र उतराषाढ, अभीच हृव।
श्रवन धनिष्टा, सतभिषा पूरबा-भाद्रपद।
उतरा-भाद्रपद रेवती सर्व राघो सुमरें ईस।
भगवत आज्ञा मैं रहैं ये नक्षत्र अठ्ठावीस ॥१००

जन राघो रचना राम की, ते त प्रणऊं पक्ष गुर ॥टे०
गरुडासरण गोविंद अरु के अरण[1]-सारथी।
हंस बसा[2] सारस हेत हमाइ प्रारथी।
चाहुण जस्म चकोर सुवा लगि हरि हरि करि हैं।
मोर कठ-कोकिला, पीव पीव चात्रिक ठरि हैं।
काक-भुसंड रटि नीम निधि अलतटांग उपगार उर।
जन राघव रचना राम की ये ते प्रणऊं पंक्ष गुर ॥१०१

रांम कृपा राघो कहैं इतने पसुपसी प्रवा ॥टे०
कांमधुघा नवनी कामिना पूरण करि हैं।
कपिला बड़ी कृपाल सुरह्[3] मांगुल सिर धरि हैं।
अरापति गज इन्द्र, नदीसुर सिव को बाहन।
गौरी-बाहन स्यंघ रांम बिमुखन डरपावन।
मृग चंद बाहन भलो भावित के उत्तीमवा।
रांम कृपा राघो कहैं इतने पसुपती प्रवा ॥१०२

ये अठ्ठारस पुरांण, जे जगत मांहि तारण तिरण ॥टे०
बिष्णु भागवत मींन बराह कूरम बांवन धर।
सिव सकंद लिंग पदम भवक्ष ब्रेवरत कथापर।
ब्रह्म मारबी अगनि गरुड़ मारकंड ब्रह्म डा।
धरम थापि अघरम मारि करि है सतखंडा।

---
[1] अरुण। [2] बरता। [3] सुरह्।

मन बच क्रम राघो कहै, प्रेम सहित सुणि है करण।
ये अष्टादस पुराण, जे जगत माहि तारण तिरण ॥१०३
ये अष्टादस समृति भली, तिन सुनत नसै अज्ञांन ॥टे०
वैष्णवी, मनुसमृति†, आत्री, जामी, हारतिक‡।
आग्री, जागिवलकि, सानी, श्री-नांमी, साम्रतक।
कात्याइन, गौतमी, वसिष्ठी, दाखी, साखिल।
आसतापि, सुरगुरी, परासुर, कृत मुनि वहुफल।
आसा पासि उदारमति, हरत परत साधन सधनांन[1]।
ये अष्टादस समृति भली, तिन सुनत नसै अज्ञांन ॥१०४
राम सचिव नाम ही लीये, अनन्य भक्ति कौं पाइ है ॥टे०
सुमत पुनि जैयंत सृष्ट, बिजई र सुचिर मति।
राष्ट्रबरधन चतुर, सुराष्ट्र मैं बुधि अति गति।
असोकबरज सुख-क्षेम, सदा रुघुपति मन भाइक।
परम धरम-पालक, प्रजा कौं सर्ब सुखदाइक।
राघो असे प्रसन कर, सेवति मन बच काइ है।
रांम सचिव नांम हि लीये, अनन्य भक्ति कौं पाइ है ॥१०५
पद्म अठारह जूथपाल, तिनके सुमरूं नांम ॥
सुग्रीव, बालि, अंगद, केसरी बच्छ हनुमांना।
उलका, दधिमुख, दुब्यद, बहुत पौरष जबुबांना।
सुभट सुषेण, मयद, नींल, नल, कुमद, दरीमुख।
गधमादन, गवाक्ष, पणस, सरभांग व हरिरुख।
भीर परें भाजै नहीं, रुघनन्दन कै कांम।
पद्म अठारह जूथपाल, तिनके सुमरूं नांम ॥१०६
नाग अष्ट-कुल सुचित ह्वै, राति-दिवस हरि कौ भजै ॥
इलापत्र, मुखसहंस, अनंतकीरति निति गावै।
सकु, पद्म, बासुकी, हृदै मै तालो लावै।

१ स ध्यांन।

†स्वामूमर।
‡जम।

प्रभु कमल हरि प्रजित, कवे प्राइस न निवारे।
तक्षक, करकोटक, सीस परि सेवा धारे।
जन राघो रत राम सौं, मन की आसा सब तजैं।
नाग अष्टकुल सुचित ह्वं, राति-दिवस हरि कौं भजैं ॥१०७

परजन्नि वृद्ध बृज गोप के, नव पुत्र नंद कौं प्रादि दे ॥
सुठि सुनंद, अभिनन्द, पुनै उपनंद सु प्रातुर।
धरानन्द ध्रुवनंद, परम सत-गुन के प्रातुर।
धर्मा, कर्मानंद, करम काटन अभिनंदन।
गो-बच्छन के वृन्द, गोपिका हरि रंग रंजन।
कुल-मध्य कृष्ण सु अवतरे, राघव ममत मुरारि दे।
परजन्नि वृद्ध बृज गोप के, नव पुत्र नंद कौं प्रादि दे ॥१०८

बृज के नर-नारी भक्त सब धीरज सब जांचि हूं ॥
नंद जसोदा, कृष्ण, धरा धूर्नंद, कीरति वा।
मधु-मंगल, बृखभान-कुंवरि सहचरि विहरत वा।
श्रीदामां पुनि भोज, सुबल, अरजुन सुबाहु गन।
व्यास-बृन्द बहुतानि स्याम कौं संग रमांवन[1]।
राघो मन बच काय करि घोष निवासनि राचि हूं।
बृज के नर-नारी भगत, सब धीरज सब जांचि हूं ॥१०६

बन-धाम संगि श्री कृष्ण के, अनुग सुचित रहबो करें ॥दे०
चंद्रहास मधुमरत व रक्तक, पत्रक जेते।
मधुकंठो, पुनिसास रसाल, सुपत्रो तेते।
प्रेमकंद संदानि सारदा, बकुल कुसलकर।
पयद सुद्ध मकरंद, प्रीति सू सेवत गिरधर।
राघो समयो देखि करि, चतुर दच्छता आगैं धरै।
बन-धाम संग श्री कृष्ण के अनुग सुचित रहबो करें ॥११०

सपत-दीप सातू समुद्र, भक्त तिते सिर-मोर ॥दे०
जंबू खार-समंद पलक्ष चहुं फैर ईष रस।
सालमिली सर मधु सुर्गों कुस घृत देव वस।

[1] रामा।

क्रौंच पासि सर दुग्ध, साक दधि को नृमलसर।
पहुकर सागर सुधा, पार सोहै कचन-धर।
परबत लोका-लोक मै, बिटवोक चहुवोर।
सपत-दीप सातू समुद्र, भक्त तिते सिर-मौर ॥१११
जबुदीप नवखड के, सेवक सेव्यन कूं भजूं ॥टे०
बीच इलाव्रत राज, सेस सिव अनुग सु जांनय।
भद्रा हयग्रीव भद्रश्रव, हरिबर नृस्यघ प्रहलादय।
किं पुरसुरांम हनुमत, भरथ नारांइन नारद।
केतमाल श्री कांम रभिक, मछ मनुहु बिसारद।
हिरन्यषड कच्छ अरजु मां, कुरु बराह पृथी सजूं।
जबुदीप नवखड के, सेवक सेबिन कौं भजूं ॥११२
राघो ततक्षरण तीहि सभा, हरि फेरचो नारद गुनी ॥
राति-दिवस उनमन रहै, हरि ही कूं देखैं।
टगा-टगी धुनि ध्यान, पलक नहीं लगै निमेखैं।
जिनकी उलटी चाल, काल-जित कूरम अंगी।
भर्म कर्म सूं रहत सदा, अबगति के सगी।
स्वेतदीप मधि सत-पुरष, सदा नृबर्त निश्चल मुनी।
राघो ततक्षरण तीहिं सभा, हरि फेरचौ नारद गुनी ॥११३

टीका

इदव छद
रूप उपासिक स्वेतहि[1] बासिक, नारद देखन कौ चलि आये।
नैन निहारत मो मति पागत, सैन करी हरि जाहु फिराये।
कुठ गये दुख पाइ कही हरि, साथ लये फिरिकै वतलाये।
ताल पिख्यौ खग ध्यान रह्यौ लगि, बूझत है रिष राम जनाये ॥६०
संबत्सहंस बदीत भये उर, भाव फल्यौ न नही जल पीवै।
स्वाद लगै वह खावत पीवत, नाव बिना पल येक न जीवैं।
पाइ दयो जल नाखि दयो उन, फेरि करचौ उसही भरि लीवै।
देखि खुले चक्षुदे परदक्षरण, भाव भयो खग सेव सु कोवै ॥६१
दीप चलौ अब भाव भलौ उन, जाइ रु देखत वै प्रभु गावै।
आवत हौ जन आरति ह्वै गइ, प्रान तजे रु तिया फिर आवै।

---
१. स्वेतह।

वाहि कह्यौ समयौ म परी घर, स्वास गये घसिमा मन भावै।
यौं सुत मादिक माइ परे सम देखि सम्बोपन फेरि जिवावै॥११२

च्यारि सम्प्रदा किगति वरनन   मूल

छपै   ये च्यारि महत चकवै रचे, जन राघो सब कौं प्रेह॥टे०
मध्वाचारय मूल, कलपतर कला-बिचारी।
विष्णुस्वामी बिरछ-पोष, अमृतरस सर मो भारी।
रांमांनुज निहकांम, रांम पद पारस परसे।
नीबादित निधि नृपि, चतुर चिंतामणि बरसे।
बिधि बिधि सुत सिव सक्ति सौं, भक्ति उथापी पेह।
यह च्यारि महत चकवै रचे, जन राघो सब कौं प्रेह॥११४
राघो रटि गुण होत गमि, भक्ति काम भूपरि भली॥टे०
इम सिव बिरंचि लक्ष्मी सनकादिक येते सब के परम गुर।
अब इनके सिष सो भक्ती पुज मणि,कलिमल काटण धर्मधुर।
महादेव को विष्णु-स्वांमि-मत,पुनि बिरंचि को मध्वाचारिय।
नींबादित के सनकादिक मत, रांमांनुज के रमानु मारिज।
पधति प्रणाली प्रणम्य इम, सुध संप्रदा यौं चली।
राघो रटि गुण होत गमि भक्ति काम भू-परि भली॥११५

अथ रांमांनुज संप्रदा वरनन

महाविष्णु तें विष्णु, विष्णु कै लक्ष प्ररमंगी।
चरण पलोटैं निति सदा सर्वदा रहैं संगी।
ता सिष बिष्वक्सेन सपुन भय[१] भक्ति चलाई।
सठकोप पुनि बोपदेव, हरि सू स्यौ लाई।
मंगलमुनि श्रीनाथ गुरु, पुंडरीकाक्ष धर्म की धुजा।
रांम-मिम[२] मथ परांकुस जांमुन-मुनि रांमांनुजा॥११६
इम रमा पधति परताप रहणि रांमानुज पाई।
रांम-रीति परतीति, सबनि कौं भीति बिठाई।
उपजे सिष सिरदार बहुतरि भये उजागर।
ग्यांन गिर के पुंज सील गुमणं के सागर।

१ पुत्र। २ मिश्र।

रामानुज निज तत[1] कथ्यौ, नृगुण त्रिवृति निरबान पद।
जन राघो रत राम सू, ज्यौं दत सगति मुक्ति जद ॥११७

टीका

मत- राम अनुज्जु सु है लखमन्नहि, तास सरूप यहै उर आई।
गयंद मत्र दयो गुर अतर राखन, जाप करें हरि दीन्ह दिखाई।
छंद आइ दया सबही प्रभु पावहि, गोपुर पै चढि टेरि सुनाई।
जागि परे तिन सीखि लयो वह, भैतरि मुक्ति भये सिधि पाई ॥९३
जात भये जगनाथहि देखन, जान असोच पुजारि उठाये।
साथि हजारन लै सिष सेवत, पूजन विजन भाव दिखाये।
श्री जगनाथ कहै वह भावत, प्रीति खुसी सब और बहाये।
बात न मानत वैसहि ठानत, आगम और निगम सुनाये ॥९४
जब्बर सतहि जोर न चालत, सौक कही फिर खेल पिखायौ।
बाहन सू कहि जाइ धरौ इन, ले सब कौं धरि द्राविड आयौ।
आखि खुली जब देसहि देखत, गोपि मतौ प्रभु कौ किन पायौ।
पूजन[2] वैहि करै अजहू निति, रीझत भावहि और न भायौ ॥९५

मूल

छपै **सत च्यारि द्रिगपाल, चहु भोमि भक्ति चापें भलै॥**
श्रुति-धामा श्रुति-वेद, पराजित पद्दकर जानू।
श्रुति-प्रज्ञा श्रुति-उदधि, ऋषभ गज बावन मानूं।
रामानुज गुर-भ्रात, प्रगट आनद के दाता।
सनकादिक सम ज्ञान, सक्र सधिता सु राता।
वुधि उदार इद्रा पधित, सत्रु चलायें ना चलै।
सत च्यारि द्रिगपाल चहु, भोमि भक्ति चापें भलै ॥११८
रामानुज जा-मात की, बात सुनत हरि भक्ति ह्वै ॥टे०
सत रूप सब कोइ, चल्यौ पाणीं मै आवै।
दग्ध कीयौ ज्यू भ्रात, कुटब दल देइ बुलावै।
भू-सुर करी गलानि, सुरग सुर लीये बुलाई।
देखे जीमत सबनि, जात नहीं दिई दिखाई।

---
१ नितन। २ पूजन।

वाहि कहौं समझौ न परी घर, स्वाद गये चसिया मन भावै।
यौ सुत मानिक भाइ परे सब देखि सचौपन फेरि जिवावै ॥६२

च्यारि सम्प्रदा बिगति बरनन मूल

छप्पै ये च्यारि महत चकवै रचे धम राघो सब कौं प्रेह ध्रुटे०
मध्वाचारय मूल, कलपतर कला-बिचारी।
बिष्णुस्वामी बिस्व-पोष, अमृतरस सर यो भारी।
रामानुज निहू काम, राम पद पारस परसे।
नींबादित निधि नृपि, चतुर चिंतामणि बरसे।
बिधि बिधि सुत सिव सक्ति सौं, भक्ति उदापी मेह।
यह च्यारि महत चकवै रचे, जग राघो सब कौं प्रेह ॥११४
राघो रहि गुरण होत गमि, भक्ति काज भूपरि भमी ध्रुटे०
इम सिव बिरंचि लछमी सनकादिक, येते सब के परम गुर।
अब इनके सिष सो भक्ती पुंज भरिए कलिमल काटरण धर्मधुर।
महादेव को बिष्णु-स्वामि-मत,पुनि बिरंचि को मध्वाचारिय।
नींबादित कै सनकादिक मत, रामानुज कै रमारु मारिज।
पद्धति प्ररणाली प्ररणम्य इम, सुच संप्रदा यौं धमी।
राघो रहि गुरण होत गमि, भक्ति काज भू-परि भमी ॥११५

अथ रामानुज संप्रदा बरनन

महाबिष्णु तैं बिष्णु, बिष्णु के भक्त अरधंगी।
चरण पलोटै निसि सदा सर्वदा रहै सगी।
ता सिष बिष्वकसेन सपुन मव[1] भक्ति बसाई।
सठकोप पुनि बोपदेव हरि सू ल्यौ लाई।
मंगममुनि श्रीनाथ सुठ पुंडरीकाक्ष धर्म की धुजा।
राम-मिश्र[2] अब परांकुस जामुन-मुनि रामानुजा ॥११६
इम रमा पधति परताप, रहरिण रामानुज पाई।
राम-रीति परतीति सबनि कौं नीति बिठाई।
उपजे सिष सिरदार बहत्तरि भये उजागर।
ज्ञान-गिर के पुंज, सील गुनरणं के सागर।

---

१ मुव। २ मिम।

सिष पट तारयौ सुर धुनो, गुर मजन करत टेरयौ मधर।
जन राघो राखे रामजी, जन के पग जल तें अधर ॥१२०

टीका

इंदव छंद
सत रहै बहु देव धुनि तटि, है गुर-भक्त जुदौ न रहावै।
जात गुरु परदक्षरण देवन, मो मति छाडहु गग वतावै।
कूप करै सव न्हावन धोवन, गग गुरू मनि ध्यान करावै।
दे परदक्षरण आत भये जन, पाइ सवै दुख साध सुनावै ॥१०१
जानि चले सिष लै करि गगहि, धारहि पैठि अगोछ मगायौ।
सोच करै नहि पाव धरै जब, गगहि बोलि उपाइ बतायौ।
अबुज-पत्रनि पाव धरे, अधरे चलि जाइ तबै पकरायौ।
भीर हुती तटि बाहरि आवत, पाइ परे सबही गुन गायौ ॥१०२

[मूल]

छपै
इम रामानुज के पाटि, पटतर देवाचारिय।
देवाचारिय कै दिप्यौ, हस हरियानद आरिय।
हरियान्द करि हेत, राघवानंद निवाजे।
ताकै रामानद महत, महिपुर मै बाजे।
अब राघौ रामानद कै है, अनतानद सिष बडौ।
येकादस सिष और है, आदिपधित अनुक्रम पढ़ौ ॥१२१
इम रामानद प्रताप तें, इतनें दिग द्वादस महत ॥टे०
अनतानद, कबीर, सुखानद, सुख मैं भूलै।
सुमरि सुरसुरानद, रांम, रैंदास न भूलै।
धना, सेन, पद्मावति, पीपा पुनि नरहरदासा।
भावानद, सुरसुरी, कीयौ हरि घर मै बासां।
परमार्थ कौं अवतरे, राघो मिलि राम रहत।
इम रामांनद प्रताप तें, इतने दिग द्वादस महत ॥१२२

घनाक्षरी छंद
रामानद राम काम सावधान आठौ जाम,
कायागढ़ करि तमाम जीत्यौ मन घेरि कै।
जाति-पाति ऊच-नीच मेटिकै अकाल-मीच,
सार बस्त सार गहि लीन्हौं हरि हेरि कै।

सालाचार्य सक्ष मगन राघो जानें पंथ हू ।
रामानुज जा-मात को बात सुनत हरि भक्ति ह्व ॥११६

टीका

मत　राम मनुज्जहू श्रीपति की सब बात सुनी जब वचन मानें ।
गयन्द　श्रीगुन प्रीति करी कुल वचन, रीति बनें न नहीं घटि जानें ।
द द　साथ सरूप वह्यौ सब मानस ल्याइ धरां सु मनाइ विमानें ।
लै सटि जात बजावत गावत, दागत रोवत यौ सुख मानें । ९६
ग्यौतत विप्र महोच्छव मैं उनमांनि लियौ फिरि पावत मांहीं ।
ह्व इक ठौर कहै सब कोहु त बोलि उठे सब ह्यौ सब मांहीं ।
जीमत ना हम जाति न जानत मत भली धरि मांनि द दांहीं ।
पचन की सुनि बातहि सोचत पूछन को गुर पै चलि जांहीं ॥९७
राम मनुज्जहि शोक दई मम विप्र न जीमत बात जनाई ।
आप कही परभाव न जानत जानत है सुर पावत भाई ।
दरसत ही सुर भाइ गये ढिग पचन को भुज क्यारि दिखाई ।
जीमन यौ हम स्वास न कायहु हासि करा जब ये फिरि जाई ॥९८
देवन देखि प्रणाम करी परि, आज दया करि मो बड़ कीन्हौं ।
भोजन पाइ गये नभ मारग विप्रन मैं किलहू नहिं चीन्हौ ।
पाइ प्रगट[1] सराहत है सुर साधुन को पर भावहि भीन्हौ ।
जात भयो अभिमान गये परि लाज न ये किएण्का सुनि[1] लीन्हो ॥९९
पाइ परे विनतीहु करें मम, दीन भरै हम चूक हि छांडौ ।
दास कहै तुमरो उपगार उधार भयो मम याद न मांडौ ।
भक्ति धरौ उर दास करो हम है चित मैं मति हानि न भांडौ ।
दे उपदेश दिय सब कौ शिष गाढ़ि दई ममता तिरए रांडौ ॥१००

[मूल]

छप्पै　अब राघो राखे रामजी, जन के पन कस ते अपर ॥टेक
इक श्रीसम्प्रदा महंत लिपम गुरगुरी दिखाई ।
इनही कहिये कांग पाव जिन घोरे जाई ।
पूछो प्रश्नों बैठ धार यह धारंभ कारहीं ।
घट-घट सो घटि मोजि आप उन बाहन दीन्हों ।

1 पुनि ।

सिप पट तारयौ सुर धुनी, गुर मंजन करत टेरयौ मधर।
जन राघो राखे रामजी, जन के पग जल तैं अधर ॥१२०

टीका

इंदव छंद
सत रहै वहु देव धुनि तटि, है गुर-भक्त जुदौ न रहावै।
जात गुरु परदक्षरण देवन, मो मति छाडहु गग वतावै।
कूप करै सव न्हावन धोवन, गग गुरू मनि ध्यान करावै।
दे परदक्षरण आत भये जन, पाइ सबै दुख साव सुनावै ॥१०१
जानि चले सिप लै करि गगहि, धारहि पैठि अगोछ मगायौ।
सोच करै नहि पाव धरै जव, गगहि बोलि उपाइ वतायौ।
अवुज-पत्रनि पाव धरे, अघरे चलि जाइ तबै पकरायौ।
भीग हुती तटि वाहरि आवत, पाइ परे सवही गुन गायौ ॥१०२

[मूल]

छपै
इम रामानुज के पाटि, पटतर देवाचारिय।
देवाचारिय कै दिप्यौ, हस हरियानद आरिय।
हरियान्द करि हेत, राघवानद निवाजे।
ताकै रामानद महत, महिपुर मैं बाजे।
अब राघौ रामानद कै है, अनतानंद सिष बडौ।
येकादस सिष और है, आदिपधित अनुक्रम पढौ ॥१२१
इम रामानद प्रताप तैं, इतनें दिग द्वादस महत ॥टे०
अनतानद, कबीर, सुखानंद, सुख मैं भूलै।
सुमरि सुरसुरानद, राम, रैंदास न मूलै।
धना, सेन, पद्मावति, पीपा पुनि नरहरदासा।
भावानद, सुरसुरी, कीयौ हरि घर मैं बासा।
परमार्थ कौं अवतरे, राघो मिलि रांम रहत।
इम रामानद प्रताप तैं, इतने दिग द्वादस महत ॥१२२

घनाक्षरी छंद
रामानद रांम काम सावधांन आठौ जांम,
कायागढ करि तमाम जीत्यौ मन घेरि कै।
जाति-पाति ऊच-नीच मेटिकै अकाल-मीच,
सार बस्त सार गहि लीन्हौं हरि हेरि कै।

ऊपजे सपूत सिष द्वादस भुमी में दीप,
 चंदन सु चंदन कपूर जैसे केरि के।
राघो कहै पच पारा पापिके भगत राज
 पूरौ गुर पूरौ साख सिर तपै सुमेर के ॥१२३
स्वामी रांमानंदजी के आनंद के दव सिष
 तहां बस दीरघ अनंतानंद पाट कौ।
मन वच क्रम धर्म धारयौ सेवा आप[1] पग
 कांम क्रोध जोत्यौ मन नृपम लिराट कौ।
आद्रेम की रीति अति प्रीति परमेसुर सूं
 गुर क्यौं पहुंच्यौ पुर शांमी वाही घाट कौ।
राघो कहै राति दिन रांम न बिसारयौ छिन
 तारिक त्रिलोक-मधि बरण विराट कौ ॥१२४

कबीरजी कौ मूल

छपै अथाह थाह पाऊं नहीं, क्यौं जस कहूं कबीर कौ॥
 श्रीरांमानंद कौ सिष जाति जग कहै जुलाही।
 कासी करि बिसरांम सोयो हरि भक्ति सु लाही।
 हिंदू तुरक प्रमोधि कीये अज्ञानी तें ज्ञांनी।
 सबद रमैंणी साखि सत्य सगला करि मांनी।
 प्रमानंद प्रभु कारनें सुख सब तज्यौ सरीर कौं।
 अथाह थाह पाऊं नहीं क्यौं जस कहूं कबीर कौ ॥१२५

मनहर भरम करम तजि अपसे गुर रांमानंद
छंद उपज्यौ आनंद क्रम जग्यौ यौं कबीर कौं।
 कांम क्रोध लोभ मोह मारिकै बजायो लोह,
 सूर-बीर समर्थ भरोसौ तेम तीर कौ।
 साखी सबदी ग्रंथ रमैंणी पद प्रगट है
 सोहै सबही कंठि हार जैसे हीर कौ।
 राघो कहै रांम जपि जगत उधारयो जिन
 माया-मधि मोख भयो मोतो जैसे नीर कौ ॥१२६

---
[1] पूजा।

टीका

इदव छंद
मानि अकासहि बोल भये सिप, जाइ परे मग न्हावन जावै।
लागत ठौकर राम कह्यौ सिर, हाथ धरयौ इतनौ यह चावै।
भक्ति करै गुर-भाव धरै जन, पूछत है उन नाव बतावै।
स्वामि सुनि[1] तब बेगि बुलावत, सिप्प करयौ कब[2] भांति बतावै ॥१०३
पाव लग्यौ जब राम कह्यौ तुम, मत्र वही तिम वेदहि गावै।
खोलि मिले पट मानि सचौ मत, भक्ति करौ तत यौ समझावै।
जाइ बुनै दुवटी हि भजै हरि, येक करै घर काम चलावै।
बेचत आइ मगी अध फारत, द्यौ सब ही सबलै मन भावै ॥१०४
मात तिया सुत भूख मरै घरि, आप लुके कहू धाम न धानै।
सोच परयौ प्रभु भक्ति करै जन, खाड गहू घृत वाल-दि आनै।
तीनि दिना जब बीति गये उन, केसव नाखि दई घर जानै।
मात कहै पकरै दरवारहि, लेत नही सुत येक न मानै ॥१०५
च्यारि गये जन ढूंढि र ल्यावत, आइ सुनी हरि जानत पीरा।
बैठि विचारत आप बिसभर, न्यौति जिमावत सतन भीरा।
छोडि दयौ बुनवौ प्रभु गावत, विप्रन क्रोध करयौ तजि धीरा।
पाइ बिभो निति सुद्र जिमावत, जानत नै हम कौन कबीरा ॥१०६
जात रहौ कित जाउ कहौ किम, राम भजौ अब वाट न मारी।
मान करयौ उन मोडन कौ, अपमान करयौ हम देत जिवारी।
जात बजार लगै अब हाथि र, हौ तुम ह्याहि उपाधि निवारी।
ल्याइ हरी रिधि दै सब बिप्रन, होत खुसी जन कीरति कारी ॥१०७
रूप करयौ हरि बाह्मन कौ तुम, जाहु कबीरहि बाटत भाई।
भूख मरै मति ढील करै जिन, जात घरा सिर देत अढाई।
धाम गये जब देखि खुसी मन, नौतम खेल दिखावत राई।
लै गनिका सब देखत कीडत, भीर मिटावन हासि कराई ॥१०८
साध दुखी लखि साख तहा सत, फेरि बिवेक करयौ कछु औरै।
जात सभा नृप मान करयौ न, तबै इक ख्याल करै जल ढौरै।
पूछत भूपति कारन कौंनस, पड[3] जरयौ जगनाथहि ठौरै।
भूपति मानस भेजि दयौ उन, आइ कही सब साचहि चौरै ॥१०९

---

१ मुनि। २ कच्छ। ३. पडा।

भूप कहै त्रिय सौ हुइ साचहि सोच भयो उर पाव गहीजै।
चालि परे सिर भास मरौटहि, डारि कुल्हारी गरे दोउ धीजै।
भाजहि डारिव जारहि मारग कीन्ह बुरी हम यौं वपु छीजै।
देखि कबीर गये चलि भीरहि बोझ उतारि कहा हम कीज ॥११०
ब्राह्मन देखि प्रताप उठे जरि स्याह सिकन्दर भाइ किनारै।
मात कबीरहि साथि लई सब गाव दुखावत आइ पुकारे।
वेग बुलावत कौन कबीर स यौं भटकाइस सूट हमारे।
स्याह सहा करि बात कहै सब स्याह सलाम करौ हरि प्यारे ॥१११
सांकल बांधि र गग बहावत देखि खडे कहि चेटक भावै।
साकड़ मेलिह र आगि लगावत दीपत देह सु हेम लजावै।
भूमि दये हनि नांहि रहे छिन ऊपरि आइ र गोविंद गावै।
चावत नांहि उपाइ रहे थकि हैं उर मांहि म ग्यांन न आवै ॥११२

मूल

दास कबीर सपीर धर्म्म के, मांनौ सुमेर सहंस्रक रोपे।
हींदू तुरक संन्यासी र ब्राह्मण स्याह सिकंदर आदि वे कोपे।
झुकायो गर्यंद मयंद महाबलि स्यघ सरूप सभा विचि चोपे[1]।
राघो कसा प्रबला बड़ी बेसुव, पैज रही हव के दव लोपे ॥१२७

[टीका]

देखि डरयौ पतिस्याह प्रतापहि आइ रह्यौ पगि सोग न ये है।
गायि हमै हरि ते मति मारिहि स्यौ धन गांवहि मान भये हैं।
भावत राम न प्रौर कांम रहैं हम धाम न दांम भये है।
धाम पधारत फौज पठे करि सत मिले ससनेह छये हैं ॥११३
हारि धुसाद र ब्राह्मन ब्यारहि मुड मुडाइ र साध बनाये।
गायहि मांवहि पूछि महंत म नाम कबीर सु गेर बुलाये।
संतन आवत आप छुरे फिर रांम उचारि चहू दिसि धाये।
रूप कबीर बनाइ महुतक आप गये मिलि माच रिझाये ॥११४
वेस बनाइ मधू गुर आवत देखि प्रहिग्ग चली नहीं लागी।
विष्णु पधारि दयो जन मांनहि मागि गये कुछ दौं मद भागी।

---
1. चोपे।

फेरि कह्यौ मम धाम चलौ अब, जौर भजौत रहौ बुधि पागी।
फूल मगाइ मगैहर सोइ र, भक्ति दिपा इम ले वपु सागी ॥११५

मूल

दास कबी र की तेग तिहू पुरु, है धुर धाक पुकारत माया।
काम र क्रोध से जोध जुगति सू, मारि मरद नै गरद्द मिलाया।
रामहि राम रट्यौ न घट्यौ पन, त्यागि तिरग्गुण नृगुण गाया।
ज्ञान गदा अबदा उर आयुध, राघो कहै भुव भार मिटाया ॥१२८
दास कबीर धर्म की सीर, तिहू पुर पीर गभीर गभीरौ।
जरणा जल रूप अनूप घणी, सु बणी कलि क्राति ज्यू हेम मै हीरौ।
बिधनां बिधि सू रधि दै रिझयौ, दिज कौं सब दोवटी दै पर पीरौ[1]।
राघो कहै सब लोक[2] के धोक देहि,ग्रैसौ तप्यौ कलि-कालि कबीरौ ॥१२९

घनाक्षरी छद
अजर जराइ कं बजाइ कै विग्यान तेग,
कलि मैं कबीर ग्रैसे धीर भये धर्म के।
मारयौ मन-मदन सो सदन सरीर सुख,
काटे माया मोह फंध बधन भरम के।
निडर निसक राव रक सम तुल्य जाकै,
सुभ न असुभ मांनै भै न काल क्रम के।
जीति लीयौ जनम जिहान मैं न छाडि देह,
राघो कहै राम मिलि कीन्हें काम मर्म के ॥१३०

छप्पै
रैदास नृमल बांणी करी, संसै ग्रंथ बिदार नै॥
आगम निगम सुंण[3], सबद सब मिलत उचारन।
पै पाणी भिन्नता, संत हंसा साधारण।
गुर-गोबिंद परसाद, मुकति याही पुजाहीं।
ब्राह्मन क्षत्री चकित, काटि उप नयन बतांही।
अष्ट मदादिक त्यागि, या चरन रैंन सिर धार नै।
रैदास नृमल बाणी करी, संसै ग्रथ बिदार नै ॥१३१

---

१ दीरौ। २ लोके धोक देहि। ३ पुरांण।

टीका

इंदव रामहि नद सुसिष्य भलोइ क ब्रह्म सु चारिहु चूनहि ल्यावै ।
छं द वैस्य कहै इक चून हमारहु ल्यो तुम बीस-कबार[1] सुनावै ।
मेह भयो तब वापहि ल्यावत भोग धर्यो हरि ध्यान न आवै ।
रे किम ल्यावत बूझि मगावत देत दिसाहुत आप बसावै ॥११६
नीच भयो सिसु छीर न पीवत या दिसु पूरब बात रहाई ।
अवर बन सुन्यौ रमनन्हि दद भयो मनि यौं धसि आई ।
देखत पाइ परे पित-मातहि सीस धर्यो कर पाप नसाई ।
बोधन पीवत यो पन जीवत ईसुर जानत फेरि भुलाई ॥११७
साधहि सेव लगे रयदास जु, मात-पिता स जुदा करि दीया ।
सपति ठाम बिना न हुता मधु माहु तिया पति नांव न लीया ।
जूतिन गांठि निबाह करें तन और उपानत संतन कीया ।
सालगरामहि खानि दुखावत आप सदा हरि बांटहि धीया ॥११८
पावत कष्ट गनै न मन हरि सत सरूप धरे प्रभु आये ।
भोजन पान कराइ रिझावत मेहू करौं सुख पारस ल्याये ।
पाथरकौं मन सु महि काम मज इक रांम यही समझाये ।
हेम दिखाइ दयो घसि रांपि न हाथि दया धरि छांनि पिवाये ॥११९
मास तियौं दस बीति गये हरि, पूछत है जन पारस रीत ।
ल्यौ वहि ठौर समोड़ र धौरस वो किहि और स पावत भीत ।
मैं फिर जात सुनौं मत बात महौरहु पांच दई निति धीत ।
पूजम हु करसे मय मांगत राति कही प्रभु रावत बीत ॥१२०
आय समानि चणावत मंदिर, साधन राखि भली बिधि कीन्हीं ।
तांमि बितांनहु ठौरन ठौरन भाव मनोति सु कोरति कीन्ही ।
राग र भोग करै बिधि विद्धिन ब्राह्मन बैर भरै बुधि दीन्ही ।
आप सिखावत विप्रन कौं हरि नीच तिया मधुसाहुत मीन्हीं ॥१२१
प्रेम सहेत करै निति पूजन यौ रयदास छिप्यौहि मड़ावै ।
तौहु सिखावत भूपति कौं दिज होइ सभा मुखि मारि सुनावै ।
दाम बुलाइ कहै नृप जोर न न्याव करै हरि नैम कुड़ावै ।
राखि सिंघासन दोउन कै बिचि तेउ बड़े जिन पें प्रभु आवै ॥१२२

---

1 कबीर ।

मूल

दास रैंदास की पैंज रही निवही, सर्ब लोक सिरै मधि कासी।
बिप्रन बाद कियो यह जानिकैं, सूद्र क्यूँ सालिगराम उपासी।
टेक यहै बटवा बिचि राखहु, जाहिकैं प्रीति है ताहिक आसी।
राघो कहै गये दास रयदास पैं[1], प्रीति खुसी हरि जाति न जासी ॥१३२

टीका

गढ चितोर हि भूप तिया सिषि, आइ हुई उस नाम मुझाली[2]।
साथि कई द्विज देखि उठे दझि, भूपति पै स सभा मिलि चाली।
भाति उही धरि है बिचि ठाकुर, पाठ करै द्विज है सब खाली।
गावत है पद हौ अघ-मोचन, आइ लगे उर प्रीति सु पाली ॥१२३
देसि गई फिरि कागज भेजत, आइ दया करि पात्रन कीजै।
आप चितौर गये धन वारत, ब्राह्मन आवत पाहू जिमीजै।
जीमन कीज लगे जबहि दिज, दोइन मैं रयदास लखीजै।
आम्हनि साम्हनि पेषि भये सिष, काटि र कध जनेउ दिखीजै ॥१२४

पीपाजी कौ मूल

छपै [पीपैं सिंघ प्रमोधियो, जगत बात बिख्यात है॥]
देवी द्वादस बरष, सेय करि मांगत मुक्ति।
सक्ति साच कहि दई, लाइ मन करि हरि-भक्ति।
श्रीरांमांनद गुर धारि, करचौ अति भजन अनूप।
परचा पद परसिधि, धरे उर सत सरूप।
परस पछौपैं सरस पुनि, जन राघो आक्षात है।
पीपैं स्यघ प्रमोधियो, जगत बात बिख्यात है ॥१३३

इदव छद देवी दयाल भई दत दैन कौं, मागि जितो मन भावत पीपा।
जन के मुख तें यह जाब भयो, मोहि मोक्ष करौ जननी सत दीपा।
दीन भई दुरगा मुख भाखत, मोक्ष र मोहि नहीं छल छीपा।
राघो कहै गछि ज्ञांन कै मारग, राम भजौ रामानद समीपा ॥१३४
दक्षिन देस नरेस वडै कुल, रांम कै कांम कौं रावत पीपा।
रज कौ रज मां प्रगट्यौ अज मा, अजबस की छाप कौ अस उदीपा।
काम कलेस प्रवेस न पाखड, सीतार है दिन राति समीपा।
राघो कहै भजनीक भलौ भड, नाव की तेग सूं नौखड जीपा ॥१३५

---

१ कं। २ सुझाली।

टीका

मत भूप गयो गढ गागुन को पुनि सेवत देविहि रंग लग्यौ है।
गयंद चक्र हुतो पुर संत पधारत भून दयो हरि भोग पग्यौ है।
सन करयौ रजनी सुपनै महि भूप पछारत रोइ भग्यौ है।
आपन कौं न सुहात फिरयौ मन देवि परी पगि भाग जग्यौ है ॥१२५
जानत है सब स्यांन भई नृप जात बनारसि स्वांमिहि पासा।
जांन लग्यौ सुगुरू बिग अदर, द्वार सु रक्षक वर्जत तासा।
जाइ कही प्रभु भूपति आवत आ इक कांम न आप उदासा।
वेग छुटावत कूप परौ अब, जात परसहि देत हुलासा ॥१२६
दास करयौ कर सीस धरयौ उर, नांव भरयौ कहि जाहु उहांहीं।
साधनि सेवत दे धन धांमहि, कीरति आइ कही हम मांहीं।
आइस पाइस आवत स्वै पुर, बैहि करी अन प्रीति करांहीं।
कागद भेजत वोल करौ सति चालिस संत सुसंगि चलांहीं ॥१२७
साधि कबीर रदास हि यादिक सैर करै सुखपालहि ल्यायौ।
लागि पगां सब कौं परनोमहि मांहि पधारत माल छुटायौ।
सेव करि निति मेव मिठाइन[1] राग करे गुण रीझ न मायो।
देखि भगति मगन भये सब बैठि रह्यौ कहि साधिहि ध्यायो ॥१२८
साधि चली त्रिय द्वादस वर्जत मांनत नांहि मरौ कर पावै।
फारत कपस क्यौ[2] गलि मेखलि भूपन दूरि करौं मन भावै।
झांम्हन सांम्हन देखत भांमनि राम भली इक सीव रहावै।
नांखिहु याहि तबै वहु आरत नागि भई गुर कठि लगावै ॥१२९

मूल

मनहर ऐसौ धुर-वीर न सरीर सक मांनै नैक,
छंद पीपाजी प्रचंड नवखंड मध्य गाइये।
सीताजी सबन तजि भवन कौ मारयौ मांन
मगन ह्वै नाची जिहूं लोक मैं सराहिये।
छाड़ि बीझूं भोग भक्ति स्वांमी संगि चली गढ़ि,
कांमरी कमरि सिर मांगी भिक्षा पाइये।

[1] मिठाइन। [2] क्यौ।

रघवा रतीक प्रसि पीपोजी पारस अंग,
उधरे हैं ताके संगि अनत बताइये ॥१३६

टीका

इंदव छंद
आप दया करि द्यौ अब काहुक, मैं न रखौ इन साच कही है।
सौह कढावत साथि लई जब, चालत ही दिज पात मही है।
फैर लयौ उन ज्याइ पठावत, चालि सबै हरि धाम लही है।
कोउ दिना रहि मागत आइस, सागर डाकि परे सु गही है ॥१३०
लैन पठाइ दये हरि स्वै जन, देखि पुरी फिरि कृष्ण मिले है।
कचन म्हैलन म्हैलन क्रीडत, सात दिना सुख पाइ भले है।
देव कहै जइये अब बाहरि, मान तनै हरि रूप झिले हैं।
डूबि रह्यौ जन ह्वै अपकीरति, व्याकुल ह्वै डर मानि चले हैं ॥१३१
साथि भये नवडावन कौं हरि, प्रेम वधे जन बाहरि आये।
लेत पिछानि सबै इक आचर्य, अबर भीजत देह सुकाये।
छाप दई जग पातग काटहु, ऊठि चलौ कहि सीत जनाये।
मारग चालत तुर्क मिल्यौ इक, खोसि लई तिय राम छुडाये ॥१३२
जाहु अबौं घर नारिहि कौं डर, राम न जानहु यौं उठि वोली।
पारख लेत सुहै हरि हेत, सुनी निहचै तब अतर खोली।
मारग दूसर जात मिल्यौ हरि, दे उपदेस मिटावत रौली।
सेष सज्या हरि देखि घनेर हि, बास हरे करि चीधड छौली ॥१३३
भक्तन देखि कहै तिरिया, पति नै घर मैं कछू प्रीति कराई।
बेस उतारि रु बेचि लयो अन, पाक करौ तिय देत छिपाई।
भोग लगाइ रु जीमन बैठत, ल्यौ तुम दपति पीछै रहाई।
जो तुम पावत तौ हम पावत, सीत गई वत नग्गन सु पाई ॥१३४
वेस कहा तुम यौंहि रहै हम, सतन सेव करै इम बाई।
आवत साध अनद अगाधहि, देह रहौ किम बात न भाई।
फारि दियो पट बाधि कह्यौ कटि, हाथहु खैंचत बाहरि आई।
भक्त यहै हम भक्त कहावत, होइ इनौ पहि स्वामि सुनाई ॥१३५
बारमुखी वरिण ल्याइ धरैं घन, चालि गई जित नाजहि ढेरी।
आवत लोग नखै द्रिग रोग रु, चाहत भोग कटाक्षहि फेरि।

को तू यता हम पारारि आहि महै मरवा सुनतै परि वेरी।
रोक र नाज दयो सब साज[1] सु औषद देतहि जात निबेरी ॥१३६
डोकहि आवत भूखन धावत दामहिं पावत जाव महांने।
भूमि गड्यौ धरवा लखि म्हौरन राति कही त्रिय बात सु वानैं।
चोर सुनी मन पासि गये खनि देखि भुजग हुतै उन प्रानैं।
डारि दई गनि कं सु लई सत-सात र बीस तुला पच गानैं ॥१३७
आवत द्वारि जिमावत है जिनि साधन दे बल बेगि सवायौ।
तीन दिनां महि सर्ब सुटावत सूरज भूप तबै सुनि आयौ।
दर्सन देखि भयौ अति पर्सन देहु वसा हम सौ हम आयौ।
जा मन भावत सोउ करौ अब ल्याइ भरौ सब रांणिन ल्यायौ ॥१३८
पारस से करि नांव दये फिर नारि दई परवा मत कीजे।
माल दयो[2] कुम्न रासत सत न मांन नही नृप रांम भजिजे।
आत धरे सुनि सूरज के परताप बडौ अन जाइ न लीजे।
मैस विसाहु न माइक आवत हासि करी जनकै बहु लीजे ॥१३९
माइक जाइ धरे रुपया तुम चौप मला सब गांव रहावै।
छाडि गयौ लखि साध बुलावत जीमत आवत ल्यौ मन भावै।
भक्तन देखत भक्ति भई उर अंबर ल्याइ र आप उढावै।
बाज चढे सर म्हांन मढे छडि बांधि सभौ रवि आवत भावै ॥१४०
आप गयो[3] घरि साध पधारत नाज नहीं कहु जा(इ) करि ल्याऊं।
बसि विपो त्रिय देखि धुमावत ल्यौ सबही तुम रैनि रहाऊं।
जीमत आइ गये बिधि बूझत बात कही सति मैं मिसि जाऊं।
अंग बलाइ चली बरचैं धन कंध चढाइ लई पहुचाऊं ॥१४१
ऊपरि भेजि दई तरि बैठत सूझि पर्गा जननी तिम माई।
कंध चढाइ र ल्यावत स्वामिन है सु कहो तरि लागत पाई।
काम करौ न डरौ मन मैं तुम दे कर मास स मासि सिवाई।
बास न आवत नीर बहै द्रिग जांनि भयो सुभ भक्ति बिठाई ॥१४२
बात गई यह भूपति पै द्विज हू यकठे विप्रीति कहाई।
प्रीति घटी नृप की बुधि मूल स जामत मैं यह भक्ति बधाई।

---

१ लाय। २ दया। ३ गये।

ज्ञानहि देवन स्वामि चले किन, जाइ कही अब सेव कराई।
जीन करावत मोचिन कै घरि, आइ परचौ पगि यौ सुनताई ॥१४३
बाझ तिया इक रूपवती गृह, मागत स्वामि न ल्यौ मन नाही।
ल्यान चल्यौ गुर स्यघ बन्यौ लखि, होत खडौ डर दोइ पखाही।
स्यघ मिट्यौ पुनि बाल भयो तिय, देखि प्रभावहि सीस नवाही।
आप खिजे वह भाव कहा, तव दास करौ अब ठेठ निबाही ॥१४४
दे उपदेस कियो सुध भूपति, नेम लयो फिरि धाम गयो है।
नाम भगत्त तिया निसि मागत, लेहु कही भजि है न पयौ है।
लार भगी दिन होत चली नहि, धामन धामन देखि नयो है।
मात चलौ तव धाम धरौ फिरि, काम मिट्यौ गुर-भाव भयो है ॥१४५
च्यारि बिषी नर स्वाग लयो धरि, मागत सीतहि बेगिहि लीजे।
अग बनाइ रही घरि येकल, आवत, आकुल जाहु रमीजे।
जातहि स्यघनि खावन आवत, खात नही प्रभु भेष धरीजे।
रोस करै तुम् भाव निहारहु, मानिहु ये सिष राम भनीजे ॥१४६
सतन कौं दल लेरु पुवावत, गूजरि मागत तेर दुगानी।
आवत भेटहि आजि सबै तव, पीपहि साच स बात बखानी।
माल चढावत आइ महाजन, है सत च्यारि हुवो प्रवानी।
देत न लेत दयो समझाइ, बुलाइ मिलाइ जिमाइ सिहानी ॥१४७
ब्राह्मन कै घर चक्र भवानिहि, पीपहि न्यौतत सत सुजानी।
रामहि भोग लगाइ र पावत, ल्याव सबै विधि थोर स आनी।
भोग लगी रिधि ईस्वर कै सब, भूख मरौ द्विज रोस भवानी।
वै किन मारत जोर न चालत, छोडि दई हरि भक्ति करानी ॥१४८
तेलनि रूपवती इक देखि र, स्वामि कहै करि राम उचारा।
जाइ धणी मरि राम कहै जरि, बोलत क्यू न भगत्त विचारा।
तौ जबही करि जात धणी मरि, होत सती तब राम सभारा।
स्वामि कहै अबलै निस-वासुर, तौ रजिवावत ल्यौं रजि वारा ॥१४९
भूपति भैसि दई बन मैं चरि, आपहि आइ रहै घर माही।
दोहिं विलोइ र साधन पावत, छाछि रहै फिरि राव रघाही।
चोरि लई उन जान दई फिरि, पाडि न ल्यौ वह सोचि रहाही।
हौ तुम कौन स पीप कहै मुहि, देत भये अर पाइ पराही ॥१५०

गांव गये जित भेट भई बहु म्हौर दई भरि गोहुन गाडी।
चौरन खोसि लये स चले जब दौरि कही तुम म्हौर न छाडी।
पाइन ये पहुचाइ दये फिर, सिष्य भये बय भैंसि रु पाडी।
ल्यात धरा जन सीत लिज उन आवत है सब संतन आडी ॥१५१
पांचहि गांवन तै दल आवत मांनि भये जन जाइ रिझाये।
गांवहु ते सिष दोइक डेरमि देखि लगी पगि आनन्द पाये।
आप तज्यौ तन जारि दये उन होइ उदास चली हरि ध्याये।
दूसर गांव मिलेस तज्यौ तन पांच जगां जरते दिखराये ॥१५२
बैबपुरी चलि टोडहु आवत देखि सियाबर नैंन सिराये।
दास सुनौं बनियां रिझि सेवत सात सतौ ब्याह सलाये।
कागद हाथि दयो भर लीखत सोग मचावत धांक नसायें।
सोच भयो बनियां मुख सूकत आवत भेट दये सु सिखाये ॥१५३
स्वांमि कहै सिष त्यागि करो गृह ठीक यहै मन मैं सु करीजे।
हुं नृविति जहां तह बैठि र मांग भिक्षा हरि ध्यान धरीजे।
छोडि चले घर संपति ही बहु सीन बिना मह लूटि परीजे।
आइ रहे इक उज्जड़ गांवही आइ सन्यास जमाति भरीजे ॥१५४
ब्राह्मन येक हत्या डर आवत स्वांमिन सूं सब बात कही है।
गंगहि न्हाइ र पाक जिमावत ब्राह्मन तौ मम लेत नही है।
सामगरी इत ल्याव जिमावहि दूरि करै तब पाप सही है।
बिप्र र साघ सन्यास बुलावत पांति भई फिरिबैस सही है ॥१५५
सूरज कौं अवसेर भई नर भेजि बुलावत स्वांमि पधारे।
भेट करी बहु संपति आदिक आप महोछव गांव सिधारे।
पीछहि साच सिया ढिग आवत देहु हमैं धन बीह बधारे।
दे दइ संपति पो घर मैं सब होत खुसी मनि भौतस धारे ॥१५६
कागद आवत श्री रग कौ ढिग जात भये बिलसा जन द्वारा।
बैठि सध्यौ मन ध्यांन करै हरि, भावहि रूप बढावत हारा।
कांन रह्यौ चिन मोन गह्यौ तब पीप कह्यौ मम ल्याव सिगारा।
पूजन छांड़ि सितावहि आवत पूछन कौ तुम नांम उचारा ॥१५७

१ रथा।

नाव वतावत ज्ञान सुनावत, श्रीरग वोलत वाग चलीजे।
जात भये जन वाजन ले करि, जाइर ल्यावत सत पतीजे।
राखि घरा सब वात्त वखांनत, स्वामि कही चलि ताल रहीजे।
लेत[1] करि उन ग्रातक डेरनि, रूपवती लखि सिप्य करीजे॥१५८

भाव भरचौ उर नाव धरचौ उभ, तीरथ जा करि टोडहि ग्राई।
पाचक डारहु वासन ल्यावत, चौर छरी नटि हासि कराई।
वोझ खरा जल पीव न जातस, हाथ अठार वधे रहराई[1]।
व्राह्मन पथ पुकार रह्यौ तव, पूछत स्वामिन क्या दुख भाई॥१५६

धीह कवारि नही घर मैं धन, ग्राप कहै चलि तोहि दिवाऊ।
भद्र कराइर भेष वनावत, वोलिय ना नृप पासि पुजाऊ।
ले करि जात भये जन म्हैलन, पूजि इन्है सुनि भेद वताऊ।
ये हमरे गुर कै सम जानहु, भेट करी वहु चालि नडाऊ॥१६०

रैंनि उछोहुत द्वारवती महि, लागि चिराक वितान वरै है।
भूपति पासि हुते जन देखि र, लेत बुझाइ सु हाथ मरै है।
मानत नाहि कहै सब लोगन, स्वामिन देखि ग्रचभ करै है।
मानस भेजि र ठीक मगावत, ग्राइ कही सति पाइ परै है॥१६१

व्राह्मन ग्राइ कही यक स्वामिन, ग्रन उपावन वैल दिवैये।
तेलक छोकर-पावन ल्यावत, बैल दयो द्विज जाइ उपैये।
वालक रोवत धाम गयो पित, सूरजसेनहि जाइ कहैये।
भूप पठावत जाहु उनौं पहि, ग्राइ परचौ पगि है घरि जैये॥१६२

काल परचौ सत पन्द्रह बीसक, द्वन्द मच्यौ मरि है सब लोई।
स्वामिन कैसु दया मन मैं ग्रति, देत सदा व्रत ग्रावत कोई।
पात भयो धन भूमि गड्यौ बह, देत लुटाइ न राखत सोई।
कान सुने जितने परचे कहि, पीपहि के गुन पार न होई॥१६३

धनांजो कौ मूल

छपै [सतन कै मुख नाखि कै, धनै खेत गोहूं लुणे॥]
बीज बांहणै लग्यौ, साध भूखे चलि ग्राये।
मगन भयो मनमांहि, सबै गोहूं बरताये।

---

[1]रासकक।

मात पिता न बरस रिकत ऊमरा कढाये।
भक्त भाव सो भजे, भौर तें बये सबाये।
राघो भति भविरज भयो, बिन बाहें निपजे सुऐ।
सतन के मुखि बाहि के, घने खेत गोहूं सुऐ ॥१६७

गमहर　गाड़ो भरयौ बीज बोबि सतन कौं बांटि बयो
छंद　　ऐसे रह्यौ ध्यान तिहूं लोक धर्म बाट कौ।
पारोसी के खेत कौ करार कीन्हौं हारिम सूं,
हाथ मारि भयो बम कौल कीयो काट कौ।
गेहूं लगे ठौर कछू बोरन कौं नाहीं भौर,
ऊमरा कढाये डर मान्यौ राज हाट कौ।
राघो कहै खेत हरि हेत भति भीपज्यो सु
दिन दिन बढ़त प्रवाह पुनि ठाठ कौ ॥१६८

[टीका]

मत　खेत कथा कहि दी सब राघव फेरि सुनौं इक पैल भई है।
गयं　बैसमु ब्राह्मन सेव करी भरि, देखि ठरयौ मन माँगि मई है।
छंद　गोस भसम उठाइ दयो वह संत भयो भति बुद्धि दई है।
भोग लगावत भाव करावत गास न खावत चित नई है ॥१६४
पाइ परै बिनतीहु करै तजि भूख मर भवि के सु पुवायो।
रोटि न स्यावत मित्य जिमावत भोरहि[1] पावत यौ मन सायो।
कोउ जुवावत वाहि रिझावत गाइ चरावत यौं प्रभु भायो।
भाइ फिरो द्विज देखत नैं कछू, बात कही सब राम दिखायो ॥१६५
गाइ चरावत देखि खुसी द्विज भाव भयो जल नैन ढरै हैं।
धाम सिधारि सु राम रिझावत भाय हुवा जिम रीति करै है।
रीझि कही हरि आहु भनां गुर रामहि मंद करी सु सिरै है।
आइ भये सिष कठ लगावत काम करै धरि ध्यान धरै है ॥१६६

सेनजी को मूल

छपै　[जगत माहि यह प्रगट है सेन सरन राखी हरी ॥टे]
पुणि घरि भाये संत भक्त इक बड़ी हुजांमी।
टहल करी मम भाइ जांनि के भंतर-जांमी।

---
१ गौर। २ भोरहि।

लीये रछौंडी काच, भूप पैं प्रभु पधारे।
मरदन कीयो तेल, राइ वहाँ भये सुखारे।
सैंन देखि नृप सिष भयो, आज मुक्ति मेरी करी।
जगत माहि यह प्रकट है, सैंन सर्म राखी हरी ॥१३९

इदव छंद एक समै जन सैंन कं सत, पधारे हु ते उन प्रीति लगाई।
मंजन बेर भई नृप टेरत, आपन आइ भये तहा नाई।
सैंन सुन्यौ समजो[1] जब बीतिगौ, राजा के रामजी दाबिगौ पाई।
राघो कहै अपनै जन को, महिमा हरि आपन आप बधाई ॥१४०

टीका

सैन भगत्त सु वाधू रहै गढ, नापिक जाति रु सतन सेवै।
नेमहि साधि चल्यौ नृप न्हावन, आवन साध फिर्यौ मन देवै।
सेव करै जन नाहि डरै हरि, भूप नहावत पाइन भेवै।
सैन चल्यौ फिरि जाइ मिल्यौ नृप, जानि अचभ कहा यह टेवै ॥१६७
भूप कही फिर क्यू करि आवन, ढील भई घरि सत पधारे।
मैं अब आवत भूप लग्यौ पगि, आप कृपा मम राम सिधारे।
सिष्ष भयो उर भाव लयो अर, प्रेम छयो सब पित्र उधारे।
रीति वहि अजहू सुत नातिन, और कुटव कर्यौ निरधारे ॥१६८

मूल

छपै यम रसन[2] राम रस पीवतै, सही सुखानद निसतर्यौ ॥
गौडी राग गभीर, हेत्र सू हरि जस गायैं।
गगन मगन गलतान, नृषि नृभै पद पायैं।
निज तन[3] निगम रसाल, चाखि रस चित दै चोखो।
चौथौ फर फारीक, गहत कछू रहत न धोखो।
जन राघो तर तृभवन-धणी, सर्ब-घट-व्यापक बिसतर्यौ।
यम रसन राम रस पीवतै, सही सुखानद निसतर्यौ ॥१४१
यौं रामानद प्रताप तै, जन राघो भेटे राम कौं ॥
बडौ बित ब्रिद भक्ति-कद भावानद पायौ।
यौं अखड निज जाप, अहौं-निसि हरि हरि गायौ।

---

१ समवो। २ रसिक। ३ तत।

त्रिविधि ताप सम दूरि, जीव जे आये सरणां।
तारिक मंत्र सुनाइ मिटायो जामण-मरणां।
सुख पायो संसौ मिट्यौ, पूजि परम गुर-धाम कौं।
यौं रांमांनंद प्रताप तैं, जन राघो भेटे राम कौं ॥१४२

सुर सुरानंद साचे मतै, महा-प्रसाद सत मांनियौं ॥टे०
बसे जात मध मध्य, जीमिये बरा वाकमुल।
पीछे पाये तिवन, देखि स्वांमी की सुभ सल।
वासू प्रापन कह्यो, वमन करि नांखि प्रमाणे।
उन फिरी कीयो ढेर, तिसे खाये पे प्राणे।
सुमति सुरसुरी ऊगले, पुसप पतासे जानियौं।
सुर सुरानंद साचे मतै, महा-प्रसाद करि मांनियौं ॥१४३

इंदव साच मतै सुर सुरानंद नांव से, काहू सौं मांन गुमांन न जाके।
छंद बोजमी दुष्ट कुसोल इसे परि, क्षोम भरे जिव छिद्र न ताके।
वे निरदोष निरपक्ष निरमम, ताहू सौं खेचर खेचरी हाके।
राघो कहै भर भीर परें, प्रगटे परमेसुर बोधि सभा के ॥१४४

छपै यौं निपुन नर-हरियानंद की वा माता सूं महिमां भई ॥
लगी झरन की झींक नंद क महों बरीतौ।
हुतौ कृपा को क्षार सहर मैं सकल ववीतो।
राघों कतौ महंत मात की छाति उपारी।
तब कीयो भवांनी कौंस भक्त ग्रह लकरी वारी।
इक पारौसी हरि विमुख सत के भोरें पूडौ।
कूटे जाइ कपाट जाण पाप करयौ कूडो।
प्राप बढसे की बैठ गहि निति साकत के सिरि दई।
यौं निपुन नरहरियानंद की वा माता सूं महिमां भई ॥१४५

यौं नारि सुर-सुरानंद की, प्रभु राखी प्रहलाद ज्यू ॥टे०
म्यांन करत धर्महीन असुर जब भये सकांमो।
स्वय रूप कौं धारि उदत भये अंतरजांमी।
धरि धरि पटके दुष्ट नष्ट बीतल उर फारे।
क्यू जीवत गये भाजि महापापी संघारे।

राघो सम्रथ राम धनि, भक्त-बछल बिद कहत यू।
यौं नारि सुरसुरानंद की, प्रभु राखी प्रहलाद ज्यू ॥१४६

मनहर छंद

यह हित रजखानि मिली आनि हित जानि करि,
स्वामी रामानद गुर सिष पदमावती।
मन कौ उतारयौ मान उरमी उद्यम आन,
बिसरै न राम रांम रहै गुन गावती।
गुर कौ सबद उर भ्रम कौ बलायो पुर,
ज्ञान-ध्यान सील सत और वृति जावती।
राघो वहि कासी मधि हाथी जीयो हाथ देत,
प्रसिधि प्रवीन भई आपौ न जनावती ॥१४७

छपै

जन राघो रटि रांमहि मिले, ये दाता आनंद-कद के ॥टे०
कर्मचंद क्रमगलित जोग जोगानंद पायो।
पैहारी परसिधि समझि सारी हरि गायो।
मगन मनोर्थ अल्ह भयो श्रीरग रांम रत।
कीयो गयेस प्रवेस मैह[1] मन दीयौ परमेतत।
ऐते आठौं अटल सिष, स्वांमी अनतानंद के।
जन राघो रामहि मिले, ये दाता आनद-कंद के ॥१४८
धनि अब गति अचिरज भयो[2], यौं अंब नवायो अल्ह कौं ॥
उपवन उत्तम[3] सुथांन, फूल फल ता मधि भारी।
तहां महत भयो मगन, समझि सेवा बिसतारी।
भवतबिता कै भाइ, असुर अज गैवी आये।
उन लीन्ही छांह छुड़ाइ, सत मुनि मारि उठाये।
तब राघो रांमहि रिषि भई, वै सठ समझाये कलह कौं।
धनि अब गति अचिरज कीयौ, यौं अंब नवायो अल्ह कौं ॥१४९

टीका

मनगयद

जाइ चले इक बाग निहारत, अल्ह भई मन पूजन कीजे।
आव रह्यौ पचि मालिहि जाचत, लेहु कही अव[4] डार नईंजे।
जाइ कही नृप मौज हुई जिम, प्रीति भई सुनि पाव गहीजे।
आइ परयौ पगि आजि भलौ दिन, सीस दयो कर राम भजीजे ॥१६९

---

१ मेहा। २ कियौ। ३ तमसथांन। ४ तव।

श्री रंगजी की टीका

श्रीरंग नाम सरावग ग्राम हुतौ दिवसा तिन बात बखांनी।
भाकर ही भ्रम-धाम गयो उत, हूत भयो इन भाइ सखांनी।
माइक नैं सब बात स देखहु सीम चढ्यौ पसु मारि बिलांनी।
रांम भजै बिन ह्वै जग यौ गति भक्त भयो सिर भ्रनत रखांनौ॥१७०
पुत्र दिखावत भूत सरूपहि सूकत आत सु भूभिक सूतौ।
मारत भ्यावत रैनि उठे जन मास करी मम मौत बिगूतौ।
होत सुनाग तिया पर सू रत भूत हुवो तब पाव पहूतौ।
रांमहि नाम सुनाइ कर्‌यौ सुभ भाप कही फिरि होइ न भूतौ॥१७१

पैहारीजी की मूल

छपै निरबेद बिपायौ कृष्णदास भगत जिके पीयौ जुगप॥३०
चढ़े तेज के पुंज, रांम बल कांम सपारे।
चरणांबुज भ्रात-पत्र, राव राजा सिरि धारे।
जाकों दसा बई तास ततेि कर नहीं कीयो।
सरण भायो कोइ ताहि गुर्भ पद दीयो।
बंस बाहिर्भ रबि प्रगट साध भूलं मुबि है मुगप।
निरबेद बिपायौ कृष्णदास, भगत जिके पीयौ जुगप॥१५०
कृष्णदास कलि-कालि मैं, बपोष ज्यू कूंज करी॥
स्याध सरिख यौं जांमि काढि तन मांस खुबायौ।
भई पहुँन गति भली, भगत जस भयो सबायो।
महा प्रपर बैराग बांम कंचन ते न्यारे।
हरि भ्रमी मुठ गंप लेत मह मिस मतवारे।
गाना रिय भ्राभम बिबत रीति समातन उर धरी।
कृष्णदास कलि-काल मैं बपोष ज्यू कूंभ करी॥१५१

इंद मांम भगत दयो भनतानंद यौं प्रगप्यौ कृष्णदास पैहारी।
मुद जोग उपासयौ जुगति सू तेजसी अंतरबृति प्रवचनधारी।
भार्ग परयो कर सीस कृपा करि तास की मेर भौंटी न निहारी।
रायो बड़ी रह्यो मिन्यो रांम कौं मोख कौ पंथ निवाय न भारी॥१५२

---

१ जन।

काटि सरीर दयो भक्ष स्यघ कौं, पंज रही कृष्णदास की भारी।
प्यड ब्रह्मण्ड स्थावर जगम है, अब मैं बिस्व रूप विहारो।
संतन कौ अबस्स दयो जिन, ज्यौं तन सौंपत नाह कौं नारी।
राघो रह्यौ गलतै गलतान ह्वै, राम अखड रट्यौ इक तारी ॥१५३

टीका

जा सिर हाथ दयो न लयो कछु, राज दयो उन भूप कलू कौ।
डूगर ब्यौर मिले सुत मातहि, दे हरि पूजन सत सलू कौ।
थार जले विपरी मु लई सुत, भोग विना दुख पात हलू कौ।
मारन कौ तरवारि लई जन, वोट लई धन देत मलू कौ ॥१७२
भूपति पुत्र भगत्त भयो भल, मत सलाधि नही जन अैसी।
साध तिया अभ दे जुग पातलि, वालक है गुर आप कहै सौ।
भेष धरचा इक जूत न वेचत, भूप कहा कर जोरि हरै सौ।
त्याग करौ जग होइ बुरौ धन, देर रिझावत पाइ परौ सौ ॥१७३

मूल

छप्पै पैहारी गुर धारि उर, सिष इते भये पार सब ॥
अग्र कील्ह अरु चरण, नराइण पुदमनाभ वर।
केवल पुनि गोपाल, सूरज पुरषा पृथु तिपुर।
टीला हेम कल्याण, देवा गगा सम गंगा।
बिष्णदास चादन, सबीरां कान्हा पुनि रगा।
जन राघो भगवत भजि, सिर तै डारचौ भार अब।
पैहारी गुर धारि उर, सिष इते भये पार सब ॥१५४
स्वइछा भीषम गवन, त्यूं कील्ह करण त्याग्यौ सरीर ॥टे०
राति दिवस हरि भजै, पलक नहीं अतर पारै।
जेते प्राणीं भूत, नाइ सिर पाप निवारै।
नाग डसे त्रिय बार, जहर नहीं चढ्यौ लगारा।
सांखि जोग मजबूत, चले ह्वै दसवें द्वारा।
राघो बल परब्रह्म कै, सुत सुमेर दे सरस धीर।
स्वइछा भीषम गवन, त्यूं कील्ह करण त्याग्यौ सरीर ॥१५५

इदव छद कील्ह करण सरणं सम्रथ कै, यौं परमेसुर पैज सुधारी।
काम न क्रोध न मोह न मंछर, नृमल ह्वै निज आत्म तारी।

मांप नृदोष उधार कीयो प्रस दोष मिटे सत देह क भारी।
राघो कहै परचो भयो प्रतक्ष, गूदरी नेक टर नहीं टारी॥१२६

टीका

दव सुमेर हुते गुजरातहि बैठि विमान सु धामहि चल्ले।
कीन्ह र मान हुते मथुरा महि देखि अकास उडे महि मल्ले।
भूप कहै प्रभु काहि सुनावत मेर¹ पिता हरि माहि सु मिल्ले।
मांनि अचंभ पठावत मांनस, भाइ कही सति पावहि मिल्ले॥ ७४
यो हरि प्रीति भई मृति जीति सनातन रीति सु पूजन कीजे।
फूलन हार पिटारि मझार कस जन² ध्यार स फेर करीजे।
तीनहि बेर दसाइ फिरे जग और करयो नही राम भजीजे।
सत सभा महि यति मिले प्रभु जोग कला ब्रह्म रंध्र भनीजे॥॰७५

मूल

छप्पै अग्रदास आगर भयो, हरि सुमरन पन प्रेम को॥१८०
बहुत बाग सूं प्रीति रीति, हरि को जिन आरौं।
नींबे गोंदे आप आप परवाहे पालो।
जो उपज फल फूल, सोई प्रभुजी कौं अरपे।
साध-सकारण सत-पुरुष भगत भगवत सू दरप।
राति दिवस राघो कहै उदस करत निति नेम कौं।
अग्रदास आगर भयौ हरि सुमरन पन प्रेम को॥१४७

टीका

इंदव भूपति मान दरस्सण आवत बाग छयोव रहे सु सिपाही।
छंद पात बुहारि गये जन बारन मीरहि देखि र बैसि रहाही।
नाभहि आइ प्रमाम करी जल नैन भरे परवाह बहाही।
देखि रह्यो नृप हारि गयौ फिर बीजत चाकर आप कहाही॥१७६

मूल

कवै मन बच क्रम धर्म धारि उर अत राघो उभरे रांम कहि॥
कियौ कमोदरदास निमत गुर कौ महगी पाये।
चतुरदास भगवान कप मत महो सु भाये।

---
१ मोर। २ कर

लाखा छीतर देवकरन, देवासु सुघड़ अति।
खेम राइमल गौड, करी ग्रह भगति-भाव मति।
अदभुत राइमल नीपजे, गुर कील्ह करन कौ सरण गहि।
मन बच क्रम धर्म धारि उर, जन राघो उधरे राम कहि ॥१५८

जन के कारिज करत है, अनबछित हरि आइ॥
ये नाभा जगी प्राग, बिनोदि पूरण पूरे।
बनवारी भगवान, दिवाकर नाहि न दूरे।
नृस्यंघ खेम किसोर, लघु ऊधौ जगनाथहि।
ये तेरह सिष अग्र के, सीझे मुनि गुर कै साथहि।
जन राघो रुचि प्रीति पन, जे मन सधत सुभाइ।
जन के कारिज करत है, अनबछित हरि आइ ॥१५९

नाभाजी कौ मूल

मनहर छंद

नाभै नभ सेती कीन्हीं खीर-नीर भिन भिन,
ग्रथन कौ सार सरबगी हरि गायौ है।
भक्ति भगत भगवत गुर धारि उर,
बिच र बखांणि सबंही कौं सिर नायौ है।
सत-जुग त्रेता अर द्वापर कलू के भक्त,
नाव क्रितमाला कीनी नीकौ भेद पायौ है।
राघो गुर अगर कूं अर्पि गिरा गगजल,
पुरे पतिव्रत बलरांम यौं रिझायौ है ॥१६०

मूल

छपै

अघेर अज्ञता नासनै, उदित दिवाकर दूसरौ ॥
परमोघे भूराज, नहीं को आज्ञा मोटै।
पक-पादप की न्याइ, सत पोषन ले भेटै।
श्रव पै छाया कृपा, गिरा भोला यौं बोलै।
सुमरै रघुपति निति, साध के अघ्री खोलै।
कसिप करमचद सुत, सुहृद बरखे ऊसर सूसरौ।
अघेर अग्यता नासनै, उदित दिवाकर दूसरौ ॥१६१

परबत साध सरांवहीं, मनों दिवाकर यहु कुलो ॥
उत्तम भजन प्रकासि किरिणि, करणी करि पोये।
सीयावर गुण नाम गाइ मांन न संतोये।
जनक-सुता आधार मंदिर ग्रहि मधुबन धरियो।
गुर नरहर की कृपा, पुत्र मांतीयौ करियो।
रघुनाथ इष्ट निहचल सदा, मांन बात को ना कुलो।
परबत साध सरांवहीं मनों दिवाकर यहु कुलि ॥१६२

इंदव छंद पर की प्रभुता कर आप प्रमानत, ऐसो भयो दिग्य देव दिवाकर।
सत सुभाव अभंगी सिरोमनि मांनूं मिली धुरि दूध मैं साकर।
जीवत मुक्ति दिप वसहु दिसि, ज्यूं नव-खंड उद्यात प्रभाकर।
राघो कहै परमारथ सु बचि स्वारथ के सिर दे गयो ठाकर ॥१६३

छप्पै श्री सौरभ स्वांमि प्रसाद सौं पण व्रत रह्यौ प्रियाग कौ ॥
मन बच क्रम भगवत उभै अंघ्री उर आयें।
लीला मैं निर-मांन भाव तन दोइ दिखाये।
सतत सरस सनेहु मांनि दोऊ व्रत लीया।
अंतू बसौ द्वै धाड़ि महोछा पूरण कीया।
जोगी[1] पुत्रां खवाबहीं बधारे कळस भाग कौ।
श्रीसौरंभ गुर प्रसाद ते पण व्रत रह्यौ प्रियाग कौ ॥१६४
हठ जोग समाधिक साधिका द्वारिकावास हरि सौं मिल्यौ ॥टे०
कूकस की नदिका नीर मैं लयी समाधी।
प्रभु पद सुं रति अचल येक आत्म आराधी।
दाम काम घर वित बंध कुल जगत निरासा।
कांम क्रोध मद मोह करम की काटी पासा।
गुर कील्ह करुणा प्रसाद ते भक्ति सक्ति भ्रम कौं गिरयौ।
हठ-जोग समाधिक साधिके द्वारिकावास हरि सु मिल्यौ ॥१६५
परम धरम धन धारि उर पूरण बैराठी प्रसन ॥
अणूंणी आपूरण सेस विधि मही बहांनी।
जम-नैमा प्राणायामसन जहां साधे ध्यांनी।

---
1 बाली।

सीह बघेरा गरिजि रहे, मन सक्या नांहीं।
बाइ तलै सचरै, तास कौं ऊचै लाहीं।
पद साखी उजल करे, रांम नाम उचरचौ रसन।
परम धरम धन धारि उर, पूरण बैराठी प्रसन॥१६६

पूरण पूरा ज्ञांन सूं, बैराठी गुर-गम लयौ॥टे०
अष्टाग-जोग अभ्यास, गुफा कदर के बासी।
कनक कांमनी रहत सदा, हरि नाम उपासी।
बाचा छले मलेछ, कपट करि ब्याह करायो।
त्यागी तिरिया रहत नहीं, तन कलक लगायो।
अनल पख के पुत्र ज्यूं, उलटि अपूठौ बन गयो।
पूरण पूरा ज्ञांन सौं, बैराठी गुर-गम लयो॥१६७

सिंध-सुता सप्रदाइ मैं, लक्षमन भट भारी भगत॥
धर्म सनातन धारि, भक्ति करि जग मैं जांन्यौं।
सतन सेती हेत, नेम प्रेमां मन मांन्यौं।
जथा-लाभ संतुष्ट, सुह्रिद परमारथ कीन्हौं।
उत्म इष्ट थापि, साध मारग कहि दीन्हौं।
सारा-सार बिचार उर, सदा कथन श्रीभागवत।
सिंधु-सुता सप्रदाइ मैं, लक्षमन भट भारी भगत॥१६८

खेम गुसाई राम पन, राम रासि गुर सीस धरि॥टे०
रांमचद्र कौ अनुग, जगत मैं नांहीं छानै।
उर मैं और न ध्यान, येक सीयारामहि जानै।
कारमुक बामैं हाथि, दाहिनै साईक राजै।
यह प्रीय लागै रूप, दरस तै सर्ब दुख भाजै।
हनुमत समां सो साहिसी, गद गद बाणीं प्रेम करि।
खेम गुसाईं रांम पन, राम रासि गुर सीस धरि॥१६९

तुलसी राम उपास की, रांमचरित बरनन करचौ॥टे०
बालमीक कीयो सहस, कृत श्रीफल सम जानौं।
भाषा दाष समान, पात परिश्रम मति मांनौं।
नर नारी सुख भयो, प्रेम सूं गावै निस दिन।
पातक सब कटि जात, सुनत निर्मल तन मन जन।

परसत साध सराहहीं, मनौं दिवाकर यहु दुती ॥
उरम भजन प्रकासि किरिणि, करणी करि पोषे।
सीयावर गुण नाम गाइ आंन न संतोषे।
जनक-सुता आधार अंघ्रि ग्रहि, महधन भरियो।
गुर नरहर की कृपा, पुत्र नातीयौ करियो।
रघुनाथ इष्ट निहचल सदा आंन बात को ना दुती।
परसत साध सराहहीं मनौं दिवाकर यहु दुति ॥१६२

इंदव पर की प्रभुता कर आप प्रमानक, ऐसो भयो दिव्य देव दिवाकर।
छंद संत सुभाव अभंगी सिरोमनि मांनूं मिली दुरि दूध में साकर।
जीवत मुक्ति दिये दसहूं दिसि, ज्यूं नव-खंड उद्योत प्रभाकर।
राघो कहै परमारथ यूं करि, स्वारथ के सिर दै गयो टाकर ॥१६३

छप्पै श्री सौरंभ स्वामि प्रसाद सौं परण बस रह्यौ प्रियाग कौ ॥
मन बच क्रम भगवंत उभै अंघ्री उर भायें।
सीता मे निर-धान, भाव सत दोइ दिखाये।
सतन सरस सनेह भांति दोऊ वन लीया।
मंछू असो दे ग्राहि, महोछा पूरण कीया।
दोसो[1] पुजा चढावहीं दयारे कलस भाग को।
श्रीसौरभ गुर प्रसाद तें परण बस रह्यौ प्रियाग पौ ॥१६४
हठ जोग जमादिक साधिकें द्वारिकादास हरि सौं मिल्यौ ॥८०
कूकस की नदिका नीर मैं लगी समाधी।
प्रभु पद सुं रति अचल येक आतम आराधी।
काम जोम घर बित बंध कुस जगत निरासा।
काम क्रोध मद मोह करम की काटी पासा।
गुर कील्ह करण प्रसाद तें भक्ति सकि भ्रम कौं गिल्यो।
हठ-जोग जमादिक साधिकें द्वारिकादास हरि सूं मिल्यौ ॥१६५
धरम धरम धन धारि उर पूरण बैराठी प्रसन ॥
अर्जुणी आपूरण सत बिधि भयो बडांगो।
जम-नियम प्राणायामसन जहां साधे ध्यांनी।

---

[1] दानी।

वाचत पुस्तक नाम हरै अघ, सत्य सबै परमान कहीजे।
ह्वै परतीति कहो तुम ही जिम, खाइ नदी सुर पातिहि लीजे।
भोजन ले करि मदिर आवत, भक्त कहै यह न्याव करीजे।
जानत हौ तुम नाम प्रतापहिं, पाइ लयो जय सब्द भनीजे ॥१८१

रैंनि निसाचर चोर न आवत, स्याम सरूप खडे सर लीया।
आत तबैं तब साधि डरावत, प्रात लगैं हरि आन न दीया।
बूझत संतहि स्याम सिपाहिन, बोलत नाहि न नैन भरीया।
राय लुटावत यौ न सुहावत, चोर भये सिप राम भजीया[1] ॥१८२

मृत्यु भयो द्विज नारि सती हुत, जोरि करौ दुय सीस नवायो।
राम सुहागनि बैन कह्यौ पति, मौति भई उठि है हरि भायो।
स्याम भजौ सवही कुल सौ कहि, मानि लई उन बेगि जिवायौ।
भक्त भये सब साखत ता तजि, लेस[2] रहै मन लोक न पायौ ॥१८३

लैंन खनाइ दये पतिस्या भृति, ज्याइ दयौ दिज यौ कहि सूबा।
चाहत देखन ल्याव(त) भली बिधि, जात बिनै करि[3] यौ पग धूवा।
भूप मिले चलि ऊपरि लेवत दे बहुमान कहै तुम खूवा।
द्यौ अजमत्ति सुनी अति गत्तिहि, राम करै हमसौ नहि हूबा ॥१८४

राम करै सु दिखाइ हमै अब, रोकि दये हनुमान हि ध्याये।
बेगिहि वादर म्हैल चढे बहु, फारत अबर देह लुचाये।
ढाहत है गढ नाखि तलै लढ, दातन तै वढ भूप डराये।
आखि हुई यह कौन दई सु, पुकारि कही अब राखि हराये ॥१८५

पाइ पर्यौ हम जीव उबारहु, देखि अजम्मति[4] लाज नयौ है।
सात करे सब भूपहि भाखत, ह्या न रहौ गढ राम भयौ है।
त्याग दयो सुनि और करावत, हाजर है नही फेरि पयौ है।
जाइ वनारस आइ बृंदावन, नाभहि सूज कवित्त लयो है ॥१८६

काम गुपाल जु को कर दर्सन, राम सरूपहि सीस नवाऊ।
धारि लये कर साइक धन्नुक, देखि छवी कहियौ गुन गाऊ।
कोउ सुनावत कृष्ण सुय हरि, राम कला कहि मैं न भुलाऊ।
जानत हौ दसरत्थ लला अब, ईसुर आप कहे मन लाऊ ॥१८७

---

१ भलीया। २ लैंस। ३. कर्यां। ४. अजन्मति।

भक्त भक्ति निसतार न नांम रूप बोहिथ धरयौ।
तुलसी रांम उपास की, रांम चरित बरनन करयौ ॥१७०

मनहर ६९
कासी मधि कांमजित तपोधन जोग चित,
अति उग्र तेज तप भयो तुलसीदास कौ।
मगन महंत गति बांणी की विचित्र अति,
रांम रांम रांम सत्य ब्रत सासौ-सास कौ॥
ब्रत सत सावधान अमृत कथा कौ पांन,
हरि की कृपा सू वे हजूरी भयो पास कौ।
राघो कहै रांम कांम परच्यौ सब मन[1] धांम,
गह्यो मत मन येक अटल प्रकास कौ॥१७१

टीका तुलसीदासजी की

प्रीति तियाहि गई उठि पूछिन दौरि गयेस गई वहि ठौरा।
लाज भरी कहि रोस भरी मम रांम भजौनि तिमा सब चोरा।
ग्यांन भयो सुनि सोचि विचारत आत बनारसि धांमहु छोरा।
रांम भजे हरि पूजन भारत मारत है मन है यह चोरा॥१७७
बाहरि जात रहै कछु नीरहि भूत पिवै हनुमांन बताये।
पावत मन्दिर रांम चरित्र सुनें उठि आतस पैस पिछाये।
जात लगे चलि आरनि हू लगि पाइ परे कुरि दूरि सुनाये।
आन न देत करी किरपा अब जांनत भेद स भूत बताये॥१७८
लहु कछु वर रांम मिलापहु कांमतमाय मिल प्रभु प्यारे।
कीन करयो नवमी सुदि चत्रहु प्रीति लगी वह द्यौस निहारे।
पावत वा दिन रांम सगम्मन धाम चढे पट रस हरपारे।
पाइ कही हनुमत लगे प्रभु मैं न पिछांनत फेरि दिखारे॥१७९
ब्राह्मन एक हत्या करि आवत रांम कहै कछु देहु हत्यारे।
नाम सुन्यौ घर मांहि बुलावत भोजन ले गुर नांम तुम्हारे।
विप्र जुरे सब जाइ कहे हग पाप गये किम जीमन मारे।
बाचत हो तुम बेद पुरानन गाव न धारत धर्म तुम्हारे॥१८०

[1] बस।

वाचत पुस्तक नाम हरै अघ, सत्य सबै परमान कहीजे।
ह्वै परतीति कहो तुम ही जिम, खाइ नदी सुर पातिहि लीजे।
भोजन ले करि मदिर आवत, भक्त कहै यह न्याव करीजे।
जानत हौ तुम नाम प्रतापहि, पाइ लयो जय सब्द भनीजे ।।१८१
रैनि निसाचर चोर न आवत, स्याम सरूप खडे सर लीया।
आत तवै तव साधि डरावत, प्रात लगै हरि आन न दीया।
बूझत सतहि स्याम सिपाहिन, बोलत नाहि न नैन भरीया।
राय लुटावत यौ न सुहावत, चोर भये सिष राम भजीया[1] ।।१८२
मृत्यु भयो द्विज नारि सती हुत, जोरि करौ दुय सीस नवायो।
राम सुहागनि बैन कह्यौ पति, मौति भई उठि है हरि भायो।
स्याम भजौ सबही कुल सौं कहि, मानि लई उन बेगि जिवायौ।
भक्त भये सब साखत ता तजि, लेस[2] रहै मन लोक न पायौ ।।१८३
लैन खनाइ दये पतिस्या भृति, ज्याइ दयौ दिज यौ कहि सूबा।
चाहत देखन ल्याव(त) भली बिधि, जात बिनै करि[3] यौं पग धूवा।
भूप मिले चलि ऊपरि लेवत दे वहुमान कहै तुम खूबा।
द्यौ अजमत्ति सुनी अति गत्तिहि, राम करै हमसौ नहि हूबा ।।१८४
राम करै सु दिखाइ हमै अब, रोकि दये हनुमान हि ध्याये।
बेगिहि बादर म्हैल चढे बहु, फारत अबर देह लुचाये।
ढाहत है गढ नाखि तलै लढ, दातन तै वढ भूप डराये।
आखि हुई यह कौंन दई सु, पुकारि कही अब राखि हराये ।।१८५
पाइ परचौ हम जीव उबारहु, देखि अजम्मति[4] लाज नयौ है।
सात करे सब भूपहि भाखत, ह्या न रहौ गढ राम भयौ है।
त्याग दयो सुनि ग्रौर करावत, हाजर है नही फेरि पयौ है।
जाइ बनारस आइ बृदाबन, नाभहि सूज कबित्त लयो है ।।१८६
काम गुपाल जु को कर दर्सन, राम सरूपहि सीस नवाऊ।
धारि लये कर साइक धन्नुक, देखि छबी कहियौं गुन गाऊ।
कोउ सुनावत कृष्ण सुय हरि, राम कला कहि मैं न भुलाऊ।
जांनत हो दसरत्थ लला अब, ईसुर आप कहे मन लाऊ ।।१८७

---

१ भलीया। २ लैस। ३. कर्यों। ४. अजन्मति।

टीका

केवल नामहि संतन सेवत, बस उधार करयौ जग जानैं।
साध पधारत हेत करयौ बहु, नाज नही घर मैं कछु पानै।
लैंन उधारि गये जन बैंसिहि, कूप खुदाइ तलै मन मानैं।
कोल करयौ अब तो लि सिताब ही, रोल चढावत यौ घर आनैं ।।१८८
खोदत कूपहि राम कहै मुख, काम भयो मनि वौ सुख पायो।
धूरि परी धसि माहि गये दबि, दूरि करै थल होइ सवायो।
होत उदास घरावह आवत, नाव सुनी धुनि मास बितायो।
कूप गये फिरि होत सुनैं रव, काढन लागत धीर कहायो ।।१८९
रेत निकारिक जाइ लये पग, देखि सबै अति अचरज[1] आयौ।
ब्यौर लख्यौ जल कुम्भ पिख्यौ तन, कूब नख्यौ हरि कौ इम भायौ।
ध्यावत[2] धाम कहै धनि राम, पुमा नर बाम भलै जस गायौ।
आइ जुरयौ बहु लोग उमगिर, भाव भयौ उर माल चढायौ ।।१९०
मूरति ल्या करि संत पधारत, केवल कै वह रैंनि रहे है।
देखि सरूप भई मन मैं यह, नाहि चलै सु अचल्ल भये हैं।
जोर करै मन माहि डरै जन, हारि चले जब दाम दये हैं।
जानि[3] गये उर अंतर की हरि, नाव सुजानहि राइ कहे हैं ।।१९१
द्वारवती चलि छाप धरै भुज, जान न दे प्रभु धाम फिराये।
संतन की निति टैंल करौ, उर भाव धरौ करिहू तब भाये।
धामहि संखरु चक्र गदाबुज, चिन्ह भये भुज देखि रिझाये।
सागर गोमति संग रह्यौ सुनि, मालहि मेल्हिर दोइ मिलाये ।।१९२
सिष्य प्रसिष्य हुये तिनसू कहि, संतन सेव करौ चितलाई।
साध पधारत पाक करै तिय, आपन भ्रातहि खीर कराई।
केवल देखिर बुद्धि उपावत, दो घरि दे करि कूप चलाई।
सोचत जावत संत बुलावत, खीर परूसि-र बेगि जिमाई ।।१९३
नीर सिताबहि ल्याइ निहारित, देखि उठी जरि भ्रातहु देखै।
केवल काढि दई यह साखत, और करयौ भरता दुख पेखै[4]।
काल परयौ स पलै नहि टावर, जाइ रही कहु यौं करि लेखै।
साथि लिये भरतारहि बालक, केवल द्वारि परी सब सेखै ।।१९४

---

१ आश्चर्ज, आचर्ज। २ ल्यावत। ३ जौंनि। ४. देखैं।

भोजन-औ परकार करावत सान सभू चलि आवत द्वार।
बैन सुने तिय माहि विनै दुख होइ दयालहि रावत बारैं।
मोर धणी लखि सोर धणी पिपि कष्ट पर अब कौन निवारैं।
लेपन भारन टल करो रहि प्रन मिलैं प्रिग चावत धारैं ॥१६५

बास[1] कटाइर सीस दई तब, बास भई पछितात घणी है।
पैल समै फिरि पीछे न आवत रीति भमी सतसंग तणी है।
सिष्य करैं प्रन सेव दिखावत राम मिलै इम बात भणी है।
मोलि लयो कवि मास छपा महि रीति दिखाइ दई सु घणी है ॥१६६

खोजीजी को मूल

छपै   भाव भगति हित प्रेम सू, खोजी खोजे राम कौं॥
      काम क्रोध अरु लोभ मोह की काटी पासं।
      मुरधर देस निवास, पालड़ी गांव प्रकासं।
      समद्रिष्टी सुहृद, साध की सेव कराहीं।
      अगुणी गुणी भक्त, कछू सूं अंतर नाहीं।
      अनहद बाजा बाजिया राघो पावत धाम कौं।
      भाव भगति हित प्रेम करि खोजी खोजे राम कौं ॥१७६

इंदव ज्यौं पित मात कै मोहन बालक, राम समीप यौं खेलत खोजी।
छंद   वै प्रभु के पग धारि बिचारीक ताहि कहौंव बुलावत कोजी।
      जिनके हिरदै हरि नाम गुमझ्झ ताहि फुरै बसहूं बिसि रोजी।
      राम सूं रत तबै अबिहतहि राघो कहै सतवादी इसौजो ॥१७७

टीका

चातुरदास गुरू-जन खोजहि मृत्यु समैं उन घंट बंधानी।
राम मिलै हम बाजत है यह चाहत बाजिन चित बखांनी।
अंत समैं न हुते फिरि आवत सोइ बहां मति अंव रहांनी।
स करि धीरज सूक्षम जीवस तांत[2] भयो जब घट भजांनीं ॥१६७
जोगि भये मिथ यौं सब मानत है गुर संभ्रम गूंन सताई।
चपल है मन पौन[3] समागन रीति भागी उन हौं सरसाई।

---

[1] बास। [2] तांत। [3] पौन समागम।

लीन भये परमेशुर पैलहि, देखि पक्यौ फुल[1] बुद्धि चलाई।
प्रीति फली जन राम लई मनि, वात रही दुरमत्ति बिलाई॥१६८

मूल

छपै अल्हरांम[†] रावल दया, राघो कलिजुग जीतियो॥
मोह क्रोध मद कांम, लोभ नीरौ नहिं प्रायो।
सग्रह जो कछु कीयो, सोई साधन वरतायौ।
आठ मास जल लेत, सूर चौमासै वरसै।
सिष सेवग मरजाद, चन्नावत गुर नहीं परसै।
गुर धरमसील सत पुनि टहल, करत काल इम बीतियो।
अल्हराम रावल दया, राघो कलिजुग जीतियो॥१७८
हरिदास बावनौ भगति करि, बावन सम ऊचौ बढ्यौ॥
सतन सूं निरदोष रह्यौ, सुपनै अर जागत।
स्याम स्वाग सू प्रीति रीति, यम गुर जिम पागत।
भवन मधि निरवेद, जनक ज्यूं लिपता नाही।
चरन-कवल भगवान, वास ले मनमत माहीं।
कुल जोगानन्द परगट्ट कर, रैनि दिवस रामहि रढ्यौ।
हरिदास बांवनौं भक्ति करि, बावन सम ऊचौ बढ्यौ॥१७६
जन राघो रघुनाथ की, भ्रथ सिर धारी पावरी।
दक्षन दरावड देस, तहां के भक्त बखानौं।
नरनारी गुरमुखी, जथामति जो हू जानौं।
सतवादी प्रम-हस, पुनह श्रीसत सरूप।
दास-दास री नमो नमो, ब्रह्मचर रथ मूपं।
आदि भक्ति अनुक्रम धरम, करहि बेद बिधि द्रावडी।
जन राघो रघुनाथ की (ज्यूं), भ्रथ सिर धारी पावड़ी॥१८०
कबीर कृपा कौं धारि उर, पदमनाभ परचै भयौ॥
राम मत्र निज मत्र, जाप हिरदै मैं राख्यौ।
जप तप तीरथ नाम, नाव बिन और न भाख्यौ।

---

[1] फल।

[†] गुरु।

बाम्रिण की सौ ठेर, कहि गवगव ह्वै वांणीं।
रांम मंत्र निज आप, देइ उधरे बहु प्रांणी।
जन राघो मनमैं उमंगि जस, आप पीयौ औरन पयौ।
कबीर कृपा करि धारि उर पदमनाम प्रभ भयौ ॥१८१

टीका

इंदव साह बनारसि कोढ हुतौ उन सट्ट परीतन बूडन चाल्यौ।
छंद आवत हेस पदम्महि बूझत बात कही कस खोलि न हाल्यौ[1]।
रांम कहावत तीन बिरधा जन कोढ गयौ गुरदेवहु काल्यौ।
नांव प्रभावन जांनत मैं कहु लेस करे सुष जो श्रुति चाल्यौ ॥१९९

मूल

छपै जीवा तत्वा[2] बखरा बिसि, प्रगट उधारक बंस के ॥
भक्ति अमृत की नदी सुहृता की दिढ पाजा।
जोर बडन की रीति, प्रीति सौंही नहि भाजा।
द्रुरज बंस सुभाव, बहुत गुण धर्म-सील सत।
भले सुर दातार, दया परबीन परम मत।
राघो जन मंजुल सुसै, रवि ससि जोभा बंस के।
जीव तत्वा बखरा बिसि, प्रगट उधारक बंस के ॥१८२

टीका

भ्रात उभै द्विज जीवहि ततहि[3] सेवत संतन सिष्य भये हैं।
रोपत ठूठ हरयौ यह होइस साधन दोइ सु नाखि भये हैं।
आइ कबीर दिखाइ हरयौ तर नेम हुवो सिषि पाय लये हैं।
नाम दयो तिनि[4] कांम बनै कठि आइ कही हम बोलि गये हैं ॥२००
हैं इकठे द्विज बात गई मिज दूरि करे सु सुता नहि लेवैं।
येक बनारस जात कबीर हि बात कही सब धीरज[5] देवैं।
आप उभै मनबंध करौं न डरौ चित मैं समझौ यह भेवैं।
आइ करी बहि भाति डरी उर भूल परी बहि यों पग सेवैं ॥२०१
यौंहि करैं हम धाम न आवत संत बिराजि भूप टेक तजीजै।
पंरि बनारस जा करि बूझत ब्याह करौ सिरऽव पधीजै।

---
[1] हाल्यौ। [2] तत्व। [3] ततवहि। [4] ढूंढ, बूंठ। [5] निढि। [6] धारज।

भक्ति करौ जन भाव धरौ तव, देत तुमैं सुनि लेत करीजे।
साखत भक्त भयेरु सराहत, पच कहै तुम्हरे पन रीझे ॥२०२

मूल

छपै करणीं जित कवीर-सुत, अदभुत कला कमाल की ॥
प्रगट पिता समाज रहे, कछु इक दिन द्वारैं।
सतवादी सत-सूर, भजन सौं कवहूं न हारैं।
सुक सनकादिक जेम, नेम सू निरगुण गायौ।
मन बच क्रम भयो मगन, भेव काहू नहीं पायौ।
जन राघो वलि (वलि[1]) रहणि की, पहुचै राल न कालकी।
करणीं जित कबीर-सुत, अदभुत कला कमाल की ॥१८३
श्रीनद-कुवर सन नददास, हित चित वांध्यौ भाइकै ॥६०
समैं समैं के सबद, कहे रस ग्रथ वनाये।
उक्ति चोज प्रसताव, भजन हरि गान रिझाये।
महिमांसर परजंत, रामपुर नग्र बिराजे।
सत चरन रज इष्ट, सुकल सरबोपरि राजे।
भ्राता राघो चद्रहास है, सो सब गुण लाइकै।
श्रीनद-कुवर सन नंददास, हित चित बाध्यौ भाइकै ॥१८४
अति प्रतीति उर बचन की, गुर गदित सिष सति मानियो ॥
सीष पाइकै चल्यौ, कहूं कारिज कै ताईं।
मेरे मन की बात, कहूगो सीघ्र आईं।
रामसरनि भये स्वामि, दगध करनै लै जाहीं।
मनि गुर-गिर बिसवास, फेरि लीये अस तल माहीं।
बिभू बरसहि यह कही हरि-जन गुर इक जानियो।
अति प्रतीति उर बचन की, गुर गदित सिष सति मांनियौ ॥१८५

टीका

इदव छद है गुर भक्तस नून गिनै जन, पूजि मनै गुर क्यू समझावै।
कै न करै परि नाहि कहै निति, रामति चालत बेगि बुलावै।
छूटि गयौ तन बारन देतन, ल्यावत फेरिस वात जनावै।
भाव लखै सति यौ जिय बोलत, सेव करो जन वर्ष दिखावै ॥२०३

---
१ छलि।

चात्रिग की सी टेर, कहि गदगद ह्वै बांणीं।
रांम मंत्र निज आप, दइ उपरै बहु प्रांणी।
जन राघो अगभै उमंगि जस, आप पीयो औरन पयो।
कबीर कृपा कौं धारि उर, पदमनाभ प्रचै भयो ॥१८१

टीका

इंदव छंद
साहु बनारसि कोढ हुतौ उन लट्ठ परीतन बूडन चाल्यौ।
आवत देख पदम्महि बूझत बात कही सब खोलि न हाल्यौ[1]।
रांम कहावत तीन बिरयां जन कोढ गयो गुरदेवहु भाल्यौ।
नांव प्रभावन जानत ने कहु लेस करे सुभ जा श्रुति चाल्यौ ॥१९९

मूल

छपै
जीवा तत्वा[1] दखण दिसि प्रगट उधारक बंस के॥
भक्ति अमृत की नदी सुमुता की दिढ पाला।
और भजन की रीति प्रीति सौंही नहि चाला।
दुरब जस सुभाव, बहुत गुण धर्म-सील सत।
भले सूर दातार दया परबीन परम मत।
राघो जन अधुम सुलै रवि ससि जोजा अंस के।
जीव तत्वा दखण दिसि प्रगट उधारक बंस के॥१८२

टीका

भ्रात उभै द्विज जीवहि ततहि[3] सेवत संतन सिष्य भये हैं।
रोपत सू ठ[4] हरयो यह होइस साधन तोइ सु मांखि भये हैं।
आइ कबीर दिखाइ हरयो तर, नेम हुवो सिषि पाव लये हैं।
नांम दयो तिनि[5] कांम बनै कठि आइ कहो हम बोलि गये हैं ॥२०
ह्वै इकठे द्विज भ्रात गई निज दूरि करे सु सुता नहि सबै।
येक बनारस जात कबीर हि बात कहो सब धीरज[6] देवै।
आप उभै समबध करौं न डरो चित मैं समझो यह भेवै।
आइ करी वहि भांति करी उर सून धरी कहि यौं पन सेवै ॥२१
मोहि करै हम ग्रांम न आवत संत तिर्यां सुब टेक तजीजे।
फेरि बनारस जा करि बूझत ब्याहु करो सिरदार धरीजे।

१ दुखन्नै। २ तत्व। ३ तत्वहि। ४ ठूंठ, थूंठ। ५. तिठि। ६ धारज।

मनहर छंद

परस कूं पारस मिले हैं गुर पीपा आइ,
आपसौ कीयो बनाइ वारवार कसिकै।
खोयौ है कन्या को कोढ़[1] धोवती दई वोट,
सकति की सेवा मेटी ताकै गृह बसिकै।
खाती को खलास करि रीझे हैं परसपरि,
माथै हाथ धर्यौ स्वामी हेत सेती हसिकै।
राघो कहै प्रास[2] प्रसिधि भये तीनू लोक,
संतन की सेवा कीन्ही पूठी हरि असिकै ॥१९०

छपै

कूरम-कुलि दुती बलि विक्रम यम, निबह्यौ पन पृथीराज कौ ॥
दया द्वारिकानाथ, करै तौ दरसन जाजे।
परे कुदरती चक्र, आइ आवेर निवाजे।
घरि-घर नीबा ईस, आप राजा रति गामी।
सुत उपजे षट[3] दोइ, भये नौ-खड मधि नामी।
हुवो हरि भगतन कौ भगत, जन राघो बड़ कुल काज कौ।
कूरम-कुल दुती बलि विक्रम यम, निबह्यौ पन पृथीराज कौ ॥१९१

टीका

इंदव छंद

संग चल्यौ गुर कै पृथिराजन, प्रीति घणी रनछोडहि पाऊ।
बात सुनी स दिवान गयो निसि, भक्ति हुई गुर संतन गाऊ।
लेहु विचारि करौ तव भावस, संगि न लेवत बात दुराऊ।
प्रात भये नृप आवत चाहत, आप कही रहिये सुख पाऊ ॥२०४
गोमति न्हाइर लेवत छापहि, देखत हौ रणछोड पुरी कौं।
तीनहु वात इहाहि लहौ[4] तुम, सोच करौ मति देखि हरी कौं।
मानि लई पहुचावन जावत, आई घरा नृप जानि खरी कौ।
दोइ गये दिन सौवत हो निसि, आइ कही उठि लेहु करी कौं ॥२०५
बोलि गुरू जिम आप कहै प्रभु, आइ गयो उठि सीस नवायो।
गोमति माहि सनान करौ कहि, न्हाइ लयो सुनि आप न पायो।
छाप भई भुज संख चक्रादिक, ढील लगी त्रिय आइ चितायौ।
सेस रह्यौ जल सुद्ध करौ तन, राम धरौ उर भूप सुनायौ ॥२०६

---

१ पक हेढ़। २ पारस, परस। ३ घट। ४ लहैं।

मूल

छप्पै
बीठलदास हरि भक्ति करि जुगल पानि मोदक चढ़े ॥टे०
सदा प्रेम परस रहत संत रज सीस चढ़ाई।
तरकि तज्यौ संसार, पेक हरि भक्ति दिढ़ाई।
संप्रदाइ सिष[1] आदि पत, दीपक ज्यौं मानौं।
जन परयस सतकार, करै रबसौ आमौं।
लौक उमै हरि गुर दये सबद साखि निसि दिन रढ़े।
बीठलदास प्रभु भजन करि, जुगल पानि मोदक चढ़े ॥१८६

परसोतम गुर की कृपा, जगंनाथ जग जस कर्‌यौ ॥टे०
प्रेम भक्ति कौ पुंज, सिंधु सा पथित संभारी।
श्रीरामानुज पन प्रीति, रीति उर धतर-धारी।
संसकार सतकार, सनातम धरम सुहावै।
समद-मादि मुनि वृत्ति बिसद हरि के जन भाव।
पारासुर कुलकौ पदध्यौ, रामदास धरि तन धर्‌यौ।
परसोतम गुर की कृपा, जगनाथ जग जस कर्‌यौ ॥१८७

दातार अनन्य उर भनी ऐसौ भक्त कल्यान है ॥
लीलाचल पति मूर्ति चतुर हरि कौ चित चाह्यौ।
उत्तम भक्त पियांनि भांति अपनौ निरबाह्यौ।
देह त्यागती बेरि हेत सीता-वर कीन्हौं।
धाम धाम घर बित्त काढ़ि मन रामहि दीन्हौं।
बिद्युत-प्रभा परकास सम धर्‌यौ स्याम घन ध्यान है।
दातार अनन्य उर भनी, ऐसौ भक्त कल्यान है ॥१८८

ये भरथ-खंड मधि भूप हैं टीला लाहा भक्ति के ॥टे०
मंगल परमांनंद परम भजनीक उजागर।
जोगीदास र खेम बिपत दसधा के आगर।
स्यामदास के लोन पढ़ी गुर धरम की टेका।
हरीदास हरि भक्ति करी अति धरम की पेका।
जन राघो रति रामसौ काटे बंधन सक्ति के।
ये भरथ-खंड मधि भूप हैं टीला लाहा भक्ति के ॥१८९

---
१ सिषु।

मनहर छंद

परस कूं पारस मिले हैं गुर पीपा आइ,
आपसौ कीयो वनाइ वारंवार कसिकै।
खोयौ है कन्या को कोढ़[1] धोवती दई वोट,
सकति की सेवा मेटी ताकै गृह वसिकै।
खाती को खलास करि रीझे हैं परसपरि,
माथे हाथ धरचौ स्वामी हेत सेती हसिकै।
राघो कहै प्रास[2] प्रसिधि भये तीनू लोक,
सतन की सेवा कीन्ही पूठी हरि असिकै ॥१६०

छपै

कूरम-कुलि दुती बलि बिक्रम यम, निबह्यौ पन पृथीराज कौ ॥
दया द्वारिकानाथ, करै तौ दरसन जाजे।
परे कुदरती चक्र, आइ आवेर निवाजे।
घरि-घर नीबा ईस, आप राजा रुति गामी।
सुत उपजे षट[3] दोइ, भये नौ-खड मधि नामी।
हुवो हरि भगतन कौ भगत, जन राघो बड कुल काज कौ।
कूरम-कुल दुती बलि बिक्रम यम, निवह्यौ पन पृथीराज कौ ॥१६१

टीका

इदव छद

सग चल्यौ गुर कै पृथिराजन, प्रीति घणी रनछोडहि पाऊ।
बात सुनी स दिवान गयो निसि, भक्ति हुई गुर सतन गाऊ।
लेहु विचारि करौ तव भावस, सगि न लेवल बात दुराऊ।
प्रात भये नृप आवत चाहत, आप कही रहिये सुख पाऊ ॥२०४
गोमति न्हाइर लेवत छापहि, देखत हौ रणछोड पुरी कौ।
तीनहु वात इहाहि लहौ[4] तुम, सोच करौ मति देखि हरी कौं।
मानि लई पहुचावन जावत, आई घरा नृप जानि खरी कौ।
दोइ गये दिन सौवत हौ निसि, आइ कही उठि लेहु करी कौं ॥२०५
वोलि गुरू जिम आप कहै प्रभु, आइ गयो उठि सीस नवायो।
गोमति माहि सनान करौ कहि, न्हाइ लयो सुनि आप न पायो।
छाप भई भुज सख चक्रादिक, ढील लगी त्रिय आइ चितायौ।
सेस रह्यौ जल सुद्ध करौ तन, राम धरौ उर भूप सुनायौ ॥२०६

---

१ पक हेढ़। २ पारस, परस। ३ घट। ४ लहैं।

मूल

छप्पै   बीठलदास हरि भक्ति करि जुगल पांनि मोदक चढ़े ॥९०
सदा प्रेम परए रहत, संत रज सीस चढ़ाई।
तरकि तज्यो संसार, येक हरि भक्ति दिढ़ाई।
संप्रदाइ सिष[1] आदि पत, दीपक ज्यों मांनों।
जन परचस सतकार, कर रैदासी जांनों।
सोक उभै हरि गुर दये, सबद साखि निसि दिन रढ़े।
बीठलदास प्रभु भजन करि, जुगल पांनि मोदक चढ़े ॥१८८
परसोतम गुर की कृपा, जगंनाथ जग जस करूयौ ॥९०
प्रेम भक्ति कौ पुंज, सिधु ज्या पथित समारी।
श्रीरांमांनुज पन प्रीति रीति उर अंतर-धारी।
सतकार सतकार, सनातन धरम सुहावै।
समद-मांदि मुनि वृत्ति, बिसद हरि के जन भावै।
पारासुर कुलकी चढ्यों, रांमदास धरि तन धरूयौ।
परसोतम गुर की कृपा, जगनाथ जग जस करूयौ ॥१८७
दातार भलप्पन उर भलौ ऐसौ भक्त कल्यांन है॥
सीलावस पति भूति, चतुर हरि कौ चित चाह्यौ।
परम भक्त पिछांनि मांनि अपनौ निरबाह्यौ।
देह त्यागती बेरि हेत सीता-बर भीन्हौं।
धांम श्रांम धर बित्त काढ़ि मन रांमहि दीन्हौं।
बिधुत-प्रभा परकास सम धरूयौ स्यांम-घन ध्यांन है।
दातार भलप्पन उर भलौ ऐसौ भक्त कल्यांन है॥१८८
ये भरथ-खंड मधि धूप है टीका बाह्या भक्ति के ॥९०
अंगद परमानंद, परम भजनीक उजागर।
जोगीदास र षेम बिपत बसधा के आगर।
ध्यांनदास के सोज गही गुर धरम की टेका।
हरीदास हरि भक्ति करी अति मरम की येका।
जन राघो रटि रांमजी काटे बंधन सक्ति के।
ये भरथ-खंड मधि धूप है टीका बाह्या भक्ति के ॥१८९

१ सिषु।

मूल

छपै सतन कौ सरबस दीयो, जन राघो हरि की प्रीति कौं ॥
कुर सारत करतार सूं, भक्ति जिहाज के खेवा।
राम काम सरखरू, पोता पृथीराज के येवा।
भगवांनदास भगवत भज्यौ, करि भक्ति अनूप।
छाप छहूं दरसन बिषै, भयो बैरागी रूपं।
काछ बाच निकलक है, महा-निपुन धर्म-नीति कौं।
संतन कौं सर्बस दीयो, जन राघो हरि की प्रीति कौं ॥१९३

इंदव छंद भजनीक भलौ सत सूर सदा, हरदास की तेग महा अति सारी।
भोग की भावना नारि कै ऊपनी, बालक ऐक ह्वै तौ भलौ भारी।
जेहरि लै जल कै मिसि नीसरी, बाधि कै पाव कूवा मैं उसारी।
राघो कहै बढी मानि महंत की, चित्र के दीप ज्यौं सो जिहि टारी ॥१९४
मालि करी बनमालि की बदगी, भक्ति की वाड़ी निपा गयो नापो।
ध्यांन को धोरो कियो उर अंतर, पाणी पताल सूं काढ्यौ अमापो।
यौं निज नीर परेर्‍यौ निरंजन, राम रट्यौ रसना निहपायो।
राघो रसाल बिसाल बयारौ लै, यौं हरि कौं मिल्यौ मेटिकै आपो ॥१९५
काच तणै कुलि कचन देखहु, कीर तै हीर भयौ कलि कालू।
ऊसर सूसर भूमि ह्वै ज्यूं, उपजै अन-ईष अनंत उन्हालू।
गोधूम ज्यूं सुद्धक अग कीयो गुर, दूरि करे कुल-क्रम के सालू।
राघो कहै गुण गोबिंद के पढ़, तै कहु जीभ लगी नहीं तालू ॥१९६

इति श्री रांमानुज सप्रद्रा

अथ विष्णु स्वांमि संप्रदा लिखतं

छपै छद क्यूं करि बरनौं आदि घर, खबर न येकौ अंक की ॥
विष्णु स्वामि स्यंभू मतौं, मनौं बच क्रम करि धार्‍यौ।
भाव भगति भगवंत भज, जसै जग मधि बिसतार्‍यौ।
पैड़ी[1] बंध प्रवाह घणो, घट सौं घट सीझै।
खुली सुकति[2] की पौरि, जास गुर गोबिंद रीझै।

---

१ पड़ी। २ मुकति।

प्रात भयो सब लोग सुनी चलि आवत देखन भीर भई है।
साध महुत भले पुनि आवत छाप सरीरहि देखि लई है।
भेट धरै बहुमान करै नृप लाज मरै सुनि बात नई है।
देवल श्रीनरस्यंघ मनावत होत सबै जत साखि दई है॥२०७
नैन बिना द्विज द्वार परयौ सिव चाहत है द्रिग मास बदीते।
नाथ कहै यह फेर न होवत जात नही मन मांहि प्रतीते।
ले पृथिराज चरणोद्ध छुवावहु आनि कहीं दिज सो भ्रम मीते।
नौत्म लाइ दयौ तन क छुय आंखि खुली द्विज ह्वै चित चीते॥२०८

मूल

छप्य आसकरन के आस यहु, मन मे मोहनलाल हरि॥
भीम पिता गुर कील्ह, भक्त भगवत सम सेवै।
जो कछु घर मधि माल, जितौ साधन के सेवै।
अज महोछव रास, दास हरिजी के पूजे।
भरम करम कुल रीति आन धर्म छाड़े दूजे।
राघो रीम रच्यौ भलौ, कूरम-कुल पृथीराज घरि।
आसकरन के आस यहु मन मे मोहनलाल हरि॥१९२

टीका

इंदव कोट नरव्वर को वड भूपति मोहनलालहि सेव करै हौ।
छंद मवरि मैं रहि पैर सवा इक चौकस जाम न पात भरै हौ।
काम भयौ नृप बेगि बुलावत लोग कहै नहि कान धरै हौ।
फौज चढी पतिस्या चलि आवत आइ कही उठ मांहि डरै हौ॥२०९
फेरि पठावत रारि सुनावत चित्त न आवत साहि गयो है।
चित गई प्रतिहार कही इक आप पधारहु जात भयो है।
पूजन ह्वै परनाम कर नृप शीस लगो पग खंग दयो है।
ऐहि वडी मुजिसी न करी मिति मेम लख्यौ तब द्वार लयो है॥२१०
मांगि वई चिग देखत पीछहि साहि सलाम करी बहु रीझे।
साध सनेह भरयौ फिर बूझत भाव कह्यौ सुनिकै नृप भीजे।
भक्त तज्यौ तन भूप भयौ दुख आप सुनी प्रभु भोग न कीजे।
सेव करै द्विज गांव दये तिन लाड़ करी उसके प्रभु धीजे॥२११

मूल

छपै सतन कौ सरवस दीयो, जन राघो हरि की प्रीति कौं ॥
कुर सारत करतार सूं, भक्ति जिहाज के खेवा।
रांम काम सरखरू, पोता पृथीराज के येवा।
भगवानदास भगवंत भज्यौ, करि भक्ति अनूप।
छाप छहू दरसन विषै, भयो बैरागी रूप।
काछ बाच निकलक है, महा-निपुन धर्म-नीति कौं।
सतन कौं सर्बस दीयो, जन राघो हरि की प्रीति कौं ॥१९३

इंदव छद भजनीक भलौ सत सूर सदा, हरदास की तेग महा अति सारी।
भोग की भावना नारि कै ऊपनी, बालक ऐक ह्वै तौ भलौ भारी।
जेहरि लै जल कै मिसि नीसरी, बाधि कै पाव कूवा मैं उसारी।
राघो कहै वढी मानि महत की, चित्र के दीप ज्यौं सो जिहि टारी ॥१९४
मालि करी बनमालि की वंदगी, भक्ति की वाडी निपा गयो नापो।
ध्यान को धोरो कियो उर अंतर, पांणी पताल सूं काढ्यौ अमापो।
यौं निज नीर परेरचौ निरजन, राम रट्यौ रसना निहपायो।
राघो रसाल बिसाल बयारौ लै, यौं हरि कौं मिल्यौ मेटिकै आपो ॥१९५
काच तणं कुलि कचन देखहु, कीर तै हीर भयौ कलि कालू।
ऊसर सूसर भूमि ह्वै ज्यू, उपजै अन-ईष अनत उन्हालू।
गोधूम ज्यू सुद्धक अग कीयो गुर, दूरि करे कुल-क्रम के सालू।
राघो कहै गुण गोबिंद के पढ, तै कहु जीभ लगी नहीं तालू ॥१९६

इति श्री रांमानुज सप्रदा

अथ विष्णु स्वांमि संप्रदा लिखतं

छपै छद क्यूं करि बरनौं आदि घर, खबर न येकौ अंक की ॥
विष्णुं स्वामि स्यंभू मतौ, मनौं बच क्रम करि धारचौ।
भाव भगति भगवंत भज, जसै जग मधि बिसतारचौ।
पैड़ी[1] बंध प्रवाह घणो, घट सौं घट सीझे।
खुली सुकति[2] की पौरि, जास गुर गोबिंद रीझे।

---

१ पडी। २ मुकति।

प्रात भयो सब लोग सुनी बसि आवत देखन भीर भई है।
साध महंत भले पुनि आवत छाप सरीरहि देखि गई है।
भेट धरै बहुमान करै नृप, लाज मरै सुनि बात नई है।
देवल श्रीनरस्यंघ बनावत होत भले जन साखि दई है ॥२०७
नैन बिना द्विज द्वार परयौ सिव चाहत है द्रिग मास बदीते।
नाथ कहै यह फेर न होवत जात नही मम माहि प्रतीते।
ले पृथिराज अगोद्ध छुवावहु आनि कहीं दिज सौ भम मीते।
नीरस लाइ दयौ तन के छुप आंखि खुली द्विज ह्वै चित चीते ॥२०८

मूल

छपै आसकरन के आस यहु, मन मे मोहनलाल हरि ॥
भींव पिता गुर कील्हु, भक्त भगवत सम बेखें।
जो कछु घर मधि माल जितो साधन कै लेखैं।
जग महोछव रास बास हरिजी कै पूजे।
भरम करम कुल रीति, आन धर्म सारे धूजे।
राघो रीम रच्यौ भलौ कूरम-कुल पृथीराज घरि।
आसकरन के आस यहु मन मे मोहनलाल, हरि ॥११९

टीका

इंदव कोट नरव्वर को वह भूपति मोहनलालहि सेव करै हौ।
छंद मंदरि मैं रहि पैर सवा इक चौकस जाम न पात मरै हौ।
काम भयौ नृप बेगि बुलावत लोग कहै नहि काम धरै हौ।
फौज चढी पतिस्या चलि आवत आइ कही तउ नाहि डरै हौ ॥२०९
फेरि पठावत दारि सुलावत चित्त न आवत साहि गयो है।
चित्त भई प्रतिहार कही इक आप पधारहु बात भयो है।
पूजन ह्वै परनाम करै नृप सीस लगी पग लग दयो है।
ऐडि चढी मुलिसी न चढी मिति मेम सच्यौ तब द्वार भयो है ॥२१०
मांखि दई धिग बेखत पीछहि साहि सलाम करी बहु रीझे।
साध सनेह करयौ फिर बूझत भाव कह्यौ सुनिकै नृप भीजे।
भक्त तज्यौ तन भूप भयौ दुख आप सुनी प्रभु भोग न कीजे।
सेव करै द्विज भाव दये तिन लाइ करी उसके प्रभु पीजे ॥२११

पैंज रही पतिस्याह द्रवार मैं, गाइ जिवाइ कै बच्छ मिलायौ।
राघो कहै परचौं परचे पर, देहुरौ फेरि दुनी दिखरायौ ॥२००

नामदेव नाम नृदोष रटै रुचि, पाप भजे कुचि देह तैं दूरी।
उर थैं अपराध उठाइ धरे दस, राम भये बस पात ज्यूं पूरी।
जाप जपै निह[1] पाप नृम्मल, भीर परै गहि साच सबूरी।
राघो कहै जल मै थल मै, स चराचर मैं हरि देखै हजूरी ॥२०१

टीका

वामसदेव भगत्त वडो हरि, तास सुता पति-हीन भई है।
सवत वारह माहि भई तव, तातहि ठाकुर सेव दई है।
तोर मनोरथ सिद्धि करै प्रभु, प्रीति लगाइ रहो तम ईहै।
सेव करी अति वेगि भये खुसि, भोग चहै अपनाई लई है ॥२१४

भ्यौ गरभादिक वात करै सव, साखत लौगन कै चित भाई।
कानि परी यह वामसु देवहि, ठीक करी हरि की किरपाई।
वाल भयो तव नामस देवहि, राइ हुतौ सव देत वधाई।
होत वडो हरि सौ हित लागत, रीति जगत्तहु नाहि सुहाई ॥२१५

खेलत है निति पूजन ज्यू करि, घट वजाइर भोग लगावै।
ध्यान धरै परनाम करै जव, सझ परै तव सैन करावै।
नाम कहै निति वामहि देवस, पूजन देहु भलै मन भावै।
गावहि जावत आत दिना त्रिय, दूध पिवाइन पीय सुहावै ॥२१६

ह्वै विरिया कब आवत है दिन, वारहिवार कहै नहि आई।
वार हुई तव दूध चढावत, सेर उभै अवटात कडाई।
प्रीति लगी अवसेर घणी उर, कंठ घुटै द्रिग नीर बहाई।
ढील लगी बहु मात खिजै अव, बेर करै जिन लै करि जाई ॥२१७

ले तवला हरि पासि चल्यौ मधि, दूध निवात सुगध मिलाई।
है चित चाव डरै अगि ता करि, दास करै मम है सुखदाई।
मद हसै अतिकात लसै उर, भाव बसै सिसु वुद्धि लगाई।
पावन[2] मैं मन आड करै जन, देखि परयौ कहि पीहरि राई ॥२१८

---

१ तिह। २ पांचन।

रयबार थान पहुंचिही, कितौ मकति मुक्ति रक को।
क्यूं करि बरनौं भाखि घर, खबरि न येको मक की ॥१९७
ग्यानदेव गंभीर चित, बिष्णु-स्वामि की संप्रदा ॥
नामदेव नव-खंड, नाव नौबति बजाई।
हरदासहु भैं देव भक्ति की रीति बढ़ाई।
तिलोचन करि प्रीति, आप केसौ बसि कीन्हौं।
मिश्र मरांइनदास, आप लाहौरी चीन्हौं।
याही में बलम भये हिरदै मैं भगवंत सदा।
ग्यानदेव गंभीर चित, बिष्णु-स्वामि की संप्रदा ॥१९८

टीका

इंदव ग्यानहि देव सु संकर पद्धिति चित्त गभीर हु बात सुनीजे।
छंद स्याम पिता घर भारि सन्यासहिं झूठ कही गृय नांहि न सीजे।
मात तिया सुनि पाछहि दौरत साप रही मुख भागर कीजे।
न्यात भई परि जाति रिसावत पांति निवारत कोऊ न छोजे ॥२१२
तीन हुये सुत दौरत ग्यानहि देव भजे हरि प्रीति लगाई।
कोऊ पढ़ावत नांहि सु बेदन विप्र करे इकठे बिम भाई।
ब्राह्मन कौं अधिकार कहे श्रुति भैंसन कौ पढ़ देहु सुनायी।
भक्तिहि सक्ति निहारी सबै द्विज पाव नये भरु देत बड़ाई ॥२१३

नामदेवजी कौ मूल

छप्पै नामदेव बचन प्रभु सति करे, ज्यूं नरस्यंघ प्रहलाद के ॥१६०
प्रतिमा कर पै पाइ बछ धव गऊ जिवाई।
महल पातिस्या करे सेज सलप मंगवाई।
देवल फेरयौ द्वार सभा के सबही मुन्ने।
मतुल रही रंकार करिल बहु पहुते बुमके।
रायो छानि छई हसी पार नहीं महलाद के।
नामदेव बचन प्रभु सति करे ज्यूं नरहरि प्रहलाद के ॥१९९

इंदव ऐसी भर नामदेव नाम कौ पुंज, सदा रसना रुचि रामजी गायौ।
छंद ऐसी गुनी भयौ दीन दुनी बिधि प्रीति प्रबै प्रतिमा प पिवायौ।

दे तन प्रान धनादिक पावत, ग्रानहु वात न चाहत भाई।
साह तुला तुलि वाटत है धन, लै स[1] गये सव नाम न जाई।
लेन खिनावत फेरि दये जुग, तीसर कै चलि साथि भनाई।
लीजिये हाथि कछू हमरौ भल, चाहि नही द्विज देहु लुटाई ॥२२६
साह करै हठ ले तुलसी-दल, रामहि नाम लिख्यौ ग्रध दीजे।
हासि करौ मति ल्यौ हमरी गति, तोलि वरोवरि तौ किम लीजे।
काटहि मेल्हि चढावत कचन, होइ वरोवरि नाहिस खीजे।
वौत चढै इक ताक धरयौ धन, जातिहु पातिहु कौ न नईजे ॥२२७
चित भई सवही नर नागर, नाम कहै इक ग्रौर करीजे।
तीरथ न्हान व्रतादिक दान, किया सव ग्रान सु माहि धरीजे।
हारि रहे सु पला नहि ऊठत, साह कहै इतनू इ लईजे।
लेरि करै किम नाहि भयो सम, नाम यहै ग्रधिकार सुनीजे ॥२२८
रूप धरयौ हरि ब्राह्मन कौ, ग्रति-दूवल सो पर्चो व्रत देखै।
ग्यारस कै दिन जाचत ग्रनहि, ग्राज न द्यौ परभाति बसेखै।
वाद करै दहु सोर भयौ वहु, नाम बचन्न कहेस ग्रलेखै।
ग्रस्त भयो दिन प्रान तजे द्विज, नाम-प्रभाव स ग्यारिस पेखै ॥२२९
लाकड ल्याइ चिताहि वनावत, गोद लयो द्विज साथि जरौंगो।
राम हसे तव पारिष लेत सु, छोडि करै मति नाहि करौगो।
भक्तन प्यास लगी जल ल्यावत, भूत वध्यौ ग्रति मैं न डरौंगो।
लै पद गावत झीझ बजावत, रूप करयौ हरि यौंही तिरौंगौ ॥२३०
जात चले मग खभ खरौ इक, पूछत मारग बोलत नाही।
गात भये पद ताल बजावत, काढि हरी कर बोलि बताही।
सकट बैल जुप्यौ स गयौ मरि, रोइक नामक पाइ पराही।
लै कर झीझ बजावत गावत, वैल उठ्यौ जुपि कै घरि जाही ॥२३१

जैदेवजी को बरनन—मूल

छपै **यम जैदेव सम कलि मैं न कवि, दुज-कुल-दिनकर ग्रौतरयौ ॥**
श्रवन गीत गोविंद, ग्रष्ट-पद दई[2] ग्रसतोतर।
हरि ग्रक्षर दीये बनाइ, ग्राइ प्रगटेस प्राणवर।

---

१ लैसु। २ ई।

बीति गये दिन दोइ न पीवत सोइ रह्यौ निसि नींद न भावै।
प्रात भयौ अवटाइ लयौ फिरि जा धरय्यौ अब पी मम भाव।
जोड़ि कहीं कर जो नहि पीवत खजर खाइ मरौ गरि लावै।
हाथ गह्यौ लखि पीवत ह्वौं सब पीवत देखि सु आप खुसावै ॥२१९
आइर पूछत बालक सुं हित दूधहि बात कह्यौ कहि मांनां।
आंसु करी तब दोइ दिनां नहि पीवत खजर लै गर-ठांनां।
पीत भयो तब खोसि लयो कछु होत खुसी सुनि साखि भरांना।
आइ धरयौ पय पीवत नांहि न लेत छुरी जब पीवत मांनां ॥२२०
भूप तुरक्क कहै बसि साहिब यौ भजमत्तिक मोहि मिलावौ।
ह्वै भजमत्ति भरै दिन क्यौं हम साधन कौ रिझवै उर भावौ।
वा पग्माव बुलाइ यहां सग गाइ जिवाइ धरां तुम आवौ।
रांमहि ध्याइर गाइ जिवावत देखि परयौ पग गांव रखावौ[1] ॥२२१
नाम करौ हम हू सुख पावत चाहि नहीं किम सेज दई है।
सोस भरी जब सोग दये करि मांहि करी जल मांहि भई है।
आइ कही पतिस्याह बुलावत आवत मांगि करात नई है।
काढ़ि दिखावत उतम उतम लेहु पिछांनि सु आंखि भई है ॥२२२
पाइ परयौ फिरि रास हरी पहि नाम कहै मति संत दुखावै।
मांनि लई फिरि नांहि बुलावत गावत रांमहि देख लजावै।
बाहरि भीर निहारि उपानत बांधि लई कटि जा पद गावै।
देखि लई जिनि चोट दई उन देत धका चित मैं नहि भावै ॥२२३
ऊठि गये पिछ-वार भयो पद झांझ बजावत रांम रिझावै।
चोट दिखावत मोहि सुहावत ठौरहु भावत निति रहावै।
आप सुनी हरि है करुनामय देवल होइ दयाल फिरावै।
मंदिर मांहि हुते सु जिते नर, आब गई जन पाइ परावै ॥२२४
लाद लगी घर मांहि जरयौ सब जो अवसेष रह्यौ वह नाख्यौ।
नाम कहै यहु स्यौ भगरी तब आप हुसे हरि मो सनि राख्यौ।
है तुमरी घर भांनत हाजर, छांन छवाय खुसी प्रभु भाख्यौ।
पूछत है नर छान दई किम देहु छवाई स देवन दाख्यौ ॥२२५

---

[1] रखावौ।

दे तन प्रान धनादिक पावत, आनहु बात न चाहत भाई।
साह तुला तुलि वाटत है धन, लै स[1] गये सव नाम न जाई।
लेन खिनावत फेरि दये जुग, तीसर कै चलि साथि भनाई।
लीजिये हाथि कछू हमरौ भल, चाहि नही द्विज देहु लुटाई ॥२२६
साह करै हठ ले तुलसी-दल, रामहि नाम लिख्यौ अध दीजे।
हासि करौ मति ल्यौ हमरी गति, तोलि बरोबरि तौ किम लीजे।
काटहि मेल्हि चढावत कंचन, होइ बरोबरि नाहिस खीजे।
वौत चढै इक ताक धरयौ धन, जातिहु पातिहु कौं न नईजे ॥२२७
चिंत भई सबही नर नागर, नाम कहै इक और करीजे।
तीरथ न्हान व्रतादिक दान, किया सब आन सु माहि धरीजे।
हारि रहे सु पला नहि ऊठत, साह कहै इतनू इ लईजे।
लेरि करै किम नाहि भयो सम, नाम यहै अधिकार सुनीजे ॥२२८
रूप धरयौ हरि ब्राह्मन कौ, अति-दूवल सो पर्चो व्रत देखै।
ग्यारस कै दिन जाचत अनहि, आज न द्यौं परभाति बसेखै।
वाद करै दहु सोर भयौ वहु, नाम बचन्न कहेस अलेखै।
अस्त भयो दिन प्रान तजे द्विज, नाम-प्रभाव स ग्यारिस पेखै ॥२२९
लाकड ल्याइ चिताहि बनावत, गोद लयो द्विज साथि जरौंगो।
राम हसे तब पारिष लेत सु, छोडि करै मति नाहि करौंगो।
भक्तन प्यास लगी जल ल्यावत, भूत बध्यौ अति मैं न डरौंगौ।
लै पद गावत झीझ बजावत, रूप करयौ हरि यौंही तिरौंगौ ॥२३०
जात चले मग खभ खरौ इक, पूछत मारग बोलत नाही।
गात भये पद ताल बजावत, काढि हरी कर बोलि बताही।
सकट बैल जुप्यौ स गयौ मरि, रोइक नामक पाइ पराही।
लै कर झीझ बजावत गावत, बैल उठ्यौ जुपि कै घरि जाही ॥२३१

जैदेवजो को बरनन—मूल

छपै **यम जैदेव सम कलि मैं न कवि, दुज-कुल-दिनकर औतरयौ ॥**
श्रवन गीत गोविंद, अष्ट-पद दई[2] असतोतर।
हरि अक्षर दीये बनाइ, आइ प्रगटेस प्राणवर।

---

१ लै सु। २ ई।

सांन ताल तुक छंद, राग छतीस गाई पुर।
अवर बिबिधि रागणी, तीन ग्रामहु सपत सुर।
जन राघो लगि त्रियलोक महि गिरा ग्रांम पूरण भरयो।
यम जैदेव सम कलि मैं न कबि, बुधकुल दिनकर अवतरयो ॥२०२

इंदव छंद
ये जदेव से कलि मैं भगता कबिता कवि कीरति ब्रह्मी[1] के अंसी।
धाप परी द्विज के कुल की निम, तासूं कहावत जदेव बंसी।
अष्टपदी अस्तूती सतोत्र गाये पढ़े हरि हेत हुलंसी।
राघो कहै मृत सौं पदमावति फेरि सजीव करी हरि हंसी ॥२०३

[टोका]

इंदव छंद
किंदुबिर्ल सु भये जयदेव धरयौ सिणगार मुक्त बिन माही।
गौतम रूख रहै दिन ही दिन है गुदरोस कमंडल मांहीं।
बिप्र सुता जगनाथ चढ़ावन जात भयो जयदेव मताही।
जात गहा कबिराज बिराजत लेहु सुता यह बिप्र कहाही ॥२३२
देखि बिचार जहां अधिकार किमो बिसतार तहां दह दीजे।
श्रीजगनाथ कि आइस राखहु टारहु नांहि न दूषन भीजे।
ठाकुर के तिय भाग्य फबै हमकों नहि सोहत येकहि लीजे।
जाहु वहां फिरि बात कही तुम नांव तिया वह संग न धीज ॥२३३
बिप्र कहै अब बठि रही इत आइस मेट भयो नहि भाई।
ऊठि चल्यो समझाइ रहे जन साथ पर्यो समझी मन मांई।
बालहि को द्विज बात कहै कछु मूढ़ बिचारि कहू उठि जाई।
हाथहि जोरि कहै अति जोर म यो तन तो तजि हो मनि मांई ॥२३४
हात भई तिय जोर करयो हरि, छांनिहि बांधिर छाइ करांव।
छा भई तब पूजन गावन गौतम उत्तम ग्रंथ बणाव।
गीत-गुबिंद उदित्त भयो सिर मडन मांन प्रसग सुनांवे।
ऐसु दशा गुर त निमरयो पनि गौम पर्यो हरि भा लिखावै ॥२३५
पन्डित भूप पुरी पुरुसोतम गीत-गुबिन्द कही सु बनाया।
बिप्र सभा करि बाहि लिखावन ब्याहि दिशा परनो सु सुनायो।
ब्राह्मन दगि हमे लगि गौतम उतर देख म भिस भमायो।
दोउ धरी जगनाथहि पाइन मागि भर्य बढ़ बांधि मगायो ॥२३६

---

१ ब्रह्म।

भूप उदास भयो अति सोचित, जात भयो सर बूडि मरौगो।
मो अपमान करयौ सुधरयौ वह, बात छिपै कत नाहि टरौगो।
आप कहै हरि बूडि मरै मति, ग्रथन और सु ताप हरौगो।
द्वादस सर्ग सलोकहि द्वादस, माहि धरा बिख्यात करौगो ।।२३७

बैंगन कै बन-मालिन गावत, पचम सर्ग कथा बनमाली।
लार फिरै जगनाथ भगो तन, घूमत लागत प्रेम सु भाली।
दौर फटे लखि बूझत है नृप, सेवक देखि बजावत तालो।
श्री जगनाथ कहै सर्ग पचम, चालि गयो बन गावत आली ।।२३८

भूप कहाइ दयो सगरे यह, गीत-गुबिद भली धर गावो।
बाचत गावत है मधुरै सुर, आइ सुनै हरि है बहु चावो।
येक मुगल्ल सुनी यह ठानत, वाज चढ्यौ पढि है प्रभु भावो।
गीत-गुवीद हि गावत है सुर, स्याम धरयौ पद आप सुहावो ।।२३९

काबि कथा बरनीस सुनी जिम, और सुनौं अधिकाइ महा है।
म्हौर कनै मग माहि मिले ठग, जात कहा तुम जात जहा है।
जानि गये पकराइ दई सब, चाहत लैं हम बात कहा है।
दुष्ट कहै चतुराइ करी इन, ग्रामहि मैं पकराइ लहा है ।।२४०

मारि नखो इक यौं उठि बोलत, दूसर कै जिनि मारहु भाई।
लेहि पिछानि वहू त करै किम, काटि करौ पग[1] भेरन खाई।
भूपति आइ गयो उन देखत, भेर उजासर मोद लखाई।
काढि लये तब पूछत कारन, भक्त कहै हरि यौह कराई ।।२४१

सत भले बड भाग मिले मम, सेव करौं निति यौ सुख लीजै।
लै सुखपाल बढाइ चले पुर, भूप कहै कछु आइस कीजै।
सतन सेव करौ नित मेवन, आवत जो जन आदर दीजै।
स्वाग बनाइ र आवत वैठग, आप कहै बड भक्त लहीजै ।।२४२

भूप वुलाइ कहै तुम भागहि, आत वडे जन सेव करीजै।
मदरि मै पधराइ रिझावत, होत सुभोग डरै वप छीजै।
आइस मागत है दिन ही दिन, आप कहै इनकौ द्रिव दीजै।
माल दयो वहु लार करे भृत, द्यो पहुचाय सु-वैन भनीजै ।।२४३

---

१ फेर।

मूभन चाकर नांहि समा तव पाहु कि नांहि भई मम सेवा।
स्वामिन के तुम हो लगते कछु, साच कहै हम जानत भेवा।
चाकर ये हमठ नृप कें बिगरी इन सू हम मारन देवा।
जीवत राखहु[1] काटि करो पगु, या गुन को अवहू भरि लेवा ॥२४४
भूमि फनीस समाइ गये ठग देखि भगे धनि स्वामिप भाये।
बात सुनी सब कांपि उठ्यौ तन हाथ र पाम भले निकसाये।
होइ अचंभ कहै नृप पैं भृत्य स्वामिन पासि गयो सुख पाये।
सीस धरयो पग भूभत भ्रानि र बात कहो सत मो मन भाये ॥२४५
टेक गही नृप सत्य कही जन जानि अमोलिक धारि लई है।
औगुन को गुन मांनत को जन सो सबही बिधि जोति भई है।
सत सुभाव तजे न सहै दुख छाडत नीच न नीच भई है।
गांव लख्यौ जयदेव बिंदूबस नाम रह्यो इत भक्त छई है ॥२४६
जा करि ख्यात भयो पदमावति स्वामि मिलावत भावत रांनी।
भ्रात मुवो तिय होत सती किन भग कटे इक जाकि परांनी।
भूप तिया अचरिज्ज करै यह नांहि कर फिरि वा समझानी।
या परकार कि प्रीति न मांनत देह तजे पति प्रान तजांनी ॥२४७
आप इसी इक भूपति सू कहि स्वामि छिपावहु प्रातिहि देखो।
नीच बिचारत अतर पारत मानि तिया हठ यो अवरेको।
स्वामि मिले हरि धाइ कही इक सोच कर सति मैं नहि लेखो।
क पदमावति क्यू तुम रोवत के सुख सू अपने मन पेखो ॥२४८
बात बनी न तिया सरमावत बीति गये दिन फेरि करी है।
आनि गई पद्मावति पारिष लेत कही सुनिकैं-व मरी है।
स्वेत हुवो मुख भूपति देखत भागि धरौं भर यह पकरी है।
ठीक भई तब स्वामि पधारत देखि मुई कहि हम्ब हरी है ॥२४९
भूप कहै अरिहौ मनि बातन आग सबै मम छार मिलायो।
स्वामि कहै बहु मानत नांहि न अष्टपदी सुर देव पुन्यायो।
भूप कहौ[2] सरमावत चाबत घात करौ कछु भाव न धायो।
आप करयो सनमांन पधारत बिंदुबिलै परचा हु सुनायो ॥२५०

---

१ राखत। २ कह्यौ।

गग अठारह कोस सथानत, न्हांवन जात सदा मन भाई।
प्रौढ भये तउ नेम न छाडत, पेम लख्यौ निसि आवत लाई।
खेद करौ मति मानत नाहि न, आइ रही इतकै सलखाई।
अवुज फूलत मोहि निहारिहु, भांति भई वह जानि सु आई ॥२५१

तिलोचनजी कौ मूल

इंदव छंद **संत इसो[1] सद-रूप ह्वै साहिव, आप तिलोचन सूं गुदराई।**
मैं हू अनाथ रहू वृति काहूं कै, जो कोइ प्रीति निवाहै रे भाई।
दास तिलोचन लै ग्रह आये हैं, रांमको पै तव रोटी कराई।
राघो कहै जन के हित को अन, सुद्ध मैं रामोटी सोलक पाई ॥२०४

टीका

नाम तिलोचन दोइ ससी रिव, नाम वखांन करचौ जग मांहै।
नांम कथा चर पीछ कही हम, दूसर की सुनियौ चित लाही।
वस महाजन कै प्रगटे जन, पूजत है तिय गोढिक[2] न रहांही।
चाकर नाहि न सत लखै मन, सेव करै उर मैं हरखाहीं ॥२५२
रूप धरचौ भृति कौ हरि आपन, जीरन क्वल टूटी पन्हैया।
बाहरि आय र वूझत है जन, मात पिता नहि गांव जन्नैया।
तात न मात न भ्रात न गाव न, चाकर रौं-ज सुभाव मिल्लैया।
बात अमिल्ल सुनाइ कही सव, खाउ घणौ अन नारि रसैया ॥२५३
च्यारि बरन्नहु रैसि सबै कर, लार न चाहत एक कराऊ।
सतन सेवत बीति गये तन, नौतम नांहि न बरष बताऊ।
नाम हमार सु अतरजांमे हि, दास तुम्हार-स तोहि घपांऊ।
पाहनि कंबलि नौतम देवत, आप नुहावत मैल छुटाऊ ॥२५४
दास कहै तिय दासि रहौ इन, ह्वै न उदास-स पासि रहावै।
जीम सु याहि जिमांइ निसकहि, जीवत है स मिले हरि गावै।
संतहि आवत त्यांह रिझावत, दावत पावस वाहि लडावै।
मास बदीत भये सु तियोदस, ऊठ गये कछु बात कहावै ॥२५५
जात भईस परोसनि कै तिय, बूझत गात मलीनस क्यू है।
हसि कहै इक चाकर राखत, धापत नांहि डरू सुनि यौ है।

१ असौ। २ गोटि।

जूझन चाकर नांहि समा सब काहु कि मांहि भई यम सेवा।
स्वामिन के तुम हो भगते कछु, साच कहै हम जांनत भेवा।
चाकर थे इकठे नृप के बिगरी इन सू हम मारन देवा।
जीवत राखहु[1] काटि करी पगु, या गुन की अबहू करि सेवा ॥२४४

भूमि फटीस समाइ गये ठग देखि भगे चलि स्वामिप आये।
बात सुनी तब कांपि उठ्यो तन हाथ र पाव भले निकसाये।
होइ प्रधम कहे नृप पें भृत्य स्वामिन पासि गयौ सुख पाये।
सीस धर्यो पग जूझत आनि र बात कही सत मो मन भाये ॥२४५

टेक गही नृप सत्य कही जम जानि अमोलिक धारि भई है।
औगुन की गुन मानत जो जन सो समही बिधि जीति भई है।
संत सुभाव तजै न सहै दुख छोड़त नीच न मीच भई है।
नाव लख्यौ जयदेव किंदूबल नाम रह्यो इस भक्त धई है ॥२४६

जा करि ख्यात भयौ पदमावति स्वामि मिलावत आवत रांनी।
भ्रात मुवो तिय होत सती किन अग कटे इक झांकि परांनी।
भूप तिया अचरिज्ज करै यह नाहि नर फिरि वा समझांनी।
मा परकार कि प्रीति न मानत देह तजै पति प्रान तजांनी ॥२४७

आप इसी इक भूपति सू कहि स्वामि छिपावहु आतिहि देखौ।
नीच बिचारत अतर पारत मानि तिया हठ यौं अवरेखौ।
स्वामि मिले हरि मांहि कही इक सोच करं सति मैं नहि लेखो।
ज पदमावति क्यू तुम रोवत ब सुख सू अपन मम पेखौ ॥२४८

बात धमी न तिया सरमावत बीति गये दिन फेरि करी है।
जानि गई पदमावति पारिख सेत कही सुनिके-अ मरी है।
श्वेत हुवो मुख भूपति देखत भागि जरौं धर यह पकरी है।
ठीक भई तब स्वामि पधारत देखि मुई कहि इच्छ हरी है ॥२४९

भूप कहै अरिहौं अनि आतम आन सबै मम छार मिलायो।
स्वामि कहै बहु मानत नाहि न अष्ट-पदी सुर देव जुम्भायो।
भूप कही सरमावत चावत पान करी कछु भाव न भायो।
आप करयौ गनमांन पधारत किंदुबिले परचा हु सुनायो ॥२५०

---
१ राखत। २ छौं।

तास पछौपैं सुत सरस, गिरधर गोकलनाय निधि।
पण प्रतिज्ञा कौं भले, जन राघो पुरवै राम रिधि ॥२०७

बल्लभाचारय को बरनन . टीका

इदव छंद
मूरति-पूजन भाव घनू उर, यौ मन मैं सब ही जन दीजे।
वैहि करी हरि धामन धामन, सेवत है सुख आखिन लीजे।
है सुघुराइ अवद्धि महा निति, राग रु भोग वहौ बिधि कीजे।
नाव सुबल्लभ रीति सबै प्रभु, गोकल गाव-स देख तरीजे ॥२५९
देखन गोकल सतहि आवत, होत मुदित्त-स रीति हि न्यारी।
रूख सु खेजर रूप भुलावत, देखि दरस्स भयो सुख भारी।
आइ निहारत पूजन नाहि न, फेरि गयो कहि जाहु तयारी।
देखि घणे वत भूलत ठाकर, जाइ कही तव लेहु सभारी ॥२६०
आखि हुई फिरि तौ नहि भूलत, देहु दिखाई अबै मम रूप।
आप कहै अबकै फिरि देखहु, हेत लगाइ सुजानि अनूप।
जातहि पावत कठ लगावत, नैन भरावत पाइ सरूप।
राति रह्यौ स भजै र ज-जै हरि, होत प्रकास दया अनुरूप ॥२६१

मूल

छपै
श्रीबल्लभ सुत बिठलेस नैं, लाल लडाये नद ज्यूं ॥
परचर्ज्या मैं निपुन, राग अर भोग बिबिध कर।
गहणां बसतर सेज, रचत रचनां रचसुदर।
बृजपति उहै गोकलज, धाम सोहै दीछत को।
घोष चद तहां बिदत, भिभौ वासव ईछत को।
राघो भक्ति परताप तैं, दीपत राका चद ज्यूं।
श्रीबल्लभ-सुत बिठलेस नैं, लाल लडाये नद ज्यू ॥२०८

टीका

इंदव छद
कायथ हौ तिपुरा हरि भक्त सु, सीत समैं दगली पहुचावे।
मोल घणौं पट लेवत हौ अट, नाथ चढावत यौं मन भावै।
आइ गयो सम यौ नृप लूटत, खावन धाम सु अन न पावै।
सीतहु आवत दैन उभावत, द्राति हुती इक वेचन जावै ॥२६२
एक रुपैया मिल्यौ पट ल्यावत, रग सुरग धरयौ घर माही।
हेत घणौं द्रिग धार वहै जल, देहि घणौ प्रभु ओर मगाही।

नाहि कह्यौ जिनि रासि मनो-मन कान परे उठि आवत त्यूं है।
जानि गये रमि ज्ञान भये दुख पात नये दिन पेसि-सु ज्यूं है ॥२५६
मीर अनादिक त्याग दये दिन तीन भये फिरि पाइ न वैसी।
भाग बिना तिय ज्यूं र कही विय संतन सेव न ह्वै भृत्य कैसी।
अवर बोलि कहै हरि मैं हुव भूख मरौ मत मानि अदेसी।
प्रेम तुम्हार करयौ बसि है मम सेव करूं फिरि मैं धरि वैसी ॥२५७
चौंक परयौ सुनि भक्ति करी किम आप हरी पहि सेव कराई।
भक्त कहै मम संत बड़े बड़ भक्ति करी नहि लोक दिखाई।
आप दयाल निहाल करे धन रच करै तिन मौत मनाई।
धाम बिराजत मैं नहि जानत आइ मिलै अब पाद पराई ॥२५८

मूल

छप्पै भाव सहित भागवत कौं निरांमदास नीकै कह्यौ ॥
अवस्था-कुल परसिधि, मिश्र संज्ञा सत्य पाई।
सुति सुमृति इतिहास, ग्रंथ आगम बिधि गाई।
बक्ता नारद ब्यास, बृहसपति सुक सनकादिक।
इन सम है सरबज्ञ सोत ज्यूं चलै गंगादिक।
सत समागम होत निति, प्रेम-पुंज राघो लह्यौ।
भाव सहित भागवत कौं, निरांमदास नीकै कह्यौ ॥२०५
बिष्णु-स्वामि पुर सारि मधि, लाहौरी लाहौ लीयौ ॥
नाम निरायनदास मिश्र मिश्रत भ्रम भास्यौ।
भक्ति भेद भागवत सार सुक मुनि ज्यौं भाख्यौ।
ब्यास-बचन बिसतार कही गद-गद ह्व बांणीं।
साध संगति गुर-धर्म अनंत अमोघे प्रांणीं।
जन राघो नाम कृपा भई क्षीर-नीर निरनै कीयौ।
बिष्णु-स्वामि पुर सार मधि, लाहौरी लाहौ लीयौ ॥२०६
पल परतंम्या कौं भसे जन राघो पुरवै रांम रिपि ॥
बल्लभ गुसांई हरिबल्लभ ताहि हरि गोकुल थाप्यो।
तास नाम रद्धपाम, आप अपरणौ करि थाप्यौ।
ता सुत बिठलेसुर भली बिधि भक्ति सु साही।
धरणी मत मजबूत थप्यौ हरि पंथ निबाही।

भजन प्रवल जल विठल[1]-नाथ को जाकी वेला।
प्रभु प्रसाद तन तेज, चरन चरचित नृप चेला[2]।
श्री वल्लभ-कुल मैं प्रेम-पुज, नृविलीक ग्रैसो खभीर।
श्रीगोकलनाथ ग्रनाथ पै, दया करत ग्रति गुन-गभीर ॥२११

टीका

इदव छंद ग्रानि कही इक मोहि करौ सिप, भेट चढावन लाख न ल्यायो।
ग्राप कह्यौ तव हेत इसौ कहु, जाहि विना तन जाइ छुटायो।
वोलि कह्यौ मम नाहि कहू हित, मैं न करौ सिप ग्रौर सुनायो।
प्रेम कथा इत ग्रौर न दूसर, वैन ग्रचाइ सुन्यौ दुख पायो ॥२६२
भगिह कान्ह भजै भगवान, नही उर ग्रान-स लालहि भावै।
रैनि सुपनहि नाथ कही यह, भीति हुई मम नाहि सुहावै।
गोकल-नाथहि जाइ कहौ तुम्ह, वागन वोट ढवाइ नखावै।
प्रात भयो उरि सोच नयो किम, जाइ गयो सुनि मोहि मरावै ॥२६३
वीति गये दिन तीन कहै निति, मोर कहा वस जाइ कहैगो।
द्वारहि पालहि जाइ चितावत, रोस करचौ सुनि पास लहैगो।
जाइ कही किन वेग वुलावत, वात कहौ यह डौल ढहैगो।
कठ लगावत जाति वहावत, येक कह्यौ हरि को सु रहैगो ॥२६४

मूल

छपै कृष्णदास पै करि कृपा, गिरधरन सीर दियो नाम मैं ॥
श्री बल्लभ गुर पाइ, भयो हरि गुण कौ ग्रालै।
नौख चोज मधि काबि, नाथ सेवा निति पालै।
सेवत बार्णी सुजन, ज्ञान गोपाल भाल भर।
सर्बस बृज मैं गनत, ग्रवर नाहीं जानत बर।
प्रभुदास बरज नेरौ रहै, मन सो स्यामा स्यांम मैं।
यम कृष्णदास पै करि कृपा, गिरधरन सीर दियो नाम मैं ॥२१२

टीका

इदव छद दास जु कृष्ण करचौ रसरास सु, प्रेम धरचौं उह नाथ बरचौ[3] है।
होत बजार जलेबि दिली, ग्ररपी प्रभु ग्रापहि भोज करचौ है।

---

१ बिललनाय। २. लेला। ३ करचौ।

आइ भिर्यो हरिदास सुभावहि देत भयो मन मैं सरमांहीं।
दासन के यह काज न आवत मोर गुसांई चिते नरवांहीं ॥२६३
आइ दयो धरि रावत है पट नाथ सनेह सवेगि बुलाये।
सीत लगै हम वेग निवारहु भीत उढ़ावत कंप उठाये।
फेरि कही तब आगिहु वारत जात नहीं सुमिरैं सरमाये।
दास बुलाइ जड़ावसि पूछत देत बताइ सबै न बताये ॥२६४
नांहि सुनी तिपुरा कहि दारिद[1] मोटहु पान बिछाइ सु राख्यौ।
वेग मंगावत भ्यौत सिवावत ठेंकि नसावत बीठल भाख्यौ।
धारि भयो तन सुक्ख भयो मन, ठंढि गई प्रभु आप न दाख्यौ।
हेत दिखावत भक्त हु भावत प्रेम रसाइन को रस चाख्यौ ॥२६५

मूल

छप्पै श्रीवल्लभ-सुत बिठलेस के सपत-पुत्र हरि भक्ति पर ॥
गिरधर गोकुलनाथ, प्रेमसर झूमर भरिया।
गोविंद पुनि बलबीर, पीव गोवरधन धरिया।
बालकृष्ण रघुनाथ नाथ श्रीनाथ उपासी।
श्री कृष्ण पगे घनस्याम रति चित करत खवासी।
ये गाढीमति राघो कहै जग मैं मांनै नारि-नर।
श्रीवल्लभ-सुत बिठलेस के सपत पुत्र हरि भक्ति-पर ॥२०९
सोभित वल्लभ-बंस मैं गिरधर श्री बिठलेस-सुव ॥टे०
च्यारि पदारथ भक्ति देत उरम अनपाइन।
सास्त्र वेद पुरांन ग्यांन सब ग्रंथ परोइन।
सेवा पूजा निपुन, नव-नंदन मन मोहै।
गूपत परम पवित्र अमी बरषत सग सोहै।
राघव सरस सुभाव अति दूजो कोई नांहि सुव।
सोभित वल्लभ बंस मैं गिरधर श्री बिठलेस-सुव ॥२१०
श्री गोकुलनाथ प्रनाथ पै दया करत अति गुन गंभीर ॥
छीप रहत मति धीर मनौं रतनाकर नांई।
सुजस सकल संसार प्रकल-पति सम गरवाई।

---
१ दारिद।

भजन प्रवल जल बिठल[1]-नाथ को जाकी वेला।
प्रभु प्रसाद तन तेज, चरन चरचित नृप चेला[2]।
श्री वल्लभ-कुल मै प्रेम-पुज, नृविलीक अैसो खभीर।
श्रीगोकलनाथ अनाथ पै, दया करत अति गुन-गभीर ॥२११

टीका

इदव छद
आनि कही इक मोहि करौ सिष, भेट चढावन लाख न ल्यायो।
आप कह्यौ तव हेत इसौ कहु, जाहि विना तन जाइ छुटायो।
वोलि कह्यौ मम नाहि कहू हित, मैं न करौ सिप और सुनायो।
प्रेम कथा इत और न दूसर, वैन अचाइ सुन्यौ दुख पायो ।।२६२
भगिह कान्ह भजै भगवान, नही उर आन-स लालहि भावै।
रैनि सुपनहि नाथ कही यह, भीति हुई मम नाहि सुहावै।
गोकल-नाथहि जाइ कही तुम्ह, वागन वोट ढवाइ नखावै।
प्रात भयो उरि सोच नयो किम, जाइ गयो सुनि मोहि मरावै ।।२६३
बीति गये दिन तीन कहै निति, मोर कहा वस जाइ कहैगौ।
द्वारहि पालहि जाइ चितावत, रोस करयौ सुनि पास लहैगो।
जाइ कही किन वेग बुलावत, वात कहौ यह डौल ढहैगो।
कठ लगावत जाति वहावत, येक कह्यौ हरि को सु रहैगो ।।२६४

मूल

छपै **कृष्णदास पै करि कृपा, गिरधरन सीर दियो नाम मै ॥**
श्री बल्लभ गुर पाइ, भयो हरि गुण कौ आलै।
नौख चोज मधि कावि, नाथ सेवा निति पालै।
सेवत बांणीं सुजन, ज्ञांन गोपाल भाल भर।
सर्बस बृज मैं गनत, अवर नांहीं जानत बर।
प्रभुदास बरज नेरौ रहै, मन सो स्यामा स्याम मै।
यम कृष्णदास पै करि कृपा, गिरधरन सीर दियो नाम मैं ॥२१२

टीका

इदव छद
दास जु कृष्ण करयौ रसरास सु, प्रेम धरयौं उह नाथ बरयौ[3] है।
होत वजार जलेवि दिली, अरपी प्रभु आपहि भोज करयौ है।

---
१ विललनाथ। २. लेला। ३ करयौ।

नांचनि को अति राग सुन्यौ मह नाथ सुनै सुर चित्त धर्यौ है।
रीझि गये उन पासि बुलावत साथि चलावत भाव भर्यौ है ॥२६५
भजन भवन कौं करवाइ सुवास लगाइ र देवल ल्याये।
देखि हुई मन लैत भई गति लाल कहै मनि मोहि सुहाये।
नाचत गावत भाव दिखावत नाथ रिझावत मैन लगाये।
ह्वास भई तदकार तज्यौ तन आप मिलाइ भई सु रिझाये ॥२६६
सूरह सागर माइ कहै पद गाइ इसे सम[1] थाइ न आवै।
सातक आठक गाइ सुनावत सूर हसे परभात बतावै।
चित भई हरि जांनि लई पद आस बनाइ र सेव रखावै।
फेरि सुनावत लै सुख पावत पच्छि बतावत सो सब गावै ॥२६७
पाव चिग्यौ तब कूप परे तन छूटि गयौ जब नौतम पायौ।
दास दुखी सुमि नाथ लखी मनि आपटि ग्वाल सरूप दिखायौ।
आत भये गिर-गोवर पासिक वल्लभ को परनाम कह्यौ।
म्हौर बतावत खोदत पावत संक नसावत यौ प्रभु पायौ ॥२६८

मूल

छपै हरदास रसिक ऐसो भयो आस धीर कीयौ उदित ॥
कुंज बिहारी भजन नांम मिश्रत पृष लागै।
निरखत रंग बिहार, बात सुख सौं अनुरागै।
प्रबल क्यूं करि गांन, जुगल सरकार रिझावै।
नैवेद्य अरपाइ मोर मरकट कपि ज्यावै।
भूप खरे रहे बारनै करि दरसन होवै मुदित।
हरदास रसिक ऐसो भयो आस धीर कीयो उदित ॥२१३

टीका

इंदव छंद है हरदासहि आप रसिक्क सही रस केर[2] हरी बुधि साई।
अतर ल्याइ दयो कि निधीवन मांझि पुलीनि गयो उर भाई।
देखि उदासहि लाल दिखावत खोलि दये पट गंध लुभाई।
नीर म लाजत पारस कौं पथरा कहि कैं जब सिष्य कराई ॥२६९

---

१ सम। २ केर।

मीरा बाई का बरनन [मूल]

छपै लोक वेद कुल जगत सुख, मुचि मीरा श्री हरि भजे ॥
गोपिन की सी प्रीति, रीति कलि-कालि दिखाई।
रसिकराइ जस गाइ, निडर रही सत समाई।
रानै रोस उपाइ, जहर कौ प्यालो दीन्हौं।
रोम खुस्यौ नही येक, मानि चरनामृत लीन्हौं।
नौवति भक्ति घुराई कै, पति सो गिरधर ही सजे।
लोक वेद कुल जगत सुख, मुचि मीरा श्री हरि भजे ॥२१४

मनहर छंद
रामजी की भक्ति न भावै काहू दुष्टन कों,
मीरा भई वैरागु जहैर दीन्हौं जानि कै।
रानौं कहै सारं लाज, मारि डारौ याहि आज,
आप करै कीरतन सत वैठै आनि कै।
प्रेम मत्रि पीयो विस पद गाये अह निस,
भै न व्याप्यौ नैक हू न लीन्हौं दुख मानि कै।
राघो कहै रानौं मुखि वंरी अब राजलोक,
मीरा बाई मगन, भरोसे चक्रपानि कै ॥२१५

टीका

इंदव छंद
मात पिता जनमी पुर मेडत, प्रीति लगी हरि पीहर माही।
रानहि जाइ सगाइ करावत, ब्याहन आवत भावत नाही।
फेर फिरावत वा न सुहावत, यौं मन मैं पति साथि न जाही।
देन लगे पित मात अभूषन, नैन भरे जल, मोहि न चाही ॥२७०
द्यौ गिरधारिहि लाल निहारन, वेस अभूषन वेग उठावौ।
मात पिता-स सुता अति है पृय, रोय दये प्रभु लेहु लडावौ।
पाइ महासुख देखत है मुख, डोलहि मैं बयठाइ चलावौ।
धामहि पौंचत मात पुजावत, सास करावत गठि-जुरावौ ॥२७१
मात पुजाइ लई सुत पे पुनि, पूजि बहू अब सास कही है।
सीस नवं मम श्री गिरधारिहि, आन न मानत नाथ वही है।
होत सुहागरिण याहिक पूजन, टेकत जौ सिर नाइ मही है।
येक नवं हरि और न नावत, मानत क्यू नहि बुद्धि वही है ॥२७२

होइ उदास भरे उर सास गई पति पास बहु नहिं भाखी।
मान तजै अब फेरि गिनै कब कंनि कह्यौ फिरि भ्रास न पाखी।
रोस करयौ नृप ठौर जुदी दइ, गेमि लई यह नांच न कांखी।
मृत्य करै उर लाल करै[1] सत-संग करै सब है जम साखी ॥२७३
भ्राइ मराव कहै सुनि भाभिहि साधन संग निवारि भजीजे।
लाजत है नृप तात बडौ कुल लाजत है पख बेगि तजीजे।
संत हमारहि जीवन प्रांन-स तारन ए कुल सत्य मनीजे।
जाइ कही तब भ्रैर पठावत लै चरनांमृत पांन करीजे ॥२७४
सीस नवाइ र पीत भई विष सतन खोड़न है दुख भारी।
भूप कहै मुति चोकस राखहु भ्राइ कमै जन बोलत मारी।
स्यामहि सौं बतलात सुनी तब जाइ कही भव हैस तयारी।
सो सुनिक तरवारि लई कर दौरि गयो पट खोलि निहारी ॥२७५
बोलत हौ स गयो कत मांनस देहु मलाइ न मारस सोही।
येह खरे कछु नांहि डरे चित सेत हरे किन श्राहुत मोही।
भूप लजाइ रह्यौ अब होर र ऊठि गयो तनि के उर छोही।
देखि प्रताप न मानत भ्राप रहै उर ताप कर हरि वोही ॥२७६
सतन भेष करयौ विपई नर भ्राइ कही मम संग करीजे।
लाल दई यह भ्राइस आपहु मांनि लई अब भोजन लीजे।
सेज बिछावत साध सभा बिचि टेरि लियौ तब कारिज कीजे।
देखित ही मुख सेत भयो पगि श्राइ न यौ भव सिप्य मनीज ॥२७७
भूप अकब्बर रूप सुन्यौ अति तांनहि-सेन लिये चलि आयौ।
देखि कुस्याल भयो छबि लालहि ऐक सबद् बनाइ सुनायौ।
आ बृज चोउ मिली पनही तिय देखत मै मुख ताहि छुड़ायौ।
कजन कुज निहारि बिहारिहि भ्राइ-स देस बने बन गायौ ॥२७८
भूपति बुद्धि भसुद्ध लयो अति द्वारवती चलि लाल लड़ाये।
पेठि सर्भर हाल भयो नृप जांनि महादुख विप्र पिनाये।
लै करि श्रावहु मोहि जिवावहु बेगि गये समचार सुनाये।
हो(त)म खिन्न चलि ठाकुर प मुख मांहि लई तुघ चीर रहाय ॥२७९

---

1 करै।

नरसीजी कौ बरनन · [मूल]

छपै गुर्जर धर नरसी प्रगट, नागर-कुल पावन करयौ ॥
सवै सुमारत मनिख, विष्णु की भक्ति न मानै।
उर्धपुंडर गलि माल, देखि ता वहुत हसानै।
आप भयो हरिभक्त, देस कौ दोष निवारयौ।
तन मन धन करि प्रेम, भक्त भगवत पर वारयौ।
हुंडी सकरी सावरै, बेटी-कै माहिरौ भरयौ।
गुर्जर धर नरसी प्रगट, नागर-कुल पावन करयौ ॥२१६

मनहर छंद मन वच क्रम करि नरसी सुम्रत हरि,
माँहे पूजी प्राननाथ हरिजी नौं नाव रै।
जन के वचन जगदीस वांचै वारबार,
जात्रिन कौं दीन्हे दाम 'हूंडी' लेकै सावरै।
नृप नै कीयौ अठाव जन कै न आई बाव,
आप्यौ हरि हार ततकार वलि जाव रै।
राघो कहै रामजी दयाल नरसी सौं निति,
पुत्री नै माहिरै करतार बूठौ ठाव रै ॥२१७

टीका

इदव छंद मात पिता मरि जात जुनागढ, आप र भ्रात तियास रहे हैं।
खेलत आइ कही जल पावहु, भाभि जरी कुट वेन कहे हैं।
ल्याइ कुमाइ कहावत है जल, पी भरिकै स जबाव लहे हैं।
ऊठि गये यह त्याग करौं तन, जाइ सिवालय चिन्ह गहे हैं ॥२८०
सात भये दिन जात न बाहर, द्वार गहै तुछ सो सुधि लेवै।
भूख र प्यास तजी र भजे सिव, रूप धरयौ जन दर्सन देवै।
भागि कहै कछू मागि न जानत, जो तुम कौं पृय द्यौ मम तेवै।
सोच परयौ यह आइ अरयौ तिय, कैत डरयौ निति मो हित सेवै ॥२८१
मैं-ज दयौ बिरकासुर कौं बर, होत भयौ डर या परवारे।
पालक है जग बालक नै यह, द्यौंस कहाइ न राम पियारे।
द्यौं र नही मम बैन नसावत, आप बहू बपु नारि न धारे।
आत भये बृज रास दिखावत, भौत तिया मधि कान्ह निहारे ॥२८२

होइ उदास भरै उर सास गई पति पास वहु नहि भाखी।
मान तनै भव फेरि गिनैं भय बेगि कह्यौ फिरि भात न पाछी।
रोस करयौ नृप ठौर ज्ञुनी दइ रीझि लई यह नांच न काछी।
नृत्य करै उर लाल करै[1] सत-संग घर सब है जन साछी ॥२७३
भाइ नणद कहै सुनि भाभिहि साघन सग निवारि भजीजे।
लाजत है नृप तात बडौ कुल लाजत द्वै पख वेगि तजीजे।
सत हमारहि जीवन प्रान-स तारन द्वै कुल सत्य मनीजे।
जाइ कही तब झर पठावत लै चरनामृत पान करीजे ॥२७४
सीस नवाइ र पीत भई विष सतन छोडन है दुख भारी।
भूप कहै मृति चौकस राखहु भाइ कनै जन बोलत नारी।
स्यामहि सौ बतलात सुनी तब जाइ कहो अब हैस तयारी।
सो सुनिके तरवारि लई कर दौरि गयो पट खोलि निहारी ॥२७५
बोलत हो स गयो कत मांनस देहु बताइ न मारत सोही।
येह खरे कछु नांहि डरे चित सेत हुरे किन बाहुत मोही।
भूप सजाइ रह्यौ पछ होर र ऊठि गयो तजि कै उर छोही।
देखि प्रताप न मानत भाप रहै उर ताप करै हरि बोही ॥२७६
सतन भेष करयौ विषई नर, भाइ कही मम सग करीजे।
लाल दई यह भाइस आवहु मांनि लई अब भोजन लीजे।
सेज बिछावत साध सभा विचि टेरि लियौ तब कारिज कीजे।
देखित ही मुख सेत भयो पगि जाइ न यौ अब सिप्य मनीजे ॥२७७
भूप अकब्बर रूप सुन्यो अति तानहि-सेन लिये चलि भायौ।
देगि कुस्याम भयो छवि लालहि ऐक सबद् बनाइ सुनायौ।
वा बृज कोउ मिली पनही तिय दंपत मैं मुख ताहि छुड़ायौ।
कजन कज निहारि बिहारिहि भाइ-स देस बसै बन गायौ ॥२७८
भूपति बुद्धि असुद्ध भसी अति द्वारवती बसि लाल सजाये।
पेठि जसपर होत भयो नृप जांनि महादुख विप्र खिनाये।
लै करि भावहु मोहि जिवाबहु बेगि गये समचार सुनाये।
हा(त)म पिन्न चलि ठाकुर पै मुख मांहि लई दुख पीर रहाये ॥२७९

---

[1] भरै।

सोच करै मति सास कहै, यह कागद मैं लिखि दे मन भाये।
जाइ कही समझाइ रिसावत, सर्वपुर के सब लोग लिखाये ।।२९०
कागद ल्यावत फेर पठावत, चूकत नै दुय पाथर[1] माडे।
ठौर बतावत जाइ रहावत, छानि छ ीद रहै घर खाडे।
नीरहि न्हान अठाइ खिनावत, मेह भयो ठिरिये जल भाडे।
साल सवारि कर्यौ परदा कर, झीझ[2] वजी बहु अबर छाडे ।।२९१
दे पहरावनि गाव समूहहि, कचन रूपक पाथर आये।
येक रही उन भूलि लिखी नहि, भौत लिखै जित भूलहु जाये।
जाइ सुता बिनवै पित दै इन, देत उन हरि पं मगवाये।
मात नही तन माहि सुता लखि, तातहि ख्याल सबे विसराये ।।२९२
दोइ सुता इक धाम न व्याहृत, येक सुता तजि कै पति आई।
गाइन दोइ फिरै पुर गावत, पावत नाहि कछू दुख पाई।
कोइ बतावत आइ र गावत, आप कहावत राम सहाई।
जो हरि चावहु बाल मुडावहु, लाल लडावहु यौं मनि भाई ।।२९३
दोउ सुता मिलि गाइन हू जुग, नाचत है चहु भाव दिखावै।
मामहि सालग भूप दिवानहि, बात निषिद्धहि आप लखावै।
पडित दीरघ और जुरे सब, भाड करे इनको समझाव।
भूप बुलावत भृत्य पठावत, आइ कही दरबार बुलाव ।।२९४
जावत है नृप पासि रहो, चहु साथि चल हम हू न डर है।
लार भई गति लेत नई रस, भीजि गई वह नृत्य करै है।
वैसहि आवत पच छिपावत, तौउ कहै तिय क्यू र धर हैं।
भक्ति न जानत बेद बखानत, नारि कही सुकदेव वर हैं ।।२९५
येक कही द्विज भात भर्यौ हद, ठाव दये अगनत सुता कै।
भूप लगे पग भक्ति करो जगि, कुजर लागत नाहि कुता क।
और सुनौ इक ठाकुर देवल, गावत राग किदारउ ताकै।
माल हुती हरि के गलि मैं उर, आइ गई नरसी महता कै ।।२९६
ब्राह्मन जाइ सिलावत भूपहि, हार पुयौ कच तागस टूट्यौ।
मात कहै सुत कान धरौ मति, राज स बानि बुरी चलि छूट्यौ।

---

१. माथर। २ झींक।

रास करै मनि हीर धरै नग माल भरै मुनि गांन र ताल।
रूप प्रकास मयंक उजासज भीव हुलास नई गति भाल।
कंठ धर मधुरी सु फुरै, मधुर सु सुर सुनिकै रति पाल।
ढाल बजै मृदंग सजै मुहचंग र जै धरियावजु हाले ॥२८३
हाथि सिराव दई गति देखत कांन्ह लई मनि येह नई है।
सकर-सभरि आनत है हरि मंद हसे म्रिग सैन दई है।
टारन चाहत स्यौ नहि भावत भाइ वही म्रिग मांमि सई है।
आई भजौ घरि टेरत आवत देस गये जन ध्यानमई है ॥२८४
धाम जुदौ करि बिप्र-कन्यां वरि दोइ सुता इक पुत्र भयौ है।
साध पधारत लै धन वारत ये धन पारत स्यांम नयो है।
भाह्मन बस भये सब कसन जांनत भ्रस सदोष लयो है।
ये हरि लीन रहै जस मीन महा परिवीन न पार वयौ है ॥२८५
संत पधारत तीरथ या पुर पूछत है स हुबी सिखि देवै।
बिप्र कहै इक सा मरसी बक जाइ धरौ रुपया पग लेवै।
बारहि बार कहौ र रह्यौ गिरि भ्रात पखै उनकी यहे टेवै।
धाम बनावत ये चलि आवत बहि करी उठि अंक भरे वै ॥२८६
सात सतै रुपया गन देवत मागत है पग बेगि लिखीजे।
आंन सये बहकाइ दये इन हुडि लिखी यह सांवल दीजे।
जात भये आन द्वारवती फिरि पूछत चौटन पा तन छीजै।
हेरत हारि रहे मरि भूखन प्यास लगी जल बाहरि पीजै ॥२८७
सावल साह बन हरि आवत स्यौ रुपया बहु कागस ल्याओ।
हेरत हारत भूख मरे कहि मै सुनि दौरत लाज मराओ।
दास इकंत सखा हरि संत लिखी अब कागद दयो उन आवो।
है रुपया बहु फेरि लिखी प्रभु आइ दयो उरका सिर नावो ॥२८८
ऊठि मिले इम सांवल देखत बैहु छबे सतसंग यसौ है।
व रुपया सब साध सुधावत कांम भये सिधि रोम वसौ है।
छूटक को समयो-स सुता धरि सास बुलावत भाव नसौहै।
बाप सिखावत मोहि जरावत द्यौ बहु भाइ र तोहु र सौहै ॥२८९
मस पुरातन भाप पुरातन ढंम पुरातम जोइ र स्याय।
भेन्न की पुत्तरी हु गई सुनि माहि बच्छ बिम क्यु सुम भाये।

सोच करै मति सास कहै, यह कागद मैं लिखि दे मन भाये।
जाइ कही समझाइ रिसावत, स्वैपुर के सब लोग लिखाये ॥२९०
कागद ल्यावत फेर पठावत, चूकत ने दुय पाथर[1] माडे।
ठौर बतावत जाइ रहावत, छानि छ ीद र हे घर खाडे।
नीरहि न्हान अठाइ खिनावत, मेह भयो ठिरिये जल भाडे।
साल सवारि करयौ परदा कर, झीझ[2] बजी बहु अबर छाडे ॥२९१
दे पहरावनि गाव समूहहि, कचन रूपक पाथर आये।
येक रही उन भूलि लिखी नहि, भौत लिखै जित भूलहु जाये।
जाइ सुता बिनवै पित दै इन, देत उन हरि प मगवाये।
मात नही तन माहि सुता लखि, तातहि ख्याल सबे बिसराये ॥२९२
दोइ सुता इक धाम न व्याहत, येक सुता तजि के पति आई।
गाइन दोइ फिरै पुर गावत, पावत नाहि कछू दुख पाई।
कोइ बतावत आइ र गावत, आप कहावत राम सहाई।
जो हरि चावहु बाल मुडावहु, लाल लडावहु यौं मनि भाई ॥२९३
दोउ सुता मिलि गाइन हू जुग, नाचत है चहु भाव दिखावै।
मामहि सालग भूप दिवानहि, बात निषिद्धहि आप लखावै।
पडित दीरघ और जुरे सब, भाड करे इनको समझाव।
भूप बुलावत भृत्य पठावत, आइ कही दरबार बुलाव ॥२९४
जावत हैं नृप पासि रहो, चहु साथि चल हम हू न डर है।
लार भई गति लेत नई रम, भीजि गई वह नृत्य करै है।
चैसहि आवत पच छिपावत, तौउ कहै तिय क्यू र धर है।
भक्ति न जानत बेद बखानत, नारि कहो सुकदेव वर है ॥२९५
येक कही द्विज भात भरयौ हद, ठाव दये अगनत सुता कै।
भूप लगे पग भक्ति करो जगि, कुजर लागत नाहि कुता के।
और सुनौ इक ठाकुर देवल, गावत राग किदारउ ताकै।
माल हुती हरि के गलि मैं उर, आइ गई नरसी महता कै ॥२९६
ब्राह्मन जाइ सिलावत्त भूपहि, हार पुयौ कच तागस टूट्यौ।
मात कहै सुत कान धरौ मति, राज स वांनि बुरी चलि छूट्यौ।

---

१. मायर। २ झींक।

देवल जाइ रु पाट मंगावत वाटि गुद्यौ गसि नावत छूट्यौ।
गाइ दिखावहु ख्याल हमैं भव मावत राग दुती नहिं छूट्यौ।।२९७
देखि खुसी खल देत उराहन नौल नई हरि कौ वहु भाखै।
आखिर[1] ग्वाल गही उरमाल सुहावत खास कही किन लाखै।
रांम मले सु सरयौ भ्रम पावत, कौन मिटावत है अभिलाखै।
जाइ कह्या मम तोहि कहै धिक जाहु यहै तन भक्ति न नाखै।।२९८
साह रहै युग मारि विवाहुत मक्क इकै हुन्डेव दिखावो।
आप कही सति जानि गये प्रभु, त्यौ रुपया वह राग दिवावो।
देखि निहाल भई प्रभु को मुख जाइ अगो रुपया गिनवावो।
दांम लिये र दयो वह कागद भोजन देत भई प्रभु पावो।।२९९
साहुक राग धरयौ गहनै नरसी करि रूप सजाइ छुड़ायौ।
गोदहि नांखि दयौ वह कागद, आइ हरी जन हार गहायौ।
सब्द हुवो जयकार सभा मधि भूप परयौ पगि भाव सवायौ।
दुष्ट गये मुरझाइ नये नहि रांम दया विन पंथ न पायौ।।३००
ब्राह्मण हेरत डोल भमौ वर पायौ नहि नरसीहु बतायौ।
धूमस भाई सु पुत्र दिखावत देत तिलक्कहि देखि सुभायौ।
मांहि बरोबरि हौ सब सौ वर, वेगि गयो द्विज नांव जनायौ।
सीस धुनै सुनि ठा लकुटा मनि धोरि सुता फिर आहु कहायौ।।३०१
डारहु काटि मगूरहि कौं जव जाइ कहू घर कौं कमसायौ।
माग सुता लखि बैठि रहे कहि ब्याहन आवत व बहुरायौ।
देत लगन सु ब्राह्मन भेजत आई दयौ कर सैर करायौ।
तास बजावत ध्यारि रहे दिन सोच मही मन सावस आयौ।।३ २
मै पखवांन बजहु निसांम सुनै नहि कान-स उच्छव भारी।
मांडत है मुग कृष्ण अघू रूप घोड़ि तुरी मिसि गात सु मारी।
मै जिवनार अपार भये नर, मोट न बांधत विप्र बिचारी।
हाथिन घोरन ऊंन्न हु रथ बैरा किसोर जनै तपधारी।।३ ३
कृष्ण कहै नरसी चलिरे तुम आवत हूं सभ मारग मांनौं।
आपहि जामहु मैं उर आनहु मै मुग पेटहि तास रगांनौं।

---

[1] सांमिर।

लेइ उठाइस बोझ सबै, हरि जाइ रहे समधी पुर जानौ।
भेजत है नर आइ र देखत, फौज किसी यम पूछि बखानौं ॥३०४
येह जनेत मनौ नरसी जन-नैन रसी नरसी इन ध्यावैं।
आनि कहु[1] यहु बुद्धि गई वह, साच कहै हमही डहकावैं।
ये तहि आत सगाइ करी द्विज, मात नहिं तनि बात सुनावैं।
तो धन सौ इक फूस सरैं नहि, देखहु ता लकुटा परभावैं ॥३०५
देखन कौ चलि जात बरातहि, मान मरयौ द्विज सू कहि राखौ।
पाइ परैं किरपा करि है जब, जाइ परे हम चूकहि नाखौ।
भक्ति[2] मिले उठि कृष्ण मिलावत, सौंपि सुता इन बीनति भाखौ।
भेजि दई लखमी उतहू हरि, आत भये परणाइ र पाखौ ॥३०६

इति श्री विष्णुस्वांमि संप्रदा

अथ माध्वाचारिज सप्रदा [मूल]

छपै रघवा प्रणवत रामजी, मम दोषो नहीं दीयते ॥९०
आदि बृक्ष विधि नमो, निगम नृमल रस छाते।
मध्वाचारय मधुर पीवत, अमृत रस माते।
तास पथित भू प्रगट, संत अरु महंत निसतरे।
हरि पूजें हरि भजे, तिनहि संग बहुत निसतरे।
मैं बपुरौ वरनौं कहा, जांणौं जाइ न जीय ते।
रघवा प्रणवत रांमजी, मम दोषो नही दीयते ॥२१७
ये पांच महत परसिध भये, ज्ञांनी गौड़ बंगाल मधि ॥
नित्यानंद श्रीकृष्ण-चैतन्य, भजि लाहो लीयो।
रूप सनातन रांम रटत, उमग्यौ अति हीयौ।
जीउ-गुसांई खीर-नीर, निति निरनौं कीयौ।
जै जै जै त्रिलोक ध्यांन, ध्रुव ज्यूं नहीं बीयौ।
राघो रीति बडेन की, सब जानै बोलै न बधि।
ये पाच महंत परसिध भये, ज्ञांनी गौड़ बंगाल मधि ॥२१८

---

१. कहि यह। २. भक्त।

देवल जाइ र पाट मगावत भाटि गुरुो गलि नावत घूट्यौ ।
गाइ दिखावहु ख्यास हमैं अब गावत राग बुती महि छूट्यौ ॥२६७
देखि खुसी सब देत उराहन नौस नई हूरि कौ यहु मार्ग ।
म्राखिर[1] ख्यास गही उरमास मुहावस लाल कही किन सार्ग ।
रांम भले सु भख्यौ क्रम पावत कौन मिटावत है अभिलाखें ।
जाइ कहा मम तोहि कहै धिक चाहु महै तन भक्ति न नांख ॥२९८
साह रचै जुग नारि विवाहत भक्त इकै हरदेव दिखावो ।
म्राप कही सति जांनि गये प्रभु, स्यौ रुपमा यह राग दिवावो ।
देखि निहाल भई प्रभु को मुख आइ जगो रुपया गिनवावो ।
रांम लिये र दयो वह कागद मोजन देस भई प्रभु पावो ॥२९९
साहक राग धरयौ गहनै नरसी करि रूप सजाइ छुवायौ ।
गोदहि नांखि दयौ वह कागद म्राइ हरी जन द्वार गहायौ ।
सब्द हुवो जयकार सभा मधि भूप परयौ पगि भाव सवायौ ।
दुष्ट गये मुरझाइ भये नहि रांम दया बिन पंथ न पायौ ॥३००
ब्राह्मन हेरत कोस भलौ वर पायौ नहिं नरसीहु बतायौ ।
धूमस भाई सु पुत्र दिखावत देत तिलककहि देखि लुभायौ ।
नांहि बरोवरि ही सब सौ घर, वेगि गयो द्विज नांव जनायौ ।
सीस धुनै सुनि सा सकुटा मनि थोरि सुता फिर चाहु कहायौ ॥३०१
तारहु काटि अगूठहि कीं अब आइ कहै कर कौं कमसायौ ।
भाग सुता लखि बैठि रहे कहि व्याहन भावत दे महुरायौ ।
देत लगंन सु ब्राह्मन भेजत जाई दयौ कर लेर डरायौ ।
सास बजावत ख्यारि रहे दिन सोच मही मन सावस भायौ ॥३०२
हूं पकवान बनैहु मिसांन सुनैं नहि नाम-स उच्छव भारी ।
मोहन है मुख कृष्ण बधू रस कोटि पुरी मिलि गात सु मारी ।
हूं जिवनार अपार भये भर मोट न बांधत विप्र बिचारी ।
हाथिम घारन ऊंन्न हूं रथ बैस किसोर जनै तपधारी ॥३०३
कृष्ण कहै नरसी अभिरे तुम आवत हू मम मारग मांनौं ।
म्रापहि जांनहु मैं उर मानहु है मुग फटहि लाम रसांनौं ।

[1] म्राखिर ।

लेइ उठाइस बोझ सबै, हरि जाइ रहे समधी पुर जानौ।
भेजत है नर आइ र देखत, फौज किसी यम पूछि बखानौ ॥३०४
येह जनैत मनौं नरसी जन-नैन रसी नरसी इन ध्यावै।
आनि कहु[1] यहु बुद्धि गई वह, साच कहैं हमही डहकावै।
ये तहि आत सगाइ करी द्विज, मात नहिं तनि बात सुनावै।
तो धन सौ इक फूस सरै नहि, देखहु ता लकुटा परभावै ॥३०५
देखन कौ चलि जात बरातहि, मान मरचौ द्विज सू कहि राखौ।
पाइ परै किरपा करि है जब, जाइ परे हम चूकहि नाखौ।
भक्ति[2] मिले उठि कृष्ण मिलावत, सौंपि सुता इन बीनति भाखौ।
भेजि दई लखमी उतहू हरि, आत भये परणाइ र पाखौ ॥३०६

इति श्री विष्णुस्वांमि संप्रदा

अथ माध्वाचारिज संप्रदा [मूल]

छपै रघवा प्रणवत रांमजी, मम दोषो नहीं दीयते ॥८०
आदि बृक्ष विधि नमो, निगम नृमल रस छाते।
मध्वाचारय मधुर पीवत, अमृत रस माते।
तास पथित भू प्रगट, संत अरु महंत निसतरे।
हरि पूजें हरि भजै, तिनहि संग बहुत निसतरे।
मैं बपुरौ बरनौं कहा, जांणीं जाइ न जीय ते।
रघवा प्रणवत रांमजी, मम दोषो नही दीयते ॥२१७
ये पांच महत परसिध भये, ज्ञानी गौड़ बगाल मधि ॥
नित्यानंद श्रीकृष्ण-चैतन्य, भजि लाहो लीयो।
रूप सनातन रांम रटत, उमग्यौ अति हीयौ।
जीउ-गुसांई खीर-नीर, निति निरनौं कीयौ।
जै जै जै त्रिलोक ध्यांन, ध्रुव ज्यूं नहीं बीयौ।
राघो रीति बड़ेन की, सब जानै बोलै न बधि।
ये पांच महंत परसिध भये, ज्ञानी गौड़ बंगाल मधि ॥२१८

---

१. कहि यह। २. भक्त।

देवल जाइ र पाट मगावत बाटि गुद्यौ गसि नावत छूट्यौ।
गाइ दिखावहु स्याम हमैं अब गावत राग खुती नहि छूट्यौ ॥२९७
देखि सुखी सब देत उराहन नौल नई हरि कौं यह भावैं।
आखिर[1] ग्वाल गही उरमाल मुहावत लाल कह्यौ किन लावें।
रांम भजे सु सम्यौ क्रम पावत कौन मिटावत है अभिलावैं।
आइ कह्या मम साहि कहै धिक आहु यहै तन भक्ति न नांख ॥२९८
साह रहै पुग मारि विवाहत भक्त इकै हरदेव दिखावो।
आप कही सति जानि गये प्रभु, स्यौ रुपया वह राग दिवावो।
देखि निहाल भई प्रभु को मुख, आइ जगो रुपया गिनवावो।
दाम लिये र दयो वह कागद भोजन देत भई प्रभु पावो ॥२९९
साहन राग धरयौ गहनै नरसी करि रूप सजाइ छुडायौ।
गोवहि नांखि दयौ वह कागद आइ हरी जन द्वार गहायौ।
सब्द हुवो जयकार सभा मधि भूप परयौ पगि भाव सवायौ।
दुष्ट गये मुरझाइ नये महि रांम दया बिन पंथ न पायौ ॥३००
ब्राह्मन हेरत डोल भमौ घर, पायौ नहि नरसीहु बतायौ।
भूमत आई सु पुत्र दिखावत देत तिलककहि देखि लुभायौ।
मांहि बरोबरि हौ सब सौ घर, वेगि गयो द्विज मांव जनायौ।
सीस धुनै सुनि ता सकुटा भनि बोरि सुता फिर आहु कहायौ ॥३०१
बारहु काटि अगूठहि कौं अब जाइ कहूं कर कौं कमलायौ।
भाग सुता लखि बैठि रहे कहि ब्याहन आवत दे वहुरायौ।
देत लगन सु ब्राह्मन भेजत आई दयौ कर भैर डरायौ।
ताम बजावत च्यारि रहे दिन सोच नहीं मन सावल आयौ ॥३०२
है पकवांन धर्मैहु निसांन सुनै नहि कांन-स उच्छव भारी।
मांडल है मुख कृष्ण वधू दल चौकि तुरी निसि गात सु मारी।
है बिवमार अपार भये नर, मोट न बांधत विप्र बिचारी।
हाथिन घोग्म ऊंन्न हु रन बैस किसोर जनै तपधारी ॥३०३
कृष्ण कहै नरसी चलिये तुम आवत हूं सम मारग मानौं।
आपहि जांमहु मैं उर धांनहु मैं मुग फेन्हि ताम ग्यानौं।

---
1 प्रांगिर।

लेइ उठाइस बोझ सवै, हरि जाइ रहे समधी पुर जानी।
भेजत है नर ग्राइ र देखत, फौज किसी यम पूछि बखानी ॥३०४
येह जनैत मनौ नरसी जन-नैन रसी नरसी इन ध्यावै।
ग्रानि कहु[1] यहु बुद्धि गई वह, साच कहै हमही डहकावै।
ये तहि ग्रात सगाइ करी द्विज, मात नहिं तनि वात सुनावै।
तो धन सौ इक फूस सरै नहि, देखहु ता लकुटा परभावै ॥३०५
देखन कौ चलि जात बरातहि, मान मर्यौ द्विज सू कहि राखौ।
पाइ परै किरपा करि है जब, जाइ परे हम चूकहि नाखौ।
भक्ति[2] मिले उठि कृष्ण मिलावत, सौंपि सुता इन बीनति भाखौ।
भेजि दई लखमी उतहू हरि, ग्रात भये परणाइ र पाखौ ॥३०६

इति श्री विष्णुस्वामि संप्रदा

ग्रथ माध्वाचारिज सप्रदा [मूल]

छपै रघवा प्रणवत रामजी, मम दोषो नहीं दीयते ॥टे०
ग्रादि वृक्ष विधि नमो, निगम नृमल रस छाते।
मध्वाचारय मधुर पीवत, ग्रमृत रस माते।
तास पथित भू प्रगट, संत ग्ररु महंत निसतरे।
हरि पूजे हरि भजे, तिनहि संग वहुत निसतरे।
मैं बपुरौ बरनौं कहा, जाणीं जाइ न जीय ते।
रघवा प्रणवत रांमजी, मम दोषो नही दीयते ॥२१७
ये पांच महत परसिध भये, ज्ञांनी गौड़ बंगाल मधि ॥
नित्यानद श्रीकृष्ण-चैतन्य, भजि लाहो लीयो।
रूप सनातन रांम रटत, उमग्यौ ग्रति हीयौ।
जीउ-गुसाई खीर-नीर, निति निरनौं कीयौ।
जै जै जै त्रिलोक ध्यांन, ध्रुव ज्यू नहीं बीयौ।
राघो रीति बड़ेन की, सब जानै बोलै न बधि।
ये पांच महंत परसिध भये, ज्ञानी गौड़ बंगाल मधि ॥२१८

---

१. कहि यह। २. भक्त।

उभै भ्रात कलियुग प्रगट, भक्ति सथापन कारनै ॥दे०
नित्यानंद अवधिभद्र, कृष्णचैतन्य कृष्णघन।
कीयो दूरि अधर्म्म, परम हर पच्यौ भजन-पन।
प्रेम रसांइन मत बड़े, मन अंम्री सेवत।
जो नर सेव नांव, ताहि उत्तम गति देवत।
पूरब गौड़ बंगाल के, तारे जन अौतार न।
उभै भ्रात कलियुग प्रगट, भक्ति स्थापन कारन ॥२११

नित्यानन्द महाप्रभु की टीका

मत्त आप सदा मदमत्त रहे अभिदेव चहै पुनि प्रेम मताई।
गयद वे निति आनन्द रूप धरयौ प्रभु, भाइ भरी तऊ है चित चाई।
छंद भार भयौ न सभार सरीर हु पारस तौं महि राखि धराई।
केत हु तें सुनि नांम भरे जन होइ गई मतवारि सभाई ॥३०७

श्री कृष्ण चैतन्य प्रभु की टीका

गोपिन की रति देखि बने हरि, या तन मैं स्यम भ्रात लखाई।
गौर तमी सब भौर रह्यौ बनि रंग कृष्णौ अम अंग न माई।
कृष्ण सरीरहि लालप भावत जानत हु फिरि यौं मनि भ्राई।
पुत्र यसोमति होत सची सुत गौर भये गन मांझ मचाई ॥३०८
प्रेम हुवै कब हेम डरौ तन अंग कुवै कबहू बधि जावै।
भौर भई भस वा पिचकारनि लाल प्रियाजु ग भाव समावै।
ईस्वरता परमांन करी जगनाथ हु क्षेतर देखनं[१] भावै।
च्यारि भुजा पट बाहु दिखावत बात अनूपम प्रभहु गावै ॥३०९
चैतनि स्यांम सु नांम भयौ कुग[१] ख्यात महत्त जु देह धरी है।
गौंड जितौ नर भक्ति न जानत प्रेम समुद्र बुड़ाय हरी है।
सत सिरोमनि होत भये सब तारन कौ जग बात खरी है।
कोटि अजामिल बारत हुत्न भक्ति अगम करे सुभरी है ॥३१०

---

१ जग।

१क्षि. रोहली खुंद।

मूल

छपै श्री रूप सनातन तज्ञ दुहु, दिषै स्वाद कीयो बवन ॥
पूरब गौड़ बगाल, तहा कौ सूबौ होई।
बिभौ भूप परमान, खजांनां असु गज जोई।
मिथा सब सुख मानि, चालि बृन्दावन आये।
प्रापति मैं सतोष कुज, करवां मन भाये।
सत तोष राघो रिदै, भक्ति करी राधा-रवन।
श्रीरूप सनातन तज्ञ दुहु, बिषै स्वाद कीयो बवन ॥२२०

टीका

पाच तुका निरवेद निरूपरण, जानि करचौ मन माहि डरे हैं।
येक रही तुक माझ निरतर, लाख कवित्त अरत्थ धरे है।
स्याम प्रिया रस बात कही वड, जीव सु नाथ छपैहि करे हैं।
है अनुराग कहा बरनू गति, जास दया करि प्रेम भरे हैं ॥३११
भू बृज की बन की बडिता जन, जानत नाहि न देत दिखाई।
रीति उपासन की सु पुरानहु, कै अनुसार सिंगार लखाई।
आइस पाइ सु स्याम प्रभू करि, आइ लगे सु गुपेस्वर भाई।
ग्रथ करे तिनकी इक बात, सुनै पुलकै अखिया झर लाई ॥३१२
रूप रहै नद-गाव सनातन, आतहु खीर सु भोग लगावै।
आत प्रिया सुखदाइक बालक, रूप लिये सब सौंज धरावै।
पाइस पावत नैन घुलावत, पूछि जितावत सो पछितावै।
फेरि करौ जिन बात धरौ मन, चाल चलौ निज आखि भरावै ॥३१३
रूप गुनागुन गान सुनै, अकुलान तिते उन मूरछ आई।
आप बडे धरि धीर रहे न, सरीर सुधी इम बात दिखाई।
श्री क्रणपूर गुसाई गये ढिग, स्वास लग्यौ तन कै सुधि पाई।
आगि छुये छिलका हुय जात, सप्रेम नयो यह कौंन सगाई ॥३१४
गोविंदचद जु आइ निसा, सुपनै महि भेद सबैहि जनायो।
मैं जु रहौं खिरका बिचि गोइक[1], साझ र भोरहु दूध सिचायौ।

---

१ गारक।

---

[1]शिष कृष्ण चैतन को।

रूप अनूप प्रगट्ट करयौ छबि को बरणै थकि जात लखायौ।
सागर गागर मांहि न मावत नागर कौं मति पार न पायौ ॥३१५
पांवन पञ रहैत सनातन तीन दिनां पय ल्यात पियारौ[1]।
सांवर रूप किसोर रह्यौ कत भ्रातहु ध्यारि पिताहि बिचारौ।
ग्रामहि बूझत पातक हुँ महि देखि चहूं दिसि नैन भरारौ।
आइ मिले अमके कबहू फिरि आन न द्यौ सिर साल पगारौ ॥३१६
सांपनि रूप मिला द्रिग देखि र, आंमि समातन जाति[2] बिचारौ।
भूलत फूलत है द्रुम डारनि, सो सर तीर हलान निहारौ।
आइ र भ्रातक दे परदक्षण धाप डरै सिर लै पग भारौ।
भ्रात उभै सु अपार बिरिभ्रनि पेखि जगे जग[3] बात उघारौ ॥३१७

मूल

छप्पै श्रीजीव गुसांई अग्र बड़, श्री रूप सनातन भजन जल ॥८०
प्रेम पालि परपक्क, ग्रामि बिधि फूटे मांहीं।
जुगल-रूप सूं प्रीति, बसत वृन्दाबन मांहीं।
अखंड अक्षर मन लग्यौ, कलम पुस्तक कर राजै।
सास्त्र बेद पुरांन सार, उर मधो बिराजै।
राघौ रसिक उपासना, संसा काटन अति सबल।
श्रीजीव गुसांई अग्र बड़ श्री रूप सनातन भजन जल ॥२२१

टीका

अब रचे बहु ग्रंथमि छेदक भ्रात बितौ धन मैं जस डारै।
सेव करै बन पात्र न दीसत मैं जु करो कटु कोप उचारै।
गौरव संत बड़ाई सिखावत बोमत मिष्ट निसा-दिन सारै।
कौन करै निरबेद निरूपण भक्ति चरित्र करै सु अपारै ॥३१८

मूल

छप्पै गोबिंद इष्ट सिर मष्ट भूप मधुर बचन श्रीनाथ भट ॥८०
श्रुति संमृत सास्त्र पुराण भारथ ही खोलै।
सब ग्रंथन को सार आप पारा ज्यूं ओलै।

---

[1] लखायौ। [2] जाति। [3] जग।

पूरब जा जिम कह्यौ, श्रादि श्री रूप सनातन।
नाराइन भट जीव, हीव धारचौ सोही पन।
गोपाल[1] श्रर्पति कुल नाग कै, दास भाव प्रेमां श्रघट।
गोविंद इष्ट सिर भक्त भूप, मधुर बचन श्रीनाथ भट ॥२२२
श्री नाराइन भट प्रभु, बृज-बल्लभ बल्लभ लगैं ॥टे०
नांचन गांवन सरस, रास मडल रस बरखै।
ललितादिकन बिहार, देखि दंपति मन हरखै।
महिमां बहु बृज भई, देस उधारक जीय की।
उच्छव प्रचुर प्रमाण, चाहि इक है प्रिया पीय की।
राघव संत समाज मैं, प्रेम मगन निस-दिन जगैं।
श्री नाराइण भट प्रभु, बृज-बल्लभ बल्लभ लगैं ॥२२३
भट्ट नराइन बृज धरा, गुह्य धाम प्रगट करे॥
इष्ट येक श्रीकृष्ण श्रौर उर मैं नहीं श्रावत।
भजन श्रमृत कौ श्रबध, सत जन सरस लडावत।
स्वांमि बिलास हुलास, श्रांन सूं रहत रसज्ञ-जन।
पक्ष सु मारत बोध, तांन कौं करैं निखंडन।
तह तह प्रभु लीला करी, जो जो तीरथ उर धरे।
भट्ट नराइन बृज धरा, गुह्य धांम प्रगट करे ॥२२४

टीका

इंदव छंद
भट्ट नराइन ब्रजु परांइन, ग्रामहु श्रात करे व्रत ध्यावै।
श्राप कहै इत है श्रमुकौ प्रभु, कुड र धाम प्रतक्ष दिखावै।
जागिहि जागि बिलास बतावत, जीत भये रिस की सुख पावै।
वेगि चल्यौ मथुरात कहैं जन, गाव उचे त्रिय सोत लखावै ॥३१९

मूल

छपै
मध्वाचारिज मधुपुरी, दुती कवलाकर भट भयौ॥
श्रति पंडित परबीन, भागवत कंठ बसेखै।
पैतालीस हजार हृदै, दिज दीपक देखै।

---
१. गोयल।

रूप अनूप प्रगट्ट करयौ छबि को बरणैं थकि जात लसायौ।
सागर गागर मांहि न मावत आगर कौं भजि पार न पायौ ॥३१५
पावन पैज रहैत सनातन सीस दिनां पय स्यात पिआरौ[1]।
सांवर रूप किसोर रह्यौ कत प्रावहु प्यारि पिताहि बिचारौ।
ग्रांमहि बूझत पालक हूं महि, देखि चहुं दिसि नैन भरारौ।
आइ मिलै अबकै कबहू फिरि, पान न द्यौ सिर लाल पगारौ ॥३१६
सांपनि रूप मिला द्रिग देखि र, जांनि सनातन काढि[2] बिचारौ।
झूलत फूलत है द्रुम डारनि सो सर सीर हलांन निहारौ।
आइ र आतक दे परचारण आप करें सिर मै पग भारौ।
भाव उमै सु अपार चिरित्रनि पेखि जगे जग[3] बात उचारौ ॥३१७

मूल

छपै श्रीजीव गुसांई अग्र बड़, श्री रूप सनातन भजन बल ॥८०
प्रेम पासि परपक्क, ग्रांन बिधि फूटै मांहीं।
जुगल-रूप सूं प्रीति, बसत बृन्दाबन मांहीं।
अखंड अमर मन लग्यौ, कनम पुस्तक कर राखै।
सास्त्र बेद पुरांन सार, उर अभो बिराजै।
राधौ रसिक उपासना, संसा काटन अति सबल।
श्रीजीव गुसांई अग्र बड़ श्री रूप सनातन भजन बल ॥२२१

टीका

अथ रचे बहु ग्रन्थनि छेन्क भाव जिती धन मै धन डारे।
सेव करे धन पाय न दीसत मैं जु करो कटु कोप उचारे।
गौरव संत बड़ाई सिखावत बोलत मिष्ट निसा दिन सारै।
कौंन करै निरबेव निरूपण भक्ति चरित्र करे सु अपारै ॥३१८

मूल

छपै गोबिंद इष्ट सिर भक्त भूप मधुर बचन श्रीनाथ भट ॥८०
स्रुति संमृत सास्त्र पुरांण भारथ ही सोसै।
अब ग्रंथन को सार, आप पारा ज्यूं बोलै।

---

१ लसायौ। २ काढि। ३ जस।

छाडि दयौ गृह पालत है वह, मानत हू कर तास गवारा।
आइ परे जगनाथ पुरी तटि, धीरज भूखन प्यास बिचारा ॥३२१
तीन दिनास भये न नही खुत, लीन रहै हरि सोच परयौ है।
सैन सु भोग पठात भये, कवलाकर हाथ क थार धरयौ है।
वैठि कुटी मधि पीठ दई मग, दामनि सी दमकी न फिरयौ है।
देखि प्रसाद बडे मन मोदत, मानत भाग सुपात्र परयौ है ॥३२२
खोलि किवार निहारत थारन, सोच परयौ उत ढूढत पायौ।
बाधि र वेत दई सु लई प्रभु, जानत पीठि चिहन दिखायौ।
आप कही हम देत लयौ इन, पाव गहे अपराध खिमायो।
बात विख्यात नमावत कीरति, साध लजावत सील बतायौ ॥३२३
रूप निहारत सुद्धि विसारत, मदिर मैं रह जात न जानै।
सीत लग्यौ जन कापि उठे हरि, देसि कला तउ हैं दुख भानै।
बेग लगे तटि सिंध गये चलि, चाहत नीर तबै प्रभु आनै।
जानि लये हरि दूरि करौ दुख, ईस्वरता तुम खोवत क्यानैं ॥३२४
नाथ कही सब काम करौ तव, देत मिटाइ बिथा यह भारी।
भोग रहे तन फेरि धरौ नहि, मेटत हू प्रभुता हम हारी।
बात वहै सति गास सुनौ इक, साधन कू न हसै सु बिचारी।
देखत ही दुख दूरि गयौ सब, नौतम भक्ति कथा बिसतारी ॥३२५
कीरति देखि अभगहि मागत, खीजि तिया रु चलावत पोता।
देण लयौ गुण सो कर धोवत[1], बाति बनाइ करी दिव जोता।
मदिर माहि उजास भयो, तम नास गयौ उर देखत नौता।
साध दयाल निहाल करैं, दुख देत उनै सुख सेवत होता ॥३२६
पडित जीतत आत भयो वत, बात करौ हम सौं नही हारौ।
हारि लिखि पुनि बाचि बनारस, माधव जीतत खुवार जमारौ।
आय कही फिरि माधव सौं अब, हारि गधै चढितौ पतियारौ।
बाधि उपानत कानन हू, जगनाथह राय खराहि चढारौ ॥३२७
गावत है बृज की रचना, गिर नील सवै चलि नैंन निहारै।
चालि परे इक गाव तिया जन, ल्यावत भोजन चाव पियारै।

---

१. पावत।

अंतर मति की प्रीति, प्रभुजी प्रगट पिछाणी।
दोऊ भुजन ह्वै भक्त, बात सर्व ही जग जामी।
राघो मति रुचि स्याम सूं, भक्त भावना सू भयौ।
मध्वाचारिज मधुपुरी, कुली कलमाकर भट भयौ ॥२२५
सपतदीप नवखंड मैं भक्त जक्त की नाव ॥
मथुरा सबन सुथान, पुरी पुराण श्रुति गावै।
सुकृत बिना सथान बसे, कोई मुक्ति न पावै।
सत सुक्रिरती करणि, काम-क्रम जिन तें डरपै।
तन मन धन सरबस, साध साहिब कौं अरपै।
राघौ रहवे रामजी, जहां तहां धारे पाव।
सपतदीप नवखंड मैं भक्त जक्त की नाव ॥२२६
व्यास ह्रिती माधौ प्रगट सर्व को भलौ बिचारियौ ॥६०
श्रुति समृति पौराण, अगम भारथ मथि लीयौ।
ग्रंथ सबै पुनि देखि, भरथ रस भाषा कीयौ।
गाई लीला केति कृतम ब्र मैं उधरयौ।
भवनां सुमि करि कंठ, जीव जग निरभै विचरयौ।
निरवैर अवधि सिर जगंनाथ, रस करुणा उर धारियौ।
व्यास ह्रिती माधौ प्रगट, सर्व को भलौ बिचारियौ ॥२२७

इंदव छंद
सारहु मैं ततसार सिरोतर भोग्यौं महा मधि माधौ गुसांई।
लीला र कीति कथै सुन दूरि ह्वै काल सरै महामंत्र की नांई।
भरथ भूत निरंतर पाखंड, व्याधि हरै वपु त सब जाई।
राघो कहै निति नेम निरंतर ऐसे मिले कुरि सेवग सांई ॥२२८[1]

टीका

माधवदास तिया तन त्यागत यौं दिज जानि मिथ्या बिवहारा।
पुत्र बडौ हुइ चाह तजी गृह और भई दिगई करतारा।

---

१ सांई।

---

[1]प्रति सेवग मे इसे टीकाकार का पद मानकर १२ की संख्या दी है पर 'राघो' की छाप होने से मूल ग्रन्थकार का ही है।

मदिर द्वार सुरूप निहारत, सीत लगें सिकलात डरयौ है।
सोचहु रीति प्रमान उहै जिम, माधवदास उधार धरयौ है ॥३३३
चैतनिकृष्ण सु आइस पाइ र, आइ बृदाबन कुंड बसे है।
रूप चहनि कहै न सकै तन, भाव सरूप करयौ जु लसे हैं।
चाबर दूध खवाय मनौमय, नारि लये रस बैंद हसे हैं।
सतन की महिमा न सकौ कहि, देहु वहै गति भक्त रसे है ॥३३४

मूल

छपै **बृधमान गग लगहर जन, राघो नारद ज्यूं नचे ॥**
पीवत रस भागवत भक्ति, भू परि बिसतारी।
परमारथ के पुज, उभै भ्राता ब्रह्मचारी।
सतन सू लैलीन, दीन देखें कछू दीजे।
राम राम् रामेति, राति दिन सुमरन कीजे।
भट भीखम सुत सातकी, भक्ति काज भू पर रचे।
बृद्धमान गग लगहर, जन राघो नारद ज्यू नचे ॥२२९
मिश्र गदाधर ग्यान पक्ष, जिन भ्रम बिध्वसे भीव ज्यूं ॥
बसत बृदाबन बास, भजत हरि सुख कौ आलै।
करै हस ज्यूं अस, खीर नीरहि निरवालै।
पीवत रस भागौत अनि न निज धरम दिढायौ।
आन धर्म सब त्यागि, गर्भ[1] गहि अधर उडायौ।
राघो धरनि धमाल की, धरयौ निगम मत नीव ज्यू।
मिश्र गदाधर ग्यान पक्ष, जिन भ्रम बिध्वसे भींव ज्यू ॥२३०

टीका

इदव स्याम रगी रग जीव सुन्यौं पद, साध उभै लिखि पत्र पठायौ।
छद रैंणि बिना चढियो रग क्यौं करि, प्रेम-मढ्यो उरका उत आयौ।
कूप तहा पुर कै ढिग बैठक, पूछत हे उन नाव बतायौ।
कौन जगा बसिहौ जु बृदाबन, धाम सुन्यौ मुरछा गिर पायौ ॥३३५
कोउ कह्यौ भट येह गदाधर, बेगि उठे पतियाहि जिवाये।
हाथि दयौ उरका सिर लावत, बाचि र चालि बृदाबन आये।
जीउ मिले द्रिग तैं जल ढारत, बेह गई सुधिवै फिर गाये।
ग्रथ पढे सब स्याम कवादिव[2], प्रेम उमग न अग सु छाये ॥३३६

---
१. भरम। २. कथादिव।

सठि प्रसाद करै सु भरै द्रिग, है किम बात कही जु उघारैं।
सांवर बाल मुराइ चलावत मात न जीवत देह बिसारैं ॥३२८
गांव चले धनि भक्त महाजन ही मनमैं बिनतीहु करी है।
जात भये घर वो जु गयौ धनि भाव भरी तिय पाइ परी है।
म्हत रहै इक बूमत भासन नाटि गयौ मन मांहि डरी है।
ल्यौ परसाद सु बूघहि पीवत माघव नांव सु भ्रास भरी है ॥३२९
आप गये तब बात महाजन नाम सुन्यौ पुनि म्हत भगत्ता।
आइ परे पगि आप मिले मिलि हो धनि संपति धांम सपत्ता।
म्हत कहै अपराध करयौ हम सेव करी हरि संत महत्ता।
बात मिलाप बनैं सुभरी मन जात बृंदाबन है प्रभु सत्ता ॥३३०
देखि बृंदाबन मोद भयो मन जात बिहारी चमां कु धमाये।
ल्यौं परसाद कही प्रतिहार, गये जमना तटि भोग लगाये।
भोजन कौं अरपात भये जन पाप नहीं हरि मै हि बलाये।
बूमत आप बनाइ दयो फिरि, स्याइ कह्यौ रस हास गहाये ॥३३१
देखन कौं बृज जात भये धुरि, खेम मसे निसि कृम दिखाये।
जैत गये शुनिवे हरियानहु गोवर पाथि निसामिर आये।
आइ मरां धुत मात मिले मग मैं सुपमां कहि बैसि मिलाये।
या विधि भांति अनेक चरित्रहु कांन परे हम आइ सुनाये ॥३३२

मूल

छप्पै
रघुनाथ गुसांई की रहसि श्रीजगनाथ के मनि बसी ॥
स्वंध पौरि सत सुर, रहै गरुड़ासन ठाढ़ौ।
अति धीरज अति ध्यांन माहि मति पण कौ गाढ़ौ।
सीत समैं सकलात जगतपति आंनि उढ़ाई।
अब लूं अविरज भयौ महंत की मांनि बड़ाई।
ज्यूं जननी सुत सुधि करै जन राघौ रीति करी इसी।
रघुनाथ गुसांई की रहसि श्रीजगनाथ के मनि बसी ॥२२८

टीका

संपति सूं घर पागि रह्यौ उन त्यागि निलाचल बास करयौ है।
बाप पठावत है भगतू, नहि लेत महाप्रभु पास परयौ है।

५रिषीकेस ६भगवान, ७महामुनि ८मधु ९श्रीरंगा।
१०घमंडी ११जुगलकिसोर, १२जीव १३भूगरभ उतगा।
१४कृष्णदास १५पंडित उभै, हरि-सेवा व्रत राखियो।
श्री वृन्दावन कौ मधुर रस, इन सबहिन मिलि चाखियो ॥२३१

गोपाल भट की टीका

भट्ट गुपाल वसें उर लाल, लसे प्रिय पीव विख्यात सरूपा।
भोग धरे अर राग करै, अनुराग पगे जग बात अनूपा।
स्वाद लयौ वन माधुरता जिन, सीत चख्यौ सु भये रस रूपा।
औगुन त्यागत जीवन के गुन, लेत भले जन मैं बड भूपा ॥३४३

अली भगवान की टीका

रामहि पूजि अली भगवान, बृदावन आइ र और भई है।
रास बिलास निहारि बिहारिहि, प्यास बढी रसरासि नई है।
चाहि सु रास बिहारीहि पूजन, बात सुनी गुर रीति गई है।
आत भये वन जाइ परे पग, ईस तुमै सिर कैसु दई है ॥३४४

बीठल बिपुल को टीका

बीठलदास बरे हरिदास जु, दाह उठी गुर कै स बिवोगा।
रास समाज बिराज बडे जन, वोलि लये सुनि आवत जोगा।
दखि बिहार जुगल्लकिसोरहु, गान र तान सुने मन सोगा।
जाइ मिले उस[१] भात्र धरयौ तन, और गये सव देखत लोगा ॥३४५

लोकनाथ गुसाईं को टीका

कृष्ण जु चैतनि के भृति उत्तम, लोकहु नाथ सवै सुखदाई।
कृष्ण प्रिया सु बिहार रहै मन, ज्यं जल मीन निसा दिन जाई।
भागवत रस गान सु प्रान हि, गावत है तिन सूं मितराई।
माग चलै पगि लागि रसिक्कनि, नेह सु रीति दया तजि ताई ॥३४६

गुसाईं मधु को टीका

श्री मधु आइ बृदावन मे इन, नैननि सौं कब देखहु रूप।
हेरत हे वन कुज लता दुम, भूख न प्यास गिणै नहि धूप।

---

१ उन।

नीव कल्यान हुवौ रजपूत सू भ्रात कथा सुनिवे मन लाग्यौ।
गांव नजीमहि धौरहरा उन भोग तजे तिय कौ दुख पाग्यौ।
सील लिवाय दयौ भट मा पति ब्यार मरौ इन कांमहि भाग्यौ।
मांगत ही जुवती प्रभवंतहु सीस दये रुपये कहि राग्यौ ॥३३७
भट्ट गदाधर की हु कथा कहि है सुमरी किरपा सुनि लीजै।
लोभ करयौ मन भग गई वत यौहि कही मम काम करीजै।
आप कहै तव ध्यान करौं निति दोष नहा हुम मांगत दीजै।
श्रोतन पं दुख होत भयो सुनि मूठ कही इन मार नखीज ॥३३८
भूमि फठै धरि जाहि कहै सिष नीर वहै द्रिग बुद्धि गई है।
वल्लभदास प्रकास भयौ दुख राम सुनी स सुनाइ लई है।
साच कही तन प्रांच करे बहु मार करी सब कंत भई है।
मारन कौं जु कल्यांन गयौ तिय भट्ट कही मम सीख दई है ॥३३९
देस महृत कथा महि आवत पासि पठास सब जन भीजै।
आसु न आंवहि साच मुये[1] नस आवत लास मिरच्चि[2] हु लीजै।
साघ सबै भटजूहि बनावत ऊठि गये सब से मिलि रीझै।
याहि हसी उर होइ धक मम रोइ मरें द्रिग प्रेम सु भीजै ॥३४०
चोर घस्यौ घर सपति बांधत, ओर कर नही ऊठत भारी।
आइ उठाई दई सु लई सखि नाम सुन्यौ हम भूमि विचारी।
लै धन जाहु उजास कर रवि भ्रात गुनी वस सेरि भिवारी।
सीस उतारि विचार करौ यह कंत भयौ सिप बात निवारी ॥३४१
सेव करें प्रभु की निज हाथनि भक्ति प्रतीति पुरानहु गाई।
देत हुते धवमा सिख से धन आवत ही मृति सैन जनाई।
हाथ पसारि विराजहु आसन भाव यही खिजिकै समझाई।
हेत हुरो परि आस तजी जग प्रेम गये पग रीति दिखाई ॥३४२

मूल

छपै   श्री वृन्दावन की मधुर रस इन सबहिन मिलि चाखियौ ॥
१भट गोपाल रघुमुति प्रभु मैं सरबस देखे।
थानेसुरो ३जगनाथ बिदुस ४थोठम रस रेखे।

---
१ बठास। २ मुवे। ३ मिरिच।

आवत दास तिनै सुख दे अति, जीभ कहै न सकै सुबिचारी।
उत्सव यौ गुर कौ सु करै दिन, मानि र द्वादस राखत ज्यारी ॥३५०
सावन कौ चरणामृत ल्यावहु, भावहि जानन दास पठायौ।
आनि कह्यौ सब सन्तन खोरन, पान कर्यौ वह स्वाद न आयौ।
भक्ता सभा सबही न चखावत, जानत नैंकि न छोडि सु आयौ।
बूझि कह्यौ तन कोढ रह्यौ फिर, ल्याय दयौ पिय कै सुख पायौ ॥३५१
राजसभा सु बिराज कहै जन, वैह विवेक कहै न प्रभाऊ।
भोजन साघ करै इकठे वहु, दूर[1] रसोट हु द्यौ नही भाऊ।
पातरि डारि दई व गुसाई, पगारि दई सुनि देखत दाऊ।
सीतल यौ नहि देत भये मुख, दूरि कर्यौ भृति सेवन चाऊ ॥३५२
बाग समाज चले जन देखनहू, का दुरावत सोच पर्यौ है।
साघन मान चहै तन घुमर, वैठि कह्यो कित ल्याव धर्यौ है।
जाइ सुनावत दास तमाखहु, पासि किनै सुनि आनि कर्यौ है।
झूठहि खैंचि र साच दिखावत, पाइ लये मन दोष हर्यौ है ॥३५३
सतन सेवन गाव दयो किन, भूपति दुष्ट उतारि लयौ है।
स्यामहि नद विचारि कर्यौ जब, दास मुरारिहि पत्र दयौ है।
जा विधि होइ सु ता विघि आवहु, आवत वेगिग्र चैन लयौ है।
प्रिष्टि करी परनाम निवेदन, भोजन मै चलि प्रेम भयौ है ॥३५४
आइस सौ अचवन्न लयौ उन, दुष्टन मै मुखि तापहि आये।
माग मिले सचिवै सिष बोलत, प्रात पधारहु नीच बताये।
काम करै हम सौ समझावत, आत नही मन नेह डराये।
चिंत करौ जिन धीर धरौ उर, भूप कही दिन तोन लगाये ॥३५५
आत भये गुर ल्याव कह्यौ वर, देत करामति येह सुनाई।
जाहु अभू उन मानष देखहि, जोर चले गज घूम मचाई।
भाजिक हार गये नहि देखत, बोलि कही सु गिरा सुघ भाई।
कृष्ण हि कृष्ण कहौ तभ छाड हु, पेम सन्यौं सुनि देह नवाई ॥३५६
नीर वहै द्रिग होत न धीरज, आप दया करि भक्ति हु दीन्ही।
दास गुपाल गरे धरि माल, सुनावत नाव सु यौं बुधि कीन्ही।

---

१. दूसर सोटउ।

काटत ही जमुना स किरारनि बसिवत तटि देखि मनूंप।
दौरि लगे पगि र[1] भाप भये बड़ है अबहूं गोपिनाथ सरूप ॥३४७

कृष्णदास ब्रह्मचारी की टीका

मोहन काम सरूप सनातन सीस धरे मम पूजन कीजे।
कृष्ण सुदास मनूं ब्रह्मचारिहु भट्ट नरांहन सिष्य जु भीजे।
चारु सिंगार करहु निहारत चेत गहि नहि यौं मन दीजे।
राग र भोग बखान करूं किम है अजहू उन देखि र बीजे ॥३४८

कृष्णदास पंडित की टीका

गोविंद देव सरूप सिरोमनि पंडित कृष्ण सुदास प्रमांनी।
सेवन सूं अनुराग सु अगनि पागि रही मति है मन जानीं।
प्रीत करे हरि भक्त सौं बहु, दे परसाद सुपंडित मानीं।
रीति सु तें प्रतीति बिमी तिहु चाल चलें वहि और न मानीं ॥३४८

भूग्रभ गुसांई की टीका

भूग्रभ जू बसिके र वृन्दाबन, कुंजन को सुख गोबिंद सोयो।
है बिरकतहि रूप सुमाधुर स्वाद लयो मिलि भक्त कीयो।
मांनसि भोग लगाइ निहारत सबें हि जुगल सरूप सु पीयो।
बुद्धि समान बखांन करयौ बहु रंग भरयौ रस जानि र कीयो ॥३४९

मूल

छप्पै राघो रसिक मुरारि धनि अति प्रमोद पूरब कीयौ ॥
राजा जल अंकैत दयात करि करम धुड़ाया।
भाव भगति पन धप्यौ भरम गहि अपर उड़ाया।
तन मन धन सर्बस अरपि साधन कौं दीज।
अखिल अलम फल येहु देह धरि लाहा लीजे।
करहि कीरतन रैनि दिन प्रम प्रीति उमगं हीयौ।
राघो रसिक मुरारि धनि अति प्रमोद पूरब कीयो ॥२१२

टीका

इंदव सतम सेव बिचारि करें विधि पार न पावत कौन मुरारी।
छं० साधन के चरणांमृत के धरि माट भरे रहि पूजन भारी।

---
१ और।

सूर सट्टलि कहि, काव्य मरम कोऊ नहीं पायौ।
रहसि भक्ति गुन रूप, जनन कर्मादिक भायौ।
छपन भोग पद राग तें, पृथु नाई दुलराई है।
सत दास की सेव हरि, आइ निवाई पाई है॥२३५

टीका

इंदव छंद
वाम निवाइ सु गात्र हरी मन, भोग छतीस प्रकार लगाये।
प्रीति सची जग माहि दिखावत, सेव भले जगनाथजु पाये।
भूपहि रैनि कह्यौ जन नाम स, सतहि के घर जेवत भाये।
भक्ति अधीन प्रवीन महाजन, लाल रगील जहा तहा गाये॥३६०

मूल

छपै
सूर मदनमोहन की, नाम शृखला अति मिली॥
स्यामा स्याम उपास, गोपि रस ही कौ रसिया।
राग रग गुन टेर हुतौ, अगिलौ वृज वसिया।
वरन्यौं मुक्षि सिंगार, सवद मैं अठ रस नाहीं।
मुखि निकसत ही चल्यौ, गयौ द्वारावती मांहीं।
जुमला अर्जुन द्रुमन ज्यूं, अजसुत की आग्या पिली।
सूर मदनमोहन की, नाम शृखला अति मिली॥२३६

मूल

मनहर छद
मदनमोहन सूरदास पासि राख्यौ हरि आप,
थाप्यौ नाम धरि ताकौ जस गाइये।
जैसैं मिसरी मै वस विकत महगे मोल,
राम होन राम बोले जो पै भेद पाइये॥
जैसें कृत कागद मैं उतम श्लोक होत,
ताहि सुनि देखि सनमुख सिर नाइये।
राघो कहै राज मधि राम जस गायौ नीकै,
घनि करतार कवि छाप न छिपाइये॥२३७

टोका

नाम सु सूर खुले द्रिग कजहु, रग भिले पिय जीय ज्यवाये।
भामिल आप सडील लख्यौ, गुर वीस गुने दमरा पुरि लाये।

भूप लख्यौ परभाव परयौ पग कुम्भण्णी तजि यौं मति भींनीं।
नौतम गांव दयौ उन केतक भाग फळ्यौ मम भाजहि चीन्हीं ॥३५७
भक्त भयौ गज सतन सेवत देखि प्रनाम करे जननी क।
स्यावत गौनि उठाइ र मार न नाइक जाइ पुकारत पोक।
भावत उच्छव सोतहि पावन आप कुयें कहि मिन्न कही कैं।
छोडि दई गति भक्तन सूं मति सग समूह रहै सुख जीकैं ॥३५८
सग रहै जन पांच सलक्ष्य जाइ जहां नर स्यावत सीधा।
वात भई न्मह्रु दिसि को यह सूरज थाहि न भावत गीधा।
संत गयौ इक मानि दयौ गहि नीर न पीवत सीतहि बीधा।
बोसि गये दिन तीन र प्यारिहु गग गये तन त्यागन कीधा ॥३५९

मूल

छपै जकरी जन गोपाल की जगत मांहि पर्वत भई ॥
नरहड़ सहर न्याबभि[1] देस बागड़ वर कीयौ।
नवधा भक्ति बखांनि, येक दासत्व धर्म लीयौ।
बरछा बड़ भागौत साध परसत मैं सोहै।
सेवक संसय गृन्थि भक्ति बल सब कौं मोहै।
संत दया उर निसि वहै भावत स्यांमा स्याम ई।
जकरी जन गोपाल की जगत मांहि परमर्त भई ॥२३३
कृष्णदास की चरचरी[2] सकल जगत मैं विसतरी ॥
बालक कीयौ चरित कोप वासव कौ मीको।
पचाध्याई पाठ प्रगट प्यारो प्रिया पीको।
केलि रुकमनी कृष्ण कह्यो भोजन सपराई[3]।
परबतधरकी छाप जाबि मैं जहां तहां लाई।
जाको संग्या पाइ कें जग को सब जड़ता हरी।
कृष्णदास की चरचरी सकल जगत मैं विसतरी ॥२३४
सतदास को सेव हरि घाइ निबाई पाइ है ॥
बिमलानंद प्रबोध बंस उपज्यो धर्म सींवां।
प्रभु जन जांनि समांन दोइ जस गाये धींवां।

१ निवाज। २ वो राग। ३ मुतुरई।

१८विमलानंद राघौ कहै, १९रामदास परमानियौ।
ससार सलित निसतारनै, नवका ये जन जानियौं ॥२३८

सधनाजी की टीका

इंदव छंद
है सधना सु कसाई बनी अति, हेम कसोटी भली कस आई।
जीव हतै न करै कुलचारहि, वेचत मास हरी मति लाई।
सालिगराम न जानत तोलत, सत भरै द्रिग सेन कराई।
राति कही धरि आव वही[1] मम, गान[2] सुनौं उर रीझय[3] सचाई ॥३६६
आइ दये अपराध कर्यौ हम, सेव करी हरि कौ नही भाई।
रीझि रहे तुमपं सु करौ मन, नैन भरे सुनि सूद्धि गमाई।
धारि लये उर छोडि दयौ सब, श्री जगनाथ चलै उपजाई।
सग चल्यौ इक सग भये जन, देखि सुगात स दूरि रहाई ॥३६७
मागन गाव गये सु तिया इक, रूपहि देखि र रीझि परी है।
राखि लये परसाद करावन, सोइ रहे निस आइ खरी है।
सग करौ गर काटि न होवत, कठ कट्यौ पति तौ न डरी है।
पागि कही अब काम नही मम, रोइ उठी इन नारि हरी है ॥३६८
आमिल बूझत याहि हत्यौ हम, सोच पर्यौ कर काटिहि डार्यौ।
हाथ कटें उठि पथ चले हरि, पूरब पाप लख्यौ उर धार्यौ।
श्री जगनाथ पठी सुखपालहि, लै सधनान चढौ[4] सु बिचार्यौ।
नीठि चढे प्रभु पासि गये, सुपना सम त्रास मिटी पन पार्यौ ॥३६९

कासोस्वर अवधूत की टीका

कासिस्वरै अवधूत बरै करि, प्रीति निलाचल माहि बसे हैं।
कृष्ण जु चैतनि आयस पाय र, आय बृदावन देखि लसे हैं।
सेव लही प्रभु गोविंद देवहि, चाहत है मुख जीव नसे हैं।
नित्य लडावत प्रेम बुडावत, पारहि पावत कौन असे हैं ॥३७०

मूल

छपै
भक्त भागवत धर्मरत, इते सन्यासी सर्ब सिरै ॥
१रामचन्द्र कासुष्ट, दमोदर तीरथ गाई।
२चितसुख टीकाकरी, भक्ति प्रधान बताई।

---

१. उही। २ ग्यांन। ३. रीझि। ४. चढ।

ताहि पुवा सु मदन-गुपाल जु प्रेम पग्यौ सुकरा पहुचाये।
रनि पहुचत स्याम कही मत भोग करो उठिके फिरि पाये ॥३६१
स पद गावत भाव दिखावत संतन की पनही रखवारी।
सीत भयो किनि पाग्स चाहत खोसि गयो दर राखि संभारी।
बठि रह्यो जब हाथि उठावत भाग भई छिपि मैं हु बिचारी।
मांहि गुसांइ सुनात न जावत सेवन सौंपि गये जन सारी ॥३६२
संपति संतन कौं सुमुझाय र नांहि डरे जु निसंक रहे हैं।
मन लजानहि भात भये निसि पायर भासि सिवूल गये हैं।
भेसहि स्वा मन साथ गटक्कहु यौं सटके हम भाप कहे हैं।
भूपति खोसि सिवूपहि दसत कागद बांचि गुसी स भये हैं ॥३६३
मन पग्गायहु माहि रिझायहु भक्त सिन्धी बन मैं तन डारयौ।
टोडर धरि कही धन खोवत बांधि र स्यावहु मूढ हुजारयौ।
स्यात हजूर कही नृप दूरिहि सौनत दुष्ट कष्ट न मारयौ।
साखि लिखी मक्बर पिको भल जाहु यही मन तौ परि बारयौ ॥३६४

साखि

इन तन पमियारी करे मुखि दई पुनि ताहि।
दया तन त रखा करो निमनि मसकर माहि ?
भाइ बृंदावन माथुर मैं मन मध्य बस्यो सुनि सा ग्म गामे।
पा ग्नि त उतरयौ मुग तें सत जोजन भात बसी मन प्यामे।
सो र दिजे द्विज म्हेस चढे मद्द बस' पहेम युगम्म प्रकामे।
मोहन धू सिर इष्ट महा प्रभु भागवत माहि दया मनधारे ॥३६५

मूल

करे संसार सभिन निमतारनै भक्त पे जन आनियौ ॥
१निसोचम २हरिनाभ ३धोर ४मायानं ५सोभा।
६सींवा ७अपनी ८माणापर ९डूंगर गुण गोभा।
१०कासीश्वर मधुपुन ११मीरधो १२राम १३दवारच।
१४कन्हा १५गोबू १६परम १७अपान सिवर पार्बारथ।

१ बन।

श्रीजगन्नाथ रणछोड रटि, नर-नाराइण धांमजी।
ये मुक्ति भये माठा-पती, जन राघो जपि रामजी ॥२४१

श्री प्रतापरुद्र गजपति जु की टीका

इंदव रुद्रप्रताप कह्यौ गजपत्तिहि, भक्ति लई प्रभु तौहु न देखै।
छंद कोटि उपाइ करे लस न्यासहु, हौ अकुलात किहू मम पेखै।
नृत्य करै जगनाथ रथै मुख, पाय पर्‍यौ नृप भाग बसेखै।
लाय लयौ उर प्रेम बुडे सर, भाव भयौ दुख देत निमेखै ॥३७३

॥ इति श्री मध्वाचार्य सम्प्रदा ॥

मूल

छपै श्री १नाराइण तै २हस, तिनै ३सनकादिक बोधे ॥
उनकै ४नारद-रिषी, ५निवासाचार्य सोधे।
६विष्णाचार्य ७परसोतमां, ८बिलास ९सरूपा।
१०माधव कै ११बलिभद्र, १२कदमा १३स्याम अनूपा।
पुनि १४गोपाल १५कृपाचार्य, १६देवाचारिय भन।
१७सुन्दरभट कै १८वावनभट, जिनकै १९ब्रह्मभट गन।
२०पद्माकर जग पद्मवत, २१श्रवनभट कौ जग श्रवस।
२२नींबादित आदित समा, राघो ये द्वादस दस ॥२४२

छपै जन राघो रत राम सू, यौं हरिजन दीनदयाल है ॥
यम १सनक २सनदन सुमरि, ३सनातन ४सनतकुमारा।
नींबादित बड़ महत, सु तौ उनका मत धारा।
सुरति बिरति हरि भज्यौं, करी नीकी बिधि सेवा।
इष्ट येक गोपाल, बडौ देवन कौ देवा।
सप्रदाइ बिधि सुतन की, सत[1] महत द्रिगपाल है।
जन राघो रत रांम सू, यौं हरिजन दीनदयाल है ॥२४३

टीका

इंदव नाम निवारक ख्यात भयौ यम, ग्राम जती यकता दल दीयौ।
छंद भोजन वेर लगी[2] निसि आवत, जीमत नै पद वेद सु लीयौ॥

---

१ सत। २ लली।

३नरसिंह आरम अन्नोदय, हरिभक्ति बखानी।
४माधो ५मधुसूदन-सरस्वती गीता गानी।
६जगदानन्द ७प्रबोधानन्द, रामभद्र भव-जल तिरे।
भगत भागवत धमरत, इते सन्यासी सब सिर ॥२३६

प्रबोधानन्दजी की टीका

इंदव श्री परबोध धनन्द बड़े जन चैतनिजू प्रति होत पियारे।
छंद कृष्ण प्रिया निज केलि सु कुंजन केत भये र करे ब्रिग तारे।
बास बृंदावन से परकासत वे सुख मर्म र कर्म निवारे।
ताहि सुने मुनि कोटि हजारन रंग छयो मन प' तन वारे ॥३७१

मूल

छप्पै भागवत भक्ति के रतन वे विष्णुपुरी संग्रह कीया ॥
भक्ति धर्म कहि मुक्ति धाम भ्रम गवत बताया।
कहाँ पीतर कहाँ हेम निवक परिकल जब आया।
सुमन प्रेम फल संग, वेलि हरि कृपा बिछाई।
सकल पंथ करि मथन रतनआवली बनाई।
राघो तेरह विधन मैं, द्वादस स्कंध दिखाय दीया।
भागवत भक्ति के रतन वे विष्णुपुरी संग्रह कीया ॥२४०

विष्णपुराजी की टीका

इंदव होत निसाचल माहि महाप्रभु, यों विधि भक्तन भीर भई है।
छंद विष्णपुरी कहि बास बनारस हो न मुकतिहु चाहि भई है।
पत्र लिख्यौ प्रभु माल अमोलिक दे पठवी मन प्रीति नई है।
भागवत मधि काढ रतनहि दाम दई पठि मुक्ति दई है ॥३७२

मूल

छप्पै ये मुक्ति भये माठा-पती जन राघो जपि रामजी ॥
१बालकृष्ण २बड़भरथ ३योविन्दो ४सोठौ कैसो।
५मुकन्द ६खेम ७हरिनाथ ८मीम हरि धरि परवेसो।
९प्रागदास १ गजधरम ११बैबाजू १२गोपीनाथहि।
१३गजगोपाल अज्ञास तज्यौ १४ लेता हरि साथहि।

खोलि कहौ इस दूषन भूपन, मानि कही दुख दोष कहा हैं।
कावि प्रवन्ध रहै कित लेसहु, आयस द्यौसु दिखाइ जहा हैं।
भाखि बतावत औगुन सौगुन, धाम गये कहि आत पहा हैं।
सारद ध्यान करचौ तव आवत, जोति करी जग वाल वहा हैं ।।३७७

सारद बोलि कही वह ईसुर, मान कितौ उन सू बतराऊ।
ईस मिले तव होत सुखी सुनि, आत महाप्रभु कै चलि पाऊ।
आपस मैं अरिदासि करी जुग, भक्ति करौ अब नाहि हराऊ।
धारि लई उर भीरहु छाडत, होत नई इक ह्वा फिर जाऊ ।।३७८

भट्ट सुनी बिसरा तजि[1] वनहि, द्वार परे इक जत्र धरचौ हैं।
तास तरै निकसै नर भूलि र, जाइ गहै खतना हु करचौ है।
साथि स हस लये सिष आवत, तुर्कन को पट जोर हरचौ है।
आमिल सौ कहि सो नति[2] नाहि न, देखि दये जल क्रोध भरचौ है ।।३७९

मूल

छपै प्रगट्यौ परमात्म परस हरि, भक्ति करन श्रीभट सुभट ॥
सतन कौं सुख-करन, हरन सदेह मधुर सुर।
सुन्दर भाव सुसील, देखि परसन्न प्रेम उर।
सम्रथ कबि उदार हेत, निति भजन करावत।
उदै भयौ ससि[3] सुजस, तास तम ताप नसावत।
सिर राखे राधारवन, दूरि कीये दुबध्या कपट।
प्रगट्यौ परमात्म परसि हरि, भक्ति करन श्रीभट सुभट ॥२४६

श्रीभट गुर परसाद तै, दुरगा कू दक्षत करी ॥
घर चर की सिख भई, खेचरी अदभूत मानै।
कथा सकल विख्यात, साध सर्ब महिमा जानै।
सतन के समूह, सदा ही साथि रहावै।
ज्यौं जोगेसुर बीचि, जनक सोभा अति पावै।
हरि ब्यास तेजस्वि जानि कै, परिजा सर्व पावन परी।
श्रीभट गुर परसाद तै, दुरगा कौ दक्षत करी ॥२४७

१ तहि। २. नसि। ३ समि।

प्रागन नाव दिखावत सूरज पाय शुक निस प्रावन कीयौ।
देखि प्रभाव भयौ जग भावहु नांव परयौ सुनिमें मन जीयौ ॥३७४

मूल

छपै   भीखाविस के माटि महंत १मूरीभट भारी।
   भूरीभट घट परसि, कला २माधौभट भारी॥
   ३स्याम ४राम ५गोपास बहुरि ६बलिभद्र भद्रकर।
   ७गोपीनाथ ८कसौ जु, तास के ९गगस भटवर।
   १०कसमीरी केसव बासके ११श्रीभट भयीयौ।
   श्रीभट के १२हरिव्यास, देवी को मन हरि लईयौ।
   १३गुपाल १४सोमू १५परसराम बल बोहिथ रियीकेस।
   राघो धीरथ सिव इते, भर सेवग सर्व देस ॥२४४
   कसमीरी करता कीयौ श्री केसौभट सोभा सरस॥
   मनुखां मांही मुख्य ताप, त्रिय पाप नसावन।
   कर परसी हरि भक्ति बिमुख मारग भ्रमटा बन।
   परयो प्रचुर बिलाय[1] तुरक मधुपुरी हरावे।
   काजी रोये अकाह, मारि जमना डरवाये।
   यह कथा लगता[2] जग में प्रगट हूं पुनीत थाक बरस।
   कसमीरी करता कीयौ श्री केसौभट सोभा सरस ॥२४५

केसौभटजी की टीका

इंदव पंडित जीति करोस दिजै दिग हारि गये सब मीत उपाई।
छंद है सुगराम चर्ड धुर बावहु प्रात भये नदिया पुर भाई।
   ब्राह्मन सक महाप्रभु मजत आवत न्हैव धुनी सुसदाई।
   बाजि गये दिग है मुमता मुन्नि नेक सुने जग कीरति छाई ॥३७५
   बामन मांहि पढी र गढी बड पूछि चहूंस[3] सुभावहि रीझे।
   गग सरूप कही जु लही द्रिग सी क समीक करे मुनि भीजे।
   कठि कर्यो न्व पाठ सुनावत देहु सभाइ दया अब कीजे।
   मानि प्रसंस कही किम सीखिहु थाप सयात यहै सुन माजे ॥३७६

---

१ बिलात। २ लखन। ३ पूछि चहूं मैं।

सोभूरामजी कौ—मूल

मनहर छंद

मिलत कमाल प्रतिपाल भये पायो भेद,
पल मे सकल सांसौ मेट्यौ सोभूरांम कौ।
रोम रोम लागी धुनि यौं भयौ थकित मुनि,
ऐसौ प्यालौ दयौ उन ऐंन आठौं जांम कौ।
गगन मगन चित पायौ हैं विग्यान वित,
ऐसैं भयौ निपट करतार जी के कांम कौ।
राघो कहै ऐसे रग लागि गयौ जाकै अग,
ह्वै गयौ पटल दूरि चक्षन सू चांम कौ ॥२५०

छपै

चतरौ नागौ निस दिवस, भक्ति करत पन पेम सौं॥
मथुरा मडल अटन, भक्त धामन कै दरसन।
दे तन धन घर बाम, कीये गुरदेवहि परसन।
मिष्ट-वचन सुठ सील, सत महतन कौं सेवत।
उत्म धर्म आराध, जुक्ति करि हरि गुन लेवत।
महिमा साध सवै करै, मगन भयो निति नेम सौं।
चतुरौ नागौ निसि दिवस, भक्ति करत पन प्रेम सौं॥२५१

इदव छंद

बृजभूमि सू नेह रमै निहचै, चतरौ मग रूप अनूप है नागौ।
सनकादिक भाव चुकै नहि दाव भक्ति की नाव रहै चढियौं सुख स्यध समागौ।
हरि सार अपार जपै रसना दिन-राति अखड रहै लिव लागौ।
राघो कहै घर आदि गह्यौ जिनि, छाड्यौ नहीं अति ही बडभागौ ॥२५२

टीका

इदव छंद

ग्रेह पधार रहे गुरदेवहि, सेव करै अति साच दिखावै।
रूपवती तिय टैल लगावत, स्वामि कहै स करौ हु सिखावै।
देखि सनेह र भोग लख्यौ निति, देत बधू घर सपति भावै।
धाम चढाय प्रणाम करी सुख, पाय चले बृजकू उर चावै ॥३८३
गोबिंदचद प्रभात नवै पुनि, केसव भोग समै नद ग्रामैं।
गोवर्धन्न प्रियादह ह्वै करि, आत बृंदावन चातुर जामैं।
पावन कुण्ड रहे दिन तीन स, भूख सही पय ल्यावत स्यामैं।
मागत है जल पात नहि पल, राति कही यह मैं करि कामैं ॥३८४

हरि व्यासजी की टीका

इंदव हौ चट थावल गांव उपेवन राग भयौ इत पाक बनावें।
छंद मंड दुगाव कराकिनि मारिहु, देखि गलानि भई नहि पावं।
मूल रही निसि मास हुई असि देह धरी नह आइ ससावें।
भोग करो हरि कौंन कर परि माफ करौ कर सीस धरावें ॥३८

सिप करी र बरी नगरे झट आप करयो सिरदार बडे हैं।
बैठि कहो उर दास भई हरि व्यास परो पग मारि गड हैं।
भृत्य भये सब पाम नये तन पाप गये भव पार कढे हैं।
दोस रहे बहु माइ सु पद्महि है सरधा हरि भक्ति बढे हैं ॥३८१

मूल

छपै अजमेरा के आवमी, श्री परसरांम पावन कीया॥
मलिमाहिग बहु कुल बात सु भंजन कीर्मा।
है हरि मांब मसाम अंमेरा आध हरि मोन्हां।
भक्ति भारती भजन कथा सुनते मन राखो।
श्रीभट पुनि हरिव्यास कृपा संत सगति साखो।
भगवत नांम औषधि पिवाय रोग दोष गत करि दीया।
अजमेरा के आविसी श्री परसरांम पावन कीया ॥२४८

मूल

इंदव करस्यां आरणां सत सील दया प्रसरांम यौं रांम रज्या[1] मैं रह्यौ।
छंद कहणी रहणीं सरसो परसौं निदबे दिन-राति यौं रांम कह्यौ।
ममता तजि कै समता संग से भ्रम छाडि सबै हद ग्यांन गह्यौ।
लीन्हौ महा मधि मांब मुम्मस राघो तब्यौ कुल काब मह्यौ ॥२४९

टीका

इंदव राज महल गयौ इक देवल बोलि कह्यौ यह साखि विचारौ।
छंद ऊठि चले मग आठ पर्व जुग[2] बैठि गुफा हरि नांव उचारौ।
माइक आइ चढावत सपति, और दई सुखपाल निहारौ।
आइ परयो पगि माब न जानत भाव भयो इन कौनहि सारौ ॥३८८

---

[1] रजो। २. जुग।

सेवत महाप्रसाद, सदा ब्रत तप नहीं मांनै।
विधि निषेध भ्रम सकल, छाडि उत्म धर्म ठानै।
राघो व्यास बिचित्र सुत करनो पालत हंस की।
भक्ति सीर सकृत कोउ, जानत हितहरिबस की ॥२५५

टीका हरिबंसजी की

इंदव छंद
आत भये तजि धाम भजे जुग, बिप्र भलै हरि आइस दीनी।
तेरि सुता जुग दे हरिवसहि, नांम कहौ मम बस अधीनी।
संतन सेव बनै इनकै घर, दुष्ट न ह्वै गति यौं सुनि लीनो।
मांन गह्यौ ग्रह आप लह्यौ सुख, जाइ कही किम सो रस भीनी ॥३

लाल कही मम पूजन धारहु, कुंज बिलास कहीं रस नीकौ।
सो बिसतारत नैन लख्यौ सुख, बाम लयौ पक्ष जीवनि जी कौ।
गांन[1] करै रसपांन बरै उर, ध्यान धरै सु सदा प्रिया पी कौ।
है गुन बीत सरूप कहै किम, मोद लहै मन और नही कौ ॥३

रीति लहै हितजू कि बडौ पट, कृष्ण पछैरू कहै मुखि राधा।
भाव विकट्ट सुभाव न होवत, आप दया करि देत अराधा।
दूरि करे बिधि और निषेधहि, दपति है उर कै उह साधा।
देन सबै सुख दास चरित्रहु, जानत है उनकै नहि बाधा ॥३

मूल

छपै
यौं नांव न बिसरै नेक हू, हरिबस गुसांई हरि ह्रिदै ॥
ता सुत व्यास विचित्र, बड़ौ परमारथ कीन्हौ।
भरम करम सू रहत, भक्ति कौं स्वारथ लीन्हौं।
पद गावत पापी हसे, करमिष्टी छिरके कांन।
नांम कबीर रैदास कौं, व्यास दीयौ तहा मांन।
जन राघो कारनि रांम कै, जन पन तजे न अपनौ ह्रिदै।
यौं नाव न बिसरै नेक हू, हरिबस गुसाई हरि ह्रिदै ॥२५६

व्यास गुसांई विमल चित, बांनां सू अतिस बिनै ॥
चौबीसौं अवतार, अधिक करि साध बिसेखे।
सपतदीप मधि सत, तिते सर्ब गुर करि लेखे।

१. ग्यांन।

काम नहीं जस दूध पिवो भल स्यो मृग मैं प्रभु आइस दीनी।
ये मृग के जन नेव न देत न तो बरजै नहि यौं सुनि लीन्ही।
स्यावत धामन धामन सो फिरि, स्याम कही परिछीतहु चीन्हीं।
जाइ छिपावत हरहि स्यावत बात सबै जन को रसभीनी ॥२८५

मस

छपै सोभा सोभूराम का भ्राता की सुनि यौं सब ॥
माधोदास महंत भक्ति जग सक्ति दिखाई।
प्रकास सु सबादि अगिन प सबरि भगाई।
संतदास सुठ सील, साध सुमरण को सागर।
साध सेव करि निपुन कर्म भ्रम छेके कागर।
भगवत भजन बधावनै आमस मांहि कीयो कबै।
सोभा सोभूराम का भ्राता की सुनियौं सब ॥२५२
आत्माराम कन्ह र बयास बूडे बिपुल बिराजही ॥
रहत सहमता गाहर, बिहर धुन सुभ के आगर।
मटिप रूकम गोपाल धारि कुमकुम मैं नागर।
संत प्रभू म सकल मांनि उर प्रीति हुलास।
बसतर भोजन पान मांन दे सब आस्वास।
सिष सुठ सोभूराम का, आप बन्या पुनि पाजही।
आत्माराम कन्ह र बयास बूडे बिपुल बिराजहीं ॥२५३
बृंदावन बसि बसि कीयो जिन, जिन जन मन आपणौं ॥
सोई सर्ब संत बखांणि आंणि अंतरगत मन मैं।
सम दम सोधि सरीर, गिरा पूछहु गुरजन कौं।
आचारिज मुनि मिश्र भट्ट हरिबंस ब्यास मणि।
मंगल गदाधर अग्रभुज अबर सतम सर्बस गिणि।
राघो रटि बिरक्त गृही उर हरि भक्ति उथापणी।
बृंदावन बसि बसि कीयो जिन जिन जन मन आपणौं ॥२५४
यौं भक्ति सीर सहत कोउ जानत हित-हरिबंस की ॥
रासत चरण प्रधान धार धीरापाजी के।
स्यामा स्याम ब्यहार कुंज मध राधे[2] नीके।

---
१ को। २ सोधे।

मूल

छपै दास गदाधर गिरधरन, गाये ग्यानी बिसद गिर ॥
लाल बिहारी स्यांम, सुमरि निसबासुर राजी।
पूजा प्रेम पियास, भक्ति सुख सागर सांजी।
सतन सेती हेत, देत तन मन धन सरबस।
उर अंतर अति गूझ, बदन बरनत निरमल जस।
इकतार ऐक हरि-भक्ति कौ, और नवावत नांहि सिर।
दास गदाधर गिरधरन, गाये ग्यानी बिसद गिर ॥२५८

गदाधरदासजी की टीका

इंदव छंद
बाग बुरहानपुरे ढिग बैठिक, त्यागि घरे हरि सू अनुरागे।
जात नही पुर लोग निहोरत, मानि लयौ सुख और न पागे।
मेह भयौ तन भीजि गये कफ, स्यांम कहैन स आय न लागे।
साहि कही प्रभु ल्याव उन्है इत, मन्दिर दे करवाय सभागे ॥३६५
ल्यावत नौठि कही हरि आइस, मन्दिर ऊँच कराय उदारै।
लाल विहारिहु स्याम सथापन, रूप मनौहर आप निहारै।
सतन सेवत प्रीति लगाय र, अन न राखत पान सवारै।
सामगरी कुछि राखि रसोयहु, आत भये जन ज्याय पियारै ॥३६६
दास कहै प्रभु लोग[1] रख्यौ कछु, काढ करौ परभातिहि आवै।
सत जिमाइ दये करि भोजन, पाय सुखी सब वै जस गावै।
भूख लगी हरि जाम गई मुरि, कोप करै हम गैल छुटावै।
आय धरे सत दो रुपया किन, लै सिरि मारि कही गुर तावै ॥३६७
साह डरचौ मति मो परि कोपत, भक्त खुसी करि बात जनाई।
होइ मगन्न जितौ मन लागत, देत भयौ जन प्रीति बधाई।
जात भये मथुरा दिन रै करि, पीत रसै बृज माधुरताई।
लाल लडावत साध रिझावत, गाय कहे गुन बुधि लगाई ॥३६८

मूल

छपै यौं हूवो हरिबस प्रताप तै, चहु दिसि परगट चतुरभुज ॥
भिन भिन भक्ति प्रताप, भक्तबछल जस गायौ।

---

१ भोग।

मूल

छप्पै दास गदाधर गिरधरन, गाये ग्यानी बिसद गिर ॥
लाल बिहारी स्यांम, सुमरि निसबासुर राजी।
पूजा प्रेम पियास, भक्ति सुख सागर साजी।
सतन सेती हेत, देत तन मन धन सरबस।
उर अंतर अति गूझ, बदन बरनत निरमल जस।
इकतार ऐक हरि-भक्ति कौ, और नवावत नाहि सिर।
दास गदाधर गिरधरन, गाये ग्यानी बिसद गिर ॥२५८

गदाधरदासजी की टीका

इंदव छंद बाग बुरहानपुरे ढिग बैठिक, त्यागि धरे हरि सू अनुरागे।
जात नही पुर लोग निहौरत, मांनि लयौ सुख और न पागे।
मेह भयौ तन भीजि गये कफ, स्यांम कहैन स आय न लागे।
साहि कही प्रभु ल्याव उन्है इत, मन्दिर दे करवाय सभागे ॥३६५
ल्यावत नीठि कही हरि आइस, मन्दिर ऊँच कराय उदारै।
लाल बिहारिहु स्याम सथापन, रूप मनौहर आप निहारै।
सतन सेवत प्रीति लगाय र, अन न राखत पान सवारै।
सामगरी कुछि राखि रसोयहु, आत भये जन ज्याय पियारै ॥३६६
दास कहै प्रभु लोग[१] रख्यौ कछु, काढ करौ परभातिहि आवै।
सत जिमाइ दये करि भोजन, पाय सुखी सब वै जस गावै।
भूख लगी हरि जाम गई मुरि, कोप करै हम गैल छुटावै।
आय धरे सत दो रुपया किन, लै सिरि मारि कही गुर तावै ॥३६७
साह डर्यौ मति मो परि कोपत, भक्त खुसी करि बात जनाई।
होइ मगन्न जितौ अन लागत, देत भयौ जन प्रीति बधाई।
जात भये मथुरा दिन रै करि, पीत रसै बृज माधुरताई।
लाल लडावत साध रिझावत, गाय कहे गुन बुधि लगाई ॥३६८

मूल

छपै यौं हूवो हरिवस प्रताप ते, चहु दिसि परगट चतुरभुज ॥
भिन भिन भक्ति प्रताप, भक्तबछल जस गायौ।

---

१ भोग।

खीर नीर निरवारि सुगम करि सब कौं पायौ।
अनन्य धर्म के कवित, प्रेम अमृत के प्याले।
मुरलीधर की छाप, छिप नहीं भजत चाले।
जन राघव दल भजन के गौड़ देस कियौ धर्म धुज।
यौं हुवो हरिवंस प्रताप ते, चहुं दिसि परगट चतुरभुज ॥३९६

टीका

इंदव मौंडहु देस भगत्ति नहीं अणु, मारण मारि र मात चढाव।
छंद आइ जहां[1] उन मंत्र सुनावत दे सुधर्मों सब गांव जगावें।
भाव करौ तुम चतुरभुजें गुर नां करिहौ मरिहौ पुर भावें।
सिष्य किये धरि स्वाम जिये उन पाव लिये बहुत सुख पावे ॥३९९
भोग लगावत साध सभाजत भागवत कहि भक्ति प्रभावे।
ले धन चार धस्यौ उन सगहि मात धनी जन मैं छिपि जावे।
वसत दूसर जोनि भई सुनि स्वामिन पे डरि कान फुकावे।
आनि गह्यौ कहि मैं न सयौ अब हाथि दई दिवि मांहीं जरावे ॥४००
भूपति भूठ सखी कहि मारहु संतन प्राय कसक दयौ है।
मारन बात मये न सके सहि नीर बहे त्रिम कंत सयौ है।
भूप कहै तुम साध तजौ जिन[2] स्वामिम कौ परताप भयौ है।
राव सुनी महिमा सु हुवो सिष पेम-सन्यौ उर भीजि गयौ है ॥४०१
खेत पचयौ लखि साध सु तोरत सूकि मुखे रखवार पुकारे।
नांव कह्यौ सुनियौ सु हमारहि आप सुनी अब होत सुखारे।
लै परसाद गये जन सांम्हन भो अपनाइ र भाव उधारे।
धाम सु मोजम भांतिन भांतिन स्यांत भये चरचा सु उचारे ॥४०२

मूल

छपै साधौ[3] लटेरा नटिकि क केसो केवल रांम सौं॥
कवित सवैया गीत भाखि भगवंत रिझायौ।
सुरसुरानन्द परताप आप हरि हिरदै आयौ।
सभा-जोगि जस गाय, लोक परलोक सुधारयौ।
परसरांम-सुत सरस सकल घट ब्रह्म बिचारयौ।

१ तहां। २ जन। ३ नसी नसौ।

राति दिवस राघौ कहै, धरम न चूकौ धाम सूं।
लग्यौ लटेरा लटिकि कै, केसौ केवल राम सू ॥२६०

गोपी कलि मनु अवतरी, प्रमानद भयौ प्रेम पर॥
बालि अवसथा तीन, गोपि गुण परगट गाये।
नहीं अचम्भा कोइ, आदि को सखा सुहाये।
राति दिवस सब रोम उठै, जल वहै द्रिगन तै।
कृष्ण सोभि तन गलित गिरा, गद-गद सुमगन तै।
सग्या सारगी कहौ[1], सुनत कान आवे सकर।
गोपि कलि मनु अवतरी, प्रमानद भयो प्रेम पर ॥२६१

मनहर छद

प्रेम कौ प्रवाह सुण[2] सागर गिरा कौ पुज,
चोज कौं चतुर प्रमानंद प्रबीन है।
गावत गुनानबाद गोंविद गोपाल हरि,
राम नांम हिरदै धरि भयौ लिवलीन है।
बीनती बिकट नट नृति करै राति-दिन,
नाचत निराट दीनानाथ आगैं दीन है।
राघौ कहै बिरहै मिलाप सू मिलाप कीन्हौं,
बिधना सूं वेध्यौ प्रान जैसे जल मींन है ॥२६२

छपै

सुणत सूर की काबि कबि, सिर धुनै र धनि धनि करै ॥
रामाइण भागवत, भक्ति दसधा सुणि सारी।
परसताव को पुंज, चोज चुणि काढी न्यारी।
सकल पराकृत ससकृत, सिध सम मथ्यौ सवायौ।
करूणा प्रेम बिवोग, आदि अनुक्रम सौं गायौ।
बालमीक-कृत ब्यास-कृत, जन राघो पद पटतर धरै।
सुनत सूर की काबि कबि, सिर धुनै र धनि धनि करै ॥२६३

इदव छद

सागर सूर भई सलिता बुधि, बोध निरोध लीयो जिन पांणी।
प्रेम कौ प्रेम बढ्यौ उर अन्तर, यौं[3] उभली मुख ह्वै अति बाणी।
जैसे सुण्यौ समयौ तहा तैसोई, सोई निबाह कीयौ जहा जांणी।
राघो कहै सुरसति बर बारि ज्यू, यौं सर्ब चोज सबद मैं आणी ॥२६४

---

१ कहै। २ गुण। ३ ज्यौं।

छपै बिलमंगल राघो कहै स्यांम कृपा को परविबत ॥
उक्ति युक्ति पुनि बोल, कवित कीये करुणांमृत ।
सत अमन आचार उर जहां राखत शुभ कृत ।
प्रभु कर स्वकर देई साथ धरि क छुटाये ।
सबल गिरौंगौं तब, जब हिरदा त जाये ।
चिंतामनि उपदेस करि गुर सोमगिरी धारे मवित ।
बिलमंगल राघो कहै, स्यांम कृपा को परविबत ॥२६२

टीका

इंदव ब्राह्मन बुद्ध रहै कृसनां-तटि, पाइ चिंतामनि बुधि गही है ।
छंद साज सजी हिम राज भयौ उस रैनि विनै उस बात सही है ।
तात क्रमागत साधि रह्यौ चित सेस रहै दिन पासत ही है ।
नीर भर्यौ सलिता निसि नाव न हेत घणौ बुध पाइ नही है ॥४०३
तार परा महि देह रहै परि मित्र मिले मह बात भली है ।
चाहि परयौ कछु नाहि करयौ मन माहि करयौ चित मात[1] चली है ।
पार न पावत डूबत जावत भ्रातमड़ा चढि नावढली है ।
जाइ लग्यौ तटि पाय भर्यौ झटि पाट जड़ लखि आंखि खुली है ॥४०४
साप लटकि रह्यौ लखि साव सु मूंठिनि सु लति जाइ चढ्यौ जू ।
ऊपर के[2] पट लागि रहे फिरि, कूदि परयौ भ्रत माहि गढ्यौ जू ।
जागि उठी करि दीपक देखत है बिलमंगल नांहि पढ्यौ जू ।
नीर महावत चीर उठावत हा किम आवत तोड बढ्यौ जू ॥४०५
नाव पठावत साव भुलावत सो मन मैं हम जांनि लई है ।
चालि विचार भई कछु स्यांमिहि देखि भवंगम माहि दई है ।
ज्यूं मन मास र चाम लग्यौ मम यौं हरि माह मर्यानपई है ।
प्रात भय हम तो भजि है प्रभु तो मन की भ्रम तू जनई है ॥४०६
मन गुन हरि रूपहि चाहत रग उमंग सु भ्रग न माव ।
बीन बजावत स्याम रिझावत कोटि विध सुरन बित न भावे ।
बोति गर्न मिमि घोड मये रस मारग आपन आपन जावें ।
सामगिरी अभिरांम करे गुर कौन कहै उपमा उर भावे ॥ ४०७

---
[1] सांप। [2] को।

येक बरस्स रहे रस-सागर, लीन भये सु सिलोक पढे हैं।
जात बृंदावन देखन कू मन, मारग मैं इक ठौर रढे हैं।
सोर सुन्यौ बड आप गये सर, न्हात तिया लखि नैन गडे हैं।
ऊठि चली वह लार लगे यह, खैर धसी घर द्वार खडे है ॥४०८

आत भयो पति देखि बडे जन, क्यू र खडे तिरिया सु जनाई।
आप कही घर पावन कीजिय, लै चरणामृत यौ मन आई।
माहि गये मन आरति मेटन, गावन रीति जु देत चिताई।
अग बनाइ कही तिय सु पति, सत रिझाइ हरी सुखदाई ॥४०९

अग बनाइ चली कर थारहु, ऊँच अटा जित है अनुरागी।
झझन जाइ खरी कर जोरि रु, देखत ही मति नू न दु भागी।
सूइ मगावत वै फिरि ल्यावत, फेरि[1] दई अखिया यह लागी।
आनि कही पति सूँ सब बातन, जाइ परचौ पगि सो बडभागी ॥४१०

पाप करचौ हम सत दुखावत, हौ तुम सत हमैं अपराधी।
व्याज रहौ हम सेव करै तुम, सेव करी सबही बिधि साधी।
ऊठि चले द्विग भूत छुडाइ र, खेम भयौ उर आखि न लाधी।
जाइ बसे बनि भूख लगी पनि, आप जिमावत जानि अराधी ॥४११

हाथ गहाइ चले तर कै तरि, जोर छुडात न छोडत नीकौ।
जोर करै नहि वोउ हरै कर, लेत छुडाइ न छूटत ही कौ।
यौं करि आइ लयौ सु बृंदाबन, पीतर सौं जग लागत फीकौ।
लाल बिहारिहु आइ मिले, मुरली बजई यह भावत जी कौ ॥४११

नैन खुले रवि ऊगत अंबुज, देखि सरूपहि चाहि भई है।
बसि सुनि रस मिष्ट सुरै मद, कान भरचौ मुख भास लई है।
जानि प्रताप चितामनि कौ मन, जैति[2] चितामनि आदि दई है।
गृंथ करचौ करुणामृत पथज, जुगल्ल कह्यौ रसरासि-मई है ॥४१२

लाल मिले बन माहि सुनी चलि, आत चिंतामनि हेत जनायौ।
मान दयो उठि दूध रु भातहि, देत भयो हरि ताहि पठायौ।
लेत नही तुम कौं पठयौ प्रभु, नाथ हमैं कर दे तब भायौ।
पात नही जुग देखत कौतुग, स्याम जबै इक और खिनायौ[3] ॥४१३

इति नींबादति सप्रदा सपूरण

---

१. फौरि। २ जौति। ३ सिनायौ।

अथ षट-दरसन बरनन

प्रथम सन्यासी बरनन

छपै　　मम दत्तात्रे मत धारि उर, संकराचार्य प्रति थिये ॥
तिनके सिष भये चतुर, सरूपा पद्माचारय ।
निरा टोटका सुमरि, माइ पुनि[1] उधरा प्राग्य ।
इनतें है दस नांम तीरथ आश्रम बन आरन ।
सागर परबत गिरी सरस्वती भारथ कारन ।
पुरी जती भर कोति गहिए जन राघव कतहु न छिपे ।
दत्तात्रे मत धारि उर, संकराचार्य मति थिये ॥२६६

इंदव　　मोह न द्रोह न मम्मत न माया रम्मत सुमाया,
छंद　　सु भसे भये दत्त-भेष दिगंबर ।
अक्षोभी असग महीं तन मगन,
ध्यान सरंग सु सोभत है तप तेज को संबर ।
सीषो तत प्राणि महाजन जाणि
पाये परवाणि सु धारे पचीस गुरू धर अंबर ।
राघो कहै जब आइ मिले जबि
यों जबि छाड़ि है ध्यान कम्बर ॥२६७

छपै　　धस्म धर्म सथापनै संकराचारय परगटे ॥
पाखंडी अनभिसुरी अरु जैन कुतरकी ।
बोधमती चव-सु जसो विमुखी नर नरकी ।
अमरादिक सर्व कीति[2] के सक्ति-मारग भाये ।
ईस्वर की औतार जांमि हरि जस हरखाये ।
राघो भक्ति दर्वे किरणि अग्यानी तम भ्रम घटे ।
धस्म धरम सथापने सकराचारय परगटे ॥२६८

इंदव　　यह को जम अनूप महा जनम्यौं गुजरात मैं संकराचारिय ।
छंद　　दत्त सु सिक्षि के मत ले इत यों नृप प्रमोधि कीये कुलि भारय ।
जैन सौं जीते हैं जन जिये भइ राम भगति चली बिसतारय ।
राघो कहै तत तारिण मम सु दूरि कीयो सब को भ्रम भारय ॥२६९

---

१ पुनि उधरी । २ कामिके ।

टीका सकराचार्य जू की

राम समुख्य किये विमुखी नर, लै जग मैं प्रभुता बिसतारी।
जैन-जती सब फलि रहे जग, हाथि न आवत बात विचारी।
देह तजी नृप कै तन पैंसत, ग्रथ दयौ करि मोह निवारी।
सिष्यन सू कही देह अवेसहि, देखि सुनावहु आत तआरी ॥४१४
जानि अवेसहि सिख्य गये महि, मोहमुदगर ग्रथ उचारयौ।
कान परयौ तन त्यागि बरे निज, दास नये अपनौ पन पारयौ।
जीति जती नृप पै चढि जावत, बैठि कनै च जमायक डारयौ।
नीर चढ्यौ वहु नाव दिखावत, बेगि चढौ नही बूडत धारयौ ॥४१५
सकर कैत चढाइ जती इन, भूप चढात गिरे स मरे हैं।
पाइ परयौ नृप होत खुसी मन, जौउ कहे ध्रम सोउ धरे हैं।
भक्ति सथापि र ज्ञान प्रकासत, तदै निरबेद हि भाव भरे हैं।
रीति भली करि साध लही उर, हेत हरी गुन रूप करे हैं ॥४१६

मूल

छपै उतकष्ट-धर्म्म भागवत मैं, श्रीधर नै बरनन करयौ॥
अज्ञानी तृय काड मिले, सब कोई भाखै।
ज्ञांनी अर करमिष्ट, अरथ को अनरथ दाखै।
राखी भक्ति प्रधांन, करी टीका बिसतीरन।
अगम निगम अबिरूद्ध, बहुरि भारत की सीरन।
किरपा परमानद की, माधोजी ऊपरि धरयौ।
उतकष्ट-धरम भागवत मै, श्रीधर नै बरनन करयौ ॥२७०

श्रीधरजू की टीका

इदव छद पडित व्याज रहे सु बडे बड, भागवत करि टिप्पण रीजै।
होत बिचार पुरी हु बनारस, जो सबकै मन भाइ लिखीजै।
तो परमान करै विंद्र माधव, बात भली धरि मदिर दीजे।
जाइ धरे हरि हाथन सू करि, दै सरवोपर चालत धीजे ॥४१७

मूल

छपै ये भक्त भागवत धरम रत, इते सन्यासी सर्व सिरै॥
रामचद्रिका सृष्ट, १दमोदर तीरथ गाई।
२चितसुख टीका करी, भक्ति प्रधान दिखाई।

३नरस्यंघ आरन बद्रीवन, हरि भक्ति सकामी।
४माधव ५मधसूदन-सरस्वती पीता गामी।
६जगदानंद ७प्रबोधानंद ८रामभद्र भवजल तिरे।
ये भक्त भागवत परम रत इते सन्यासी सब सिरे ॥२७१

ये सरस सिरोमनि सुधर्मी इते सन्यासी भक्ति पजि ॥
माधौ मोह बवेक कीयौ, भिन भिन करि न्यारौ।
मधुसूदनसरस्वती, मोर्म मद तज्यौ पसारौ।
प्रबोधानन्द रत ब्रह्म, रामभद्र राम रच्यौ है।
जगदानंद जगदीस भजि, जो जनम मरणादि बच्यौ है।
श्रीधर विष्णुपुरी विविध धन रायौ मन तजि सुगम भजि।
ये सरस सिरोमनि सुधरमी इते सन्यासी भगति पजि ॥२७२

इन मन बच क्रम राघौ कहै परगट परमातम भजे ॥
१गुरुचंधभारती ग्यांन, ध्यांन पुंनि मसौ विचारी।
२मुकंदभारथी भक्ति करी, बड़ परचापारी।
है ३सुमेरगिर साध सीस मैं बाहरयांमी[1]।
४प्रमानंद गिर गिरा, सपूरण पूरौ ग्यांनौ।
५रामाश्रम जग-जोति ६श्रम मन धीरयौ माया तजे।
इन मन बच क्रम राघौ कहै परगट परमातम भजे ॥२७३

॥ इति सन्यासी दरसन ॥

अथ जोगी दरसन

मनहर छंद

ॐकारे आदिनाथ उदैनाथ उतपति
ऊमांपति स्यंभू सति तन मन जित है।
संतनाथ विरंचि सतोषनाथ विष्णुजी
अगंनाथ गणपति गिरा कौ दाता नित है।
अचल अचंभिनाथ मगन मछिंद्रनाथ
गोरख अनंत ग्यांन मूरति सु चित है।
राघौ रक्षपाल आदि नाथ रटि राति दिन
जिनकी अजीत अविनासी भवि चित है ॥२७४

---
1 बाह्यपंमी।

छपै छंद अब १आदिनाथ २मांछिद्र (नाथ), ३गोरख ४चरपढ[1]नाथय ।
५धर्मनाथ ६बुद्धिनाथ, ७सिद्धजी कथड ८साथय ।
९विदनाथ १चौरग, २जलध्री ३सतीकणेरी ।
४भडग ५मींडकीपाव, ६धूँधलीमल धर फेरी ।
७घोडाचोली ८बाल्गुदाई, सबकों नाऊ माथ ।
पहल कबित सिध अष्ट है, प्रथम जानि नव नाथ ॥२७५

१चूणकर २नेतीनाथ, ३बिप्र ४हाली ५हरताली ।
६बालनाथ ७औघड, ८आई ९नरवै कौं न्हाली ।
१०सुरतिनाथ ११भरथरी, १२गोपीचद १३आजू १४बाजू ।
१५कान्हिपाव १६अजैपाल, कियो सब काजू ।
१७सिधगरीब १८देवलबैराग, १९चत्रनाथ २०प्रथीनाथ अब ।
२१सुकलहस २२रावल २३पगल, राघव के सिरताज सब ॥२७६

महादेव मन जीत तैं, नाथ मछिंदर अवतरे ॥
अष्टाग जोग अघपत्ति, प्रथम जम-नियमन साघे ।
आसन प्राणायाम प्रत्याहार, धारणा ध्यान समाधि ।
षष्टचक्र वेधिया, अष्ट कुभक सौ कीया ।
मुद्रा दसम लगाइ, बध त्रिय ता मधि दीया ।
भक्ति सहित हठजोग करि, जन राघौ यौं निसतरे ।
महादेव मन जीत तैं, नाथ मछिंदर अवतरे ॥२७७

यम जोग जलध्री को सिरै, गुफा कूप करि मानियौं ॥
दक्षा लेणै काज, मात गोपीचंद मेल्यौ ।
गुर कही बिप्र जै साखि, समझि बिन कूपहि ठेल्यौ ।
उहा ही लगी समाधि, अलख अभिअतर घ्यायो ।
सपत धात फूतला भसम करि बाहरे आयौ ।
जन राघौ गोपीचन्द कौं, अमर कीयो सिख रानियौं ।
यम जोग जलध्री कौ सिरै, गुफा कूप करि मानियौं ॥२७८

संसार अध्व निसतारनै, करनधार गोरख-जती ॥
भूप भरथरी आदि, कोडि तेती तीउ धारा ।
सबद श्रवण जा धरचौ, प्रजा का अत न पारा ।

---

१. चरपट ।

परमारथ के काज आप ग्यारह वर चौका।
सिष कीये पावांण, तीर गोदावर नदी का।
नाद बजाये त्रिपुर, परचा दीया बरकती।
ससार प्रबध मिसतारनैं करमधार गोरख मती ॥२८६

इंदव छंद इंद ज्यूं जिव की जीवनि गोरख ग्यांन-घटा बरख्यौ घट भारी।
भूप निन्यांणवें कोड़ि कीये सिष आतम[1] और अनातम तारी।
बिचरें तिहुलोक महीं कहूं रोक हो, माया कहा बपुरी पचिहारी।
स्वादन सप्रस मौ रह्यौ अपरस, राघो कहै मनसा मन वारी ॥२८८

छपै छंद धर्म सील सत राख सें चौरंगी कारिज सरे॥
अदभुत रूप निहारि और कर मांई पकरयौ।
कांवण लीयो फारि, चोरि करि बाहरि निकरयौ।
रांणी करी पुकार, पुत्र अब्रुधा ही आया।
राजा मन पछिताइ हाथ पग दूरि कराया।
राघो प्रगटे परमगुर कर पद ज्यूं के त्यूं करे।
धर्म सील सत राख तें चौरंगी कारिज सरे ॥२८१
धुमि ध्यांन सहित मन धूंधली, गुर पट्टण परबत रहे॥
आप पासि इक सिष सु तौ अति आग्याकारी।
भिक्षा मांगन काज, फिरत सो नगरी सारी।
करें मसकरी लोग लेकरी भीख न पावें।
माथ लकरी बोझ बेंचि रोटी करि ल्यावें।
राघो चांदी बूझि सिर पट्टण सब पट्टण कहे।
धुनि ध्यांन सहित मन धुंधली, गुर पट्टण प्रबत रहे ॥२८२
भोगराज भ्रम जांनिकें भक्ति करि है भरथरी॥
तर तीबर-बैराग त्रिसीकी त्रिगुणकर मेली।
गरक भजन क मांहि ध्यान सम आतम वेली।
कंचन आपारित तिआरें रहि करि कीया।
सुमी देवी लाग्यां हरपा अंकूर सु सीया।
गुर गोरख किरपा करी अमर जहां सो घरत री।
भोगराज भ्रम जांनि क भक्ति करी है भरथरी ॥२८३

---

1 आतमी।

इंदव भर भार तज्यौ भ्रथरी सगरी, अगरौ पिछरौ वनहीं कछु सासौ।
छंद गह्यौ अनुराग दुती न सभाग जु, क्षीन सरीर स लोही न मासौ।
मनसा मन जीति करी हरि प्रीति, बैराग की रीति सु मागि भिक्षा करही कीयौ कासौ
राघो कहै गुर गोरख सु मिलि, यौं कीयो माया मोह कौ नासौ ॥२८४

छपै गोपीचद मा ग्यान सू, त्यागौ देस बगाल ॥
राणी सोला-सत्त, बहुरि बारा-सै कन्या।
हय गय नर कुल बध, जात कापं सो गन्या।
हीरा कचन लाल, जडित माणिक अर मोती।
सिघासहन हर्म्यादि दिपत, बोलत धुनि सोती।
पाव जलध्री परस तै, राघो जानि जजाल।
गोपीचद मा ग्यान सूं, त्यागौ देस बगाल ॥२८५

मनहर मात देखि गात अश्रु पात उर फाटि रोइ,
छद सूरति सहारी न परत गोपीचद की।
आकुल करत जल बूद परी पीठ परि,
मात आई रोवती निजरि वा नरचंद[1] की।
हाइ हाइ करत हजूरि गयौ हाथ जोरि,
कौन चूक मात मेरी बात कहौ ज्यद की।
बात यह तात तेरौ गात अैसौ हो तौ सुनि,
राघो कहै राम बिन देही भई गद्द की ॥२८६

छपै चरपट कै चरचा रहै, येक निरजन नाथ की ॥
छद अलख आदि अनादि भजत, सौ सुख के[2] आलै।
काम क्रोध अर लोभ, मोह दुबध्या निरवालै।
जत सत ग्यान बबेक, जोग समाधि पराइन।
कुभक अष्ट ही साधि, भिदिया षट-चकराइन।
गुर गोरख सिर धारिकै, सभा सुधारी साध की।
चरपट कै चरचा रहै, येक निरजन नाथ की ॥२८७

इंदव ग्यांन को पुज मिल्यौ गुर गोरख, यौं प्रिथीनाथ त्रिलोकी तिरे हैं।
छंद अैड अकब्बर सू भइ आगरं, दे अजमत्ति यौं साहि डरे हैं।

---
१ निरद की। २ कौ।

परमारथ के काज, आप ग्यारह अर बीका।
सिष कीये पाषांण, तीर गोदार नदी का।
नाव बसाये बिप्रपुर परचा दीया बरकती।
संसार अबघ निसतारन, करमभार गोरख-जती ॥२७९

इंदव छंद ह्व ज्यू सिष को लीवनि गोरख ग्यांन घटा बरस्यौ घट भारी।
नृप निम्याणवें कोड़ि कीये सिष आतम[1] और अनंतन तारी।
बिचरें तिहुलोक नहीं कहूं रोक हो भामा कहा बपुरी पचिहारी।
स्वादम सप्रस यौं रह्यो अपरस, राघो कहै मनसा मन मारी ॥२८०

छपै छंद धर्म सील सत राम तें चौरंगी कारिज सरे ॥
अदभुत रूप निहारि और कर भाई पकरयौ।
बांवण लीयो फारि तोरि करि बाहरि निकरयौ।
रांणी करी पुकार पुत्र अनक्षया ही आया।
राजा मन पछिताइ, हाथ पग दूरि कराया।
राघो अमटे परमगुर कर पग ज्यू के त्यू करे।
धर्म सील सत राम तें चौरंगी कारिज सरे ॥२८१
पुनि ध्यांन सहित मन धूंधली पुर पट्टण परवत रहे ॥
आप पासि इक सिष सु तौ अति आग्याकारी।
भिक्षा मांगन काज, फिरत सो नगरी सारी।
करें मसकरी लोग सेवरी भीख न पावै।
आप लकरी ढोइ बेचि रोटी करि ल्यावै।
राघो वाही धूंकि सिर, पट्टण सब बट्टण व्है।
पुनि ध्यांन सहित मन धूंधली पुर पट्टण प्रबत रहे ॥२८२
भोगराम भ्रम जांनिकै भक्ति करि है भरथरी ॥
तर तीव्र-बैराग त्रिलोकी त्रिणकर लेखो।
परम भजन के मांहि ग्यान सम आतम देखी।
कंचन पाषांरित तिजारे रहि करि कीया।
सूली देखी सत्यां हरघा अंकूर सु लीया।
गुर गोरख किरपा करी अमर जहां लौं धरत री।
भोगराम भ्रम जांनि कै, भक्ति करी है भरथरी ॥२८३

---

१ आतमां।

काढि लयो खग मारन ऊठत, सागर बाज दयो सुभ्र वेसा।
रावन मारि बिहाल करौं खल, सीत ही ल्याइ धरौ दृग पेंसा।
राम र ज्यानकि आय मिले कहि, नीचहि मारि पठ्यौ दिबि देसा।
सोच गयो सुनि खेम भयो मनि, रूप निहारन फेरि निवेसा[1] ॥४१९

लीला अनुकरन तथा रनवंतबाई की टीका

इंदव छंद
नीलचल सु भयो अनुकरन हु, ह्वै नरस्यघ हिनाकुस मार्यौ।
दोष कहै जन कैत अवेसहि, सौ दसरत्थ कर्यौ पन पार्यौ।
बाम हुती इक स्याम लगी मति, आप सुन्यौ न कह्यौ सुत धार्यौ।
दाम जसोमति बाधि दये सुनि, प्रान तज्यौ मनु ऊपरि वार्यौ ॥४२०

छपै छंद
प्रसाद अवगि इक भूप नैं, सू हस्त काटि पठयो चरन ॥९०
टेर सुनी सिलपिले, प्रीति लगी प्रभूजी आयो।
सत रखे दिन च्यारि, मात सुत कूं बिष पायो।
क मा केरौ खीच लयौ, हरि आइ सवारे।
साह श्रीधर बचे, घनुष घर दै रखबारे।
रघवा जै जै जगत गुर, भक्तबछल असरन-सरनं।
प्रसाद अवगि इक भूपनै, सू हस्त काटि पठयो चरन ॥२९१

पुरषोतमपुरबासी राजा की टीका

इंदव छंद
जाजि[2] अवज्ञ सु भूप प्रसाद हि, हाथ कटावत यौं जू भई है।
चौपरि खेलत हौ हरि भुक्तहु[3], दै जन लै कर बाम छुई है[4]।
जात रिसाइ र लै परसादहि, भूप गयो गृह देखि नई है।
पात नही अन काटि डरौ इन, पडित बोलि र बूझि लई है ॥४२१
हाथ सु काटत कौंन अबै मम, पूछत है सचिवै दुख को जू।
भूत डरावत मोहि झरोखन, दै कर सौर करै निसि सो जू।
मैं ढिग सोवत आपन गौवत, पानिहि दूरि करौ न डरो जू।
भूप कहै भल चौकस राखत, ऊघ तज[5] नृप काढि करो जू ॥४२२
काटि डर्यौ कर सो पछितावत, भूप कही वृत यौंह बिगारी।
भेज दये जगनाथ पुजारिन, हाथहि ल्याइ बुवो गुलक्यारी।

---

१ जिवेसा। २ जानि। ३ भक्तिहु। ४ दुई है। ५ बिजा।

सोत सिरै भमवयी ब्रह्म-बाणी कौ, पंथ सियांत अनेक करे हैं।
राघो कहै रत रालि यौं राम सौं सगति और घणे उधरे हैं ॥२८८

इति चोवी बरसण

अथ जंगम दरसन

छपै   यम जंगम बरसन गोपगुर तिन संम्या बरनन करू ॥
छंद   सबानद सुस्यास, लिग सिवपास सेवक।
बस का सूवा भूप कीया यह जानि भेवक।
सीस मूल गंग लिग, सीस के भये कम्हू रे।
मूलहु के सेवक सिगावति सिग चिन्हु रे।
गंगहु के मा१ठी, स मला मारी मठ बांध्यौ।
गोदावरि बद्रिका, बोसी बोसी आराध्यौ।
लिगेसुर कामिनुरा, राघो सबकूं उर धर्रु।
यम जंग। बरसन गोपिगुर तिन सम्या बरनन करूं ॥२८६

इति जंगम दरसन

अथ समदाई बरनन

मनै   प्रेम मुख कलिजुग बिच, सत सकल यह जाम है ॥
मंद   व्यास स्यामको-हरन, नृपति क भवन सुनायौ।
बाज्यो बोजल[१] सकग जवमि क माहि बलायौ।
सीसा[२] मनहर होइ, हिरनाकुस काट्यो।
दूजै बसरथ भयौ राम चसतें उर काट्यौ।
श्याम स्यांम मुनि रें बपेला छिन बीमे प्रान हैं।
प्रेम मुख कलिजुग बिच, साध सकल यह जाम है ॥२६०

टीका मरून्दास भूप नाम कुल सेप[३] की

इंदव प्रेम बड़ो बनि सांसि कहै जन मैं हु भराम सु भक्ति म भावै।
छं॰ माहुनी कै दुग पुत्र पटायत मैंमु दयो बिन जानि पुमावै ॥४१८

१ बाज लै। २ लीला मैं नरहरि। ३ सेवर।

मिुर हुतौ इक राम ततत्पर नाम सुनै गुन है प भावै।
व्याल बड़ो है ताहर नो मुत नाहि करै प्रम जानि मु मन ॥

दं हम कौ कहि कौन विथा उहि, वेगि इलाज करै सुख कीजै।
चाहत हौ सुख भक्ति करो मुख, भक्ति विना मम देह न छीजै।
क्रोध भयो मन माहि विचारि, पिटारिहु मैं कछ दूरि करीजै।
वैह करी मुसि नोर धरी तन, आगि वरी मन मैं वहु खोजै ॥४३०
त्यागो दयौ जल अनु खुसी हुन, चाहत खुसी नहि ह्वै सब लीयौ।
आइ लयो पुर वान कही धुर, क्षीन लख्यौ तन क्यू हठ कीयौ।
सास कहैं सव नाहि चहैं अव, वात सुहात न कपत हीयौ।
कंस करै तव पाइ परे कहि, ल्याइ धरै वह ह्वै तब जोयौ ॥४३१
आत भये उहि ठौर परी लखि, नीर बहै द्रग ऊच पुकारी।
स्याम सुन्यौ गुर भक्तन कै वसि, आइ लगै उर सैत पिटारी।
सास धणी जन देखि भये खुसि, वादि गए दिन आपन धारी।
भक्त करे सव सेवत सतन, भाग वडे घर मैं अस नारी ॥४३२

भक्तन हित सुत विष दीयौ, येहु उभै वाई

सतन कै हित भ्हैर दयो सुत, वाम उभै यह वात जितावै।
भक्त भलौ नृप आन घणे जन, आइ रहे इक म्हत सुभावै।
ऊठत है निति जान न दे नृप, वीति गयो व्रष भोर खिनावै।
टूटत आस लख्यौ तन छूटत, बूझत है तिय वात जनावै ॥४३३
भूप न जीवहि भ्हैर दयो सुत, साध सु ततर क्यू करि राखै।
भौर भये विन रोई उठी तिय, रावल के जन सतन भाखै।
खोलि दयी कटि माहि गये झटि, वाल पिख्यौ वप नीलक दाखै।
बूझत भूपति या कहि साचहि, चालत हे हमरे अभिलाखै ॥४३४
रोइ उठे सुनि महत न बोलत, भक्तिहु की कछु रीति नियारी।
जाति न पाति विचार कहा रस, सागर लीन भये सुखकारी।
गाय हरी गुन साखि कही जन, वाल जिवाई र ठौर सुधारी।
सीख दई सब साधन कौ र, हियै वह सो जन प्रीति पियारी ॥४३५
दूसर बात सुनौं मन लाइ र, जीवत लौं सतसग करीजै।
भूप सुता हरि-भक्त[1] दई घर, साख तकै जन नाव न लीजै।
सीत पल्यौ तन रूपहि ले द्रग, जीभ चर्णांमृत स्वादहि भीजै।
सौ अकुलाइ रह्यौ नहि जाइ, वसाइ नही सुत कौ विष दीजै ॥४३६

---
१ भक्ति।

दूहा
कर कटे अरु धन लुट्यौ, छूटे सहरु को वास।
बलभबाई यौं कहै, राम तुम्हारी आस ॥१

छपै
कर काटत सारे भये, जगन राघो अचिरज कथा ॥
सुत माग्यौ जब नीर, तबै सरवर दिस्य धाई।
कर मुंहेडा दिसि कीयो, हाथ ज्यू के त्यू भाई।
पड्यौ नग्र मै सोर, वृतात नृपतिही सुनायो।
राजा नागे पाई, दोरि चरनौं सि[र]नायो।
महमा भगत भगवत की, नर-नारी नावै माथा।
कर काटत सारे भये, जन राघौ अचरज कथा ॥३

प्रभु प्रष्ण ह्वै भक्त मन, गोपि मतौ को जानि है ॥टे०
श्रीरगनाथ को धाम बनै सौ करै उपावं।
भयो सेव राजा इद, रबि हित सिर कटवावं।
बधिक भेष धरि चले, हस या बिधि करि आवै।
पति बाना को रखौ, समझि दोऊ बंधवावै।
पुत्र हत्यो जन जानिकैं, पुत्री दै बहु मानि है।
प्रभु प्रष्ण ह्वै भक्त मन, गोपि मतौ को जानि है ॥२६२

मामा भानेज की टीका

गोपि मतौ अति माम भानेजहु, ताष दयौ हरि कौ चित धारौ।
दौउ चले घर तै बन मैं इक, मूरति देवल रैत निहारै।
रग सुनाथ बिराजत दक्षन, धाम बनावहि काम निवारौ।
वै धन कौ फिरि हैं नहि पावत, हेरि थके सुनि यौ सुबिचारौ ॥४४०
देवल जैन सु मूरति पारस, आरस नै श्रुति नून बतायौ।
होइ सुखी हरि तौ अक तै किम, नाहि डरै इक कान फुकायौ।
सेव करी मन लाइ हरी मति, जैन-समाज सबैहि रिझायौ।
सौंपि दयौ सबलै अब क्यू करि, भेद सिलावट पै भल पायौ ॥४४१
भीतर माम भनेज स ऊपरि, भौंर कली कल साह फिरायौ।
मूरति बाधत खैंचि लई उन, दूसर बेर उहू चढि आयौ।

साध पधारि रहे पुर मैं तब घेरि कही सुत कौं बिष दीयौ।
छूटि गयो तन रोइ उठी पन आइ परे सब फाटत हीयौ।
जीवन को सु उपाइ कहे तिय जीवन[1] मात पिता मम कीयौ।
सो करि हैं धरि सतन ल्यावहु सत किसे सखि नांम सु लीयौ ॥४३७

संगि लये सब कै न सिखावत देखि परो भर पाव गहीजै।
रोत करो वह नीर बहै द्रग ग्रांम पधारि रु पावन कीजै।
साध चले घमि घेरि जनावत, पौरि रही दुरि देखि र रीझै।
बात कही हरवे मम पिवउ जांनत ही वह रीति सधीजै ॥४३८

साध मगन्न भये पन देखि र, होत तहीं भूप तें जु कही है।
जानि भयो सिसु देत भई बिसु, न्याय दयौ सुख मौत मही है।
साधत पाय परे सबही भखि सिष्य करे भर सेव कही है।
भूप तिया पति राखि दई जुग साखि सबै जन मांनि मही है ॥४३९

मूल

छपे छंद
†कमलाबाई हरि सरणि, देखो न्यन्य कैसी करी ॥
नृपस्य बीती आइ, साध कोइ रहण न पावै।
मुकि दुरि पूजै कोइ तास के हाथ कटावै।
ईक न चले काढ़ि वित बाको सब लीजै।
दुरे बसौं-बसि भक्त कहो अब कसे कीजै।
जन राघो बाई तबै तन मन की संका धरी।
कमलाबाई हरि सरणि देखो जन कैसी करी ॥१

साध न आवै नगर मैं तब बाई मन-जस तज्या ॥
दिन भयेउ भेष ध्यारि, तबै सुसरै सुधि पाई।
कही वहु धन खाई पुनि तीरथ करि आई।
चर्णांमृत सौ सीत प्रसंसा देखाऊं।
तबही रि कीयौं विचार, बिइद मेरा समझाऊं।
जन राघो हरि संत हूं, ससम कै मो बन भज्या।
साध न आवै मग्र मैं तब बाई मन-जास तज्या ॥२

---

१ जोवनि।

†यहां से लेकर मूल छंद नं २८९ के बीच के इतने पद्य नं १ और २' प्रति में नहीं हैं।

दूहा कर कटे अरु धन लुट्यौ, छटे सहरु को बास।
बलभबाई यौं कहै, राम तुम्हासी आस॥१

छपै कर काटत सारे भये, जगन राघो अचिरज कथा॥
सुत माग्यौ जब नीर, तबै सरवर दिस्य धाई।
कर मुंहेडा दिसि कीयो, हाथ ज्यू के त्यू भाई।
पड्यौ नग्र मैं सोर, बृतात नृपतिहीं सुनायो।
राजा नागे पाई, दोरि चरनौं सि[र]नायो।
महमा भगत भगवत की, नर-नारी नावे माथा।
कर काटत सारे भये, जन राघौ अचरज कथा॥३

प्रभु प्रष्ण ह्वै भक्त मन, गोपि मतौ को जानि है॥२९०
श्रीरंगनाथ को धांम बनै सौ करे उपावं।
भयो सेव राजा इद, रबि हित सिर कटवाव।
वधिक भेष धरि चले, हस या विधि करि आवै।
पति बाना की रखौ, समझि दोऊ बंधवावैं।
पुत्र हत्यो जन जानिकैं, पुत्री दै बहु मानि है।
प्रभु प्रष्ण ह्वै भक्त मन, गोपि मतौ कौं जांनि है॥२९२

मामा भानेज की टीका

गोपि मतौ अति माम भानेजहु, तोष दयौ हरि कौं चित धारौ।
दौउ चले घर ते बन मैं इक, मूरति देवल रैत निहारै।
रग सुनाथ बिराजत दक्षन, धाम बनावहि काम निवारौ।
वै धन कौ फिरि हैं नहि पावत, हेरि थके सुनि यौ सुबिचारौ॥४४०
देवल जैन सु मूरति पारस, आरस ने श्रुति नून बतायौ।
होइ सुखी हरि तौ ब्रक ते किम, नाहि डरै इक कान फुकायौ।
सेव करी मन लाइ हरी मति, जैन-समाज सबैहि रिझायौ।
सौपि दयौ सबलै अब क्यू करि, भेद सिलावट पै भल पायौ॥४४१
भीतर माम भनेज स ऊपरि, भौंर कली कल साह फिरायौ।
मूरति बाघत खैंचि लई उन, दूसर बेर उहू चढि आयौ।

फूलि गयौ तन छेद रह्यौ फसि हाइ सुसी अति मन सुनायौ।
मैं सिर काटि जु स्वांगन निंदत काम भयौ सिधि यौं समझायौ ॥४४२
काटि लयो सिर ज्यौं प्रभु भावत जीवत नं परिचाहि पगी है।
देह तजौ मम भ्रात न पूजत जात उहां हरि नीव लगी है।
सोच भयौ लखि और बनावत देखि लयो वह चित भगी है।
दोउ मिले हरि धाम करावत होत सुखी मस बुधि जगी है ॥४४३

हंस प्रसंग की टीका

कोट भयो नृप कै नहि आवत काहु कह्यौ तुम हंस मगावौ।
वेगि बुलाइ बधिकन सू कहि होइ जहां फिरि बूझ र ल्यावौ।
ल्यावहि क्यू करि मान-सरोवर छूटहुगे कब ज्यारि लिनावौ।
जाति पिछांनत देखि उडै उह साधन भीजत भेष बनावौ ॥४४४
स्वांग बनाइ गये जित हंसहि देखि बधे नृप पासिहु आये।
सार मस्यौ मत वैद भये हरि, पूछन रै नृप के ढिग ल्याये।
पंखिन कूं[1] पकड़ाइ भये हम दूरि करैं दुख छोड़ि[2] मगाये।
ओषदि पीछि लगाइ दई तन कोढ़ गुमाय र हंस उडाये ॥४४५
लौ[3] सुम भूमि र गांव दयाल जु, भाग बड़े उनके घर आवौ।
पाइ लयो सब संतन सेवहु दे[हु]भरी नर रांम रिझावौ।
मानि लई पुर देस भगत्ति सु मैं विसतारत हंस प्रभावौं।
भेष भयौ प्रभु पंखिहु मांनस नांहि उतारत साष[4] लखावौ ॥४४६

माहाजन सदाव्रती ल्यार[5] सेठ की टीका

इंदव छंद सेठ सदाव्रति भक्त भरौ घन सेव करौ मन भाइ विचारी।
संत अनंत पधारत हैं जिम आइ परै तिम सेत सुधारी।
साध रह्यौ घरि मांनि भयौ सुत पुत्र सनेह सु लगि लिझारी।
ईस इच्छा मुखि सामध गौनहु मारि धरयौ धरनी पछितारी ॥४४७
मात मिहारत पुत्र कहां मम बीति गयो दिन भौंन न आयौ।
ढौंढि दिखावत संपति संत र हेरि कहीं सुत कौ विरमायौ।
देह बताइ उभै सब आश्रम साध कह्यौ सु सम्यासि जनायौ।
देह दिखावत आप करावत पुत्र हत्यौ हम रोई न पायौ ॥४४८

१ कूँ। २ बूंदि। ३ ल्यौ। ४ भीख। ५ बार।

मैं स बताइ दयो न बिगारत[1], मोहि छुडावहु झूठ न भाख्यौ।
नाव न लै जन जो सुख चाहत, जा अनतै भल छोड न दाख्यौ।
सत उदास बिचारत दपति, दै पुतरी जन कौ घरि राख्यौ।
पाइ परचौ तिय कै पति बोलत, है पन मैं सुत कौ दुख नाख्यौ ॥४४६
साध बुलाइ कही तुम ल्यौ बरि, मोर सुता नहि साखत ब्याहै।
मैं हतियौ सुत रोइ कही जन, नाव न ल्यौ मम जीवन क्या है।
साध पनौं सुनि यौं धरि है सिर, नाहि रती मल मेर कह्यौ[2] है।
ब्याहि दई पुतरी उर दाहन, जीवत लौं घर माहि रह्यौ[3] है ॥४५०
आत भये गुर है प्रचै सिध, संतन सेवइ नाहि बताई।
पुत्र कहा तव पाय गयौ सब, भाति किसी जग मीच लगाई।
पारस लै हरि मोहि कही खुलि[4], ले चलिये जित देह जराई।
ठौर गये उहि ध्यान करचौ हरि, जीत भयो जग कीरति गाई ॥४५१

मूल

छपै छंद

सर्बं जुग मांहीं रांमजी, संत-बचन साचौ करै ॥
भवन काठ तरवारि, सारकी काढि दिखाई।
बाल स्वेत हरि करे, दास देवो सरनाई।
काष्ट कंमधुज काज, च्यारि कपि चिता सवारी।
जैमल ह्वै जुध कीयौ, भक्त की बिपति निवारी।
भैंसि चतुरगुन घृत लीयें, सगि श्रीधर धनुधरै।
सर्बं जुग मांहीं रांमजी, सत-बचन साचौ करै ॥२९४

मनहर छंद

रानां जू कै कांन लागि काहू नै कही पुकारि,
भवन की कमरि देख्यौ खाडौ बाध्यौ काठ कौ।
अब के वहानै सिरि मागि लयो हाथि करि,
पलटि ह्वै गयौ सार रुपैया सै आठ कौ।
भवनन[5] पवन खैंचि अतर आराध कीनौं,
रांम रांम राम धुनि पार नहीं पाठ कौ।
राघौ कहै राणै दौरि पाव गहे हाथ जोरि,
साचौ खाडौं तेरौ भवन औरि झूठ-माठ कौ ॥२९५

---

१ बिगारस। २. कह्या। ३. रह्या। ४ पुलि। ५. मन।

मदन चौहान की टीका

इंदव छंद
बात सुनूं कमि के जन की चहुवांण मदन सु रानहि को है।
साख उभै सु पटा स्वगारहु सतन सेव सिकार चढो है।
धार लगे मिरगी हुत व्यामनि टूक[1] करे सु उदास बढो है।
भक्त कहै मम कांम करौं यह वारहु को करवात लगो है ॥४५२
भ्रात लख्यौ सग काठहि को धुगली नृप पै करली न सकाई।
भूप न मानत लोह करै वहु आनत भक्तन मात चलाई।
बीति गयो बरस लागत मै कछु, मारि नख्यौ मम झूठ सलाई।
गोठि करी सरजाइ मस नृप से अपनी तरवार दिखाई ॥४५३
देखत देखत म्याव मदस जु, वार कहै मुख सार नहीं है।
काढि दई बिजुरी खिसिकई मनु, मारि नसौ इम झूठ नहीं[2] है।
भक्त बचावत[3] साच कह्यौ यह वारहु की हरि पक्ष सही है।
दूंण पटा मुजरो मति आवहु मैं तन आवत मानि सही है ॥४५४

रूप चतुर्भुज की देवा पंडा की टीका

इंदव छंद
रूप चतुर्भुज रांनहु आवत पौटि रहे प्रभु मास सु सीसा।
काढि दयौ नृप केस लख्यो सित आय गये कहि आवत ईसा।
झूठ कही डरप्यो नृप मारहि ध्यात भयौ पद सो जगदीसा।
केस करो सित ही प्रभुजी मम कारनि भक्त मही परिमेषा ॥४५५
भूपति भास समुद्र बुड्यो जन बैन मिठास सुनै फिरि जीयौ।
बार पिये सित मांगि दया अति मेन मरे नहि साधन कीयौ।
भक्तन की प्रतिपाल करै निति मैं स अभक्त सु कम्पत हीयो।
आप बिचारत नाम भजै मम है हमरो पुनि यो मुख दीयो ॥४५६
भूपति मोर निहारित है कब सेत गहो हरि पंडहि आये।
दुखि भयौ इक वारहु जाइ र, धार चलो रत भूप भिजाये।
भूप[4] पर्‌यौ मुरछा तन सुधि न ऊठ्न भो अपराध सुनाये।
बैठत राम कहा नहि आवहु दंड यहै अजहूं नहि आये ॥४५७

कमधज की टीका

भ्रात गु त्यागि उमेपुर चाकर है इक भक्त बसै बन मांही।
आइ प्रसाद करै उठि आवत नरू चली सरची तब मांहीं।

---

१ टेक। २ नहीं। ३ बचावत। ४ भूमि।

चाकर हैं जिनके उन सेवत, जारत कौन व वौह जराही।
देह छुटी हनु राम पठावत, दाहत घूम सु भूत तिराही ॥४५८

जैसलजी की टीका

जैमल मेरत पैल हुतौ नृप, पूजन सू हित और न भावै।
है घटिका दस की वृत वोलन, आइ कहै कछु ठौर मरावै।
भ्रात मडोवर कै यह भेद, लह्यौ चढि आवत मात सुनावै।
स्याम करै भल वाज चढे हरि, मारि दयौ दल सैं सुख पावै ॥४५९
हाफि रह्यौ हय आय र देखत, वाहरि देखहि भ्रात पर्यौ है।
कौ तुम्हरै इक स्याम सिरोमनि, मारि दयौ दल चित्त हर्यौ है।
तौहि मिले हमतौ अति तरसत, जानि लयो प्रभु आप ढर्यौ है।
वूझि खिनावत वै पन वारत, कष्ट दयौ कहि सोच कर्यौ है ॥४६०

ग्वाल-भक्त की टीका

ग्वाल भयौ इक सतन सेवत, हाथि चढै सब साधन देवैं।
आय गयौ पकवान धयो वन, ढील लगी इक भैंसि न लेवैं।
जानि लइ घरि मात कही फिरि, है घृत लै करि व्राह्मन सेवैं।
द्यौं स दिवारिहु हास घरे गरि, जाम लये घर आतह सेवैं ॥४६१

श्रीधर-स्वामी की टीका अवसथा बरनन

टिप्पण भागवत करि है वह, जानिहु श्रीधर हे बिवहारी।
जात चले मग चौर लगे कहि, कौन सहाइक, श्रीधिबिहारी।
कोइ नही बन मारि डरौ इन, है कर आयुध आत खरारो।
आय कही घर स्याम स को हुत, हे प्रभू त्यागि दई बिधि सारी ॥४६२

मूल

छपै छंद

भगवंत भक्त पीछे फिरैं, ज्यौं बच्छा सग गाइ है॥
दरबि रहत इक भक्त, तास कैं सत पधारे।
प्रभु बटाऊ होइ, खुसे हरिजन पैं हारे।
भरन साखि गोपाल, साथि खुरदहा सिधाये।
रांमदास कैं धाम, द्वारिकानाथ लुभाये।
छेक सेल कौ अनुगतन, बलि बघन बपु खाइ है।
भगवत भक्त पीछैं फिरैं, ज्यूं बच्छा सगि गाइ है ॥२९४

निहकंचन की टीका

इंदव छंद	भक्तन भार[1] फिरै भगवतहि ज्यौं बछ संगि फिरै नितिं गाई।
है हरिपाल सु ब्राह्मन नामहि संतन हेत सिरीस लगाई।
कै हजार भंडार लुटावत नांहि मिले जब चोर न आई।
सालत स्यात न दास दुसावत आवत साध तिया ससलाई॥४६३
कृष्ण रुकमनि मंदिर हे धुग सोच पर्यौ हरि साह बने हैं।
आप चले कित भक्त समो चित मैं हू चलू कहि भाव ठने हैं।
पूछत मारग चले उतपातहि, लै रुपया पहुचाय मने हैं।
साथ जिमावहु संगि चल्यौ बन देखि लये रुपया स घने हैं॥४६४
त्याग मही सदधार न देखत है भनवौ इतनौ हत त्यायो।
दौ रुपया गहनौ नहीं मारत देत सबै छगुनी छल छायो।
काढि लयो छगुनि सु मरोरि र दुष्ट बडौ जन क्षोभत पायो।
रूप दिखावत जो अपनों हुत भक्त सराहि र कंठि लगायो॥४६५

साखीगोपाल जू की टीका

गौडहु के दिज दोइ सुनौं गति जाति बडौ यमहू इक छोटो।
धाम फिरै सब आये रहे वन जेमति भावत जानहु मोटो।
सेव करी लघु [प्रु] रीझि कही नृप दीन्ह सुता तब मेवत मोटो।
साखिगुपाल करै प्रतिपालहि गाँव गयें तिय पूछत टोटा॥४६६
विप्र कही लघु दौ सुम्ह दीन्ही सू पुत्र तिया पुतरी नहि देवै।
नृप कही अब नांहि करौं किम हो जु बिया नहीं आमत भेवै।
होत पंचाइत साखि भरावहु, साखिगुपाल भरै बन जेवै।
त्यौ सिखावहु जु साखि भराबहि दै परनाई सुता सुख लवै॥४६७
आवन मैं सु गुपाल जनांवत साखि भरौ चलि कै जु सिखाई।
बीति गयो विनि बोल कही हरि मूरति चालत क्यूं ख बहाई।
संगि चले उठि भोग लगावत पाठ[2] चले छिम छिम्म कराई।
कान सुनै छिम पीछ न देखहु देखत हो रहि हूँ उन ठाई॥४६८
गाँव निजोक रह्यौ फिरि देखत होत खरे वहि ठौर हसे हैं।
ल्याव इहां कहि भात चलौ हरि, गाँव चल्यौ सुनि देखि लसे हैं।

---
१ संगि। २ चाल।

पूछत साखि भरी सुख पावत, व्याहि दई उन गाँव बसे है।
मूरत राखि लई नृप आत न, है अजहू उत प्रीति फसे हैं ॥४६६

रामदासजी को टोका

गाव डकोर बसै दुज[1] भक्त सु, राम सु दास भगत्ति पियारी।
ग्यारसि जाग्रन ह्वै रणछोडहि, जाइ सदा वृध देह निहारी।
आप कही इत आव मतै धरि, चालि रहो रथ ल्यावउ चारी।
आनि धरौ खिरको पिछवारहि, बाथ धरौ भरि हाकि सवारी ॥४७०
जाग्रन आत भयौ चढिकै रथ, जानि सबै गति पाव थकी है।
बारसि रैनि अरद्ध चल्यौ धरि, भूषन ले तन प्रीति पकी है।
मदिर खोलिरू देखत ना प्रभु, गैल लगे चढि जाइ हकी है।
बाइ धरौ मम बेगि टरौ तुम, पौंचि र मारत चौट जकी है ॥४७१
ढूंढ लयो रथ पाइ नही हरि, सोच करयौ जन भूमि[2] लगाई।
येक कही इन वोर पयोहुत[3], बाइ निहारत हैं रकताई।
सेल दयो जन धारि लयो हृम, नाहि चलौं बिज रूप बताई।
मो सम कचन ल्यौ धरि तोलहु, नाह मरे तिय कान जिताई ॥४७२
तोलत बारिहु डारि पछै हरि, नाहि उठै पलरौ जित बारी।
हौइ उदास चले घर कौ सुख, होत किमे मन नाहि[4] मुरारी।
धाम बिराजत है दिज कै प्रभु, भक्ति करै सुख दैन तयारी।
बाधि लयो बलि यौं बलि बधन, आयुध कौ छिन चोट बिचारी ॥४७३

मूल

छपै छद

अबं राजा परिजा थकित ह्वै, हरि-जस सुनि हरिदास कौं ॥
जसू-स्वामि कौ जस बढ्यौ, बृषभ हरि आप बनाये।
ता पीछै चलि चोर, लै गये सो पुनि ल्याये।
नददास निज धेन, जिवाई नामा पीछै।
श्रीरगनाथजी सीस, नयो वेस्या कै इछै।
यम आसाजित आसू सुवन, जन राघो रटि गुन जास कौ।
अब राजा परिजा थकित ह्वै, हरि-जस सुनि हरिदास कौ ॥२६५

---

१ हरि। २ भूलि। ३ गयो। ४ मनेजि।

जसू स्वामी की टीका

इंद्व छंद
भरतखंड रहै जसु स्वामिन संतन सेवन खेत सुहावै।
बन हरे इन कौं कछु ठीक न स्याम बसे हलकै जुतवावै।
मान भये वृष के नर पैंठहि देखि गयो[1] भरि आइ र भाव।
बार फिरे सब ठीक भई उन पूछि र मानि दये नहि पाव ॥४७६
देखि प्रतापहि भाव भयो उरि वस वय हरि पाय परे हैं।
दीन कहै मुख भाय लही रुख दीनदयालहि दास करे हैं।
छाडि दयो हर मो सुष ह्वालस संतन सेवन भाग परे हैं।
धांन खिलावहि दूध दही पुनि प्रावहि साथ सहात परे हैं ॥४७५

नंददासजी वैष्णु की टीका

गाव बरेलि नजीक हुवेलिहु नंद सुदास निजै मन सेवैं।
दाप कर दिज न बछिया सब, गेलहि डारत गारि न देवैं।
साधन सूं मरि है न हत्यारहि प्रावत ह्वौ नहि प्रांनत भेवैं।
आइ जिवाई दई जन लतहि सासत भक्त भये पग सेवैं ॥४७६

मूल

मनहर छंद
राघो रंगमायको को सीस धायो सनमुख
बारमुखी बारंबार लेत प्रति वारणां।
मैं हूं महा भघिम भद्दोष मम वच क्रम
तुम प्रभू प्राणनाथ पतित उधारणां।
मुकट चढ़ावत मगन भई मातंग ज्यूं
ज के बार पुर महि गृह-गृह वारणां।
गनिका मुक्ति[2] भई भई प्यारमू जुग मधि
प्यारमूं प्रीति गई जन्म मांहीं जोग धारणां ॥२६६

बारमुखी की टीका

इंद्व छंद
बारमुखी परिहास सुनो घर माल भर्यो मनि, पावन नामैं।
गन करै गुर धाम मग्यो गुरु, मानि दई करि चाहि न दामैं।
बारनि पाइ निहारन हगनि भाग जग गहि प्रानन नामैं।
धार भर्यो मनो परि मंगन चार करो घर भूषण स्यामैं ॥४७७

[1] त्यो। [2] मुक्त।

पूछत कौ तुम जाति बतावहु, मौन करी सुनि चित्त धरी है।
साच कहो मन सक धरौ मति, बारमुखी कहि पाय परी है।
कौस भरचौ धन ल्यौ किरपा करि नाहि करै तब तौ समरी है।
रग सु नाथ मुकट्ट घराइ, इसौ लखि कै सुख पाई हरी है ॥४७८
विप्र न छूवत ले किम सग[1], जु दै हम बाह रहै इत कीजे।
द्रिव्य लगाइ सबै करवावत, लै कर चालत थाल घरीजै।
मदर माहि गई जन आइस, ससकि फिरोस तिया ध्रम भीजै।
आपु बुलात हमैं पहरायहु, सीस नयौं पहराय र रीजै ॥४७९

मूल

छपै छद **यम भक्ति पैज कलिकाल मैं, तिहु जुग सू राखी अधिक ॥**
ठग ठाकुर दै बीचि, भक्त सूं सौगंध कीन्ही।
बहुरि हत्यौ बन माहि, लूटि गहि नारी लीन्ही।
घरनी करी पुकार, त्राहि बाबा बिसटारी[2]।
चोर न कीन्हौं जोर, रामजी रजा तुम्हारी।
राघौ राम रतीक मधि, भुति जिवाइ मारे बधिक।
यम भक्ति पैज कलिकाल मैं, तिहुँ जुग सूं राखी अधिक ॥२९७

बिप्र हरि भक्त की टीका

इदव छद ब्राह्मन लै मुकलाव[3] चल्यौ तिय, है भगती जुग वात जनावै।
मारग मैं ठग भेटत पूछहि, जात कहा ज्यतही तुम जावै।
वाग छुडावत लै बन जावत, है अति सूधि हु चित्त न आवै।
राम दये बिचि तौहु डरै मन, भाम कहै हरि नाम सुनावै ॥४८०
सग चले मन भीत[4] करौ अव, भक्ति सची पतनी मम जानो।
जा वन मैं दिज क्षिप्रहि मारत, भाग चले सु बधू बिलखानी।
पीछहु देख तबै समुवौ चलि, देखत हू विचि सो वह प्रानी।
आइ र राम सबै ठग मारत, ज्याय लयो जन रीति वखानी ॥४८१

मूल

छपै छद **गाथ सुनत नृप भक्त की, हरिजी सूं हित होइ है ॥**
स्वाग संत को धरै, तास जानै गोविंद गुर।

---

१ रग। २ विसठारी। ३ मुकलाइ। ४ मात।

मूल

छपै छंद
माथुर बिठुलदास वर, मान देत परमान नैं॥
स्वाग सत सू प्यार, साधु कौ गुणही लेवैं।
उत्यम मानै भक्त, धाम तन मन धन देवैं।
सतोषी सुघ ह्रदै, बहुत परमारथ कीन्हौं।
दुसह करम को करै, पुत्र उत्सव मै दीन्हौं।
जै जै गोव्यद हरि नांम, पण राघो बाणी आननैं।
माथुर बिठलदास वर, मान देत परमान नैं॥३००

टीका

इदव छंद
माथुर भ्रात उभै गुर रानहि, आप मुये लरि त्या इक जीयो।
जा सुत वीठलदास बडौ जन, वै लघु सेवन स्याम सु लीयौ।
भूप कही दिज कौ सुत आत न, ल्यान गये कहि चाह न बीयौ।
फेरि बुलात करी इत जाग्रन, नाचत प्रेम सु कै इक दीयौ॥४८५
सग गये जन रग रचे हरि, आदर दै उठिकै सु बठाये।
तीन खणा परि नृत्य करावत, प्रेम छके गिरिये तरि आये।
स्वेत भयो नृप दुष्टन खीजत, बाथ भरे जन ता घरि ल्याये।
भेट करी बहु देह परी सब, सुद्धि भई दिन तीसर गाये॥४८६
मात जनाबत वात सबै निसि, कौनि कसे तजिये सुबिचारी।
आत छटी कर मैं गरुडेस्वर, सेवत है प्रतिमा अति प्यारी।
भूपति के चर हेरि थके, तिरिया अरु मातहु आइ पुकारी।
चालि कही बहु मानत नाहि न, बैठि रही उतही कहि हारी॥४८७
कष्ट लख्यौ तब राति कही हरि, जा मथुरा बर तीनक भाख्यौ।
जाति र पाति मिले पुर आवत, साध लख्यौ बढही अभिलाख्यौ।
गर्भवती जुवती घर खोदत, मूरति वोधन पावत दाख्यौ।
वौलि कह्यौ बढहीस न लै तब, वै सु कही तव रूपहि राख्यौ॥४८८
सेवत है हरि भक्ति गई भरि, सिष्य भये बहु है उर भावै।
होत समाज बडे अति आवत, राग बिबद्धि गुनी जन गावै।
आत नटी गुन रूप जटी इक, गात इसी उर बान लगावै।
देत भये पट भूखन भूखहु, दीखत औरन पुत्र गहावै॥४८९

राय रंगि सिष भूप सुता दुख दंमि भयो जलहू नहीं पीजै।
वाहि कह्यौ धन चाहि सु लै तब, दे हमरौ प्रभु सो सब कीजै।
द्रव्य न चाहत रीझि चहूं तन व धन फेरि समाज करीजै।
ओर गुनीजन कों धन दे बहु आप करयौ[1] नृति देत न छीजै ॥४६०
बोलहि मैं फिरि ल्याइ रगी जन कैत भई बरियां तब आई।
नृत्य करयौ अति वो धन वारस भक्त मरे फिरि द हुलसाई।
मोहि दयो हरि की नवछावरि ले मति नै सिष मत रमाइ।
त्यागि दयो तन पात कहां वह यो वरनी जन का रसिकाई ॥४६१

मूल

छप्पै हरिराम हठीले भजन से ज[2] रांमा कौ[3] समझाइयौं ॥
छंद
बडे असुर बातार, भक्ति प्रेमा जिन जांनी।
रस-सागर गुन गंभ कंठ मैं गदगद बांनी।
सतन कू सुख देत तास का यह फल भाख्यौ।
हरिनकस्यप हति भक्तन बास प्रहलादहि राख्यौ।
स्फुटवक्ता सभा बिचि काहू सौं न डराइयो।
हरिराम हठील भजन से ज रांमा कौ समझाइयो ॥१०१

टीका

इंदव रांमहि हेत खिलावत ब्योपरि न्यासि इसौ धन भूमि छिनाई।
छंद साध[4] पुकारत भारि दयो उन है बिमुखी वसि साच सुठाई।
सो हरिरामहि बात जनावत चालि मगं हम आवत माई।
पत्र गयौ हरिराम पधारत झारत भूपहि भूंमि दिवाई ॥४६२

मूल

छपै पादप येह जन जगत मैं, भक्ति सुमन मिरबैर फल ॥
छंद
सीहा जोजी संत स्यांम बल्हा पुनि रांका।
जती रांम रावल मनोरथ चौगू बांका।
बीहा बाबा गरू, सबाई काड़ा बांका।
कीता नापा लोकनाथ सब मेल्या बांका।
श्रीधांगपंम राघो निपुनि मति सुघर पीप रांम जन।
पादप यह जन जगत मैं भक्ति सु मन मिरबैर फल ॥१०२

---

१ कह्यौ। २ तैन। ३ मैं। ४ साच।

श्री राकापति बाका जू को टीका

राकपति पतनी पुनि बाकाहि, रैपुर पडर रीति सु न्यारी।
ल्या लकरी गुदरान करै उर, नाव धरै वह जानि जिवारी।
नाम कहै प्रभुसौं इन द्यौ कछु, लेत नही कहि आप मुरारी।
चालि दिखावहु तौ तव भावहु, मारग मैं सलका हिम डारी ॥४६३
आगय है पति पीछय कौं तिय, आवत सो सलका सु निहारी।
जानि तिया मन माहि भयो भ्रम, धूरि पगा करि ता परि डारी।
बूझत भूमि निहारि कह्यौ[1] किम, कैत भये अजहू लछिधारी।
राक कहै मम बाका भई तुब, आप कही हरि साच हमारी ॥४६४

मूल

इदव छद
एक समै रजनी जन जागत, चोरन आइ चहूँ दिस ढूढा।
माया नहीं सल री तप रेख, लगा रिदै बारह नीकसै मूढा।
आगै परचौ मुख ज्यू भरचौ भंजन, खोलि र देखै तौ नाग फफूढ़ा।
राघौ कहै खिज राँका कै डारत, सरप थै ह्वै गयौ सोनि को कूढा।
लागे मतौ करनै कहा कीजिये, धीजिये नेक न माया बुरी है।
राका कहै काहू रकहि दीजिये, ताही के काज कौं आय जुरी है।
बांका कहै बवरे भये हो, देहुगे किसकौं विष काल छुरी है।
राघो कहै तुछ जानि गये तजि, राकै रु बाका यौ टेक परी है ॥३०३†

टीका

नामहि सौं हरिदेव कहै उर, तौ चलिये लकरीहु सकेरौ।
आत भये जुग वीनन कौं जन, है इकठी कर सूं नहि छेरै।
हौइ चतुर्भुज ल्यात भये घरि, रे मुडफोर प्रभु बन फेरै।
दौउ कहै कर जोरि धरौं पट, भार पर्‌यौ इक चोरहि हेरै ॥४६५

मूल

इदव छद
धुनि ध्यान र प्रांन भये परचै, निहचै निराकार के सेवग राका।
कली-काल मैं चालह माइ ज्यूं, छाइ महावितपन्न सबै विधि बाका।

---

[1] करचौ।

---

†यह इदव छद प्रति न० १ और २ मे नहीं है।

प्रन के वन धीम महार कियो बिन पायो है।भेव भक्ति की नांका।
राघौ कहै मलतांन गरीबो सूं यौं मिले जोति मैं जोति जहाँ का ॥३०४

मूल

इंदव ऐसो लग्यो रंग रांम मन बीसरै भूलि गयो दुख देह को जोगू।
छंद सतम के दम द्वार सदा रहै माव सूं भोजन देत प्रयोगू।
टेक यहु उर को न कहौ गुर लेनि बह्यौ निति धरम की तेगू।
राघो कहै धनि धीरज सूं पर, परचौ प्रचंड मिले हरि बेगू ॥३०५

मूल

छप्पै यम हठ करि हरिजी कूं मिले, सोझा सोझी सदन तजि ॥
बालक उमै उपाडि, समझि करि भूले छाड़े।
इनकौं करता रांम, दीये परमेसुर माडे।
महा मोह बसि कीयौ सोम की लसकर मार्यौ।
क्रोध बोध करि हयो रांम भजि काम संघार्यौ।
राघो इक टग राति दिन, मे मेट्यौ भगवंत भजि।
यम हठ करि हरिजी कौं मिले, सोझा सोझी सदन तजि ॥३०६

इंदव चढ़ि खेत लड़्यो न पड़्यो पछबो पग यौं जग जीति गयो जन सोझो।
छंद कलप्यो भमप्यौ मकस्यौ कलि मैं मन मूठि मनी ग्रिह ग्यान को गोझौ।
मनसा मनि घेरि चढ़ाये सुमेरहि कांमदुघा करणी करि दोझौ।
राघो सुवास छिपे नहीं साध की चंदन के बन बोधि ज्यूं बोझौ ॥३०७
ऐसी लगी दम नेक टरे नहीं रांम की कीरति गावत कीता।
आतम येक मुरे न दसा देहु साठ तजे सब द्वादस बीता।
रांमजी आइ कही समझाइ करो सिष याहि ज्यूं होइ पुनीता।
राघौ कहै उपदेस दियो पंच सत को सत से भादि पढ़ोता ॥३१०

मूल

छपै कांमधेनु कलिकाल मैं येते जन परमारथी ॥
सूरज सत्तमम सडू, बिमानी खेम प्रवासी।
माधव कंभनदास संत सफरा गुन रासी।
हरीदास हरि केस मुटेरा भरतर बिरही।
नफर अजोध्या चक्रपांनि जाइ सरजू तटि परही।

तिलोक त्यागी जोधपुर, उधव विज्वली प्रारथी।
कामधेनु कलिकाल मैं, येते जन परमारथी ॥३०६

श्री लड्डू भक्त की टीका

इदव छंद
साखत देस भगत्त लड्डू हुत, लेस भगत्ति न पापहि पागे।
तोषत है दुरगा नर मारि रु, ले सु गये इन मारन लागे।
मूरति तै निकसी धरि रूपहि, काटत हैं सबके सिर भागे।
नाचि रही जन के मुख आगर, राखि लये हरि यौ अनुरागे ॥४६६

श्री सत भक्त की टीका

सतन सेव लग्यौ मन सतहि, ल्यावत भीखहुं गावन गावै।
साधु पधारि घरा तिय पूछत, मत कहा खिजि चूल्हहि आवै।
साध चले उठि माग मिले जन, हे जु कहा बह धात सुनावै।
साचि कही तिय आच वही हिय, ल्याइ घरा उन खूब जिमावै ॥४६७

तिलोक सुनार की टीका

पूरब माहि सुनार तिलोक सु, सतन सेवन की उर धारी।
व्याहत है पुतरी नृप तेहरि, दी घरि बे करि ल्याव सुहारी।
साध पधारत है बहु सेवत, द्यौस रहे जुग भूप चितारी।
वेगि बुलावत ताहि डरावत, ल्यावति हू कलि नाहि उजारी ॥४६८
आप[1] गयो दिन नाहि घरी जन, भै उपज्यौ बन जाइ छिप्यौ है।
च्यारि रु पाचस आत भये चर, स्याम लयौ घरि भक्ति लिप्यौ है।
जाइ दई नृप देखि भयो चुप, धापत नैनन खूब दिप्यौ है।
मौज दई अति चूक तजी पति, राय लह्यौ हरि धाम थप्यौ है ॥४६६
प्रीत महोच्छव ठानि जिमावत, सतन क वहु भाति मिठाई।
साध सरूप धरयौ सिरनी करि, जाइ कही सु तिलौकहि पाई।
कौंन तिलोक नही हुत दूसर, होइ सुखो निसि कू घर जाई।
देखि भरयौ घर है घन भोजन, जानि लई हरि होत सहाई ॥५००

मूल

छपै छद
चिंतामनि सम दास ये, मन-बछा-पूरन करन ॥
पुष्कर टी सोमनाथ, भीम बोकौ बी साखा।

---
१ आइ।

सोम मुकुंद गनेस, महदा रघु मथुरा लाखा।
लछमन छीतर बालमीक, त्रिबिक्रम मामा।
वृद्ध व्यास करपूर, मह बन हरिभूभामा।
बीठल राघो हरीदास, पूरी घाटम उधव जगन।
चिंतामनि सम दास ये, मन-बंछा-पूरन करन ॥११०

ये सूर धीर बाराणसी भक्ति करत बिगाम भगत ॥टे०
छीतम वेदानंद, द्वारिकादास महोछति।
माधव हरीमानंद खेम बीका बासू सुत।
बिष्णानंद श्रीरंग, मुकुंद माधम मन मनहर।
दामोदर भगवान, बालकृष्ण केसो प्रद कान्हर।
संतराम तंबोरी प्रागदास गुपाल मुहग नागू सुगत।
ये सूर धीर बाराणसी, भक्ति करत बिगाम भगत ॥१११

मथुर सुबस जगदीस की करन भक्त संसार ये ॥
प्रिय दयाल गोबिंद बिद्यापति बहुरन प्यारे।
चतुरबिहारी बहुदास लाल बरसाना-वारे।
पूरन गंगा राम नृपति भीषम भगवत रस।
व्यासकरन परसराम भगत माई खाटी बस।
घनस्याम केसौ कवित वृजराज-कुमर की छाप वे।
मथुर सुबस जगदीस की करन भक्त संसार ये ॥११२

श्रीगोविंदस्वामी की टीका

इंदव छंद
गोबरधन्न सुनाम सखाभत[1] केसव संग सु गोबिंद नाम।
स्वामि बिख्यात सुनो उन बात उनें मन[2] रीति भली मति रामे।
केसव है गिरि लाल गये भगि दास हुतो सु गिरी तह स्यामें।
संत भली सुध ना परि आवत भावत मैमत है मह धामें ॥५०१
अब रहे भनि भावमहिमो घन माइ दये फल सौ भुगतावे।
सोच पर्यौ प्रभु जाइ परयौ वह भोग पर्यौ सु पर्यौ नहि पावे।
मोहि न भावत केत गुसाईंन जाहि सुबावन बाहि मनावे।
मो परि दाव हुतो मन की उन भाइ दई गहि पोमस मावे ॥५ २

---
१ [illegible]। २ मन।

मो वन मैं बिन खेल बनै नहिं, काढत गारिन चोट हु देगौ।
चित भई मम ढूंढि र ल्यावहु, आत कनै तब चैन पगैगो।
भोजन भात न ताहि विना कछु, वा रिस जातहि भोग फबैगो।
वेगि गये उन नीठि मनावत, ज्याइ कही अब कठ लगैगो ।।५०३
बाहरि भूमि गयो हरि आवत, आकन डोडन मार मचाई।
देख उठे इनहू वहि मारत, भाव सखा सुख सार कहाई।
वेर लगी बहु माबहु आवत, चालि घरा तजि ये अटपाई।
सौच करयौ सदचार धरयौ मन, प्रेम मढ्यौ सुबिचारि कराई ।।५०४
भोग लगावन मदिर ल्यावत, मागत है पहिलै मम दीजै।
थारहि डारत जाइ पुकारत, कोप करयौ यह सेवन लीजै।
आइ कही जन कौंन बिचारत, खोलि सुनावत कान धरीजै।
जोम रु पैलहि जावत है बन, मोहि न पावत यौ सुनि भीजै ।।५०५

मूल

छपै छंद

मधुपुरी देस जे जन भये, मम कृपा कटाक्ष ही राखियो ॥
रामभद्र रघुनाध मरहट, बीठल पुनि बेणी।
दासू स्वामी चित उत्म, के सौं दडोतां देणी।
गुजामाली जदुनद, रामानद मुरली।
गोविंद गोपीनाथ मुकद, भगवाना सु धुरली।
हरिदास मिश्र चत्रभुज चरित्र, रघुनाथ विष्ण-रस चाखियो।
मधुपुरी देस जे जन भये, मम कृपा कटाक्ष ही राखियो ॥३१३

श्री गुजामाली की टीका

इदव छंद

सतन को परताप बडो ब्रज, मैं बसि है उन सोभ अपारा।
गुजनमाल धरी जिम नाम सु, बास करयौ सु लहौर मझारा।
पुत्रबधु बिधवाहि सुनावत, लै धन ग्रेकि गुपाल भ्रतारा।
द्यौ हरि सेवन मागत है तिय, या परि वारतहू जगसारा ।।५०६
पूजन वाहि दयौ धन ग्रे तिय, बास करयौ व्रज रीति सुनीजे।
ठाकुर पै सुत औरन के भरि, डारत खोरहि सौ अति खीजै।
तारि दयो वह भोग न पावत, क्यूस सिग्रावहि तौ कछु जीजै।
कोपि कही भरि है तब प्रातहि, हा अब खावहु ल्यावत लीजै ।।५०७

मूल

छप्पै   ये त्रिया कठिन कलिकाल महि, भक्ति करी जग जानि है ॥
छंद   सीता झाली जमाकुल, गंगा सोमां मानां।
         प्रभुतां मानमती सुमति, गोरां पंगा ये बालां।
         ऊमां रुक्मिठा सतभामा, कुंवरी गोपाली।
         रामां कमलां देवकी, मृगां मग पाली।
         कमलां हीरां हरिचेरी, कोली कीकी जुग जेवा गनेसदे रानि है।
         ये त्रिया कठिन कलि काल महि भक्ति करी जग जानि है ॥११४

गनेसदे रानी की टीका

इंदव भूप मधुक्करसाहु सु ओड़छ, नारि गनेसदे मुख करी है।
छंद साध पधारिहि सेवहिंवो विधि संत रह्यौ सुख देत खरी है।
      देखि इकन्त कही धन है कित होइ बतावहु आनि परी है।
      जांघ छुरी पहराय गयो भगि सोचत है नृप आनि खुरी है ॥५०८
      बांधि रु सोइ रही न कही किन पावत भूप कही छन मैंलो।
      तीन गये दिन राय भली भनि जांसि कह्यौ मम ना दुख दैलो।
      पूछत है नृप बोलि कही तिय संभ्रम छाइहु है कछु सैसो।
      दे परिक्रमण भूमि परयौ नृप भक्ति करा तजि दंपति गली ॥५०९

मूल

छप्पै   प्रभु के सम्मत संत जे तिनकै मैं सेवक रहू ॥
छंद   मयानंद गोव्यंद अनंत गम्भीरे धरजन।
         आपू नरबाहन गदा ईस्वर सो गरजन।
         प्रमभई धारा रूप, जनार्दन बरीस जीता।
         खेमस जोधावत ऊधा रावत सु विनीता।
         हेम दमोदर सांपलै गुढले तुलसी को कहूं।
         प्रभु के संमत संत जे तिनकै मैं सेवक रहू ॥११५

नरवाहनपु की टीका

इंदव गाव रहै मय है नरबाहन नाम भई लूटि रोकि स धीयो।
छंद भोजन देवन प्रावन दाविहु भाइ दया सु उपायु जु कीयौ।

---

१ करी है।

जै हरिवसहि राघिहु बल्लभ, नांव कहौ सिष पूछत लीयौ।
देत भये सब बात कहौ मति, जाइ हुवो सिष छाडत बीयो ।।५१०

मूल

छपै छद
साधन की सेवा सरस, श्रीमुख आपन सौं कहै ॥
बूंदी बनिया रांम, गाव रीदास विराजै।
भाऊ जटिया नै, मडौतै मेह[1] न छाजै।
माडोठी जगदीस, दास पुनि दाऊ वारी।
लक्षमन चढि थावलि, गोपाल सलखान उधारी।
सुनि पति मै भगवानदास, जोबनेरि गोपाल रहे।
साधन की सेवा सरस, श्रीमुख आपन सौं कहै ॥३१६

गुपालभक्त की टीका

इदव छंद
जोबहिनेरि गुपाल रहैं जन, सतन इष्ट निबाह कर्यौ है।
बृक्कत होइ गयो कुल मैं, परक्षा करनै घर-द्वारि पर्यौ है।
आइ कही जन माहि पधारहु, सुदरि देखु न नेम धर्यौ है।
दूरि करौ तिय जाइ छिपावत, नैन लखी मुख कौ स जर्यौ है ।।५११
येक दई इक मानत है रिस, देहु कपोलहि दूसर प्यारी।
नैन झरे सुनि जाइ लये पग, भक्तन की कछु रीति नियारी।
सतन इष्ट सुन्यौ चलि आवत, पारिख लेत भई सिष भारी।
आप कही जन भाव कहा हुत, सत सराहत सो मम ज्यारी ।।५१२

मूल

छपै छद
जन राघौ रांमहि मिले, येते बिग भये बादरा ॥
इम गरीबदास गुर गोबिंद गायो, दीन भयो नहीं और सू।
मानदास जोर्यो मन-बच-क्रम, हित चित जुगलकिसोर सूं।
स्यामदास कै हरिनाराइण, स्यामदीन सर्बगि भयौ।
खेम रिसकजन हरिया हरि भजि, सर्व सतन कौ मत लयौ।
तजि बृखलीपति कुल करतव्यता, कीयौ भगवत धरि सादरा।
जन राघौ रांमहि मिले, येते बिग भये बादरा ॥३१६

---

१ मोह।

व्याहत नाहि सुता सु कुवारिहु, है हरि सन्तन को धन भाई।
श्रीजगनाथ कही परनाइहु, मैं वसुदेवत नाम न आई।
होत विदा नहि आत भरे द्रिग, भूप भगत्त लये अटकाई।
सुप्न दयो प्रभु नाहि करौ हठ, हूडि लिखाइ दई सुखदाई ॥५१८

हुडि हजार लिखे घर ल्यावत, सो क ल गाय र नाइ दई है।
साध वुलाइ खुवाइ दये सव, नेम सध्यौ सुख रासि भई है।
वाहि निमत लई लक्षमी वहु, भक्तन कौं भुगतात नई है।
कीरति सत अपार अनतहि, मैं वुधि माहि विचारि लई है ॥५१६

मूल

मनहर छद

छाडि के निषध कुल नृगुण उपास्यौ नाव,
साधन की सगति भये[1] है विग वादरौ।
त्याग के जगत आस जाच्यौ है जगतपति,
साई समर्थ घरि जाइ कीन्हौं सादरौ।
प्रानन के नाथ आगे हाथ जोरि गाये गुन,
भक्ति भडार उन दयो मडि मादरौ।
राघौ कहै नीच भये ऊच रटि राम नाम,
वैसे भये मोक्ष तौ काहै कौं कोई कादरौ ॥३१६

मूल

छपै छद

दिवदास दान दयो वस कौ, हरि सू हठ करि भक्ति कौ ॥
सुत उपज्यौ सिरदार, जसौधरि हरि उर गरजै।
पाटि वैठि पद कीये, घरचो रामाइण नरजै।
ता सुत निज नददास, निगमचारी कवि हारी।
टकसाली पद प्रिय सकल गावै नरनारी।
तीन साखि त्रियलोक मधि, जन राघौ मघ गह्यौ मुक्ति कौ।
दिवदास दान दयो वस कौ, हरि सू हठ करि भक्ति कौ ॥३२०

माधो प्रेमी भूमि परि, लोटत नीकै प्रेम करि ॥
जानत सब को आहि, परचौ ऊचै तै हरिजन।
गावगढागड प्रचुर कीयो, साहिब साचौ पन।

---

१ भयो।

यहि भक्ति की रीति पुत्र पोतां चलि आई।
संतन सूं अत प्रीति नीति कबहू न घटाई।
सुधि सरीरहू ना रही नृति-करत है ध्यान धरि।
माधौ प्रेमी भूमि परि लौटत नीक प्रेम करि ॥३२१

माधौ[1] प्रेमी की टीका

इंदव माधव है पुर नाम गढ़ा गढ़ नृत्य करै अति प्रेम गिरै है।
छंद सासरु भूपति पारिख मनहिं, तीसर द्यौस नचात फिरै है।
घूघर बांधि दिखावत साचहि नायक राह बिचैस परै है।
त्रास भयौ नृपदास कह्यौ हित प्रीति लखी हद भाव धरै है ॥५२०

मूल

छपै इच्छा अंगद भक्त की श्रीजगन्नाथ पूरी करी॥
छंद हीरा आयौ हाथि, ताहि राजा मंगवावै।
साम दाम दंड भेद कहै, मन मैं नहि आवै।
चल्यौ चढ़ावन काज, आनि मग मैं सो लीयौ।
मग नाराइन सेतु डारि जल मांही दीयौ।
कोस सात सत आइकै राख्यो डारि लीयौ हरी।
इच्छा अंगद भक्त की श्रीजगन्नाथ पूरी करी ॥३२२

अंगद भक्त की टीका

इंदव भूप सलाहदि-सू गढराय सु सेवक कारहु अंगद पायो।
छंद नारि भगत सु ससे सेवत आइ कहै गुर गाथ प्रतापी।
देखि इकंत न सीस रह्यो कहि हूं, जुगतो इन भयो रति पायो।
ऊठि गये गुर नारि तज्यौ अन आइ परयौ पग कांम कलापी ॥५२१
आनन नाहि दिखावत है तिय कौस करौं मुख नैक दिखावौ।
मैं जु तज्यौ अन क्यूं करि आवहु पीअन तो कछ जो तुम पावो।
बैठ तिया जिम बोलहु ना सन प्रान तज्यौ जब क्यूं न समावौ।
बोसु करी जब आत रहो सुधि आइ दया कहि जो उन ल्यावौ ॥५२२
बेगि गयो परि कै पग ल्यावत बैठ करो गुर सिष्य भयो है।
नाम धरो गुर सीस तिमकरहि गीतम यो उर भाव नयो है।

---
[1] माधौदास।

फौज चढी तव आप चढ्यौ पुर, लूटत हीरन टोप लयौ है।
सौ लघु वेचि दये यक राखत, श्रीजगनाथ अरप्पि दयौ है ॥५२३
वात भई पुर भूप लई सुनि, जौ इक दे अनि माफ करे है।
आइ सवै समझाइ न मानत, जाइ कही उन ना अदरे हैं।
अगद की भगनी नृप कैवत, दे विषि तौ तव पाइ परे हैं।
भोजन मैं विप डारि दयो उन, भोग लगाई बुलाइ घरे हैं ॥५२४
ताहि सुता निति सगि जिमावत, वा कित जीमहु ऊठि गई है।
खाइ नही कछु वीत कही उन, रोइ लगी गरि कैस दई है।
राड जिमाड दये हरि काढत, पात भये जरि वोप नई है।
सोक रह्यौ वह काहि सुनावत, भूप सुनि जिम होत भई है ॥५२५
आप चले जगनाथ चढावन, आई लये नृप फौज चढाई।
द्यौ हमकू नग कै अव झेलहु, चाकर हैं नृप के न वसाई।
नाहि विगारहु न्हाइ र देवत, डारि दयो जल माहि दिखाई।
ल्यौ प्रभुजी यह है तुम्हरौ नग, भक्त गिरा सुनि धारत आई ॥५२६
ये ग्रह आव तवै जल थाहत, ढूंढ रहे कहु खोज न पायो।
भूप गयो सुनि नीर कढावत, पाइ नही उर वौ दुख छायो।
श्रीजगनाथ कही उन द्यौं सुधि, आइ कह्यौ जन देह भूलायो।
जाइ लख्यौ हरि कठ लस्यौ अति, नैन भयौं सुख जाइ न गायौ ॥५२७
भूप भयो दुख छोडि दयो अन, अगद ल्यावन विप्र पठाये।
दे घरनौं नृप वेंन कहे सव, आइ दया चलि कै पुर आये।
सामुहि आनि परयौ नृप पाइन, लाइ लयो उर पेम समाये।
भूप दयो सव भक्त करी तव, जीवत लौं हरि के गुन गाये ॥५२८

मूल

छपै छंद

भूप चत्रभुज भक्ति की, कौ नृप करै वरोवरी ॥
सुनै आवतै सत कौस, चहूं साम्हैं जावत।
हरमि आनि सुख देत, प्रभु सम जांनि लड़ावत।
धोवत दपति चरन, वही चरनांमृत लेवत।
स्यंघासन पधराइ, नृत्य करि है यौं सेवत।
गात रहि करौलीनाथ की, तन माया आगै धरी।
भूप चत्रभुज भक्ति की, को नृप करै वरोवरी ॥३३३

राजा चन्द्रभुज की टीका

इन्द्र सैर चहुं दिसि जोगन कौतिहु भ्रात सुनै पन जाइ र ल्यावै।
छंद दास पधारत है जब धामहि रीति करै सु छपै मधि गावै।
भूप सुनी इक बात अनूपम बोलि सजान सबैहि रिझावै।
पात्र कुपात्र विचार नहीं उर यों कहि कै नृप सीस धुनावै ॥५२९

भागवती दिज भूप कन हुत, भक्त कही इम चित न धारौं।
आसय पाइ सु कौ नय सौं पढि, हैं हिरिदै महि हेत अपारौ।
पारष सेवन भाट पठावत भेष करयौ कहि दास प्रवारौ।
भूलि गयो कुल जाइ बखानत जानि भये जिन माहि पधारौ ॥५३०

भासक बात रह्यो चित भावत दास खरी धरि आइ सुनावौ।
जाहु निसंक गयौ नृप भावत वै भर रीति करी उर भावौ।
साम अपति सुभक्षन नाहिन पारिस सै न पठ्यौ कि मचावौ।
कोस दिखाइ दयौ द्रवि निर्तत कौडि धरी लपटाइ चलावौ ॥५३१

धाइ कही नृप पर्यत मैं सब, द्रव दिखाइ र वे हु दिखायौ।
खासि जरी मनि है मधि कौड़िहु भूप विचारत नां चित भायौ।
पंडित भागवती स महापट, रैनि प्रलोकि र आइ सुनायौ।
भेष भगत्ते जरी यह मानहु संपट माहि सरीर सजायौ ॥५३२

पाव लये नृप आप पधारहु, आसय ल्याय भमैं समझावौ।
जात भये दिज पाइ परयौ भुज पेम भयौ अति ल्यान सुनावौ।
सील मग नहि आसन देवत कोस कुलावत संत न दावौ।
सारहु कीर उभै इक यौ मम देत भई दिज के मन चावौ ॥५३३

प्रात सभा नृप बात चलै बहु राम कहै सब ही खग म्हारे।
भूप सु बूझत बात कही मुनि ल्यौ इन पंछिन हैं हरि प्यारे।
कोटि जिम्या सु बखान करौं तउ पार न भक्ति पगै सिर धारे।
ल्यौ खग कौं मन ल्याम रह्यौ लगि रीति भली मिलि ये सु पधारे ॥५३४

मूल

छपै संतन कौ सनमांन बहु भूपति-कुल मैं इन करयौ ॥
सुरजमल अर रामचंद दोई पूवे जन।
साधु सेये मेरतें, बेमल साचें मन।

नीवौ नेमी अभैराम, कान्हर जनभक्ता।
ईस्वर बीरम करमसी, सुरतान सुरक्ता।
भगवांन राइमल अखैराज, मधुकर सतन बसि परचौ।
साधन कौ सनमान बहु, भूपति-कुल मैं इन करचौ ॥३३४

जैमल की टीका

इदव जैमल भूप रहै पुर मेरतै, जानत भक्ति कथा कहि आये।
छंद सतन सेव करि अति प्रीतिहि, हेत सुनौ हरि फेरि लडाये।
मदिर कौ तलि जानि छता परि, वगलहुं चित राम कराये।
सुदर सेज पिछावन वोढन, पान जरी परदा लगवाये ॥५३५
नीसरनी धरि जाइ सुधारत, दूरि करै फिरि चौकस राखै।
यौ मन धारत स्याम पधारत, पान उगारत पौढन भाखै।
जान तनै तिय जाय चढी धरि, सोत किसौर लखे पति दाखै।
होत सुखी सुनि वाहि डरावत, भाग बडे तिय के हम पाखै ॥५३६

मधुकर साह की टीका

इदव साह मधुक्कर नाव करचौ सिधि, स्वाग गहै गुन छाडि असारै।
छंद भूप भयौ सुख रूप सु ओडछ, लेत बडौ पन नाहि बिसारै।
माल धरै उनकें पग पीवत, भ्रात दुखी खरकै गरि डारै।
धोइ पिये पग न्हाल करचौ मम, दुष्ट परे पग है द्रिग धारै ॥५३७

मूल

छपै भक्ति उजागर करन कौं, खेमाल रतन राठौर हुव॥
निज दासन को दास, सरस सुत रामट राजै।
सेवा सुमर्न ध्यांन, भक्ति दसधा धरि गाजै।
नांती नृमलकिसोर, जेरण जस नीकौ गायौ।
छाजन भोजन अरपि, समझि साधन सिर नायौ।
इम करी जैति जैतारण्या, जन राघो जिम प्रहलाद ध्रुव।
भक्ति उजागर करन कौं, खेमाल रतन राठौर हुव ॥३३५
जक्त भक्ति बाकीक सीस, रामरैंनि रजु करि दई॥
दुसह कर्म उर धरचौ, जहर ज्यूं पर हित सकर।
का जांनै अनिराइ, भक्ति महिमां निंदाकर।

प्रगट गांध्रवी ब्याहु सु, ताको कीयौ रास मैं।
सकुतला दुसकत, पुत्र भरतादि मास मैं।
प्रांन नृपति सुनि कुमन ह्वै यह काहूपै नां भई।
दास भक्ति बांकीक सीस रांमरैंनि रतु करि दई ॥३३५

रांमरैंनि की टीका

इंदव पूनिम सर्द समाजहि निर्तत, रास-बिलास करयौ अति भारी।
छंद मीचि रहे जुग रांम कही तिय दहि कहा दिज जो तुम प्यारी।
सोचि बिचारत है पुतरी प्रिय रूपवती अनुरूप निहारी।
सोचि परे सब आइ रु ल्यावत कान्ह बने उन देत कुमारी ॥५३८

मूल

छपै गुर गोबिंद संतान सूं रांम बांम साचै मतै ॥
साचां कह्यौ सु सबद, ताहि धारयै उर मांन्यौ।
नवमां प्रेमां प्यार, दूसरौ धरम न जांन्यौं।
यहु पको पन आहि, गोत्र अच्युत प्रिय लागै।
खीर-नीर सुबिचार आंन कहु मनहुं न पागै।
भक्त सबै राजा कहैं राघो मारोइन नत।
गुर गोबिंद संतान सू रांम बांम साचै मतै ॥३३६

राजांबाई की टीका

इंदव राजां रु रांम मधुब्रन आवत धाम रखे नहि संत जिमाये।
छंद मारग को बरची न उदार सु, हाथनि मांहि करा दिठ आये।
मोल हुते रुपया सत पांचक मामा गये तिन को पहुराये।
जोनि कही पति को सखि रीझत ब्याज लये धरि आइ जिमाये ॥५३९

मूल

छपै जुगल बंस बेमाल की ते किसोर आदर करी ॥
पगनि घुंघरू साजि बाजि, मग बरपै निरत्यौ।
कृष्ण कलस धरि सीस, न्याय आपन जस बरत्यौ।
नूमल गिरा उद्योत भक्ति की रीति उचारन।
सीस सुद्ध रस रासि साप पवरज सिर धारन।

बय छोटी गुन है बडे, जग मै महिमा बिसतरी।
जुगल बात खेमाल की, ते किसौर आदर करी ॥३३७

किसौर की टीका

इदव छंद
छाडत देह खिमाल भरे द्रिग, पूछत है सुत खोलि कहीजे।
देन कही जु भरयौ घर सपति, बात रही जुग सो सुनि लीजे।
मानि वडाइ समाइ रही बुधि, नाहि बनी मन पै अब खीजे।
सीस धरयौ कलसा जल नावत, नूपर साजि न निर्तत भीजे ॥५४०
होत सबै चुप काम सु डीलहि, नाति किसौर कह्यौ मम दीजे।
बात करौ जुग जोलग जीवत, ऊठि मिलै निहचै यह कीजे।
धाम चले सुख पाइ लयो पन, साधत है निति भाव सु भीजे।
बै लघु भक्ति बडी बिसतारत, साधन सेवत है सब रीझे ॥५४१

मूल

छपै
फलत बेलि खेमाल की, मधुर महा अति पोंन फल ॥
पग्यौ प्रेम परपवक, पथक पक्षी जन पावत।
हरीदास हद करी, हस हरि-भक्त लडावत।
राम रीति वह प्रीति, अनन्य मन बाचक कायक।
हरि प्यारे गुर राम, तिनू कू पूजन लाइक।
राघो साध निहारि कै, प्रफुलत ह्वै हिरदौ कवल।
फलत बेलि खेमाल की, मधुर महा अति पोंन फल ॥३३७
अति उदार कलिकाल मैं, निर्मल नीवा खेतसी ॥
निति ह्वै कथा निकेत, दरस सतन को पावै।
गगन मगन गलतान, उभै भ्राता जस गावै।
छाजन भोजन देइ, भक्ति दसधा के आगर।
रामहि रटि राठौर भये, तिहु लोक उजागर।
जन राघो वढ्यौ अक्रूर उर, हाथि चढी निधि हेतसी।
अति उदार कलिकाल मे, निर्मल नीवा खेतसी ॥३३८
प्रेम मगन कात्याइनी, देत वारि तन के वसन ॥
गोपिन ज्यौं आवेस, हो गदगद सुर ग्रीवां।
जगत अजा परपंच, रहत बैरागह सींवा।

बसी जात मग आप, पात ऊर्ध्व सुर भगवत।
झींझ मजीरा मृदंग, जानि ये पादप बजवत।
राघो द्रुम-दल पात लगी बोलत सुनि होवैं प्रसन।
प्रेम मगन कात्यायनी, बैत वारि तन के बसन ॥५३६
गोपाल विरहि गोपी भरी, ज्युं मुरारि वेही तजो ॥
मलत देस मैं गांव, बिमूंदा परगट होई।
साध सभा परमांण, महोछव उरम सोइ।
भ्रमी नूंपर साजि, स्याम-सुंदरहि रिझायो।
प्रांन पयानौं कीयो, देसी जगदीस दिखायौ।
राघो औसी को करै प्रीति मांहि माहीं तजी।
गोपाल विरही गोपी बरत, ज्यौं मुरारि वेही तजी ॥३४०

मुरारिदासजी की टीका

इंदव दास मुरारि जु भूपति के गुर, न्हाइ र आवत कांन परीजे।
छंद पूजन मेक चमार करै कहि पाम चर्नांमृत को जम लीजे।
जात भमे घरि कांपि उठ्यौ वह दै हमकौ अब पांम करीजे।
नीच कहै हम तें मति ऊचहि, ब्रामत ने तव यौं कहि भीजे ॥५४२
नन बहै जल गो मब है दुख हौ तुम भीर सु मोहि न छाजे।
लेत भये हठ सौं जनता पट जाति न ले हरिभक्तिहि काजे।
बात भई सब गांव स निंदत, भूप सुनी यह बाम सुहाजे।
देखन आत भयौ प्रभु जी वह भाव नहीं अखि यौ उन राजै ॥५४३
पूजन सू अति हेत गये तजि, भूप दुखी सुनिकै यह बातें।
होत समाज समेस्तर मैं निति दीखत नांहि सक्यौ उतपातें।
स्यांन चले जित दास मुरारिहु दडवत करि है प्रभु-पातें।
देखत नां मुख फेरि दई पिठि लोग कहै गुरहु सिष क्यातें ॥५४४
जोरि खरौ कर दीन कहै अति दंड करौ सिर यौं मुख भाखी।
नां घटयौ मम भाप कही घटि, मांनि करी बहती दुख राखी।
होत खुसी सुनि कै दिसटांतहि मै घरमींक कही बहु साखी।
भ्रात भये सुनि संत पधारत होत समाज उसौ सब दाखौ ॥५४५
भौत गुनी जन गावत गावत साधन के चित स्वामि न देखैं।
आप उठे पग घूघर साजि र सात सुरैं त्रिम ग्राम बसेखे।

आरन जान समैं रघुनाथहि, गात चले तन जीवन लेखै।
होत सवै दुख दास मुरारि न, पासि गये हरि कै अवरेखैं ॥५४६

चतुरपथ बिगति बरनन—मूल

छपै वै च्यारि महंत ज्यूं चतुर ब्यूह, त्युं चतुर महंत नृगुनी प्रगट ॥
सगुन रूप गुन नाम, ध्यान उन बिबिधि बतायौ।
इन इक अगुन अरूप, अकल जग सकल जितायौ।
नूर तेज भरपूरि, जोति तहां बुद्धि समाई।
निराकार पद अमिल, अमित आत्मां लगाई।
निरलेप निरजन भजन कौं, सप्रदाइ थापी सुघट।
वै च्यारि महत ज्यूं चतुर ब्यूं, त्यूं चतुर महत त्रिगुनी प्रगट ॥३४१
नानक कबीर दादू जगन, राघो परमात्म जपे ॥
नानक सूरज रूप, भूप सारै परकासे।
मघवा दास कबीर, ऊसर सूसर बरखा-से।
दादू चद सरूप, अमी करि सब कौं पोषे।
†बरन निरजनी मनौं, त्रिषा हरि जीव सतोषे।
ये च्यारि महत चहु चक्क मैं, च्यारि पथ निरगुन थपे।
नानक कबीर दादू जगन, राघो परमात्म जपे ॥३४२
इन च्यारि महत त्रिगुनीन की, पधित सूं निरजन मिली ॥
रामानुज की पधित, चली लक्ष्मी सूं आई।
बिष्णुस्वांमि की पधित, सु तौ सकर तै गाई।
मध्वाचार्य पधित, ग्यांन ब्रह्मा सुबिचारा।
नींबादित की पधित, च्यारि सनकादि कुमारा।
च्यारि संप्रदा की पधित, अवतारन सूं ह्वै चली।
इन च्यारि महत त्रिगुनीन की, पधित निरजन सूं मिली ॥३४३
जन नानक दादूदयाल, राघो रवि ससि ज्यूं दिपै ॥
मध्वाचार्य कै मत ब्रह्मा, बिष्णस्वामि कै पति उमा।
नीबादित कै सनकादिक मत, रांमांनुज कै मत रंमा।
कलपबृक्ष पुनि मध्वाचार्य, बिष्णस्वामि पारस तक्ष।
नीबादित चिंतामनि चहुदिस, रामानुज कलि कामदुघा लक्ष।

---

†टिप्पणी—बूद

ये च्यारि सम्प्रदा च्यारि मत, सत ऊपरि कसहू न छिपे।
अन नानक दादूदयाल राघो रवि ससि ज्यू दिपे ॥३४४

श्री नानकजी को पंथ बरनन

उत्तर दिस उत्तम भयो, नृगुन भक्त नानक गुरू ॥
खत्रीकुल उतपत्ति ताहि सबही जग जाने।
मिले आइ प्रब्रह्म, परावत पाछी ताने।
कह्यौ पाइ रे दूध कही ये छोटी पाछी।
दुहण को तौ बैठि, दुही तब आई आछी।
सीस हाथ धरि यौं कह्यौ, नृगुन भक्ति बिसतार कुरू।
उत्तर दिस उत्तम भयौ नृगुन भक्त नानक गुरू ॥३४५

इंदव चित की वृत्ति जोति करि हरि प्रीति सु, नांव सु रस भयो मसैं नानक।
ग्यांन करे मुख ग्यांनन उच्चरे, रांम भजे रस प्रेम को पानक।
वेवस येक प्रतीत प्रचम्भत, उत्तर देस मैं ऊपजे मानक।
राघो करारी महा करणी जित काम करम्म के दै गयो धानक ॥३४६

छप्पै श्रीनानक गुरत ऊपजे उभै भ्रात हरि भक्त ये ॥
लछमीदास प्रहू दास तास के साहिबजादा।
श्रीचंद के बैराग उदासी का परसादा।
श्रीचंद के चतुर सिष, चहूं दिसा पुजाये।
उत्तर पूरब दक्षिन पश्चिम ग्यानी बनाये।
अलमस्त फूल साहिब भगत भगवत हसन दासू प्रिये।
श्रीनानक गुर तें ऊपजे उभै भ्रात हरि भक्त ये ॥३४७
श्रीनानक गुर पद्धित चली ताको करों बखांन जू ॥
निराकार निरलेप निरंजन नानक मिलिया।
अनक अंगद भये रांम भजि रांमहि रलिया।
अमंद के पुनि अमरदास, अमरापद पायो।
रांमदास ता पाटि रांम कै अर्जुन भायो।
हरि गोविंद हरिराइ जन हरि कृष्ण तजी हद ग्यांन जू।
श्रीनानक गुर पद्धित चली ताको करों बखांन जू ॥३४८

इति नानक पंथ

अथ श्रीकवीरजी साहिब कौ पथ वरनन—मूल

छपै [1]पूरव महि प्रगट भये, जन कबीर निरगुन भगत ॥
कासी वाहरि निकसि, कहूं कौ जात जुलाहौ।
वृक्ष तरें इक वाल परचौ, सो वोल-वुलाहौ।
ताकौ लै घर गयौ, सौंपि तिरिया कूं दीनौं।
ग्याती सकल वुलाइ, वहुत उछव तिन कीन्हौं।
वडे भये रांमहि भजे, काहू सूं नाहीं सकत।
पूरव महि प्रगट भये, जन कवीर निरगुन भगत ॥३४९
जगत भगत षटदरस सू, रहे कवीर निसक मन ॥
परब्रह्म गुर धारि, भरम सव द्वैत त्यागियो।
पडो जरत उवारि, राजगृह प्रेम पागियो।
वालिध द्वै वर पाइ, भक्त षटदरसन पोषे।
ब्राह्मण भूठहि न्यौत्या ये, वह महत सतोषे।
स्याह सिकदर जीतियौ, सभा बीचि नरस्यघ वन।
जगत भगत षटदरस सू, रहे कवीर निसक मन ॥३५०
अथाह थाह पांऊं नहीं, क्यू जस कहू कवीर कौ ॥
श्री राम निरंजन रूप, जाति जग कहै जुलाहौ।
कासी करि विश्राम, लीयौ हरि भक्ति सु लाहौ।
हींदू तुरक प्रमोधि, कीये अग्यान तें ग्यानी।
सबद रमैंणी साखि, सत्य सगला करि मानी[1]।
प्रमानद प्रभु कारणैं, सुख सव तज्यौ सरी (र) कौ।
अथाह थाह पाऊ नहीं, क्यौं जस कहू कवीर कौ ॥३५१

---

१ जांनि।

---

[1]'स' प्रति का अतिरिक्त पद—

मोटो भगत कवीर, भगत सव मांहे सीरोमन।
जामन इमृत भाव, पीय रस भगत करौ मन।
इक रांम रांम रस राम, जप मुख इम इमृत रस।
भगतिन हित वैराग, कथ नीत हरि जस।
कुल नीचो करणी वडी, कव लग वात वखांनिये।
भगतन के सिर सेहरो, असै कवीर जांनिये ॥

मनहर छंद

अक्षर अराइ क बनाइ न बिग्यान तेग,
कलि मैं कबीर ऐसे धीर भये धर्म के।
मारयौ मन मदन से सदन सरीर सुख,
काटे माया फंदन से बंधन भ्रम के।
निडर निसंक राव रंक सम तुल्य जाके,
सुभ न असुभ नाम मैं न काम-कर्म के।
कीरति लीयो जनम जिहान मैं न छाड़ी देह
राघो कहै राम मिलि कीन्हे काम मर्म के ॥३५२

मूल

छप्पै

ज्यूं नारांइन नव निरमये त्यूं श्री कबीर कीये सिष नव ॥
प्रथमहि दास कमाल, तृतीय है दास कमाली।
पद्मनाभ पुनि द्वितीय, चतुरथय राम कृपाली।
पंचम षष्टम मोर सीर सप्तम पुनि ग्यांनी।
अष्टम है धर्मदास नवम हरदास अमांनी।
भवका नव नर तिरन कौं जन राघो कह्यौ पयोध भव।
ज्यूं नारांइन नव निरमये त्यूं श्री कबीर कीये सिष नव ॥३५३
कबीर कृपा तैं ऊपजी भक्ति कमाली प्रेम पर ॥
सदा रह्यो लैलीन, लीन की अवधि अपारा।
अमी दया सतकार झूठ जांन्यौ संसारा।
श्री गोरख मन भई कमाली पारिख लीजे।
प्रसन जगायो आइ हमारी पन भरीजे।
राघो डारयौ मेख दर उमंगि पन परियौ सु धर।
कबीर कृपा तैं ऊपजी भक्ति कमाली प्रेम पर ॥३५४
श्री कबीर साहिब प ग्यांनी पायो ग्यान कौं ॥
पश्चिम दिसि उपदेस, कीयौ परमारथ काजै।
भक्ति ग्यान बैराग सहित अबोपर राजै।
काम क्रोध मद मोह लोभ मत्सर नहीं काई।
धर्म सील संतोष दया दीनता सुहाई।

राघो रोस रती न उर, दूरि कीयो अभिमान कौ[1]।
श्री कबीर साहिब्ब पै, ज्ञानी पायरे ज्ञान कौं ॥३५५
श्री कबीर कृपा करी, धर्मदास परि धर्म की ॥
करता सति साहिब्ब, और दूसर नहीं जानें।
भक्ति धरी अति गूढ, देखिकै सब हैरानें।
चौकौ अरु आरती, पान परवाना दीजे।
बदी छोडिहि सत, सेव मन बच क्रम कीजे।
गढै मडलै धांम भल, राघो कही सु मरम की।
श्री कबीर कृपा करी, धर्मदास परि धर्म की ॥३५६
गुर धर्मदास कौ धर्म धनि, नींकै धार्यौ सिष इन ॥
चूडामनि चित चतुर, पुत्र कुलपती बस के।
सर्बंगि साहिबदास, मूल दल्हरण अंस के।
जाग[2] जग सूं तरक, भक्ति भगता कौं प्यारी।
मुर्ति[3] गुपाल श्रुति साधि, सकल सत-सगति प्यारी।
सिष पांच प्रसिध या कबित मैं, राघो नाती द्वै कहिन।
गुर धरमदास कौ धर्म धनि, नींकै धार्यौ सिष इन ॥३५८

इति कबीर साहिब को पथ

अथ श्री दादूदयालजी कौ पथ बरनन

छपै दादू दीनदयाल के, जन राघो हरि कारिज करे ॥टे०
दल भये साभंरि सात, सबनि के भोजन पायौ।
अकबर्स्या सूं मिले, तेजमय तखत दिखायौ।
काजी कौ कर गल्यौ, रूई की रासि जराई।
चौरी पलटे अंक, समद मैं भ्याज तिराई।
साहिपुरै साहज मिले, हरि प्रताप हाथी डरे।
दादू दीनदयाल के, जन राघो हरि कारिज करे ॥३५६
दादू जन दिनकर दुती, बिमल बृष्टि बाणी करी ॥
ज्ञांन भक्ति बैराग, भाग भल सबद बतायौ।
कोड़ि गृथ को मंथ, पथ सखेप लखायौ।

१ कू। २ जागू। ३ सुर्ति।

बिसुद्ध बुद्ध अविरुद्ध सुद्ध सर्बग्य उजागर।
प्रमोमद परकास भास निगर्गुण महाभर।
बरन बूंद साखी सलिल पद सरिता सागर[1] हरी।
दादू जम बिमुखर बुती, बिमल बृष्टि बाखी करी ॥११०

टीका

मनहर सागर मैं टापू तामैं तीन सिष ध्यान करैं
छंद येक कूं जु आग्या भई जीव निसतारिये।
नभवानी भये ऐक सिष सो गुपत भये
पीछे दोइ रहे उन प्रभु उर धारिये।
धरा गुजरात तहां नदी बही जात येक
ब्राह्मण सु न्हात सौच पूजा को संवारिये।
पुत्र की चाहि अति बैठे साबरंसी बिधि
पीजरा आयौ तिरत याकौं लौ संभारिये ॥५४७
देख्यो खोलि ताहि येसैं सरिका सो मांहि उन
मयो गरिबाहि यह प्रभु मोहि दयो है।
भई नभबानी भेइ उघरैगे प्रानी या सो
सति[2] सुनि जानी मन भचभा जु भयो है।
लोधीराम नाम नागर ब्राह्मण धाम,
लछि जानैं धाम बहु लेके घर गयो है।
बांटत बधाई पुत्र हौ न मही भाई मेरे
माया की लुटाई धूरि जानि कैं रलैयो है ॥५४८
बडे भये दादूजू बालकनि मांहि खेलैं
वृद्ध रूप धारि हरि पीसा आनि मांग्यौ है।
देखि बिकराल रूप बाल सब भाजि गये
रहे येक दादूजु मांथे भाग जाग्यौ है।
कहै मैं जु ल्याऊं पीसा ठाके रही इहां ईसा
बेगि जाइ देख्यौ खीसा पीसा हाथ लाग्यौ है।
दौरि कैं सताब आयौ प्रभु यह पीसा ल्यायो
कीजिये जु मन भायो मेरो डर भाग्यौ है ॥५४९

---

१ साबुर। २ संति।

सूधौ कर कीयो जब प्रभु जानि लीयौ तत्र,
नग्र मैं तू जाहु अब याके पान लाइये।
सुनित सिताव गये तंवोली तैं पान लये,
आनि कै हजूरि भये हाथ ले चवाइये।
रीझि कै त्रिलोकनाथ सीस पै जु धर्यौ हाथ,
ऊमगि चूंना पान काथ दादू कौं खवाइये।
अतरध्यान भये हरि दादूजू गये घरि,
मन मैं विचारी फिरि ध्यान लै धराइये ।।५५०
मिष्टबानी करी तामैं गायो हरी प्रेम ते जु,
प्रगटे साभरी दादू स्वाग नही धर्यौ है।
दिवालै पद गावै असुरन कू न भावै,
कोउ आइकै सतावै तासू रोसहु न कर्यौ है।
काजी आइ दीन्ही थाप मनमैं न ल्यायो आप,
ताही समैं चढी ताप भुजा दूखि मर्यौ है।
येक दिना फिरि गाये पाच सात सुनि आये,
पकरि उठाये लै कै भाखसी मैं जर्यौ है ।।५५१
दिवालै भाकसी दोऊ जगा बैठे खुसि सब,
काजी रहे खसी कछु पार नही पायो है।
सुनी सिकदार सब दुनी की पुकार अति,
दादू डारौ मारि हाथी मत्वारौ झुकायो है।
नीरै हू न जाइ पीछे पीछे धरै पाइ बैठौ,
स्यघ गरराइ देखि दूरि तै नसायौ है।
छीत मडवाई कोऊ दादू कै जु जाई दैगौ,
सौं रुपैया भाई असौ बाचिकै सुनायो है ।।५५२
येक साहूकार पनधारी द्रसन कौं गयो जब,
दादू असै कह्यौ दड छीत बाचि दीजिये।
पकरि लै जाई अक छीत पलटाई कोऊ,
दादू कै न जाई दड ताकै पासि लीजिये।
येक दिना सात नौते येकठे ही आये होते,
बुलाबे कौं आये जेते चालि करि जीजिये।

प्रभु सात देह धरि सबही के ग्रेमें[1] धरि,
हरि येक रूप पीछे हू रहीजिये ॥५५३
काजी फिरि कही दादू मारौंगो सही अब,
कई धर मही बहु विनां आगि बरी है।
बैस बिन बारे उन सबही उबारे प्रभु,
पद सुनि धारे उर बासनां सु जरी है।
साहिपुरे[2] ग्राम तहां रूप द्वै दिखाये हम,
मूले फेटा धरी धरि भावनां सु फरी है।
साद्र[3] मैं मुकायौ हाथी दादू के है साथी प्रभु
चरन छुवाइ सूंडि सीस धरि धरी है ॥५५४
सासस ही साहू सामैं सात कोरि माल भरयौ
गरचौ हैं गरब ब्याज सागर मै भरी है।
अपने जो इष्टदेव सबही समारे प्रभु,
पचि पचि हारे बहु मूढ़ ते जु मरी है।
देसबु ढूंढार तहां मांनस्यंघ राज करै
सहर आमेर जहां गावै दादू हरी है।
उमर सेखन म जु चढ़ि येक साहूकार
दादू दादू कह्यौ टेरि फेरि ब्याज तरी है ॥५५५
सागर के तटि देव नगनिकटि जहां
सातसै ही साहू सेठ मंद आदि आये हैं।
दादू गुर आये जल बूडत जिवाये बहु
कपरा भटाये अर्घ मास मैं सुखाये हैं।
नांनां पकवांन गिरि मेवा मिष्टांन जामैं
द्विज अरु साध षट-दरसन जिमाये हैं।
राघो कहै सन्यासी हिंगोल जु कपिल मुनि
मांमावती आइ मुनी बचन सुनाये हैं ॥५५६
अकबर महिमा सुनि दादू जु बुलाइ लये
गये बेगि गंग मांहि छीम मां लगाई है।

---
१ ग्रेमें। २ साहिपुरे। ३ साद।

अकबर बीरबल बुधि के आगर दोऊ,
दादू अनभय के घर चरचा चलाई है।
गोष्टि समझायौ गैबी तखत दिखायौ ताहि,
जाहि तेजवत देखि करत बडाई है।
गऊ छुडवाई कोउ जीव न संताई अरु,
सौगन कढाई अजू साहिब दुहाई है॥५५७

जुगम[1]-मूल

छपै दादूजी के पथ मैं, ये बावन द्रिग सु महत॥
प्रथम ग्रीव मसकीन, बाई द्वै सुन्दरदासा।
रज्जब दयालदास, मोहन च्यारचूं प्रकाशा।
जगजीवन जगनाथ, तीन गोपाल बखानूं।
गरीबजन दूजन, घड़सी जैमल द्वै जांनूं।
सादा तेजानद, पुनि प्रमांनंद बनवारि द्वै।
साधूजन हरदासहू, कपिल चतुरभुज पार ह्वै॥३६१
चत्रदास द्वै चरण, प्राग द्वै चैन प्रहलादा।
बखनौं जग्गोलाल, माखू टीला अरु चादा।
हिंगोलगिर[2] हरिस्यघ, निराइण जसौ सकर।
झाझू बाझू सतदास, टीकू स्याम हि बर।
माधव सुदास नागर निजाम, जन राघो बर्णि कहत।
दादूजी के पथ मैं, ये बांवन द्रिग सु महत॥३६२

श्री स्वामी गरीबदासजी कौ बरनन

छपै दादू दीनदयाल की, गरीबदास गादी तपे॥
भजन सील की अवधि, सेस सिमू सुत जानू।
बींन गांन परबीन, दूसरे अज सुत मांनौं।
रिवसुत सम दातार, सत पर्षत मिथलेस[3]।
सिंध-सुता कर चढी[4], सु तौ सची नहीं लेस।
दिल्लीपति झ्यागीर दत, देत ताहि नांहि न लिपे।
दादू दीनदयाल की, गरीबदास गादी तपे॥३६३

---

१. जगम। २ हिंगोपालगिर। ३ मथलेस। ४ लगी।

प्रभु सात देहु धरि सबही के जयें धरि,
हरि येक रूप पोथी हू रहोलिये ॥५५३

कामी फिरि कही दादू मारौंगो सही भ्रम,
कई घर मही बहु बिना आगि बरी है।
बैल बिन जारे उन सबही उबारे प्रभु,
पद सुनि धारे उर बासना सु जरी है।
साहिपुरे[१] आये तहां रूप द्व दिखाये हम,
भूसे फैंटा भरी धरि भावना सु फरी है।
साहू[२] मैं भुकायौ हाथी दादू के है साथी प्रभु
चरन धुवाइ सूंडि सीस परि धरी है ॥५५४

सातसैं ही साहु सामैं सात कोरि माल भरयौ
गरयौ है गरब ब्याज सागर मैं भरी है।
अपने जो इष्टदेव सबही सभारे प्रभु,
पचि पचि हारे बहु बूडे ते जु तरी है।
देसहु ढूंढार तहां मानस्यंघ राज करै
सहर आंबेर जहां गावै दादू हरी है।
ऊपर सेवन पै जु चढि येक साहूकार
दादू दादू कह्यौ टेरि फेरि ब्याज तरी है ॥५५५

सागर के तटि देव नगनिकटि जहां,
सातसैं हो साहु सेठ मंद आदि आये हैं।
दादू गुर आये जस सूरस जिवाये बहु
कपरा बटाये अर्थ मास मैं सुवाये हैं।
नांगा पकवान गिरि मेवा मिष्टान जामैं
दिज अरु साध षट-दरसन जिमाये हैं।
राघो कहै सन्यासी हिंगोल जु कपिल मुनि
मांवावती माइ गुनी अचम सुनाये हैं ॥५५६

अकबर महिमां सुनि दादू जु बुलाइ मये
गये येमि गैल मोहि दोल मां समाई है।

१ बैल। २ सांहिपुरे। ३ सांह।

अजमेरि सांभरी सहेत कछु द्रब्य लेहु,
साहिब कै नांइ तुम देहु अर खावई।
राघो कहे गैब के तुरग दिखलाइ दीये,
झागीर पाव लीये ग्रीब मन भावई ॥३६७

स्याह जहागीर जब चले अजमेर पीर,
सुने हैं गरीबदास द्रसन कौं आयो है।
कूवा अरु बावरी तलाब सब सूके परे,
ग्रीषम की रुति सब कटक तिसायौ है।
गायो है मलार मेघ बीनां झुनकार करि,
सावन की घटा जैसे घन बरखायो है।
दोऊ कर जोड़ि लीये सांभरि अजमेरि दीये,
स्वांमीं न कबूल कीये स्याम न भायो है ॥३६८

चेतन चिराक बदा दादूजी दयाल नंदा,
प्रगट प्रचड देग तेग दोऊ चढतौ।
तेजसी त्रिकाल-द्रसि[1] प्रचाधारी गुर प्रसि,
नांवकौ लिहारी भारी रांम रांम रटतौ।
सीलहू सतोष ध्यान ग्यांनवान भागवान,
क्षमा दया ध्रम जांन गुरबांणी पढ़तौ।
रघवा दैदीपमान ब्रह्म मैं समाइ प्रांन,
लोक परलोक जस रह्यौ बोल बढ़तौ ॥३६९

अन्यत

मनहर छंद

भूपनि मैं महा भूप रूप तौ अनूप जाकौ,
चतुरन मे चतुर सु तौ गुनीयन मैं गुनी है।
बुधि कौ बाख्यान ज्ञांन जानिये बासिष्ट जैसौ,
सक्र सौ ध्यान अटल सेस धुंनि सुनीं है।
भक्ति तौ नारदा सी, सारदा सौ शबद जाकौ,
जोग जुगति गोरख सौ मुनियनि मैं मुनी है।
गांऊ तौ गरीबदास औरं की न करौं आस,
कहत नरस्यघ अैसौ दूसरो न दुनीं है ॥३७०

---

१ द्रसि।

मनहर दादूजी के पाटि सप्यौ गाइये गरीबदास,
जाकै पासि रिधि सिधि भ्रमभंगी भावई।
गोबिंद गुमानदास आदि ऊंकार-नाद,
छबिसौं छतीस राग प्रबंध ज्यूं गावई।
नारद ज्यू बीनकार जग मधि जै-जै-कार,
गुपत गुनदास सोंन प्रगट बजावई।
राघो कांनी रांम रीति हरिदै हरिकी सूं प्रीति,
भगति को पुंज भगवत जी कों भावई ॥३६४

दादूजी सुजान सूरवीर धीर सापुरस,
गरीबनिवाज यौं गरीबदास गाइये।
जाको जस कहत सुनत सुधि बुधि बढे
रिजक फराक होत ध्यान ग्यांन पाइये।
हिकमति हुंनर हकीम लुकमान के से,
अति ग्यांनी गाजी ग्रब निति ही नमाइये।
तन मन धन अर्पि रांमजी रिझायो जिन,
राघो सोचें राति दिन सो' न क्यू' रिझाइये ॥३६५

दादूजी कै पाटि दीप गाइये गरीबदास
जाकै पासि रिधि सिधि ब-बं-कार देखिये।
बक्ता जैसे ब्यास मुनि भजन प्रहलाद धुनि,
नरत मैं नारद ज्यूं गुनकों बसेखिये।
भक्ति को पुंज भगवंत रच्यौ भुव परि
रही तिको सारौ सनकादिक मैं लेखिये।
राघो मोरी प्रम पुंज प्रसिधि प्रबीण पुंज[१],
गुरकै पछोपै गरवाई अति पेखिये ॥३६६

दादूजी के पाट परि गाइये गरीबदास
जाकै पासि त्रिस्मीपति प्रसन कौं आवई।
ग्रीषम की समैं महा तृषा जु तरस लगी,
सब ही की चित भयौ घटा बरसावई।

---

१ गौरव। २ पूत।

खेत मै न पाये सोऊ लै गयो उठाइ कोऊ,
आयौ पुर मथुरा मैं सती सुनी नारी[1] है।
राजा मनि आंनो सब छाडी रजधानी कीजे,
गुर ब्रह्मग्यानी मिले दादू मनि-धारी है॥३७७

रजबजी कौ बरनन

छपै दादू कौ सिष सावधान, रज्जब अज्जब कांम कौ॥
निराकार निरलेप, निरंजन नृगुन भायौ।
सबंगी तत कथ्यौ, काबि सर्व ही की ल्यायौ।
साखि सबद अर कवित, बिना दिष्टात न कोई।
जितने जग प्रसताव, रहे कर जोडें दोई।
दिन प्रति दूल्है ही रह्यौ, त्यागी सही सु बाम कौ।
दादू कौ सिष सावधांन, रज्जब अज्जब काम कौ॥३७८

मनहर दादूजी के पंथ मैं महंत संत सूरबीर,
रजब अजब सोहैं उनकै पटतरे।
नारद कै ध्रू प्रहलाद रांमचंद्र कै हनवंत,
कासिब-सुवन जैसैं अरक उगत रे।
गोरख कै भर्थरी, रांमानंद के कबीर,
पीपा कै परस भयौ धर्म-धारी संत रे।
राघो कहै दत कै दिगंबर संकर सिष,
जासूं भये दस नांम वोपमा अनंत रे॥३७९
रज्जब अजब राजथांन आबानेरि आये,
गुर कै सबद त्रिया ब्याह संग त्याग्यौ है।
पायो नर देह प्रभु सेवा काज साज येह,
ताकौं भूलि गयौ सठ बिषै रस लाग्यौ है।
मौड खोलि डारचौ तन मन धन वारचौ संत,
सीलब्रत धारचौ मन मारचौं काम भाग्यौ है।
भक्ति मौज दीनी गुर दादू दया कीन्ही उर,
लाइ प्रीति लीनी माथै बड़ौ भाग जाग्यौ है॥३८०

---

१ भारी।

सुन्दरदासजी बड़ा को बरनन

इंदव　दादू दयाल की सास सिरोमनि आसे परे घटकोपमा लाइक।
९८　नारद ज्यौं निरखे निरभ भये, ग्यांन परापरी बेहद बाइक।
भौंर ज्यूं भ्रम उड़ायौ प्रकासकौं ऐसो बनी सिष साध सहाइक।
राघो कहै पुनि वृद्धि पछोपा की येक सूं येक अनूप महाइक ॥३७१
इम रांम रसा रसबसी बड़ो, सति सुन्दरदासजी पंथ मैं पूरौ।
गोपि रह्यौ पसरयौ न पसारे मैं प्यारे मैं ऊपज्यौ ग्यांन अंकूरौ।
निरबोध निरोध[1] कीयो निज उतरयौ पट[2] मैं पट ह्वै गयो दूरौ।
राघो कहै गुर दादू की दौलति मोषि भयौ करि मंगल पूरौ ॥३७२
उत्तर देस नरेस कौ बालक आइ मिल्यौ पतिसाहि कै ठाईं।
पेसि दयो मजबूत मवासै मैं जात ही रारि परी परयौ घाई।
चाकर लोग बन्यांकि भये भजि, ठाकुर खेत रह्यौ उहि ठाईं।
राघो कहै सति सुंदरदासजि के रखपाल भये तहां सांईं ॥३७३
देस को लोग मिल्यो मथुरा मधि आइ कहे समचार सती के।
अब ता गृह मांऊ मही गृह उपज्यौ, जाइ परों काहू पाइ जती के।
त्यागे हथ्यार छुरी कढ़िबो सब आयुध छाड़ि दोये गृहसती के।
राघो कहै सति सुंदरदासजि चालि गये गुरज्ञान पती के ॥३७४
परका ले मिठाई भरी जब आग सु नाग कही सुनि दास रे भाई।
सांभरि मैं प्रगटे सुगुरु करि दादू कै पाइ परो तुम जाई।
मांनि प्रतीति चले प्रति आतुर प्रांन की प्रीति मिले सुखदाई।
राघो कहै सति सुंदरदासजि मिले अब पोस हि मैं सुधि पाई ॥३७५
भगवौं करि भेष रहे अब येकहू देस रहैं मनि-हीन भुजंगा।
काहू मैं आइ पडे पद स्वामी के मानौ सुमेर तैं उतरी गंगा।
ज्यूं घर सूं समकालिक अबर, ऐस चले जैसे हंस बिहंगा।
राघो कहै सति सुंदरदासजी दादूदयाल के सोभित संगा ॥३७६

मनहर　बीकानेरि राजा भयु भ्राता नांम सुंदर हौ
९९　　बड़ौ सूर बीर महा धर्म तेग धारी है।
पातिसाहि फौज दई काबिल की मुहिम भई
सत्रुन सौं मरे आप मांडं परे भारो है।

१ निरबोध नरोध। २ घर।

पाव पतिसाहि रा परसि चाकर थवयौ,
अलि थवयौ परसि परजात[1] फल चाड़ ।
आन रौ ग्यान सुनि थिर न आतम भई,
यौं रजब री कथा सुनि परी अनि आड ।
भूख भागी जवै भेटि अन सूं भई,
प्यास भागी तवै नीर पीयौ ।
रजब री रहम सू फहम लाधो सवै,
यौं अटल रटि मोह नौंर कजीयौ ॥३८४

सास्रो

रज्जब दोऊ राह बिच, करडी तुभ्भ कांण ।
मनमथ राख्यौ मुरड़ि कै, जुरड़ि न दीधो जाण ॥[३८५]

इदव छद ज्यूं वसि मत्रक आवत बीर, जहा जस योग तहा तम मूके ।
ज्यू धर्मराजक काज करै सब, दूत अनेक रहै ढिग ढूके ।
ज्यू नृप के तप तेजत कपत, पास रहैं नर आइ कहू के ।
अैसहि भांति सबै दृसटत सु, आग खडे रहि रज्जबजू के ॥३८६
सभ्भ समैं जु सबै सु रहो घरि, आत चली जस बछक रागैं ।
भूपति कौ भय मानि दुनी जु, अनीति बिसारी सुनीति सु लागैं ।
मोहन ज्यू बसि मंत्र क बीर, प्रभाति चटा-चट सार कु जागैं ।
यौंहि कथाक समैं दिसटतस, आइ रहै घिरि रज्जब आगैं ॥३८७

मोहनदास मेवाडा कौ बरनन

छपै दादू दीनदयाल कै, मोहन मेवाडौ भलौ ॥
कीयौ स्वरोदय ज्ञान, सूर ससि कला बताई ।
नाडी त्रिय तत पच, रंग अंगुल मपवाई ।
रोगी गरभ प्रदेस, जुद्ध पग बार गणाये ।
लगन काल अकाल, असुभ सुभ काज लखायें ।
हठ जोग निपुन राघो कहै, समाधिवत गुण कौ गलौ ।
दादू दीनदयाल कै, मोहन मेवाडौ भलौ ॥३८८

---

१. परिजात=कल्पवृक्ष ।

स्या भयोगीर पै मिलाइ परवांनों स्यामी,
कंचन को अंकुस घड़ायो मन पीजिये।
हारे कोऊ बरषा मैं पालकी कहार करों,
जीते सु तौ पवित्र है ताकौं मह दीजिये।
बांवन अक्षर सुर सप्त छतीस भाषा,
मासूं उपरांति कम कवि सो कहीजिये।
रजब सौं प्रश्न करी है कवि चारण ने,
दुरसा है नांव ताको उत्तर मनीजिये ॥१८१

मुख सूं अक्षर अरु मुख सू सप्त सुर,
मुख सूं छतीस भाषा जग मैं बखांनियें।
व्यापक पुरख उर बचन रहत सोई
सिव अर ब्रह्मा बस लोकन मैं गांमियें।
दुरसा को भर्म भाग्यौ कहै मेरौ भाग जाग्यौ,
गुर उपदेस यही सिष मोहि आनिये।
पालकी अंकुस भये भेंट कीये रजबकी,
मन बच काय सेवा प्रीति सौंज मांनिये ॥१८२

छप्पय

ईडर तुरकां सिरताज पतिसाही दिलो तणी
कल्ला/ हिदवां सीस सिरताज रांसौं।
कंर राज सिरताज अधपति जु आंबेर रो
यों पंथ दादू तणों रजब जांणौं।
अष्ट कुल अचलां मेर सबरै सिरै,
नवकुली नाग सिर सेस मांणौं।
नव[1] अला तार मैं चंद सबरै सिरै
यौं पंथ दादू तणौं[3] रज्जब मांणौ ॥[१८३]

हींदवां हद भई साखि गीता कही,
तुरक मुसफरां दाखि मूंकी।
मनमै आतम जिती, भगत भाखा तिती
तठे रजब रा सबद सौं मोद चूकी।

---

१ सबैरै। २ नव नख। ३ तणौं।

पाव पतिसाहि रा परसि चाकर थवयौ,
अलि थवयौ परसि परजात[1] फल चाड़ ।
आन रौ ग्यान सुनि थिर न आतम भई,
यौं रजब री कथा सुनि परी अन्नि आड ।
भूख भागी जबै भेटि अन सूं भई,
प्यास भागी तबै नीर पीयौ ।
रजब री रहम सू फहम लाधो सबै,
यौं अटल रटि मोह नौर कजीयौ ॥३८४

साखी

रज्जब दोऊ राह बिच, करडी तुभझ कांग ।
मनमथ राख्यौ मुरड़ि कै, जुरड़ि न दीधो जाग ॥[३८५]

इंदव ज्यूं बसि मत्रक आवत बीर, जहा जस योग तहा तस मूके ।
छंद ज्यूं धर्मराजक काज करै सब, दूत अनेक रहै ढिग ढूके ।
ज्यूं नृप के तप तेजत कपत, पास रहैं नर आइ कहू के ।
अैसहि भांति सबै इसटत सु, आग खड़े रहि रज्जबजू के ॥३८६
सभ्र समैं जु सबै सु रहौ घरि, आत चली जस बछक रागे ।
भूपति कौ भय मानि दुनी जु, अनीति बिसारी सुनीति सु लागे ।
मोहन ज्यू बसि मंत्र क बीर, प्रभाति चटा-चट सार फु जागे ।
यौंहि कथाक समैं दिसटतस, आइ रहै घिरि रज्जब आगे ॥३८७

मोहनदास मेवाड़ा कौ बरनन

छपै दादू दीनदयाल कै, मोहन मेवाडौ भलौ ॥
कीयौ स्वरोदय ज्ञान, सूर ससि कला बताई ।
नाडी त्रिय तत पच, रग अंगुल मपवाई ।
रोगी गरभ प्रदेस, जुद्ध पग वार गणाये ।
लगन काल अकाल, असुभ सुभ काज लखायें ।
हठ जोग निपुन राघो कहै, समाधिवत गुण कौ गलौ ।
दादू दीनदयाल कै, मोहन मेवाडौ भलौ ॥३८८

[1] परिजात=कल्पवृक्ष ।

मनहर छंद

दादूजी के पंथ मैं बखेस जाके आंठौं जाम,
अति ही उदार मन मोहन मेवारे कौं।
ग्रासन भोजन[1] पांणी वांणी प्रवाह जाकैं,
सबको संतोष दे जिताव सबहारे कौं।
विद्या कौ बनारस पारस जैसे बेधे प्रान,
अति मन ऊजलो उजागर अजारे कौं।
राघो कहै जोग की जुगति करि गाये हरि,
पलटि सरीर सम रूप भरे बारे कौं ॥४८८

भांनगढ़ नगर मैं ब्राह्मण कौ बाल इक,
मृति पाइ गयो सोग भयो उर भारी पे।
मोहन कहत यह हम कौं चढाइ देहु
सबं ही कह्यो जु लेहु अब या बिचारिये।
बालक मे स्वास भरि बेगिहि उठाइ लीयो,
जोग की जुगति सब गौतम विचारिये।
मात पिता भईया र कुटंब मन और भयो
कहै सब देहु भ्रमु हमहि जु मारिये ॥४९०

जगजीवनदासजी को बरनन

दादू को सिष सरल चित जगजीवन जन हरि भज्यौ ॥
महा पंडित परवीन ग्यांन गुन कहत न आवैं।
बांणी बहु बिसतरी साखि द्रष्टांत सुहावें।
सबद कबित मैं रांम रांम हरि हरि यौं करणीं।
गुर गोबिंद जस गाइ मिटायो जामण मरणीं।
दिवसा मैं दिस आइ प्रभु, बरण[2]ग्रंम कुल जस तज्यौ।
दादू कौ सिष सरल चित, जगजीवन जन हरि भज्यौ ॥४९१

इंदव छंद

दादू के[3] पंथ दिप्यौ दिवसा जग मैं जगजीवन यौं हरि गायौं।
कीयो बुद्धि बिबेक सु ब्रह्म निरूपन जैसे महोनिसि रांम रिझायौ।
प्रेम प्रवाह कथा उर अंमृत आप पीयो रस औरन पायौ।
राघो कहै रसना रणजीति ज्यूं नांव निसांन निसंक बजायौ ॥४९२

---

१ जोमन। २ बहन। ३ की।

मनहर छंद
टहलड़ी सुथांन तहां मानसिंघ नृप आयो,
थार भरि ल्यायौ पाक भोजन जिमाइये।
कोऊ भाव धारी ल्यायो रोटी तरकारी वह,
लागी अति प्यारी मन भारी सुख पाइये।
रजो गुनीं दानौं मन राज सब ठानौं होइ,
बुद्धि ही कौ हांनौं ग्यान ध्यान जु गमाइये।
ऊ मूंठी भर रुध्र दुगध की झरी नृप,
देखि चुप करी जगजीवन न खाइये ॥३६३

बाबा बनवारी हरदास कौ बरनन

छपै
बाबौ बनवारी हरदास धनि, जिन गुरद्वारै सर्बस दीयौ ॥
दादू गुर द्रिगपाल, तेज तिहूं लोक उजागर।
सिष चहुं दिसा चिराक, भजन सुमरन के सागर।
तिन मधि बरनौं दोइ, उत्म उतराधा भ्राता।
सब दिन अर सब रैनि, रहैं हरि सुमरन माता।
राघो बलि बलि रहणि की, भजि भगवंत लाहौ लीयौ।
बाबौ बनवारी हरदास धनि, जिन गुर द्वारै सर्बस दीयौ ॥३६४

मनहर छंद
दादूजी के पथ मैं मगन मन माया जीति,
बाबौ बनवारी भारी सर्ब ही कौ भावतौ।
प्रमोध्यौ उत्तरदेस धर्म कीन्हौ परवेस,
निरजन निराकारजी कौ जस गावतौ।
रिधि सिधि लीयें लार भजन रदै देकार,
दरसन कै कारनै गुरू कै द्वारै आवतौ।
राघो बिधि सहित बिसेख पूजि गुर पाट,
छाजन भोजन सर्ब सतौं कौं चढावतौ ॥३६५
गुर चेला रांमति कौं निकसे सहस[1] भाइ,
दिन के अस्ति[2] भये निसा सैन कीयौ है।
निरभै निसक बनवारी सिष प्रमानद,
आनि कें उसीसा रैनि प्रिथी मात दीयौ है।

१ सहज। २ अस्त।

मनहर　　दादूजी के पंथ में बसेत जाके आठों जाम,
छंद　　　　अति ही उदार मन मोहन मेवारे कौं।
आसन मोसन[1] पांणी बांणी प्रवाह जाके,
भक्तों संतोष दे जितावे मनहारे कौं।
विद्या को बनारस पारस जैसे वेष प्रान
अति मन ऊजलो उजागर प्रसारे कौं।
राघो कहै जोग की जुगति करि पाये हरि,
पलटि सरीर तन रूप भरे बारे कौं ॥३८८

मोलगढ़ नगर में ब्राह्मण को बाल इक,
मृति पाइ गयो सोग भयो उर भारी पे।
मोहन कहत मह हम कौं चढाइ देहु,
सबै ही कह्यौ कु लेहु अब या बिचारिये।
बालक में स्वास भरि बेगिहि उठाइ लीयो,
जोग की जुगति सम गौतम बिचारिये।
मात पिता भईया र कुटंब मन और भयो
कहै सब देहु प्रभु हमहि कु मारिये ॥३८९

जगजीवनदासजी को वरनन

दादू को सिष सरस चित जगजीवन जन हरि भज्यौ ॥
महा पंडित परबीन ग्यांन गुन कहत न आवे।
बांणी बहु बिसतरी साखि दृष्टांत सुहाव।
सबद कबित में रांम रांम, हरि हरि यौं करणी।
गुर गोबिंद जस गाइ, मिटायो जामण मरणी।
दिवसा में बिम लाइ प्रभु चरण[2] धंम कुल जस तज्यौ।
दादू को सिष सरस चित, जगजीवन जन हरि भज्यौ ॥३९१

इंदव　दादू के[3] पंथ दिप्यौ दिवसा जग में जगजीवन यों हरि गायौं।
छंद　कीयो बुद्धि बिवेक सु ब्रह्म निरूपम ग्यान महोनिसि रांम रिझायो।
प्रेम प्रवाह कथा उर अंमृत, आप पीया रस औरन पायौ।
राघो कहै रसना रसजीति ज्यूं भाव निरालम निरंजन भजायो ॥३९२

---

1 मोसन। 2 चरन। 3 को।

अचिरज की बात सुनी जात बहु संतन पै,
पात पात होत धुनि रांम रांम बाइ कै।
सिषहू बसतदास संतदास रांमदास,
द्वादस महंत पुनि भये हरि गाइ कै।
रांमपुरा ग्राम जहां साधन कौ धांम तहां,
लहै विश्रांम जन बहु सुखदाइकै ॥४००

प्रागदास बिहाणी कौ बरनन

छपै दादू दीनदयाल कै, सिष बिहांणीं प्राग जन ॥
कुल कलि करचौ बिख्यात, डीडपुर कीयौ उजागर।
सिष उपजे सिरदार, सील सुमरण के आगर।
साभरि सर जल अधर, चले पद अंबुज नांईं।
नाव लेण की माल, रही उर देह जरांईं।
परमारथ हित भजन पन, राघव जीते प्रांन मन।
दादू दीनदयाल के, सिष बिहाणीं प्राग जन ॥४०१

मनहर छद दादूजी के पथ मै अतीत अरि इद्रीजित,
बीहै न बिहाणीं प्रागदास परमारथी।
सागोपाग संत सूरबीर धीर धारे तेग,
रामजी के बैठो रथ ग्यान जाकै सारथी।
कांम क्रोध लोभ मोह मारिया बजाइ लोह,
भरम करम जीतै भीम जेम भारथी।
राघो कहै रांम कांम सारे जिन आठौं जांम,
भजन की माला रही दगध कीयां रथी ॥४०२

दोऊ जैमलजी कौ बरनन

छपै दादू दीनदयाल के, भजन जुगत जैमल जुगल ॥
सूर धीर उदार, सार ग्राहक सतवादी।
दिढ़ गुर इष्ट उपास, भक्त हरि के मरजादी।
पदसाखी निरबान, कथे निरगुन सनबधी।
भक्ति ग्यान बैराग, त्याग सतन श्रुति सधी।
रजबसी राघो उभै, कूरम पुनि चौहाण कुल।
दादू दीनदयाल के, भजन जुगत जैमल जुगल ॥४०३

प्रिर्थी प्रततेज बाइ रक्षा करें आग्या पाइ,
तन मन धन अपि भाव जिन लीयो है।
राघो कहै अवनि अच्युत भई संत बेलि,
मुसकत बदन सु हरखत हीयो है ॥१६६

चतुरभुजजी को बरनन

छपै दादू दीनदयाल को पूरब परसिधि चतुरभुज ॥
कीयो रांम पुर गांम, भक्ति निरगुन बिसतारी।
सुरभक्ता हरि भक्त संत भक्ता उपगारी।
तुलसीदास हुलास, तास भुज च्यारि दिखाई।
बटक बृक्ष के पात रांम रटना रटवाई।
राघो हरख हिय सरस हारै बोलत सोम कुज।
दादू दीनदयाल कौ पूरब परसिधि चतुर भुज ॥१६७

मनहर दादूजी के पंथ में भक्ती बिराक चतुरभुज
छंद भगति भजन पन की कीयो प्रकास है।
भये हैं बिराक सूं बिराक सिख सूरबीर
सवर्गात कीट भृ ग सम ताकी भ्रास है।
प्रचापारी प्रसिद्धि प्रगट भयो पूरब मैं
जीव की जीवनि जगदीस मार्के पास है।
राघो कहै रांम जपि पायो है सुहाग भाग
सोभा तीर्न लोक की सों धरनि प्रकास है ॥१६८
पोथी करि ल्याये तुलसीदासजी के आये,
चत्रभुज कह्यो भाये ब्रह्म चरचा कराइये।
गंगाजी के तीर चर्स चत्रभुज कही भस,
ध्यांन गयो सोम बार पार कौं स आइये।
चत्रभुज नांम तुम काहे सू कहाये प्रभु
चत्रभुज रूप प्रभु जग मैं कहाइये।
धारा मधि पैठि च्यारि भुजाहु दिखाइ दीन्हीं,
चैन मन भई तुलसीदास समझाइये ॥१६६
बृक्ष बेर बट को लगायो निज हाथ सौं
मेला के समय पूजा करें संत चाह के।

साढ़ा तीन कोड़ि जीव उधरंगे ताकै लार,
ग्रैसौ परसंग ताहि बरनि सुनायौ है ॥४०७

ग्रहमदाबाद छाडि ग्राये जब साभरि मैं,
परचे भये हैं तब माता सुधि पाई है।
जैमल कौ ल्याई गाथा ग्रादि सो सुनाई सुत,
दिक्षा लै दिवाई सब सतन कौ[1] भाई है।
सुधि न रहाई प्रेम उमगि चलाई ग्रांखि,
नीर भरि ग्राई श्रुति सुख मे समाई है।
जैमल रमाई जाकी भगति लैके गाई जैसै,
सुनी सो सुनाई सीखै भनै सुखदाई है ॥४०८

जनगोपालजी को बर्नन

छपै जनगोपाल दादू तणौं, हरि भगतन जस बिसतरचौ ॥
घ्रू पहलाद जडभरथ, दत्त चौवीसौं गुर कौ।
मोह बवेक दल बरिण, दूरि भ्रम कीयौ उर कौ।
गुर की महिमा करी, जनम गुन परचे गाये।
टकसाली पद ग्रंथ, दयाल की छाप सुहाई[2]।
प्रेम भगति दुविध्या रहत, करी बैसि-कुल निसतरचौ।
जनगोपाल दादू तणौं, हरि भक्तन जस बिसतरचौ ॥४०९

मनहर छद दादूजी के पथ मैं चतुर बुधि बातन कौं,
जानिये जनगोपाल सबंही कौ भावतौ।
नींकीं बाणी नृमल मिठास तुक तांनन मैं,
कांनन मै होत सुख ग्रर्थ सूं सुनावतौ।
मन बच क्रम हरि हारल की लाकरी ज्यू,
कहना सहित करुणा-निधान गावतौ।
राघो भणि राम नाम ग्रादि ऊकार करि,
सीस जगदीसजी कौं बारूबार नावतौ ॥४१०
सन्यासी सरूप धारे फिरत जगत मांहि,
विन ग्यान पायें नहीं उर मैं प्रकास जू।

१ कू। २ सुमाये।

मनहर छंद

दादूजी के पंथ मैं प्रचंड जती जोगेस्वर,
　　　षेमदासु हुलासहुल भजन पन की मसौ।
सासिक सूं षेल्यौ र भरम करम डारे पेलि,
　　　प्यारथौं पन राख्यौ है चोहांण ऊजलौ पसौ।
कहसि रहणि पुनि ध्यांन प्रेम धारयौ मोके,
　　　भजन भंडारे मैंनि राख्यौ भरि कें गसौ।
राघौ कीन्हीं रासि गुर गोबिंद उपासि करि,
　　　विधि सूं निपायौ नीकें रिधि सिधि को बसौं ॥४०४

षेमदास चोहांण संत रहे बौंली ग्राम जहां
　　　बसै भेषधारी इक भगनि बसाई है।
भरयौ है अग्यांन मूढ समझै न ग्यांन गूढ,
　　　प्रभु भजै ताक पारि मूंठ अजमाई है।
जैसे प्रहलाद प्रान राखे करतार करो
　　　सासना अपार मारयौ दुष्ट नर साई है।
भये है सहाई गुर मन उबराई रांम,
　　　रक्षा जु कराई हरि सदा हो सहाई है ॥४०५

दादूजी के पंथ मधि बड़ौ रजबंसी येक,
　　　कह्यौ कछू हाथौ जोगी जैमल जुगति सुं।
अनभ के आगर उजागर गिरा को पुंज
　　　दादू पंथ भ्रातर बिख्यात र भगति सूं।
तास कौ पद्योपै तिप पूरण प्रसधि भयो
　　　निरख निज नांव लीयौ लीयौ नाहू राखे पति सू।
राघौ कहै रांम भणि सदा रह्यो येक पणि
　　　मन बच क्रम करतार गायौ सरच सूं ॥४०६

आदि कुल पूरब कह्यौ है जोगी जुगति सूं
　　　जैमल की माता पति दाता गुत जायौ है।
म्हारि के पहार रहै भारथी मुरंद नांम
　　　कीयौ परनांम दया देह गुत आयौ है।
तिप यहीं करो मात प्रगटे गुसांई बात,
　　　दादूजी दयाल गुर याही यौं बतायौ है।

दिलीपति आये तब काजी समझाये सब,
पंडित नवाये और ससै स्याह भानी है ॥४१४

जग्गाजी को वरनन

छपै दादू दीनदयाल कै, जगो जोति जगदीस की ॥
भक्ति-भाव परपक्क, साध गुर सेवा वरती।
सहर सीकरी और, बधायो जानि सु धरती।
गये सलेमाबाद, परस जु लई परक्षा।
भये रसोई खान, सीरनी कीन्ही भक्षा।
राघो धाये दक्षन[1] दिस, भक्ति बधाई ईस की।
दादू दीनदयाल कै, जगो जोति जगदीस की ॥४१५

मनहर छंद दादूजी कै पंथ माहि जगा जोति लागि रही,
जग सू उदास जगो कहूं न लुभायो है।
परसराम सप्रदाई खेचरो चलाई बहु,
सीरनी जीमाई तऊ खात न अंघायो है।
कहै मुख सेती सर्ब दूणी बस्त जेती यह,
होइ मन तेती कछु आपो नहीं आयो है।
कीयो डील को बधाव गुर-सेवा माहै[2] चाव भलो,
राघो पायो डाव करतार यूं रझायो है ॥४१६

जगंनाथदासजी को बर्नन

छपै दादू को सिष जगन्नाथ, जुगति जतन जग मै रह्यो ॥
प्रेमां भक्ति वसेख ग्यान, गुन बुद्धि समझि अति।
सास्त्रग्य अरु तज्ञ, सील सतवादी मति गति।
गुण-गज नामो कीयो, कबिता सर्ब कीता मधि।
गीता वसिष्टसार ग्रंथ, बहु अवर साध सिधि।
चित्रगुपत कुल मै प्रगट, जो देख्यो सोई कह्यो।
दादू को सिष जगन्नाथ, जुगति जतन जग मै रह्यो ॥४१७

मनहर छद दादूजी को मिले हैं कायस्थ कुल निकसि कै,
जगमग-जोति जगनाथ देखी गुर की।

---
१ मर्होच। २ मै है।

सीकरी सहर मांहि मिले हैं अकबर बादशाह,
भये किरपाल गुरुदेव दादू दास जू।
सीस परि हाथ दयो दया परसाद भयो,
देसि के मुदित भयो नांव मैं निवास जू।
प्रहलाद चरित्र यथा ध्रुव बड़मर्थ कथा,
करुणां सूं गाये हरि भक्तन हुलास जू ॥४११

बखनांजी को वरनन

छप्पै दादू दीनदयाल कै, है बखनौं बानैत बड़ ॥
गुर भक्ता जनदास, सीस मुठ सुमरन सारौ।
बिरहै लपेट सबद सपत, तिन करत सुमारौ।
हरिरस-मद पीय मस्त, रैनि दिन रहै खुमारी।
परचै बाणी बिसद, सुनत प्रभु बहुत पियारी।
माया ममता मांन मद राघो मन तन मारि घड़।
दादू दीनदयाल कै है बखनौं बानैत बड़ ॥४१२

मनहर छंद दादूजी के पंथ मे है बखनौं बरैत कवि
प्रतिहि पुटाको[1] ततबेता तुक तांन कौ।
जाकी बरस बांणी को बखांण करि आवत न,
भारथ मैं बल जैसे पारथ के बांन कौ।
जाके पद साखी हव हृदय प्रवेस भये,
जहां लग माया गढ़ होत सति भांन कौं।
राघो कैहै राति-दिन रांमजी रिझायौ जिन
गावत न मांनी हारि गंधर्व ही गांन कौ ॥४१३
भक्तनौं महंत हरि रातो रस मातो प्रेम
बोलत सुहातो मन मोहै जाकी बांनी है।
गंध्रब ज्यूं गावै हरि नैंन नीर प्रावै प्रभु
प्रीति सूं लड़ावै सबंहो कौं सुखदानी है।
सुमरन सासो सास येक नांव को अभ्यास,
रहै जगसूं उदास ऐसौ ग्यानी है।

बैसिकुल जनम बिचित्र बिग बाणी जाकी,
राघो कहे गृथन के अर्थन कौ भान है ॥४२०
दिवसाहे नग्र चोखा बूसर है साहूकार,
सुदर जनम लीयो ताही घरी आइ कें।
पुत्र की चाहि पति दई है जनाइ तृया,
कह्यौ समझाइ स्वामी कहौ सुखदाइ कें।
स्वामी मुख कही सुत जनमैगो सही पैं,
बैराग लेगो वही घर रहै नहीं माइ कें।
ऐकादस वरष मैं त्याग्यौ घर माल सब,
वेदात पुरान सुने बानरसी जाइ कें ॥४२१
आयौ है नबाब फतेपुर में लग्यौ है पाइ,
अजमति देहु तुम गुसई (या) रिझायौ है।
पलौ जौ दुलीचा कौ उठाइ करि देख्यौ तब,
फतैपुर बसै नीचै प्रगट दिखायौ है।
येक नीचै सर येक नीचै लसकर बड,
येक नीचै गैर बन देखि भय आयौ है।
राघो घोरे रथि[1] लीये दवते नबाब केर[2],
सुदर ग्यानी कौ कोई पार नहीं पायो है ॥४२२

अन्यात

छपै सतगुर सुंदरदास, जगत मैं पर उपगारी।
धन्नि धन्नि अवतार, धन्नि सब कला तुम्हारी।
सदा येक रस रहे, दुख्य द्वद-र को नाहीं।
उत्म गुन सो आहि, सकल दीसै तन माहीं।
साखिजोग अरु भक्ति, पुनि सबद ब्रह्म सजुक्ति है।
कहि बालकरांम बबेक, निधि देखे जीवन मुक्ति है ॥४२३
जल सुत प्रीतम जानि, तास सम प्रम प्रकासा।
अहि रिप स्वांमी मध्य, कीयौ जिनि निश्चल बासा।
गिरजापति ता तिलक, तास सम सीतल जानूं।
हस भखन तिस पिता, तेम गभीर सु मानूं।

---

१ राखि। २ केन।

पटपदो भरम-विध्वसन गुरू कृपा स गुर,
दया गुर मैमा सतोतर आनिये।
रामजी नामाष्टक आत्मा अचल भाखा,
पजाबी सतोत्र ब्रह्म पीर औदु जानिये।
अष्टक अजव ख्याल ग्यान भूलना है आठ,
सैजानद-ग्रे वैराग वोध परमानिये।
हरि वोल तरक विवेक चितवनि त्रिय,
पम-गम अडिल मडिल सुभ गानिये ॥५४६
वारामासी आयु भेद आत्मा विचार येही,
त्रिबिधि अत करण-भेद उर धारिये।
वरवै पूरवी भाषा चौवोला गूढा अरथ,
छपै छद गण अरु अगन बिचारिये।
नव-निधि अष्ट-सिधि सात बारह के नाम,
बारामास हो कै बारै रासि सो उचारिये।
छत्रबध कमल मध्यक्षरा ककण-बंध,
चौकी-बध जोनपोस बधऊ सभारिये ॥५५०
चौपडि बिरक्ष-बध दोहा आदि अक्षरीस,
आदि-अत-अक्षरी गोमुत्रि काज कीये हैं।
अतर-बहरलापिका निमात हार-बध,
जुगल निगड-बध नाग-बध भी ये हैं।
सिघा-अवलाकनी स प्रतिलोम अनुलोम,
दीरघ अक्षर पंच बिधानी सुनीये हैं।
गजल सलोक और त्रिबिधि प्रकार भेद,
पंडित कबीर सुरनि मांनि सुख लीये हैं ॥५५१

बाजीदजी को मूल

मनहर छंद

छाड़ि कै पठांण कुल रांम नाम कीनो पाठ[1],
भजन प्रताप सौं बाजीद बाजी जीत्यौ है।
हिरणी हतत उर डर भयौ भय करि,
सील भाव उपज्यौ दुसील भाव बीत्यौ है।

---
[1] पठ।

उत्पत्तिमय वाहन सुर्नों, तास सम तुल्य बखानिये।
यौं सुंदर सद्गुर गुरण प्रकष कथत पार नहीं जानिये॥४२४

बुधि विवेक चातुरी ग्यान गुरगमि गरवाई।
क्षमा सील सत्य सुहृद सतन सुखदाई।
गाहा गीत कवित, छंद पिंगल प्रवीनै।
सुंदर सौं सब सुगम, काव्य कोइ कला न छीनै।
विद्या सु चतुरदस माह निधि, भक्तिवंत भगवंत रत।
सयम सु सनर गुरगण प्रमर, राजरिद्धि नव निद्धि यत॥४२५

देवन मे ज्यु विष्णु, कृष्ण प्रवतारम कहये।
संग माँहि गण'-पुत्र, गंग मे तीरथ में सहिये।
रिखन माँहि नारद, जखिन कुमेर भडारी।
सती सपी हनुमंत सती हरिचंद विचारी।
नागन म सीसेसजी, वागन सारव मानियौ।
दादूजी क सिपन मे यौं सुंदर कुसर जानियौं॥४२६

तारन मे ज्यूं चंद, इंद देवन मे सोहैं।
नरन माँहि नरपति सत्ति हरिचंद स जोहैं।
भगतन मै ध्रुवदास तास सम और स गोरे।
वानिन मे वसि बरनि, सरनि सम सिवर न ग्रोरे।
जगत भगत विख्यात य चातुरजन असें कह्यौ।
सप कविमम सिरताज हैं दादू सिप सुंदर मही॥४२७

टीका

मनहर   स्वामी श्रीसुंदरजी बाणी यह रसाल भरी
छंद   भगत जगत बांचै सुणै सब प्रीति सौं।
                साखी अरु सबद सबइया अवांग जोग
                         ग्यान को गुमुद पच इंद्रिया उ जीति सौं।
                सुगरु समाधि स्वप्न बोध वेद को विचार
                         उक्त मनूप मदभुत ग्रंथ नीति सौं।
                रूप परमाप गुर संप्रदाद उतिपति
                         निसांनी गुर को महिमा बावनी गु रीति सौं॥५४८

---

१ शिव।

स्यांमदास की मूंठि, मडी निरगुण सूं न्यारी।
सिष उपजे सिरदार, भक्ति रसि आई भारी।
ये पचवारै प्रसिधि भये, वडे महत द्रिगपाल ह्वै[1]।
राघो रहणि सराहिये, सुवित सिरोमनि दिपत वै ॥४३१

मनहर छंद
आनदास अनन्य अतीत अरि इंद्रीजित,
पायौ बित प्रगट प्रकास्यौं हिरदा में हरि।
पाच-तत तीन-गुण येक रस कीये जिन[2],
नृगुन उपास्यौ निराकार निहि क्रम करि।
निरवृति सू नेह धरि देह असै पारी टेक,
नृबाह्यौ बैराग व्रत जीवत जनम भरि।
राघो कहै भयौ बर उर ऊकार करि,
त्रिगुणी गयौ है तिरि आदि अबिगति धरि ॥४३२

स्यामदास को मूल

मनहर छंद
सूरबीर महाधीर दिपत ह्रिदा में हीर,
व्रिकत बैराग में सुभाव स्यांमदास कौ।
ऊची दिसा रहणि कहणि ऊची ऊंचौ मन,
गह्यौ मत मगन ह्वै अगम अकास कौ।
रटत रकार वारबार रत रोम रोम,
धारयौ जगि जोग यौं निरोध सासै-सास कौ।
राघो कहै रांम कांम स्यौंप्यौ तन धन धाम,
हरि हरि करत हजूरी भयौ पास कौ ॥४३३

कान्हड़दास को मूल

इंदव छंद
कान्हडदास कला लीयें औतरयौ, पथ निरजन के पग धारे।
मांगि भिक्षा र कीयौ भक्ष भोजन, असे अतीत ह्वै स्वाद निवारे।
मांनि धणी पै मढी न बधाई जू, जानि तजे क्रम बंधन सारे।
राघो कहै भजि राम भली बिधि, सगति के सबही निसतारे ॥४३४

पूरणदासजी को मूल

मनहर छंद
पूरण प्रसिधि भयौ पिंड ब्रह्मंड खोजि,
कलि में कबीर धीर धारयौ गुरम सत कौ।

---
१ है। २. उन।

तोरे हैं कुबांण तीर चालक बीधौ सरीर,
दादूजी दयाल गुर अंतर छबीत्यौ है।
राघो रत राति-दिन देह दिल मालिक सु,
मालिक सु बेल्यौ अस बेसरण सौ रीत्यौ है ॥४२८

अथ निरंजनी पंथ बरनन

छप्पै अब राघो कहि भाव कबीर कौ, इम ऐते महंत निरंजनी ॥
सपटचौं जू १जगनाथ २स्याम ३कान्हड़ ४अनरागी।
५ध्यानदास अरु ६खेमनाथ, ७जगजीवन त्यागी।
८तुरसी पायौ तत ९ध्यान सो भयो उदासा।
१०पूरण ११मोहनदास जानि १२हरिदास निरासा।
राघो संम्रथ रांम भजि माया अंजन भंजनी।
अब राघो कहि भाव कबीर कौ इम ऐते महंत निरंजनी ॥४२९

मनहर छंद सपट्यो जगनाथदास स्यामदास कान्हड़दास
भये भजनीक अति निसा नींमी पाई है।
पूरण प्रसिधि भयौ हरिदास हरि रत
तुरसीदास पायौ तत नीकी बनि आई है।
ध्यानिदास-नाथ[1] अरु आनंदास रांम कह्यौ,
जग सुं उदास ह्वै कै स्वासोस्वास गाई है।
जगजीवन खेमदास मोहन हिरदै प्रकास
गुपुरण निराट वृति राघो मनि भाई है ॥४३०

जगनाथजी सपटचा की टीका

इंदव छंद प्रेम निरंतर नांव सुनि प्रभु जी उरसो तन मांझ उठी है।
माड़ी दियौ भक्ति भारत कौं गहि, पांनी में भून से पेरयौ मुठी है।
स्वाद न साल न धूप न घाम न, संजम कूं सिरदार हठी है।
राघो सगाई सिरोमनि भक्त सौं यों जग मैं जगनाथ सठी है ॥४३१

छप्पै राघो रहणि सराहिये, मुकित सिरोमनि विपल ये।
आनंदास सत सुर सबल तजि कै हरि परसे।
मन बच क्रम भजनीक दास मोहन सिध दरसे।

---
१ ध्यांनदास। २ सूं।

स्यामदास की मूंठि, मडो निरगुण सूं न्यारी।
सिष उपजे सिरदार, भक्ति रसि आई भारी।
ये पचवारैं प्रसिधि भये, वडे महत द्रिगपाल ह्वै[1]।
राघो रहणि सराहिये, सुवित सिरोमनि दिपत वैं ॥४३१

मनहर छंद
आनदास अनन्य अतीत अरि इद्रीजित,
पायौ वित प्रगट प्रकास्यौं हिरदा मैं हरि।
पांच-तत तीन-गुण येक रस कीये जिन[2],
नृगुन उपास्यौ निराकार निहि क्रम करि।
निरबृति सू नेह धरि देह अैसे पारी टेक,
नृबाह्यौ बैराग व्रत जीवत जनम भरि।
राघो कहै भयौ वर उर ऊंकार करि,
त्रिगुणी गयौं है तिरि आदि अविगति धरि ॥४३२

स्यामदास को मूल

मनहर छंद
सूरवीर महाधीर दिपत ह्रिदा मैं हीर,
न्रिकत बैराग मैं सुभाव स्यामदास कौ।
ऊची दिसा रहणि कहणि ऊची ऊचौ मन,
गह्यौ मत मगन ह्वै अगम अकास कौ।
रटत रकार बारबार रत्त रोम रोम,
धारचौ जगि जोग यौं निरोध सासै-सास कौ।
राघो कहै रांम काम स्यौंप्यौ तन धन धाम,
हरि हरि करत हजूरी भयौ पास कौ ॥४३३

कान्हड़दास को मूल

इंदव छंद
कान्हडदास कला लीयें औतरचौ, पथ निरजन कै पग धारे।
मागि भिक्षा र कीयौ भक्ष भोजन, अैसै अतीत ह्वै स्वाद निवारे।
मांनि धणी पै मढी न चधाई जू, जानि तजे क्रम बंधन सारे।
राघो कहै भजि रांम भलो विधि, सगति के सबही निसतारे ॥४३४

पूरणदासजी को मूल

मनहर छंद
पूरण प्रसिधि भयौ पिंड ब्रह्मंड खोजि,
कलि मै कबीर धीर धारचौ गुरम सत कौ।

---
१ है। २. उन।

गहत अखंड मत आत्मा पखंड भई,
बीती पर कीरति प्रकास भयौ अस्त कौ।
मन तज्यौ गवन पवन अस्थिर भयो,
भरम करम भाखे वै के हाथ वस्त कौ।
राघो कहै राम आठौं जाम जपि जीति गयौ,
होतो मत आगिसौ दधीच मुनि मस्त कौ ॥४१५

हरीदास को मूल

मनहर छंद

अत सत रहिहिए कहिहिए करतूति बड़ौ,
हर म्यू-क हर हरिदास हरि गायौ है।
त्रिकत बैरागी अनरागो सिब मागी रहै
अरस परस चित चेतन सूं लायौ है।
सुमम गुर्बाणी निराकार को उपासवान
गुरुमुख उपासि कै निरंजनी कहायौ है।
राघो कहै राम जपि गगन मगन भयौ,
मन बच क्रम करतार यौं रिझायौ है ॥४१६¹

तुरसीदासजी को मूल

इंदव छंद

सीतल नैन बचे बिग बेन महा मन धीस अतीत करारौ।
माया को त्याग नहीं मन राग, भिक्षा मिस भोजन सांझ सवारौ।
महा अभ्यासी प्रम्यासी है नांव को, जोग जुगति सबै सुधि सारौ।
राघो कहै करणी मित सोभित, देखौ हो दास तुरसी को मतारौ ॥४१७

---

¹'ची' प्रति का अतिरिक्त छंद—

प्रथम चौकसी प्रसिद्ध तिका नागोर किलेसो।
बसो नगर अजमेर कुलिन, छोडे गति देसो।
फिर सूं नागरि मिरी भीर राखी पर वारी।
देवी को दिय करी ज्यामो दिन दिन पधारी।
दिन प्रगो सरीर, राव राजा सब जाले।
अरंभ दिन पंच वाल्यो छाप गुर बीयो तिलाके।
सिर धरि कर निमायवाल की गोरखनाथ पै मत लयौ।
धन हरीदास निरंजनी, ठौर ठौर परची दीयौ ॥४१६

मोहनदास की मूल

है हिरदै सुध हेत सबनि सू, मोहनदास महा सुखदाई।
जो सुख कासी कबीर कथ्यो मुख, सो अनभै निति नेम सू गाई।
आये कौं आदर आप मिलै उठि, ह्वै तन सीतल सोभ सवाई।
राघो करै हठ चालन दे नहीं, नाम कबीर की देत दुहाई ॥४३८

रामदासजी ध्यानदासजी की मूल

छपै रांमदास अरु ध्यांन की, म्हारि मध्य महिमां भई ॥
ग्यांन भक्ति वैराग, त्याग जिन नीकौं कीन्हौं।
भिक्षा खाई मांगि, जागि मन ईश्वर दीन्हौ।
बांणी नृगुण कथी, आंन की आस उठाई।
साखि कबित पद ग्रंथ, मांहि परब्रह्म सगाई।
अंजन छाडि निरजनी, राघो ज्यौं की त्यू कही।
रांमदास अरु ध्यान की, म्हारि मध्य महिमां भई ॥४३९

खेमदासजी की मूल

इंदव छंद खेम खुस्याल भयौ कुल छाडि र, येक निरंजन सूं लिव लाई।
हींदू तुरक्क र ब्राह्मण अतिज, साखत भक्तिहि नाव रटाई।
त्याग समागम सत सु राखत, चाखत प्रेम भगत्ति मिठाई।
राघवदास उपासि निरजन, मांगि भिक्षा निति नेम सू पाई ॥४४०

नाथजू की मूल

नाथ भज्यौ इन नाथ निरजन, और न दूसर देवहि मान्यौ।
ग्यान र ध्यान भगत्ति अखडित, मन्न मगन्न बिरागहि सान्यौ।
मागि भिक्षा गुजरांन कर्यौ निति, कांम र क्रोध अहंकृत भान्यौ।
राघवदास उदास रह्यौ तजि, यौं जग-जाल निराल पिछान्यौ ॥४४१

जगजीवनदासजी की मूल

भादव के जगजीवन दासहु, पचम बर्न तज्यौ हरि गायौ।
सील संतोष सुभाव दया उर, ता हित ईश्वर[1] कै मन भायौ।
त्याग बिराग रु ग्यांन भले मत, तात भयौ गुर तै जु सवायौ।
राघव सोलहि ग्यान गुरू करि, अैसौ भयौ फिर पथ चलायौ ॥४४२

---

१ योश्वर।

सोमावती को मूल

छपै
मन बच क्रम सोमावती, संतन कौं सर्बस दयौ ॥
गुपत कसौटी करी, कहि न काहू सूं भाखी ।
हरि जांनराइ जगदीस, पैज परमेस्वर राखी ।
धन-पांणी बकसाबि, बस्त को नहीं नरेरयौ ।
इक रांणीं के घटि प्रगटि रांमजी रिझक परेरयौ ।
जन राघो रवि ग्रसत समे, जो बांछित हो सो भयौ ।
मन बच क्रम सोमावती, संतन कौं सर्बस दयौ ॥४४३

मनहर छंद
नरोली मैं जगनाथ स्यांमदास दत्त दास
कान्हड़सु चाटसू मैं नीके हरि ध्याये हैं ।
ध्यानदास दास-सिकाली मोहन देवपुर
सेरपुर तुरसीसु बांणी नीके ल्याये हैं ।
पूरण भभोर रहे खेमदास सिव-हाड़,
टोडा मधि[1] आदिनाथसु परम पद पाये हैं ।
ध्यानदास म्हारि भये डीडवांणे हरिदास
दास जगजीवन सु भावसे सुभाये हैं ॥४४४
द्वादस निरंजन्यां के नांम गांम गाये हैं ।

इति निरंजनी पंथ

माधौ कांणी की मूल

छपै
माधौ कांणी मगन ह्वै मन बच क्रम हरि ध्याइयौ ॥
पावन कीयौ टोंक प्रभु की भक्ति बधाई ।
आसा पंथ सु करत तहां इक बाई आई ।
देवा कौं आरदास, हमारी मांग कहीज्यौ ।
प्रभ न बाई होइ, भक्त मैं गारक[2] रहीज्यौ ।
राघो पर बड़ि पुर गयौ परचौ परगट दिखाइयौ ।
माधौ कांणी मगन ह्वै मन बच क्रम हरि ध्याइयौ ॥४४५
ततबेता तिहुंलोक को, ततसार संग्रह कीयौ ॥
पंडित प्रम प्रवीण स्रुति सुम्रित पौरांनम ।
भारतादि पुनि और ग्रंथ, सब कण्ठ सु आंनम ।

---
१ आदिनाथ । २ गरक ।

कीये कबित षटपदी, बहुत की संख्या ल्याही।
प्रिथी कोड़ी पचास, जीव चौरासी गांही।
उत्म मध्य कनिष्ट द्रुम, राघो मधुमखि ज्यूं लीयौ।
ततबेता तिहूलोक कौ, ततसार सग्रह कीयौ ॥४४६

ततवेता के सिषन नै, दोऊ देस चिताइयौ ॥
राम दमोदरदास, धाम[1] थौलाई कीन्हीं।
आंबावति के भूप, तास कौं परचौ दीन्हीं।
रामदास बड महत, जैतारणि मुरधर मांहीं।
ऊदावत सिष करे, दुनी सुभ मारग लांहीं।
राघो भक्ति करी इसी, तातैं हरि मन भाइया।
ततबेता के सिषन नै, दोऊ देस चिताइया ॥४४७

जगनाथ जगदीस की, अनन्य भक्ति राखी ह्रिदै ॥टे०
निरबेद ग्यांन मै निपुन, नांव सर्बोपर जाण्यौ।
जप तप साधन सकल, भजन बिन तुछ बखांण्यौं।
छपै कबित सू हेत, तिना मै सख्या आंणी।
मनुख देह के स्वास, गणे अक्षर पौरांणी।
अवर चीज नौखा घणी, राघो हरी भाखे ह्रिदै।
जगनाथ जगदीस की, अनन्य भक्ति राखी ह्रिदै ॥४४८

राघो सिरजनहार सौं, कीयौ मलूक सलूक सति ॥
क्षत्रीकुल उतपत्ति, बसे माणिकपुर माहीं।
अगुनी निरगुनी भक्त, काहू सूं अतर नाहीं।
हींदू तुरक समान, येक ही आत्म देखैं।
तन मन धन सबंस, भक्त भगवत कै लेखैं।
साहिब साई राम हरि, नहीं विषमता नाम प्रति।
राघो सिरजनहार सूं, कीयौ मलूक सलूक सति ॥४४९

राघव जो रत रांम सूं, सो मम मस्तक-मंडन ॥
इम मांनदास मो मगन, कीयौ अति कृतनयो है।
जपि नैन्हादास निसि-दिवस, गिरा कौ पुज भयौ है।

---

1 संतधाम।

सोभावती की मूल

छपै — मन बच क्रम सोभावती, संतन कौं सर्बस दयौ ॥
गुपत कसोटी करी, कहि न काहू सूं भाखी।
हरि नाराइन जगदीस, पैज परमेसवर राखी।
जस-पांणी बखारि, बस्त को चहै जरेरयौ।
इक रांणी कै घटि प्रगटि रांमको रिसक परस्यौ।
जन राघो रुचि प्रंसक सभै, जो बांछित ही सो भयौ।
मन बच क्रम सोभावती, संतन कौं सर्बस दयौ ॥४४३॥

मनहर छंद — परोसी मैं जगनाथ स्यांमदास दत्त दास
कान्हड़दास चाटसू मैं मोके हरि ध्याये हैं।
प्रांनदास दास लिवाली मोहन बेगपुर,
सेरपुर तुरसीजु जांसी नीकै स्याये हैं।
पूरण मभोर रहे षेमदास सिव-हाड़
डोडा मधि[1] आदिनाथजू परम पद पाये हैं।
ध्यांनदास म्हारि भये डीडवाणे हरिदास,
दास जगजीवन सु भावबै सुनाये हैं ॥४४४॥
द्वादस निरंजन्यां के नाम धाम गाये हैं।

इति निरंजनी पंथ

माधौ कांणी की मूल

छपै — माधौ कांणी मगन ह्वै मन बच क्रम हरि ध्याइयौ ॥
पांवन कीयौ लोक प्रभु की भक्ति बधाई।
भाभा बंध सु करत तहां इक बाई आई।
बैरा कौं आस्वास हमारौ नांव कहीज्यौ।
भ्रम न कोई होइ भजन मैं गारक[2] रहीज्यौ।
राघो चर चढ़ि पुर गयौ परचौ परगट दिखाइयौ।
माधौ कांणी मगन ह्वै मन बच क्रम हरि ध्याइयौ ॥४४५॥
सतसैता तिहुंलोक कौ, ततसार संग्रह कीयौ ॥
पंडित प्रम प्रवीण, स्रुति सुम्रित पौरांनन।
भारतादि पुनि और ग्रंथ सब कथत सु आंनन।

---
१ अभिनाथ। २ गरक।

कीये कबित षटपदी, बहुत की संख्या ल्याही।
प्रिथी कोड़ी पचास, जीव चौरासी गांही।
उत्म मध्य कनिष्ट द्रुम, राघो मधुमखि ज्यूं लीयौ।
ततबेता तिहूलोक कौ, ततसार सग्रह कीयौ ॥४४६

ततबेता के सिषन नै, दोऊ देस चिताइयौ ॥
राम दमोदरदास, धाम[1] थौलाई कीन्हौं।
आंबावति के भूप, तास कौं परचौ दीन्हौं।
रामदास बड़ महंत, जैतारणि मुरधर मांहीं।
ऊदावत सिष करे, दुनी सुभ मारग लांहीं।
राघो भक्ति करी इसी, तातैं हरि मन भाइया।
ततबेता के सिषन नै, दोऊ देस चिताइया ॥४४७

जगनाथ जगदीस की, अनन्य भक्ति राखी ह्रिदै ॥टे०
निरबेद ग्यान मैं निपुन, नांव सर्वोपर जांण्यौ।
जप तप साधन सकल, भजन बिन तुछ बखांण्यौं।
छपै कबित सू हेत, तिना मैं संख्या आंणी।
मनुख देह के स्वास, गणे अक्षर पौरांणी।
अवर चीज नौखा घणी, राघो हरी भाखे ग्रिदै।
जगनाथ जगदीस की, अनन्य भक्ति राखी ह्रिदै ॥४४८

राघो सिरजनहार सौं, कीयौ मलूक सलूक सति ॥
क्षत्रीकुल उतपत्ति, बसे माणिकपुर मांहीं।
अगुनी निरगुनी भक्त, काहू सूं अंतर नांहीं।
हींदू तुरक समांन, येक ही आत्म देखै।
तन मन धन सबंस, भक्त भगवत कै लेखै।
साहिब साई राम हरि, नहीं विषमता नाम प्रति।
राघो सिरजनहार सूं, कीयौ मलूक सलूक सति ॥४४६

राघव जो रत रांम सूं, सो मम मस्तक-मंडन ॥
इम मानदास मो मगन, कीयौ अति कृतनयौ है।
जपि नंन्हादास निसि-दिवस, गिरा की पुज भयौ है।

---

१ संतधाम।

अब चतुरदास महदास-र मोहन-सु मड़े ।
ये ग्यारयो चतुर महन्त अंग मधि मुनि बड़े ।
बरनत हू सो मैं सुनें, अवर कछु नहीं बरनं ।
राघव सो रत राम सू सों मम मस्तक चरनं ॥४५०
ये चारण घरि भरि कवि, घणां इतना तो हरि कवि हुवा ॥
१कर्मानंद अरु २अलू ३चौरा ४जग ५ईसर ६केसौ ।
७सूजौ ८चोबर ९नरो, १०नरोहरण ११मोहण मिसौ ।
१२कौल्ह र १३माधौदास अहुत जिन बांणी सोहन ।
१४अमरदास चौमुख १५अलू सीवां हरि १६मोहन ।
जन राघो उधरे राम भजि, गुर प्रसाद जग सू जुवा ।
ये चारण घरि भरि कवि घणा इतना तो हरि कवि हुवा ॥४५१

करमानन्द की टीका

छंद चारन सो करमानंद भी गिर धारन हू हिरदैं पधरावैं ।
छंद छाड़ि दयो घर पूजन सौं हित कंठ रहै छरियो पधरावैं ।
माड़ि दई कित ठार रासत भूमि धसे उर स्यात न पावै ।
चाहि भई तब स्याम सुनावत ल्याइ दये अब प्रेम भिजावैं ॥४५३

कौल्ह अलूजी की टीका

भ्रात रहै जुग कौल्ह अलू बड़, गाथ सुनी अब भाख न जाई ।
गावत है प्रभु के गुन रूपहि भक्ति कर उन बात मनाई ।
दो लघु दूसर भ्रात सर्व कछु भूप बखानि कवी हरि गाई ।
ईस्वर मानत है बड़ भ्रातहि कै सु करै अपनैं सभुनाई ॥४५४
कौल्ह कही पुर द्वारिक धामहि भोग मिथ्या जग माय गमैये ।
टीक कह्यो चलिकै पुर आवत भोजन ये सुनि कांत भिजये ।
कौल्ह सुनावत छंद अनेकन पीछ अलू भणिये सु कथैये ।
हू करि कै प्रभु हार मिलावत सै पहिरावत देहु बड़ैये ॥४५५
मांहि दयो बड़ कै अपमानहि आइ परयो दरियाव दुर्यो है ।
द्वन भूमि लगी हिम बासत भूमत मांहि अनीति लगी है ।
भाग भय जन स्यावन मांग्हन आन मिले मुनि कृष्ण सुनि है ।
जोमन बैठ्य पानहि दे पुग दूगर गौन स भ्रात सुनी है ॥४५६

झैर भयौ सुनि है परमोधत, भक्त भलौ वह गाथ सुनीजै।
है तव भ्रात लघू सुखदाइक, बात कहै तिनकी मन धीजै।
भूपति पुत्र हुतौ वह पूरब, छाडि दयौ सब मो चित भीजै।
आइ परयौ बन मैं नृप औरहि, रूप लखे तन दे सुख लीजै ॥५५७
अन र नीर तज्यौ तुमरै हित, जीत नही सुधि बेगिहि लीजै।
देत भये परसाद चल्यौ फिरि, आइ भलै लघू सू हित कीजे।
सग चल्यौ हरि के पुर कौ चलि, पैलहि आनि मिल्यौ वह दीजे।
बात कही सब धाम तज्यौ प्रभु, जाइ बसे बन मैं जुग भीजे ॥५५८

नाराइनदासजो को टीका

वस अलू महि जानहु हसहि, और बडे सु नराइन छोटा।
आन कुमावत येह उडावत, भाभि दयौ करि सीतल रोटा।
दै करि तातहु रीसि करै वहु, येहु हुकार भरावहि मोटा।
छोडि गयो घर जाइ भज्यौ हरि, भक्ति भये बसि बोलत धोटा ॥५५६

मूल

छपै यह बडी रहणि राठौड की, पृथो धरि पृथीराज कबि ॥१०
अपणी इष्ट बखाणि, मनो क्रम बचन रिझायौ।
बरणि बेलि बिसतार, गिरा रुचि गोबिंद गायौ।
सरस सवइया गीत, कबित छद गूढा गाहा।
बरन्यौ रूप सिंगार, भक्ति करि लीन्हौं लाहा।
जन राघो स्याम प्रताप तें, यम आगम जांन्यौं मृत भवि।
इह बड़ी रहणि राठौर की, पृथो परि पृथीराज कबि ॥४५२

टीका

इंदव बीकहि नेरि नरेस बडौ कबि, पिथियराज सु भक्त भलौ है।
छद पूजन सौ हित नाहि बिषै चित, नारि पिछानन नाहि तलौ है।
देस गयो अनि सेत मनौ मय, रूप हिदै महि नाहि भलौ है।
तीन भये दिन मुदरि[1] नै हरि, पीछहु देखत चैन रलौ है ॥५६०
कागद देस दयो प्रभु देवल, मै नहि देखत सो दिन तीना।
भेजि दयौ उलटौ उर का लिखि, राज लगे हरि बाहरि लीना।

---

१ मंदरि।

अब चतुरदास महमास-द मोहन-दू भये।
ये ग्यारघौ चतुर महन्त डांग मधि मुक्ति भये।
करमत हू जो मैं सुनें अवर कछू नहीं जानें।
राघव जो रत राम सू, सों मम मस्तक मानें ॥४२०
ये बारह धरि धरि कवि, भणी इतना सौं हरि कवि हुवा ॥
१कर्मानंद प्रथ ३मसू ३धीरा ४घड ५ईस्वर ६केसौ।
७भूधौ ८जीवन ९नरो १०नराइण ११माधव बिसौ।
१२कौल्ह र १३माधौदास, बहुत जिन बाणी सोहन।
१४भगवनदास चौमुख १५प्रभत सीवां हरि १६मोहन।
जन राघो उधरे राम भजि, गुर प्रसाद जग सूं जुवा।
ये बारह धरि धरि कवि, भणी इतना तौ हरि कवि हुवा ॥४२१

करमानन्द की टीका

इंदव चारन सो करमानंद की गिर दारन हू हिरदौं पघलावें।
छंद छाड़ि दया घर पूजन सौं हित कठ रहै छरियां पधरावें।
गाडि दई कित ठार रासत भूमि चले उर ल्यात न पावें।
चाहि भई तब स्याम सुनावत ल्याइ दये अब प्रेम मिलावें ॥५५३

कौल्ह मधुओ की टीका

भात रहै जुग कौल्ह मधू बड़, गाघ सुनीं मद मास न भाई।
गावत है प्रभु के गुन रूपहि भक्ति करर उन भात जनाई।
जो मधु दूसर भात सर्वे कछु भूप बखानि जवैं हरि भाई।
ईस्वर मानत है मद भ्रातहि न सु करै अपनैं मधुताई ॥५५४
कौल्ह कही पुर द्वारिक जातहि भोग मिथ्या जग भाव गमैये।
ठौक कही चलिक पुर आवत पावन ये गुनि भौन चिनये।
कौल्ह सुनावत छद अनेकन पीव मधू भणिये सु कमये।
हू करि कै प्रभु हार मिलावत सैं पहिरावत देहु बढैये ॥५५५
माहि दयो बद मैं अपमानहि जाद परघो दरियाव डुग्यो है।
द्वन भूमि लगी हिन बासत भूमन माहि प्रतीति लगी है।
पान भये जन स्यामन गोम्दन जाद मिल गुनि कृष्ण गुनि है।
सोमन बैठ्न नारि दे जुग पूगर नौन न भ्रात सुनी है ॥५५६

रतनावतीजु की टीका

इंदव छंद
मानहु कौ लघु-भ्रात सु माधव, तास तिया तिन गाथ सुहानी।
पासि खवासनि नाम रटै हरि, प्रेम जटै उर आनत रांनी।
नदकिसोर कबै बृजचदहि, बोलि उठै द्रिग तै वहि पानी।
कान सुनि तब तौ तिय व्याकुल, चाहि भई कछु प्रीति पिछानी ॥५६४

पूछत तू किम कैत गहै चित, नैन भरै तन भूलि रही है।
चैन करौ कछु बूभहू नाहि न, गात सहै मम सत कही है।
प्रीति लखी अति कैत भई गति, प्रेमनि कीरति कैत सही है।
काम छुडाइ बठाइ सिरै उन, मानि लई गुर पाइ लही है ॥५६५

अै-निसि गाथ सुनै मन देखन, क्यू[1] करि देखहु नैन भरे हैं।
स्याम दिखाइ उपाइ बताइ सु, जीवन तौ हिय आइ अरे हैं।
देखन दूरि मिलै तन घूर स भोग तजै बसि प्रीति करे है।
सेव करौ उर भाव भरौ, पकवान रु मेवन अर्पि खरे हैं ॥५६६

नीलमनी सु सरूप लयो धरि, सेवत भाव सु भाव चली है।
राग र भोग बिबिद्धि लडावत, बीजत[2] जामहि रग रली है।
भूषन बष्ण अपार बनावत, स्याम छिब्रो अति देखि पली है।
जोग र जज्ञ अनेक उपाइन, नाहि लहै यह प्रेम गली है ॥५६७

देखन चाहि उपाइ कहा अब, बात अहो कहि कौन सुनैं ये।
ठौर करावहु म्हैलन कै ढिग, चौकस चौं-दिसि राखि जनै ये।
साध पधार हिवै कहि ल्यावहि, राखहु जागहि पाव धुनै ये।
भोग छतीस धरौ उन आगय, डारि चिगे द्रिग स्याम लखै ये ॥५६८

सत पधारत सेव करै बहु, आत भये जिन कौ बृज प्यारी।
गात किसोरजुगल्ल बहै द्रिग, आप अधीर भई सु निहारी।
को मम अग सु रानिय या तन, है परदा सत-सगति टारी।
ऊठि चलो कहि हाथ गह्यौ उन, लाज बडी यह लेहु बिचारी ॥५६९

येह बिचारि सु स्याम निहारन, सार हरी कछू लाज न कानी।
ऊठि गई कहि साधन कै ढिग, पाय लगी बिनती करि रांनी।
हाथि जिमावन की मनमैं जन, लाखन भाति कही नहि मानी।
आइ स देहु करौं सुख है यह, प्रीति लखी करि तौ तव जानी ॥५७०

---

१ क्यू। २ बीतत।

और सुनौ इक नेम लयौ मथुरा तन त्याग करूं कहि दीनौं।
काबिल मौम दई पितस्या[1] लखि ओर हरि मूर्ति कै न अधीनौं ॥५६१
आयु रही कुछ आइ लगे दिन जाम करी जुग की सम लाग।
प्रेरि दयौ कवि दै अध दोहर, साथ करै पन यौं बड़ भागे।
सांढि चढ़े मथुरापुर आवत म्हाइ तज्यौ तन हौ अनुरागे।
जै-जयकार भयौ दसहूं दिसि फैलि गयौ जस जागहिं जागें ॥५६२

द्वारिकापति को मूल

छपै कुलधारन द्वारावती जोइसी यें कीकी धर्मे ॥३६०
जिवन अजीज अमीस अनन्त प्रभु पुर मैं दीपी[2]।
साह सम्मति[3] रणछोड़ सहाय सोगण पुन कीपी।
धन धरनी गढ़ काज सुद्ध दीवानू साजै।
खटक कुटका भयौ रुक्क भगवत ईं काजै।
कटक आइ कीपी कलेस चाँद नाम जाको नमै।
कुलधारन द्वारावती जोइसी यें कोको धर्मे ॥५५३

टीका

इन्दव छंद मांगन को सुत कावन को पति द्वारिकानाथ कही करि रक्षा।
स्याम सन्नाहि सहाइ करे जन तू हमरी करिये नृप दक्षा।
सुर्ने अधोज सु धाम अरावत भाज न लाग लई सुनि सिक्षा।
पापिन मारि दये हरि राखत चोज भये र नई यह पक्षा ॥५६३

मूल

छपै माधौसिंघ कूरम प्रिया भक्त भली रतनावती ॥
संतन के समूह सहस सुजस रिझावत।
भक्ति भारती कथा प्रेम उत्सव करवावत।
भगवत[4] पद मन लीन भक्ति की टेक न छोड़ी।
नृप सौं नेह निवारि वचन सुन तैं भई मोड़ी।
सुनका भयौ अब प्रगट करै भांति गयू आंबावती।
माधौसिंघ कूरम प्रिया भक्त भली रतनावती ॥५६४

---

१ पतिस्या-पताख्या। २ दीपी। ३ सन्मति। ४ भागवत।

रतनावतीजु की टीका

इंदव छंद
मानहु की लघु-भ्रात सु माधव, तास तिया तिन गाथ सुहानी।
पासि खवासनि नाम रटै हरि, प्रेम जटै उर आनत रानी।
नंदकिसोर कवै वृजचंदहि, वोलि उठै द्रिग ते वहि पानी।
कान सुनि तव तौ तिय व्याकुल, चाहि भई कछु प्रीति पिछानी ॥५६४

पूछत तू किम कैत गहै चित, नैन झरै तन भूलि रही है।
चैन करौ कछु वूझहू नाहि न, गात सहै मम सत कही है।
प्रीति लखी अति कैत भई गति, प्रेमनि कीरति कैत सही है।
काम छुडाइ वठाइ सिरै उन, मानि लई गुर पाइ लही है ॥५६५

औ-निसि गाथ सुनै मन देखन, क्यू[1] करि देखहु नैन भरे है।
स्याम दिखाइ उपाइ वताइ सु, जीवन तौ हिय आइ अरे है।
देखन दूरि मिलै तन धूर स भोग तजै वसि प्रीति करे है।
सेव करौ उर भाव भरौ, पकवान रु मेवन अर्पि खरे है ॥५६६

नीलमनी सु सरूप लयो धरि, सेवत भाव सु भाव चली है।
राग र भोग विविद्धि लडावत, वीजत[2] जामहि रंग रली है।
भूषन वस्त्र अपार बनावत, स्याम छित्री अति देखि पली है।
जोग र जज्ञ अनेक उपाइन, नाहि लहै यह प्रेम गली है ॥५६७

देखन चाहि उपाइ कहा अव, वात अही कहि कौंन सुनैं ये।
ठौर करावहु म्हैलन कै ढिग, चौकस चौ-दिसि राखि जनै ये।
साध पधार हिवै कहि ल्यावहि, राखहु जागहि पाव धुनै ये।
भोग छतीस धरौ उन आगय, डारि चिगे द्रिग स्याम लखै ये ॥५६८

सत पधारत सेव करै वहु, आत भये जिन कौ वृज प्यारी।
गात किसोरजुगल्ल वहै द्रिग, आप अधीर भई सु निहारी।
को मम अग सु रानिय या तन, है परदा सत-सगति टारी।
ऊठि चलो कहि हाथ गह्यौ उन, लाज वडी यह लेहु बिचारी ॥५६९

येह बिचारि सु स्याम निहारन, सार हरी कछु लाज न कानी।
ऊठि गई कहि साधन कै ढिग, पाय लगी बिनती करि रांनी।
हाथि जिमावन की मनमैं जन, लाखन भाति कही नहि मानी।
आइ स देहु करौ सुख है यह, प्रीति लखी करि तौ तव जानी ॥५७०

---

१ क्यूं। २ बीतत।

कंचन थार घनी कर सैं करि, प्रेम सु खत परूसि जिमाये।
देखि सनेह सु भीजि गये मन नैन निमेख लगै न लगाये।
पान खवाइ र चंदन लेपत, स्याम कथा परसंग चलाये।
सैर सुनी सब देसन आवत पेखि लिख्यो नृप लोग पठाये ॥५७१
रानिय साज सबी परदा धर, आइ र बैठत मोहम मांहीं।
मानस कागद भेजि दिवानहि भूपति बांचत आगि बरांहीं।
आइ गयौ सुत प्रेम सु ताछिन भाल तिलक्क सुमाल गरांही।
भूपहि आइ सलाम करि चलि मोढिय के सुनि सोच परांहीं ॥५७२
रोस भरयौ नृप भीतरि आवत, पूछत सो मर बात बखानी।
तौ हम मोढिय मानि कह्यौ सुख, भाव र भक्ति तबै उर आनी।
मातहि कागद देत भयो करि यो हरि भक्ति तजौ मति मांनी।
मोढिय कौ नृप केस सभा मधि मूं मब माढिय औ मुम ठानीं ॥५७३
यौं लिखि भेजत मानस हाथिहि मातहि आइ वया ठनि बांच्यो।
रंग चढ्यौ सुत के परसगहि वार मुडाइ र भावहि सांच्यो।
सेवन पाय करैं निसि आवत, आनि प्रभूतरि गाय न नाच्यो।
भूपति भखि तजे लिखि देवत स्याम निपुत्र भई हित राच्यो ॥५७४
मानस आइ दयो उर का सुत, बांचि खुसी हुत देत बधाई।
बाज बजाइ बटावत है धन काहूक आइ र भूप सुनाई।
भूपति पूछत लोग कही सब मोढिय मात भई सुत माई।
भूप सुनी दुख पाइ चल्यौ गिनि बैर भयौ उत होत भलाई ॥५७५
राखि लियो नृप कौ समझाइ र लोग भला सुत आइ लसाई।
बैत भयौ तन गात विपै लगि स्यामहि काम लगे सुखदाई।
मांगि लई परि पाइ वई तुम भूप चल्यौ निसि भी मन भाई।
चालि गयो गढ़ आइ मिले नर, बात कही सब चित उपाई ॥५७६
म्हैलहि बैठि बुलावत मन्त्रिन, मांक कह्यौ अब सोहु निवारैं।
बाहु मरै र कलंक न आवहि सो मतिवंत बिचारि उचारैं।
पिंजर सीह छुटावहु मारहि, दावहि बाव नहीं मह सारैं।
हाल चुगी सब छोड़त दौरत बैठ रावालि कुम्भंच निहारं ॥५७७
देखत ही प्रभु नैन लगे छबि बोल गुन्यौ उत भौ द्रिग ढारे।
ऊठि करयो दमनांन भले मन भाग बड़े मुग्यप पधारे।

फूलन माल गरे पहिरावत, देत तिलक्क लगे अति प्यारे।
धामहु तें निकसे मनु खचहि[1], साखत लोगन मारि पछारे ॥५७८
रानिय की सुधि लेत भयौ नृप, है जु भले भ्रम होइ गयो है।
राय करे परनाम परचौ धर, आय दया उन बैन दयो है।
भूप करै परनाम कही प्रभु, देखहु नैक कलाल लयौ है।
भूप कही द्रिबिराज तुम्हारहि, लोभ नही पति स्याम धयौ है ॥५७६
मान र माधव नाव चढे नृप, सोच भयो जुग डूबन लागी।
भ्रात कहै बड कौंन उपाइ स, छोटहु कैत तिया बडभागी।
ध्यान करयौ तब लेत किराडहि, जेठहि देखन चाहि सु लागी।
आइ करयौ दरसन्न भयौ खुसि, गाथ अनूप हिये मध पागी ॥५८०

मूल

छपै **करत कीरतन मगन मन, मथुरादास न मगियौ ॥**
हिरदै हरि बेसास, सील सतोष सु आसै।
धर्म सनातन सुहृद, ज्ञान रवि करत उजासै।
नंदकुवर सौं नेह, कुंभ धरि मस्तक ल्यावै।
पर्चर्या नैवेदि, आचमन दे जल प्यावै।
श्रीवर्द्धमांन गुर की दया, रिसकराय रग रगियौ।
करत कीरतन मगन मन, मथुरादास न मगियौ ॥४५५

टीका

इदव छंद बासति जारहि भक्ति करी रसि, वात करी इक तेउ सुनावै।
स्वाग धरें चलि आवत सालग-राम सिघासन माहि डुलावै।
स्वामिन के सिष जाइ र देखत, भाव भयौ कहि है परभावै।
आप चलौ वह रीति बिलोकहु, कै सरबज्ञ चलें दुख पावै ॥५८१
लै करि जात भये परि पाइन, फेरि फिरावत नाहि फिरै है।
जानि लयौ इन कौ परतापहि, मारि चलौ मन माहि धरै है।
मूठि चलावत भक्ति फिरावत, वाहि जरावत दुष्ट मरे हैं।
होइ दयालहि जाइ जिवावत, लै समझावत हाथ धरे हैं ॥५८२

---
१ खचहि ।

मूल

छपै प्रेम बधायौ पुंग सम, नृतक नरायनदास प्रति॥
सबद उचारयौ नेह प्रीति कौ मातौ साचौ।
गावत पद मैं गरक, मदन मोहन रंग राचौ।
नृत्य और ऊ करै, यह गति कोऊ न ल्याव।
ऐसी त्रिभंग बताइ, लिख्यौ त्रिभंग सकावै।
प्रगट भई हंडिया-सराइ राघौ मिलिया प्रानपति।
प्रेम बधायौ पुंग सम, नृतक नरांइनदास प्रति॥५५५

टीका

इंदव नृत्य करै हरि के सुख आगय बैसन मैं रमि है मन मोरै।
छंद आइ रहे हडियाइ सरायहु, नाम सुन्यौ सु मलेछहु मीर।
साथ महाजन बोलि पठावत, आत गुनी इन ल्यावहु पीर।
आइ कही तुम बेगि बुलावत सोच भयौ वह नीच अधीरै॥५८३
नृत्य करौं न बिनां प्रभु नेमहि सेवन वा ढिग मूं बिसतारै।
ऊंच सिंहासन दाम धरी तुलसी सन देखि र गांन उचार।
मीरहु बैठि सबै महि म्लेच्छ स्याम लगें द्रिग रूप निहार।
बार न चाहत है कछु औरन प्रांन चढे कर देत न डारै॥५८४

मूल

छपै लछन उज्जल स्यांम के, येते जन बहु बेत हैं॥
१प्रीत स्यांम २गोपाल ३मदामर ४नारद ५रम्ह र।
६बहुर्पतम ७हरिनाम ८मनतानंद ९कुंवर वर।
१०स्यांमदास ११जसवंत,१२कृष्णजीवन१३स्यामबिहारी।
१४वोहिथराम १५दीनदास, मिश्र १६भगवान धमधारी।
१७हरिनारांइन गोप्तु, १८रांमदास १९गोविंद मांडस हेत हैं।
लछन उजल स्यांम के, येते जन बहु बेत हैं॥५५६
जगमग सूं न्यारे भये जे जे भगवा जोति है॥
१रांमरैन २श्रीदेव ३बिदुर ४जयद ५रघुनाथी।
६दांमोदर ७भोजा ८वयाम ९गंगा मथुरा थी।
बंदा १०गिरधर ११परसरांम १२परमानंद १३मोहन।

राघो १४गोपानद, १५खेम १६चतुरो नारोहन।
१७द्वै-कृष्णदास १८विश्राम सुनि, सेससाई आरोगि है।
जगनग सू न्यारे भये, जे जे भजिबा जोगि है ॥४५७

विदुर बैष्णु की टोका

इदव है विदुर जयतारनि गाव स, सतन सेवन मैं वुद्धि पागी।
छद मेह भयौ नही सूकत साखहि, स्याम कही जन कौ वडभागी।
साख कटाइ गहाइ उडाइहु, दोइ हजार मन अनुरागी।
बात करी वह लोग न मानत, रासि भये हरि सौ लिव लागी ॥५८५

मूल

छपै साधन की सेवा करै, मधुकर बृति करि ये भगत ॥
१प्रमानद मधुपुरी, द्वारिका २गोमां आंहीं।
सागावति ३भगवान, दूसरौ काल ४खमाहीं।
५स्यांमसेन के बस, ६बीठल टोडै टकटारै।
७पीपाहड चौंधड, ८खेम पडा गोनारै।
केवल कूबा ६झींथडै, जैतारणि १०गोपाल रत।
साधन की सेवा करैं, मधुकर बृति करि ये भगत ॥४५८
मथुरा महि उछ्व कीयौ, कान्ह र बहुत उदार मन ॥
बर्णाश्रम षट-दरसन, भूप कगाल जिमाये।
सतन कौं सर्वस, देहु असे हुलसाये।
चदन अबर पांन, कीरतन करतां दीन्हे।
गहणे दीये उतारि, प्रभु के यौं रंग भींने।
सुत बीठल की सर्ब सिरै, असौ नाहीं आंन जन।
मथुरा महि उछ्व कीयौ, कांन्ह र बहुत उदार मन ॥४५६
चीर बध्यौ दुरपद-सुता, त्यूं रिधि तूंवर भगवांन की ॥
अद्‌भुत असौ भयौ, खांड मैदा घृत बढ़िया।
हाटोक[1] रूपा ढेर, देखि परसन मन पढिया।
जीमन लीला रास, कांन की कीरति गाई।
सतन को सनमांन, बहुत सपति सब पाई।

---

१ सोनौ हाटक।

मूल

छपै प्रेम बधायौ पुंग सम, मृतक मरायमदास प्रति ॥
सबद उचारयौ देह, प्रीति को नातौ साचौ।
भावत पद मैं गरक, मदन मोहन रंग राचौ।
नृत्य और ऊ करैं यह गति कोऊ न ल्यावै।
वैसी त्रिभंग बताइ सिख्यौ विश्राम सचावै।
प्रगट भई हंडिया-सराइ, राखौ सिलिमा प्रेमपति।
प्रेम बधायौ पुंग सम मृतक मराइनदास प्रति ॥४९५

टीका

इंदव नृत्य करे हरि के सुख भागय देसन मे रमि है मन भोरै।
छंद जाइ रहे हंडियाइ सरायहु नाव सुन्यौ सु मलेछहु मोरै।
साध महाजन मोसि पठावत, भ्रात गुनी भ्रम ल्यावहु पीर।
भाइ यही तुम बेगि बुलावत सोच भयौ वह नीच मयौरै ॥५८३
नृत्य करो न बिना प्रभु नेमहि सेवन का बिग क्यूं बिसतारै।
ऊंच सिंहासन धाम धरी तुलसी धन देखि र गान उचार।
मीरहु बैठि सखै नहि झांकत स्याम सगें बिग रूप निहार।
बार न लाहत है कछु भीरन प्रान चढ़े कर देत न डारै ॥५८४

मूल

छपै लछन उज्जल स्याम के येते जन यहु देत हैं ॥
१पीत स्याम २गोपाल ३गदाधर ४नारद ५कान्ह र।
६ब्रह्मपंतम ७हरिनाम, ८अनंतानंद ९कुंवर बर।
१० स्यामदास ११जसवंत, १२कृष्णजीवन १३स्यामबिहारी।
१४मोहिमराम १५दीनदास मिश्र १६भगवान जनमारी।
१७हरिनारायन गौड़ १८रामदास १९गोबिंद मांडन हेत हैं।
लछन उजल स्याम के येते जन यहु देत हैं ॥४९६
जगमग यूं न्यारे भये, यै दे भजबा जोति हैं ॥
१रामरैन २जैदेव ३बिदुर ४जापब ५रघुनाथी।
६दामोदर ७भोजा ८स्याम ९गंगा मथुरा थी।
वृंदा १०किंकर ११परसराम १२परमानंद १३मोहन।

च्यारि सुता हुत साधन देवत, डोलिय बैठत ध्यानहि झूंमैं।
आत सु चेन प्रभू जुग गावत, आश्चर्य मानि परी पुर घूमैं ॥५८८
मारग मैं तन छूटि गयो पन, साच करयौ हरि प्रत्तखि देख्यौ।
इष्ट गुरैं परनाम करी चलि, चीरहु घाट सु न्हावत पेख्यौ।
साथ हुते सब आइ भरे द्रिग, बेंन कहे वह जा दिन लेख्यौ।
भक्ति प्रताप लखौ मति आनहि, स्याम दया यह भाव परेख्यौ ॥५८९

मूल

छपै
भंल भक्ति प्रभु की जु पे, घोरी उभै बताइ हूं ॥
बिष्णदास दाहिनें, गांव कासीर नांव बल।
बावी दिसि गोपाल गुना, रंटि लै लक्षन भल।
गुर भगवत सम सत, जानि निति प्रेति सो सुमरै।
स्याम स्वाग वसि रहत, भक्त बल है उर हुमरै।
केसव कुलपति व्रत सदा, राख्यौ तातें गाइ हूं।
भंल भक्ति प्रभु की जु पे, घोरी उभै बताइ हूं ॥४६३

टीका

इदव छद
है गुर भ्रात उभै उर सतन, सेवन की नव रीति चलाई।
जाहि महौछब जात लियें रिधि, गाडिय साधन देत मिलाई।
सतन की घटती नहि भावत, हेत यहै किनहूं न जनाई।
सिद्ध बडे गुर है परसिद्धि, कहै कर जोरि सुनौं सुखदाई ॥५९०
है मन माँहि महौछव ठानहि, आप कही करि बेगि तयारी।
न्यौति दये चहु वोरहु के जन, आत उनौ हित जागि सवारी।
चौंदिसि तै वह साध पधारत, पाइ परे बिनती स उचारी।
पाच दिना जन ज्याइ दयौ सुख, और दये पट बौ मनुहारी ॥५९१
भोर कही गुर द्यौ परिकर्मंहि, पैले सु नामहि देव निहारौ।
अबरसे तरु हेत घर्णों जन, जाहि चले सिर पाइन धारौ।
देहि बताइ कबीरहु कौं वह, बंध चले जुग देन सवारौ।
'नामहि देव मिले पग लागत[१]', छोडिहि नाहि कहैं सु बिचारौ ॥५९२

---
१ लागन।

भीव-सुत महिमा करी, नहीं मथुरा नून प्रांन की।
घोर कष्यो द्रुपद-सुता रपू रिषि तूबर भगवान की ॥५९०

टीका

३८७ भावत है बरसे दिन नमहि सो मधु (रा) रो सुत हेम सुदाम।
३८८ साध जिमाइ र दे पट भो-विधि, पूजत पावहि विप्र न भावै।
छीन भयो धन होत बिहासहि सामन भावत नून करावै।
ब्राह्मन ही दुख होत सुखी सुनि स्वार करी इम काज कहावै ॥५८६
मांन करयो सब सौंपि दयो उन बांधि सभी बिनती हु सुनावै।
साध जिमावहु रास करावहु कै तुम पावहु देस मझावै।
रिढि भरी घरि रोक गयी तरि, दत बुलाइ दिमान¹ भटावै।
काढत वाहुत भौगन बाजत ठौरन ठौरन फेरि पठावै ॥५८७

मूल

९२ जगमल केरी भक्ति सर असमंत बिड़ बैसा भयो॥
संतन सू सम भाइ हिर्दै दुबध्या नहीं कोई।
जोरें पानि प्रनाम भवन आइ-स मे होई।
स्यांमा प्रियसू प्रीति यहों निसि परसन करई।
चाहै संग बिहार, चित्त वृन्दावन धरई।
भजन भजन मन मां प्रनांम राठौर नृपति यह पन लयो।
जगमल केरी भक्ति सर असमंत बिड़ बैसा भयो ॥५९१
हरिजन हित हरीदास म वामाता घनी भयो॥
गुन अनंत बहुगुए, सिरोमनि वोही सूझै।
सुखागार सम ध्यांन येव उर अंतर सूझै।
मोवति प्रेम बनाइ प्रगट वृन्दावन परस्यो।
स्यांमा प्रिय को नाम, सेत प्रगस फल दरस्यो।
उत्तम पद बिचारि कैं, संतन को सरवस दयो।
हरिजन हित हरीदास म वा-माता घनी भयो ॥५९२

टीका

३८९ [illegible] बनिया [illegible] [illegible] तनर्थै [illegible] भूमें।
३९० [illegible] [illegible] [illegible] सुमरन [illegible]।

१ दिवान।

च्यारि सुता हुत साधन देवत, डोलिय बैठत ध्यानहि झूमैं।
भ्रात सु चेन प्रभू जुग गावत, आश्चर्य मानि परी पुर घूमैं ॥५८८
मारग मै तन छूटि गयो पन, साच करयौ हरि प्रत्तखि देख्यौ।
इष्ट गुरे परनाम करी चलि, चीरहु घाट सु न्हावत पेख्यौ।
साथ हुते सब आइ भरे द्रिग, बैंन कहै वह जा दिन लेख्यौ।
भक्ति प्रताप लखौ मति आनहि, स्याम दया यह भाव परेख्यौ ॥५८९

मूल

छपै भैंल भक्ति प्रभु की जु पे, धोरी उभै बताइ हूं ॥
बिष्णदास दाहिनै, गांव कासीर नांव बल।
बावी दिसि गोपाल गुना, रटि लै लक्षन भल।
गुर भगवत सम सत, जानि निति प्रेति सो सुमरै।
स्याम स्वाग वसि रहत, भक्त बल है उर हुमरै।
केसव कुलपति ब्रत सदा, राख्यौ तातैं गाइ हूं।
भैंल भक्ति प्रभु की जु पे, धोरी उभै बताइ हूं ॥४६३

टीका

इदव छद है गुर भ्रात उभै उर सतन, सेवन की नव रीति चलाई।
जाहि महोछब जात लियें रिधि, गाडिय साधन देत मिलाई।
सतन की घटती नहि भावत, हेत यहै किनहूं न जनाई।
सिद्ध बडे गुर है परसिद्धि, कहै कर जोरि सुनौं सुखदाई ॥५९०
है मन माँहि महोछव ठानहि, आप कही करि बेगि तयारी।
न्यौति दये चहु वोरहु के जन, भ्रात उनौ हित जागि सवारी।
चौंदिसि तै वह साध पधारत, पाइ परै बिनती स उचारी।
पाच दिना जन ज्याइ दयौ सुख, और दये पट वौ मनुहारी ॥५९१
भोर कही गुर द्यौ परिकर्मंहि, पैले सु नामहि देव निहारौ।
अबरसे तरु हेत घणौं जन, जाहि चले सिर पाइन धारौ।
दैहि बताइ कबीरहु कौं वह, बघ चले जुग देन सवारौ।
नामहि देव मिले पग लागत[1], छोडिहि नाहि कहैं सु विचारौ ॥५९२

---

१ लागन।

पाप धर्म जित साधन मावस व मुख सत तहां सब भांव।
प्रीति सखी तुमरे हम है सुधि, प्रभु चले सु कबीरहु पाँवै।
जात मिले जन राज परें पग, देखि हसे मिलि माँथ नवांवै।
हां जु कही तुम पे किरपा बड, सेव प्रताप कहां लुक गांवै ॥५८३

मूल

छप्पै करमैती कलिकाल मैं, सीस भजन निरबाहियौ ॥
मरन धर्म बर छोड़ि अमर बर सुरति लासी।
लोकलाज कुल कानि, काटि हरि मारग धासी।
प्रगट बसी ब्रज जाइ ब्रह्म धन कीरति करई।
धनि परसराम पारीक, सुता भसी उर धरई।
बिषे बासना बमन कर बहुरि न ताकौं चाहियो।
करमैती कलिकाल मैं, सीस भजन निरबाहियौ ॥५८४

टीका

इंदव भूप बड़े सहि तास पिरोहित जास सुता करमैति बखानें।
छंद स्याम बसे उर काम सबै सब धाम सु सेव मनोमय ठांनें।
जामहु जासन सुधि सरीरहि फूलत अग छिबी मति सानें।
गौनहि कौ पति भ्रात पिता तिय चाव भयौ पट भूषन भानें ॥५८८
सोच भयो सु उपाइ कहा अब हाड र चाम सरीर न कामें।
छोडि चलौ चित ऊठि मिटे दुख प्यार भलो जग मैं इक स्यामें।
कानि र लाज नहीं कछु काजहि चाहत हु हरिया दिन धामें।
प्रात छिनोमहि मौ मग धावहि मानि बसी प्रभु संग सधामें ॥५८८
रैन भयी निकसी उर सासहु हेत लग्यौ बपुहू बिसराई।
जानि भई परभाति स दंपति सोर पर्यौ सब ढूंढत जाई।
दौर गये बहु ओरहि मानस ऊंट करंकहु माहि दुराई।
भोग बिषै दुरगंध भगी मन मैं दुरगंध सुगंध सुहाई ॥५८९
तीन दिनां सु करंक रही मति पंक लई रति जात न थाई।
संगहि संगि सु गम गई चलि न्हाइ र भूषन दै धन धाई।
हेरत सो परसापुर आयत बैठ पता इक बिप्र बताई।
ब्रह्महि कूंड न ऊपरि ही बट दरसि भई चढि देख दिखाई ॥५९०

---
१ बमन।

जाइ परयौ पगि रोड कही पित, नाक कट्यौ मुख काहि दिखावै।
चालि बसो घर हास मिटावहु, सासर जामति सेव करावै।
व्याघ र सिंघ हतै बन मै डर, मात मरै तव जाइ जिवावै।
साच कही विन भक्ति इसीं तन, ल्या इतही मिलिकै हरि गावै ॥५६८
नाक कट्यौ कहि होइ कटै किन, भक्ति सु नाक तिहू पुर गायो।
खोत पचास बरस्स बिषै लगि, त्यागत नाहि चबेहि चबायो।
भोगन मैं नहि सार पदारथ, कांम तजौं भजि स्यांम सुहायौ।
आख खुली तब जात भयो सुनि, देत सरूप सु लै घरि आयौ ॥५६९
धाम बरचौ निसि लाल धरे रसि, राखि भलै चित टैल कराई।
जात नही कहु नांहि मिलै किन, पूछत भूप कहा दिज भाई।
काहु कही घर मै प्रभु सेवत, भूप भयो खुसी सुद्धि मगाई।
जाइ कह्यौ नृप देत असीसहि, कैतहि भूप चल्यौ घर जाइ ॥६००
प्रीति लखी नृप पूछत कैत सु, नीर बहै द्रिग स्याम पगी है।
जात भयो नृप ल्याउ इहा उन, पात हमै अति चाहि लगी है।
तीर खडो जमुना-जल नैननि, राय लखी रति बौ उमगी है।
लाख बिसा बरज्यो नृप चा अति, कौन कुटी घरि आत जगी है ॥६०१

मूल

छपै कृष्ण रूप गुन कथन कू, खरगसेन नृमल गिरा ॥
बड़ी भक्ति तन मध्य, बरनई दान केलिका।
तात मात सुत भ्रात, नाम कहि गोपि ग्वालिका।
मोहन मित बिहार, रंग रस मै मन दीन्हौं।
चित्रगुपत कै बंस, बिदत यह लाहा लीन्हौं।
स्मृति गौतमी आंनि उर, रास माँहि बपु तजि फिरा।
कृष्ण रूप गुन कथन कौं खरगसेन नृमल गिरा ॥४६५

टीका

इंदव छद रास करावत ग्वालिर वासहि, पुनिम सर्द लग्यौ रस भारी।
पाव चलावनि भाव दिखावनि, थेइ करावन जोरि निहारी।

---

*भगवान भद्राए ग्वाल गोप के है है माराजजा।(?)

पाप बन जित साधन भावत, द भुज सत तहां सब भांव।
प्रीति लखी सुमर हम हैं सुधि, जाहु घमे सु कबीरहु पांवें।
जात मिले जन राज परे पग देखि हसे मिलि भाव बतावें।
हो जु कही तुम पै निरपक्ष बड मेव प्रतान कह्यो तुक गावें ॥५९३

मूल

६३ करमती कलिकाल मैं, सीस भजन निरबाहियौ॥
मरन धम बर छोड़ि अमर बर सुरति पागी।
लोकलाज कुल कानि काटि हरि मारग लागी।
प्रगट बसी ब्रज जाइ बरन मन कीरति करई।
धनि परसराम पारीक, सुता ऐसी उर धरई।
बिषै बासना बमन कर बहुरि न ताकौं चाहियौ।
करमैती कलिकाल मैं, सीस भजन निरबाहियौ॥५९४

टीका

इन्द्व मूप बड़े लखि तास पिरोहित ध्यास सुता करमैति बखानें।
छंद स्याम बसै उर बांम सजै सब धाम सु सेव मनोमय ठांनें।
जामहु जातन सुधि सरीरहि फूलत अग छिबी मति सानें।
गौनहि कौ पति आत पिता तिय चाव भयौ पट भूषन आनें॥५९४
सोच भया सु उपाइ कहा अब हाड र चाम सरीर न कामैं।
छोड़ि चलौं चित ऊठि मिटै दुख प्यार भलौ जग मैं इक स्यामैं।
कानि र लाज नही कछु काजहि चाहत हूं हरिमा दिन यामैं।
प्रात खिलावहि यौं मन भावहि भाजि चली प्रभु संग सबामैं॥५९५
रैन भयी निकसी उर लालहु हेत लग्यौ बपुहू बिसराई।
जानि भई परभाति र दंपति सोर परयौ सब ढूंढत जाई।
दौर गये चहु ओरहि मानस ऊंट करंकहु मांहि दुराई।
मोम बिषै दुरगध लगी मन मैं दुरगंध सुगंध सुहाई॥५९६
तीन दिना सु करंक रही गति संक भई रहि जात न भाई।
सगहि संगि सु गग गई चलि न्हाइ र भूषन दै मन भाई।
हेरत सो परसापुर आवत केत पता इक बिप्र बताई।
चढ़िहि ऊंट स ऊपरि हो बट, देखि लई चढ़ि केत दिखाई॥५९७

१. बचन।

दुखदलन मरदन मदन, नेह नेम हरि लाल को।
संतन सेवा कारनें, यहु तन माधो ग्वाल को ॥४६८

बिदत बहुत लछि प्रेमनिधि, नम दिज तिन सग्या धरी ॥
उत्तम सहज सुह्लिद, मिष्ट गिर आनद दाता।
संतन कौं सुखकार, प्रेमा नौमांतर राता।
भवन मांहि बैराग, तत्वग्रही भव न्यारा।
नेम सनातन धर्म, भक्त निति लगै पियारा।
सहर आगरे करि कृपा, कथा पृथी पावन करी।
बिदत बहुत लछि प्रेमनिधि, नम दिज तिन सग्या धरी ॥४६९

टीका

इंदव छंद
प्रेमनिधी बसि है पुर आगर, सेचन कौ तरकै जल ल्यावै।
चातुरमास जहं-तहि कर्दम, सोच करै किम अप्रस आवै।
जो चलि हौं तम मै बिगरै सब, तौ हु चले नर छूत न भावै।
द्वारहु ते सुकुमार लख्यौ इक, हाथि चिराक इनै लगि जावै ॥६०४
मानत यू पहुचाइ चल्यौ किन, जो टलि है सुख को उघरी है।
आत भयो जमुना लग आव्रज, न्हात भये बुद्धि वै सु हरी है।
कुंभ धरयौ सिर आइ गयो वह, छोडि गयो कौन करी है।
होत भई चित चिंत गयौ बित[1], मित बिना द्रिग होत झरी है ॥६०५
कैत कथा सु हरै चित भाव, भर किरपा करि दुष्ट जरै है।
जाइ कही पतिस्याह रिसावत, लोग बडे तिय धाम भरै है।
चौपहिदार पठाय बुलावत, तोइ धरौ वह सोर करै है।
लेर गयौ नृप बूझत रगहि, नारि करौ परसग बुरौ है ॥६०६
गाथ कहौ प्रभु कान्हहि की नर, नारिहु आइ रहै उन प्यारी।
ना बरजै न बुलावन जावत, नाहि बिषै तिय है महतारी।
बात भली तुम तौ कहि दीन सु, तो ढिग के नर कैत नियारी।
भूप कही इन राखहु देखहि, रोकि दये तब तौ हरि धारी ॥६०७
पौढत हौ पतिस्याह कही निसि, इष्ट धरयौ वहि को कहि प्यासे।
आव पिवौ कित[2] है सु परे ढिह, पावहि कौंन खिजे पुनि खासे।

---

१. छित। २ किन।

आइ मिले वपु छाडि र भावहि लेत अनंत सुखै तन वारी।
साच दिखाइ दई हित रीझिहु प्रेमनि कौं† मति लागत प्यारी ॥६०२

मूल

छपै   गंग ग्वाल गहरौ अधिक, सखा स्याम चित भांवतौ॥
राधेजी की सखी हुती यह संज्ञा पाई।
बृज के गांम द ग्वाल, गाइ भिन भिन्न सुहाई।
स्यांम केलि प्रानद उभिय हिरदा मैं धारी।
मगन रहै रस मांहि मूठ बांणी न उचारी।
चाहत बृज बृजनाथ गुर सत चरन सिर नांवतौ।
गंग ग्वाल गहरौ अधिक सखा स्यांम चित भांवतौ॥४६६

टीका

इंदव पास भयो पतिस्याह मह्रावन सारंग राग सुनौं हठ ल्याये।
छंद   संग सु बजन रंग बन्यौ अति मात करे जल नैन बहाये।
हाथ हु जोरि कही बसिये मम जीवत है बृजभूमि सुनाये।
संग लगे हठ बात दिसी छुट आवत तूवर आई समाये ॥६०३

मूल

छपै   यहु लोक प्रलोक सुख, सालवास बोऊ लह्या॥६०
चरः[1] आकर प्रभु सुबस प्रीति साधन सूं मिलि प्रति।
जगत कुबस सम बस्यौ महरि मालब हु निरवृति।
प्रीतम ज्यू वपु मुच्यौ अधेरै मांहि बनैती।
बींद बन्यौ भजि रांम संत समूह जनैती।
हरख भयो हरखापुरै गुण गाया ज्यूं गुर कह्या।
यहलोक परलोक सुख सालवास दोऊ लह्या॥४६७
संतन सेवा कारने, मधु तन मायव ग्वाल कौ॥
अहनिसि करै उपाव साध जा बिधि हुं परसन।
स्यांम स्यांम ते हित दास कौ चाहै दरसन।
करतै पर उपगार और आसा नहीं मन मै।
प्रेमा मगन महंत, पाइ है गुन-धन जन मै।

---

१ कहीं मिलाये।

---

†टि —बान।
‡टि —चपवान्।

सब सूं रह्यौ निराल, इदु द्रुम साखा नांइँ।
भारी गुन-गंभीर, सकल जीवन सम आंइँ।
सत[1] सुजस आनन सदा, अपजस कबहूं ना कीयौ।
साध दया उर धारि प्रभु, कांन्हरदास लाहौ लीयौ ॥४७३
पापी कलि के जंत जे, केवलरांम कीये बिसद ॥
गुर संतन सौं बिमुख, नाव जगदीस न गांवै।
बहुत इसे नर-नारी, खैंचि मारग सति लावै।
उज्जल प्रीति अकांम, कनक अरु कांमनि त्यागी।
सार-द्रिष्टि अज्ञान नसन, रहति करुणा के भागी।
स्याम स्वाग नवमा भक्ति, देत नांहि बोलै असिद।
पापी कलि के जत जे, केवलराम कीये बिसद ॥४७४

टीका

इंदव छंद
धामहि धाम कहै मम देवहु, ल्यौ हरि नावहि सेव बतावै।
स्वाग धरे लखिये न अचारहि, पूजन की प्रभु रीति सिखावै।
सागर है करुणा न सुने अनि, बैलहि चोट दई सु लुटावै।
ऊपरिई मगरा बिचि देखत, है सब ये कहि कै समझावै ॥६१०

मूल

छपै
हरि-बस संत सेवा करै, द्रिब्य रहत बिस्वास हरि ॥
गान गाथ सूं हेत, साधन पूजन अति राजी।
खुरपा जाली न्याई, देत सर्बस ले बाजी।
करै नहीं बकबाद, सील सुमरन संतोषी।
भजे अखडत स्याम, आतमि या बिधि पोखी।
श्रीरग सीस गुर धारि कै, प्रभू मिल्यौ भव सिंध तरि।
हरिबंस सत सेवा करै, द्रिबि रहत बिस्वास हरि ॥४७५
कल्यांन लयो कन बीन कै, सुजस सुगन हरि भजन जग ॥
आन रहत पतिब्रत, सीस गोबिंदहि धारे।
बैन मिष्ट सुख दैन, जगत चित[2]हरन उचारे।
करुणा के बड ढेर, दया उपगार विवेकी।
संत चरन रज ध्यान, काय मन बच क्रम येकी।

---

१ सब। २ (नहीं)।

लात मरी कहि नांहि सुनी हम आप कह्यौ वह पांवहि हासे।
रोकि दियौ वह कांपि उठ्यौ सुनि भाव भयौ उर सौ दुख नासे ॥६०८
मानस भेजि बुलावत साधिन आवत पाइ लगे नृप भीजे।
साहिब कौं तिस जा अस पावहु नांहि पिवै अनिवै तुम रीझे।
त्यौं वस गांव रहौं तुम पायन नांहि गहौं द्रिबि रासत छीजे।
साधि भिराक दई पहुचावत नीर पिवावत है प्रभु धीजे ॥६०९

मूल

छपै राघो सम करि कूबलौ, भक्ति भाव मोटो महा॥
परंपरा सिख गरू खोड़रौं विवत बतायो।
मांहो बारे भूसन कछू कामौ नहीं लामौ।
सुंदर सहृज सुसील गिरा मृदु। न सुहाई।
साम-सग मैं जाइ, कीरतन कथा कराई।
कहसी सू भासे नहीं जा सम की महिमा कहा।
राघो सम करि कूबलौ भक्ति भाव मोटो महा ॥४७०
सतन की सेवा सीयें जित तित भक्त बिराजहीं॥
पद्मबेरछै रहै मह स्याव देवकल्याण।
हरिनारांइन भूप बिग बोहिथ बर मार्न।
गांव सुहैमें रामदास तुलसीसू मेलै।
सहर हुसगाबाद मांहि उधव भड भेलै।
प्रमानंद योगी बिधै ध्वजा धरम की साजहीं।
सतन की सेवा सीयें जित तित भक्त बिराजहीं ॥४७१
कीयो भजन साधन सबन अबला तन इन बाईइन॥
१मीरां २हीरामम्य ३धर्मा ४लक्ष धर्मा प्रगट जग।
५केसी ६बीबनी ७रामबाई, ७माली भाली मग।
८मीरां ९जमना रैदासनि १०गंगा पुनि ११सेवा।
संत उपासनि १२गोमती उर्मे १३पारबती सेवा।
१४बादर १५रानी कुवरराय यूं कामौं १६हुरखां ओढ़सित।
कीयो भजन साधन सबन अबला तन इन बाईइन ॥४७२
साघ दया उर धारि प्रभु, कांम्हर-जन साहो मीधी॥
सख्यौ भजन मग सत्य जबै गुर सरनै आयौ।
साब भूठि पहिचांनि जगत भ्रम दूरि उड़ायो।

सब सूं रह्यौ निराल, इदु द्रुम साखा नाईं।
भारी गुन-गंभीर, सकल जीवन सम आंईं।
सत[1] सुजस आंनन सदा, अपजस कबहूं नां कीयौ।
साध दया उर धारि प्रभु, कांन्हरदास लाहौ लीयौ ॥४७३

पापी कलि के जत जे, केवलराम कीये बिसद ॥
गुर सतन सौं बिमुख, नांव जगदीस न गावै।
बहुत इसे नर-नारी, खैंचि मारग सति लावै।
उज्जल प्रीति अकांम, कनक अरु कांमनि त्यागी।
सार-द्रिष्टि अज्ञान नसन, रहति करुणा के भागी।
स्याम स्वाग नवमा भक्ति, देत नाहि बोलै असिद।
पापी कलि के जत जे, केवलराम कीये बिसद ॥४७४

टीका

इंदव छंद
धामहि धाम कहै मम देवहु, ल्यौ हरि नावहि सेव बतावै।
स्वाग धरे लखिये न अचारहि, पूजन की प्रभु रीति सिखावै।
सागर है करुणा न सुने अनि, बैलहि चोट दई सु लुटावै।
ऊपरिई मगरा बिचि देखत, है सब ये कहि कै समझावै ॥६१०

मूल

छपै
हरि-बस संत सेवा करै, द्रिब्य रहत बिस्वास हरि ॥
गान गाथ सू हेत, साधन पूजन अति राजी।
खुरपा जाली न्याई, देत सर्बस ले बाजी।
करै नहीं बकबाद, सील सुमरन संतोषी।
भजे अखडत स्यांम, आतमि या बिधि पोखी।
श्रीरग सीस गुर धारि कै, प्रभू मिल्यौ भव सिंध तरि।
हरिबस संत सेवा करै, द्रिबि रहत बिस्वास हरि ॥४७५

कल्यांन लयौ कन बीन कै, सुजस सुगन हरि भजन जग ॥
आन रहत पतिब्रत, सीस गोबिंदहि धारे।
बैन मिष्ट सुख दैन, जगत चित[2]हरन उचारे।
करुणा के बड़ ढेर, दया उपगार बिबेकी।
सत चरन रज ध्यान, काय मन बच क्रम येकी।

---

१ सब। २ (नहीं)।

दूरि करयौ पट देखि गिरयौ नृप, वात नही द्रिवि की वयम कीजे ।
पानि दयौ यम जो सिर[1] देवत, रीझि लई उनकी सुनि जीजे ॥६१३
रीति सुनी जगदेव सुता नृप, कैत पिता† सन मोइ न दीजै ।
भूप बुलाइ कही समझाइ, सुनौ यह राइ सुता मम लीजै ।
वार नस्यौ सत जाइ हती कत, लेर चले मम लै मति छीजै ।
नैनन देखहु काटि र ल्यावहु, आनि धरयौ सिर फेरित रीझै ॥६१४
रीझि कही विसतार सुनौ अनि, सतन सेव करै हरिदासा ।
साधन सू परदा न हिरदे सुख, भक्त रह्यौ इक पुत्रिय पासा ।
ग्रीषम की रुति सोत छता जुग, देहहि देह मिली सुधि नासा ।
प्रात भयें चढियो नृप ऊपरि, चादरि नाखि फिरयौ तरि वासा ॥६१५
दोउ जगे सखि चादरि लाजत, लेत पिछानि सुता पित जानी ।
साधन ये द्रिग ऊठि चल्यौ नृप, आय परयौ पग बात वखानी ।
होइ सुचेत करौ विधि सक न, दुष्ट सुनै नृप कै कुट वानी ।
निंदत है तुम हीय जरै मम, नाहिं डरौ अपनी सुखदानी ॥६१६
भक्त कलक लगै इम कैत सु सतन को घटती नहि भावै ।
सर्म भई स विषै छिटकावत, जीव बिचारि घनौं पछितावै ।
फेरि करे खुसी राखि लये, हसि, देत बडौ सुख स्याम लडावै ।
भ्रात गुबिंद बजावत बसिय, भूप कही मनमै नही ल्यावै ॥६१७

मूल

छपै कृष्णदास कौं कृष्णजी, स्वैपद तें दये घूघरा ॥
मधुर चाल सुर ताल, गान धुनि मांन तान पुनि ।
रमत रग द्रिग भग, सग सम अगरास सुनि ।
धुरपद अरु सगीत, बिरत[2] रतनाकर गावत ।
स्यामा स्याम प्रसन्न, रागमाला उर भावत ।
सुनार जाति खरगू अपति भक्ति भाप गुन सू भरा ।
कृष्णदास कौं कृष्णजी, स्वैपद तें दिये घूघरा ॥४७९

---

१ जोरि दयो सिर । २ ग्रथ ।

---

†(जयचन्द दल पांगलो धारा नगरी को) ।

टीका

इदव छंद
जानन कौं पनस्याचित आनत, दाम तिलक्कही द्यात[1] दुहाई।
जीवन कौं सब दूरि करै जन, मानत आनहु मारि डराई[2]।
लै भगवान बिसेख करे तन, भक्ति भयो उर रीति सुहाई।
भूपति रीझि दई मथुरा बसि, मदिर श्रीहरिदेव कराई ॥६२१

मूल

छपै
गोंविद गलि सोहै सदा, सत रतनमय दाम ॥
सुष्ट सहज घनस्याम, धाम रतमत उत्म अति।
नाना व्रत जन प्रीति, रीति यह नीति सुघर-मति।
ह्रस[3] पीन सुर सरल बाक, कहि सव मन-भावन।
दिग दूनी बिसवास, साध का परचा गावन।
दास नराइन गोपि जे, कीये प्रगट गुन नाम।
गोंबिद गलि सोहै सदा, सत रतनमय दांम ॥४८२
मघवानदन भक्त नृप, परिजा प्रतिपालै भलै ॥
कमला सहित लडात जगत, स्यघ भजन भाव करि।
लक्षमीपति आधीन, कीये उत्म रसि उर धरि।
ताकी कीरति करत कठिन, कलिजुग के राजा।
बचन न लोपै भृत्य, सूर सांवत सुख साजा।
मारतड भुजदडां सम, अरि अवेर दोऊ पुलै।
मघवानंदन भक्त नृप, परिजा प्रतिपालै भलै ॥४८३

टीका

इंदव छंद
सेवत है लक्षमी सु नराइन, यौं पन सगहि राखत डोला।
जावत है जुध कौ तव आगय, नातरि पूठि रहै यह तोला।
जैसिंघ सो जसवत सुनी जल, ल्यावत सीस लखै यह छोला।
जात दिली सु बजारहि आवत, देखि परे पग थे निरमोला ॥६२२
जैसिंघ जूहि कहै मम नेह न, है तुम्हरी भगनी उर जैसौं।
दीपकुवारि बडी हरि भक्ति सु, क्यूक भजै हम नाहिं नवैसौ।

१ ह्यात। २ मराइ। ३ ह्रस।

†टिप्पणी — सूरवीरण।

टीका

इंदव दास किसन्न सुनार जुगल्ल हु सेव करै नृति गांन उचार।
छंद होइ गयो मसतांन दिनां इक, नूपर टूटि परयौ न संभारै।
स्यांम लख्यो गति भंग भई निज, पाय न काढि र लाव पगारै।
होत भई सुधि नीर चल्यौ द्रिग कीरति छाइ गई जग सारै ॥६१८

मूल

छपै श्रीनाराइनदास बड़, भजन प्रवधि स्वांमी सरस॥
जोग भक्ति करि प्रथस, गात अपने वस राख्यौ।
धर्मदमन उर मांहि, स्यांम जस आंमत भाख्यौ।
अरचर्न भस चित रहसि, सदा सतसंग सुख दाता।
विवत चैन नर बैन, श्रीनारांइन राता।
साध सेव निति प्रति करै, बैस उतर गनि ता बरस।
श्रीनाराइनदास बड़, भजन प्रवधि स्वांमी सरस॥४८०

टीका

इंदव वद्रियनाथ जु ते चलि आवत सो मथुरा सु किसोर रहाये।
छंद मन्दिर लोग वरे दुख जु तिम नेम सरूप लगे चित भाये।
आप रखा करि है सुख होवत आंनत मांहि प्रभाव भुमाये।
दुष्ट लखे इक पोट धरी सिरि सेरि चले मग मा दुख पाये॥६१९
पेखि बड़े नर सेत पिछानि सु, पाय सम्यौ परनांम करी है।
पेखि प्रताप परयौ पग दुष्ट हु कष्ट गह्यौ नहि झूठ मरी है।
या करि काम बने तुमरो सति आत नहीं परि मांखि झरी है।
संतम सक्ति भयौ उपदेसहु भक्ति मइ उर वास जरी है॥६२०

मूल

छपै सप्तमी भर भगवानदास सरस चित प्रति सुष्ट मन॥
भक्ति भावनां भूप बिनै उत्तम सजम धन।
पीवत रस भागोत बरनि चोजा कर्म गन।
बसत मधुपुरी मिलि, हेत सापन चरनांमृत।
हेरत हरि विश्रांम नांम गुन रूप गहै चित।
तिमिर बुद्धि उर सहमता निडर महा दाड़े म यन।
सप्तमी भर भगवानदास सरस चित प्रति सुष्ट मन॥४८१

टीका

इंदव छंद
जानन की पनस्याचित आनत, दाम तिलक्कही घात[1] दुहाई।
जीवन की सब दूरि करै जन, मानत आनहु मारि डराई[2]।
लै भगवान विसेख करे तन, भक्ति भयी उर रीति सुहाई।
भूपति रीझि दई मथुरा बसि, मंदिर श्रीहरिदेव कराई ॥६२१

मूल

छपै
गोविंद गलि सोहै सदा, संत रतनमय दाम॥
सुष्ठ सहज घनस्याम, धाम रतमत उत्म अति।
नाना व्रत जन प्रीति, रीति यह नीति सुघर-मति।
हंस[3] दीन सुर सरल वाक, कहि सब मन-भावन।
दिग दूनी बिसवास, साध का परचा गावन।
दास नराइन गोपि जे, कीये प्रगट गुन नाम।
गोविंद गलि सोहै सदा, संत रतनमय दाम ॥४८२
मघवानदन भक्त नृप, परिजा प्रतिपालै भलै॥
कमला सहित लडात जगत, स्यघ भजन भाव करि।
लक्ष्मीपति आधीन, कीये उत्म रसि उर धरि।
ताकी कीरति करत कठिन, कलिजुग के राजा।
बचन न लोपै भृत्य, सूर सावत सुख साजा।
मारतड भुजदडा सम, अरि अचेर दोऊ पुलै।
मघवानदन भक्त नृप, परिजा प्रतिपालै भलै ॥४८३

टीका

इंदव छंद
सेवत है लक्षमी सु नराइन, यौं पन संगहि राखत डोला।
जावत है जुध कौं तव आगय, नातरि पूठि रहै यह तोला।
जैसिंघ सो जसवत सुनी जल, ल्यावत सीस लखै यह छोला।
जात दिली सु बजारहि आवत, देखि परे पग थे निरमोला ॥६२२
जैसिंघ जूहि कहै मम नेह न, है तुम्हरी भगनी उर जैसो।
दीपकुवारि बडी हरि भक्ति सु, क्यूक भजैं हम नाहिं नवैसो।

---

१ ह्यात। २ मराइ। ३ हुस।

---

[1]टिप्पणी — सूरवीरण।

भूप सुनी सुधो होत हुती रिस गांव दये सु उतारत मैं सो।
कागद भेजि दयो वरजौ मति दीपकुवारि करो मन हूं सौं ॥६२३

मूल

छप्पै गिरधरन ग्वाल गोबिंद संगि, तन मन धन अर्पि कैं नच्यौ ॥
घर मधि धरिनि उधार, सदा मन पूरौ राच्यौ।
सबै सदन धन त्यागि, बदन सति पति सूं भाष्यौ।
मात पिता की रीति, पुनि पुत्र न पाली।
भक्ति सबीरज भंभ परे, नहीं कतहूं चाली।
जन राघो रिझये रामजी मानपुरें मंगल रच्यौ।
गिरधरन ग्वाल गोबिंद संगि, तन मन धन अर्पि कैं नच्यौ ॥४८४

टीका

इंदव छंद सतन सेव करे गिरधरन सु, देखि दुखी हुय है रति साखी।
त्याग करे वपु खोलि पिवे पग रीति सबै धनि नाहि न काखी।
विप्र कहै सब बात सुहात न त्याग करो जन फेरि न राखी।
होइ प्रभाव बको मति भेलहु जानत हू पर भावन बाखी ॥६२४

मूल

छप्पै साधू[1] सेवत सुद्धमति गोपाली जसमति समा ॥
वसधा रस बिम मांहि प्रभु पतिव्रत सौं सेवत।
कलि कालिय ते रहत, संत कौं सर्वस देवत।
शुभग गिरा सुसील, सदा मोहन सैं पागी।
शुभ लक्षण शुभ कथा पैक हरिजन रति जागी।
अंतहकरन बिसाद महा भजन रसिक हिरदै जमा।
साधू सेवत सुद्धमति गोपाली जसमति समा ॥४८५
संतन की सेवा समझि, रामदास रतमत करी ॥
सुहृद सांत सम सहजि, गिरा आर्जव अति कोमल।
सुरत साधू देखि मिलै वर मंजुल कामन।
मंगलचार उछाह सहित भगतन की पूजन।
पद पखारि प्रणाम, रचत नाना बिधि बिंजन।

---

१ साधन।

वसिवो वछ वन प्रेम पन, उभै पदन परि मति खरी।
सतन की सेवा समझि, रांमदास रतमत करी ॥४८६

टीका

इंदव छंद
संत सुनी इक भक्तिहि देखन, आवत राम हि दास वतावो।
आप उठे पग धोइ लयौ जल, आवत रामहि दास रहावौ।
भोजन पान करौ उन ल्यावहु, राम हि दास यहै चलि पावौ।
पाय परचौ जन भाव भयौ मन, मात नही तन हौं अति चावौ ॥६२५
व्याह सुता हि रच्यौ घर मै वड, लै पकवान सुसाल घरे हैं।
चाक गुलीहु लगाय रहे सुत, खोलि लयो अनि नाहि डरे हैं।
साध पधारत पोट पठावत, जाइ जिमावत भाव भरे हैं।
पूजत है सु विहारीय लालहि, मो मन सतन भक्ति हरे हैं ॥६२६

मूल

छपै
रामराइ दिज सार सुत, प्रभु प्रीति पनपा रही ॥
भजन जोग निरवेद, वोध दिढ़ ह्रीदै बिचारे।
लोभ क्रोध मद काम, मछर मोहादिक मारे।
श्रवन† मनन गुनगान, मुदित सुख सागर न्हावै।
साध सूर परकास, ह्रिदौ अबुज विगसावै।
वा पाध परी पृथ्वी परै, दोष पिसणता धार ही।
रांमराइ दिज सार सुत, प्रभु प्रीति पनपा रही ॥४८७
भजन भाव दातारपन, यह निबह्यौ भगवंत कौ ॥
स्यामा-स्याम बिहार, सार ह्रदै मै दरसै।
रसिक राइ जस गाइ, धाइ प्रभु पद सव परसै।
आंन रहत इक भक्ति, संपरदा मधि निहारी।
कर्म सुभासुभ डारि, धारि उर प्रीति बिचारी।
सुवन सरस माघौ तणौं, स्वांग भाइ हरि कंत कौ।
भजन भाव दातारपन, यह निबह्यौ भगवत कौ ॥४८८

टीका

इंदव छंद
सूरज के भगवत दिवान, महा बन-बासिन सेव करी है।
साध गुसाइ र ब्राह्मन को, ब्रज-वासिन दे घन प्रीति खरी है।

---

†टिप्पणी—श्रोतष।

भूप सुनी खुसी होत हुती रिस गांव दये सु उदारत मैं सौं।
कागद भेजि दयो बरज्यौ मति, दीपकुवारि करौ मन ज्यूं सौं ॥६२३

मूल

छपै   गिरधरन ग्वाल गोबिंद सगि, तन मन धन अर्पि कै मच्यौ ॥
घर मधि घरिनि उबार, सदा मन पूरौ राख्यौ।
सबै सदन धन त्यागि, भजन सति पति सूं माच्यौ।
मात-पिता की रीति, पुनि पुत्र न पाली।
भक्ति सबीरज मंत्र परे, नहीं कतहूं खाली।
धन रायो रिझये रामजी, मालपुरै मगल रच्यौ।
गिरधरन ग्वाल गोबिंद सगि, तन मन धन अर्पि कै मच्यौ ॥४८४

टीका

इंदव छंद सदन सेव करै गिरधरन सु, देखि सुखी हुत है रति साची।
त्याग करै मधु खोमि पिवै पय रीति सबै भजि नाहि न काची।
बिप्र कहै सब बात सुहात न त्याग करौ धन फेरि न राची।
होइ प्रभाव बको मति सेवहु जानत हू पर मावन नाची ॥६२४

मूल

छपै   साधू[1] सेवत सुष्टमति, गोपाली जसमति समा ॥
बसधा रस बिस माँहि प्रभु पतिब्रत सौं सेवत।
कलि कालिय तैं रहत संत कौं सर्बस देवत।
भूमस गिरा सुसील, सदा मोहन सौं पागी।
सुभ सजन सुभ दसा मेक हरिजन रति लागी।
अंतहकरन बिसद महा भजन रसिक हिरदै धमा।
साधू सेवत सुष्टमति गोपाली जसमति समा ॥४८५
संतन की सेवा समझि, रामदास रतमत करी ॥
सुहिद सांत सम सहजि, गिरा आर्जव अति आगम।
गुरज साधू पेखि खिसै उर मधुर कोमल।
मंगलचार उछाह सहित भगतन को पूजन।
पद पखारि प्रनाम, रचत, मानो बिधि बिजन।

[1] साधन।

राघो सुनत तुरग तन पलट्यौ, तसकर सुन्यौ बिचार है।
सत त्रेता द्वापर जुग्ग सूं, कलू कीरतन सार है ॥४६०

कउवा तजत किराट कौं, गई अपसरा बरन कौं ॥
भक्ति करत इक भूप, सही कसणी अति भारी।
तब भेटे भगवान, आइ त्रिभुवन के धारी।
नारि पलटि नर भयौ, सीत परसादी पाई।
भांड भक्त परतक्ष, नृपति पूज्यौ निरताई।
कुवर कठारा की कथा, जन राघो कही जग तरन कौं।
कव्वा तजत किराट कौं, गई अपसरा बरन कौं ॥४६१

लाहौ मनिखा देह कौ, लालमती लीयौ लाल भजि ॥
प्रिया प्रीय तै प्रेम, प्रेम कालिंद्री तट तै।
कुज गली तै प्रेम, प्रेम अति[1] बसीबट तै।
जन गोकल तै प्रेम, प्रेम गिर गोवरधन तै।
प्रेम मधुपुरी अधिक, प्रेम घन बारे बन तै।
वृंदाबन मै जा बसी, सो नगरी घर माल तजि।
लाहौ मनिखा देह कौ, लालमती लीयौ लाल भजि ॥४६२

दक्षण-देस दूजौ कृष्ण, पडित कृष्णोजी सही ॥
जाके पग के मान, भाव उर वही भावनां।
कृष्ण-बसन अरु कृष्ण, जपन पुनि कृष्ण चावनां।
कृष्णहि कौ उपदेस, कृष्ण सब माहि बतावै।
कृष्णहि सू रतमत, कृष्ण बिन और न गावै।
बिबेक ग्यान निरबेद, निज भक्ति बिसतरी वा मही।
दक्षन-दिसि दूजो कृष्ण, पडित कृष्णोजो सही ॥४६३

उत्तरदिसि उज्जल भक्त, बारह भये बखांनिये ॥
१थंभण २द्वंदूराम ३कलकी कलंक उड़ायौ।
बहुरि ४बलकीरांम, ५रसालू दूध चितायौ।
६रामराइ ७हरिराय, रांम ८दादू दिल दरसे।
९राम मालू १०रांम रग, पुनह दादू ११प्रभु परसे।

---

१ आत।

गोविन्ददवजु सेव करै गुर, है हरिदास चले सु धरी है।
चावर दूध जच्यौ हरि चावत होत खुसी मति जांन हरी है ॥६२७
मात सुनें गुर मात नहीं तन वैरत तिया सन कौन करीजे।
जोइ कही घर संपति मामहि, भेट करौ इक वेठ न लीजे।
होत खुसी सुनि भक्ति सु तौ तनि, मानस मो मनि पेख हि भीजे।
कान परी यह बात फिरे, हरिदास सख्यौ पन प्रावन रीझे ॥६२८
होत उत्साह रह्यौ तन दाह सु, आय स पाय चले बन आये।
मानि रहे सुभ सब्द कहे मुख, आइ वहां बृज लोग छुड़ाये।
चोरिय धांम करी न कुभावहि बुद्धि प्रिया पिय मे द्रिग लाये।
है बडभाग हरी अनुराग पिता रसिको धन माधव पाये ॥६२९
अन्त पिछानि मही सुधि जानिस आगर सू सब लै बन आवें।
मात भये अधि होइ गई सुधि क्रूर चले कत जो तुम भावें।
मा बपु फेरहु ह्वां नहि लाइक, वारत वास प्रिया प्रिय भावें।
भ्रौ मन छोड स जाइ तहां चलि मामइ सो वहु जागि समावें ॥६३०

मूल

छपै   बच्यौ सुधरमा अगनिमुख, यौं रांम जपत ज्वाला टरी ॥
चंद्रहास की बेर ग्याव हरिजी को कीन्हौं।
विष देते बिखिया बई, बहुरि नृप टीको दीन्हौं।
कुटम सहत इक भूप भवानी पूजन मारयो।
भरत चक्रवत देखि पाय गहि पतो पसारयो।
जन रायो राख्यौ मरधरी भई सपत सुखी हरी।
बच्यौ सुधरमो अग्निमुख यौं रांम जपत ज्वाला टरी ॥४८९
सत त्रेता द्वापर जुग्ग सूं अब कलू कीरतम सार है॥
गोपी ग्वेद प्रजम पतिन परिहरि सुनि भागी।
गुर नर असुर सु नाग पुरष-पतिनी हरि रागी।
धर्म हैम निगुरा बच्यो हरि गुन पृथ्वी कास को।
पृथ्वी बंस सिरोमनहि धन धरजन धमधास को।

१ वैरहि ।

[दिप्पणी—रैन ।

यौं वलिदाऊ कलि मैं करी, समन ज्यू सापुरस[1] गति ॥
कुलसू तातू तोरि, फोरि घर लई जलेबी।
सतन कौ मुख पूजि रह्यौं, अब छैनी ह्वै गैबी।
सौंज सवाई वढो, रामजी रीति बिचारी।
जग्य[2] पुरस जगदीस, प्रगट रस राख्यौ भारी।
जन राघो उपजी राति इम[3], मन बच क्रम कीयो धर्म अति।
यौं वलिदाऊ कलि मै करी, समन ज्यू सापुरस गति ॥४९९

मनहर छद
[4]मसकति करत मगन मतिवारौ भयौ,
नांवकी लगनि कीन्ही कांन्हा लड बावरौ।
येक निसा निकटि निसक रही बाई येक,
भोर भयें सोर भयौ चोर है तूं राव-रौ।
ज्वाब कीन्हौं जुलम जगतपति जाणें भेद,
भरि आये थान कान्हा पीवै असै डावरौ।
राघो कहै परचौ प्रचंड भयौ जाण्यौं जब,
बीनती करत सब गाव[5] दोष छावरौ ॥५००

छपै
दादू दीनदयाल के, येते पोता सिष प्रसिध गनि ॥
प्रथम १फकीर २प्रहलाद, ३खेम छीतर सुबिचारी।
४कल्याण ५केवल ६चैन, ७नराइन च्यारि सु भारी।
८नृस्यघ ९दमोदरदास, १०गोबिंद ११वेणी ब्रह्मबसी।
१२दास बड़ौ १३गोपाल, १४अमर १५बालक हरि असी।
१६चत्रदास राघो उभै, १७मोहन १८भीख १९गरीब जन।
दादू दीनदयाल के, येते पोता सिष प्रसिध गनि ॥५०१

फकीरदासजी को मूल

मनहर छद
दादूजी दयाल कीन्ही दया निज नाती परि,
फहम फकीरी कौ फकीरदास पायौ है।
आये कौं अजब दत रिधि सिधि सील सत,
येतौ अस कृपा मधि अन आप आयौ है।

---

१ पुर सगति। २ जपे। ३ (चोरी परमार्थ)। ४ (उपाय कर गुदरान छे)। ५ (साच)।

१२राम सागर रत राम सूं सुते सिंघ से जानिये।
उत्तरदिस उज्जल भक्त, बारह भये बखानिये ॥४९४
महंत राघवा पंथ भयौ, तिहूं लोक उजागर।
पाटि द्वारिकादास बड़ो सिष धर्म को आगर।
भव टीकू हीरा सु, राम-रस पीय मतिवारा।
येकहू थांनां मांहि स्वांमी सोहा गरवारा।
जन तिलोक पूरन मराठी, कटि हरिया कृष्णदास भनि।
राघो राम न बीसरे, जिनि बड़ी सरन गह्यौ संत धनि ॥४९५
कृष्णा जाको सुत नाम गुलाम अमीन।
बाबा लाल सु उतर-खंड में धाम सुलीने।
लालदास बहु बरनि, गाइ जस लोप प्रमत्ता।
सहर आगरे मांहि कीयो इतिहास सपता।
राघो रहणि सराहिये, कहां लौं बरनौं राम बस।
भोर परें भाजे नहीं यौं भगतन के भगवांनि बस ॥४९६
ग्यांनी गदि गलतांन अति भयौ येक गुजरात म ॥
सोनीकुल महि जनम, आत्मा को अनभौ उर।
ससा-सिंग मृगनीर, जगत भयौ जाण्यौं धुर।
असपत राजा सुण्यौं, गयो सो आप तास पहि।
गोष्टि करी अघाइ जाइ अमराज आसमहि।
भक्ति ज्ञान वैराग सम, प्रीति[1] दिखायौ बात म।
ग्यांनी गदि गलतांन अति, भयौ येक गुजरात म ॥४९७
मै पुनि पुनीति प्रमार्थी, सब सदन प्रमानंद साहु को ॥
करि उद्यम उदार सु देही करी उजागर।
पूजि भक्त भगवंत भक्ति को परख्यौ आगर।
माहौरा सु रामजो बालकृष्ण मुरधंध निपु।
सरम कुटंब धर्मात्मा लपु धीरप बैरी बपु।
राघो राम निवाजि है प्रभु करि है तन निरबाह को।
मै पुनि पुनीति परमार्थी सब सदन प्रमानंद साहु को ॥४९८

१ अर्जुन। २ (राग दिखाया था)।

यौं बलिदाऊ कलि मैं करी, समन ज्यू सापुरस[1] गति ॥
कुलसू तातू तोरि, फौरि घर लई जलेबी।
सतन कौ मुख पूजि रह्यौं, अब छैनी ह्वै गैबी।
सौंज सवाई वढी, रामजी रीति बिचारी।
जग्य[2] पुरस जगदीस, प्रगट रस राख्यौ भारी।
जन राघो उपजी रानि इम[3], मन बच क्रम कीयो धर्म प्रति।
यौं बलिदाऊ कलि मैं करी, समन ज्यू सापुरस गति ॥४९९

मनहर छंद
[4]मसकति करत मगन मतिवारौ भयौ,
नांवकी लगनि कीन्ही कान्हा लड बावरौ।
येक निसा निकटि निसक रही बाई येक,
भोर भयें सोर भयौ चोर है तूं राव-रौ।
ज्वाब कीन्हौं जुलम जगतपति जाणे भेद,
भरि आये थान कान्हा पीवै असै डावरौ।
राघो कहै परचौ प्रचंड भयौ जांण्यौं जब,
बीनती करत सब गाव[5] दोष छावरौ ॥५००

छपै
दादू दीनदयाल के, येते पोता सिष प्रसिध गनि ॥
प्रथम १फकीर २प्रहलाद, ३खेम छीतर सुबिचारी।
४कल्याण ५केवल ६चैन, ७नराइन च्यारि सु भारी।
८नृस्यघ ९दमोदरदास, १०गोबिंद ११वेणी ब्रह्मबसी।
१२दास बड़ौ १३गोपाल, १४अमर १५बालक हरि असी।
१६चत्रदास राघो उभै, १७मोहन १८भीख १९गरीब जन।
दादू दीनदयाल के, येते पोता सिष प्रसिध गनि ॥५०१

फकीरदासजी को मूल

मनहर छंद
दादूजी दयाल कीन्ही दया निज नाती परि,
फहम फकीरी कौ फकीरदास पायौ है।
आये कौं अजब दत रिधि सिधि सील सत,
येतौ अस कृपा मधि अैन आप आयौ है।

---
१ पुर संगति। २ जपे। ३ (चोरी परमार्थ)। ४ (उपाय कर गुदरान छे)।
५ (साच)।

१२रांम सागर रत रांम सूं, पुनी सिंभि मे जांनिये।
उत्तरदिस उज्जल भक्त, बारह भये बखांनिये ॥४२४

महंत राघवा पंथ भयो, तिहू लोक उजागर।
पाटि द्वारिकादास बडो सिध धर्म को आगर।
अरु टीकू हीरा सु, रांम रस पीय मतिवारा।
येकहूं छांनां मांहि स्वामी मोहा गरवारा।
जन तिलोक पूरन बैराठी, कटि हरिया कृष्णदास भनि।
राघो रांम न बीसरै, जिनि बडो सरन गह्यो सत धनि ॥४२५

कृष्ण आछो संत, लाल गुसांम अभीजै।
बाबा लाल सु उत्तर-खंड मैं धांम सुनीजै।
लालदास बहु बरणि गाइ जस जोम अमत्ता।
सहर आगरे मांहि, कीयो भक्तिहास सपत्ता।
राघो रहणि सराहिये कहां लौं बरनौं रांम बस।
और धरें भावें नहीं, यौं भगतन के भगवांन बस ॥४२६

ग्यांनी गवि गमतांन प्रति, प्रगटी येक गुजरात मै॥
सोमीकुल महि जनम आत्मा को अनभौ उर।
ससा-विग मृग-मीर, जगत प्रसो आम्यौं पुर।
जसवत राजा सुन्यौं, गयो सो आप तास पहि।
गोष्टि करी अघाइ जाइ जनराज आसनहि।
भक्ति ग्यांन बैराग सम, प्रीति[२] दिखायी बात मैं।
ग्यांनी गवि गमतांन प्रति प्रगटी येक गुजरात मै ॥४२७

ये पुनि पुनीति प्रमार्थी सब सरन प्रमानंद साह को॥
करि उद्यम उदार उ वेही करी उजागर।
पूजि भक्त भगवंत भक्ति को परच्यो आगर।
माहोरा सु रांमजी बालकृष्ण मुरधंय निपु।
सकल कुटंब धर्मात्मा सपु दीरघ बेटी अपू।
राघो रांम निवाजि है प्रभु करि है तन निरबाह को।
ये पुनि पुनीति परमार्थी सब सरन प्रमानंद साह को ॥४२८

१ अत्यंत। २ (हृदय विदारणा भाव)।

यौं बलिदाऊ कलि मैं करी, समन ज्यू सापुरस[1] गनि ॥
कुलहू तांत्र तोरि, फोरि घर लई जलेबी।
संतन कै उर पूनि रह्यौ, अब छैतो ह्वै गैबी।
सांज सवाई कही, रामजी रीति विचारी।
जयपुर पुरन कारडान, प्रगट रस राख्यौ भारी।
जन राघो उनकी रानि इम[3], मन बच क्रम कीयो धर्म अति।
यौं बलिदाऊ कलि मैं करी, समन ज्यू सापुरस गनि ॥४९९॥

मनहर छंद
[4]सन्तन करत मगन मतिवारो भयो,
नोंवकी लगनि कीन्ही कान्हा लड़ बावरो।
येक निसा निकटि निसक रहो वाई येक,
भोर भयें सोर भयो चोर है तूं भाव-रो।
ज्वाब कीन्हौं जुलम जगतपति आगें अट,
भरि आये थान कान्हा पोरें श्रेम टावरो।
राघो कहै परचो प्रचंड भयो आंख्यौ जब,
बीनती करत सब गाव[5] दोप छावरो ॥५००॥

छपै
दादू दीनदयाल के, येते पोता सिप प्रसिध गनि ॥
प्रथम १फकीर २प्रहलाद, ३खेम छीतर मुनिआगे।
४कल्याण ५केवल ६चैन, ७नराइन च्यारि सु भागे।
८नृस्यघ ९दमोदरदास, १०गोविंद ११वेणी अनुरागी।
१२दास वडो १३गोपाल, १४अमर १५बालक हरि अर्गा।
१६चत्रदास राघो उभै, १७मोहन १८भीष १९गरीब जन।
दादू दीनदयाल के, येते पोता सिप प्रसिध गनि ॥५०१॥

फकीरदासजी को मूल

मनहर छंद
दादूजी दयाल कीन्ही दया निज नांवो पर,
फहम फकीरी को फकीरदास पायो है।
घाये कौं अजब दत गिधि सिधि सील सत,
येतो श्रेम छका प्रीति प्रेम ध्यान गायो है।

---

१ पुर सर्गति। २ जपे। ३ [illegible]
४ (साच)।

१२राम सायर रत राम सूं, सुती सिधि ये जानिये।
उत्तरदिस उज्जल भक्त, बारह भये बखानिये ॥४९४

महंत रायका प्रथ भयो, तिहुं लोक उजागर।
पाटि द्वारिकावास बड़ो सिष धर्म को आगर।
चद टोकू हीरा सु, राम-रस पीय मतिधारा।
येकहू ग्रांमां माहि, स्वामी सोहा गरवारा।
जन तिलोक पूरन बैराठो, कटि हरिया कृष्णदास भनि।
राघो राम न बीसरै जिनि बड़ो सरन गह्यो संत धनि ॥४९५

कृष्णा बाळो सत दास गुलाम भनीजै।
बाबा दास सु उतर-खंड मे धाम सुनीजे।
लाखवास बहु बरणि, गाइ जस जोप प्रसस्ता।
सहर आगरै मांहि कीयो मतिहास समस्ता।
राघो पहुंचि सराहिये, कहां लौं बरनौं राम बल।
भीर परें भाजै नहीं यौं भगतन के भगवान बस ॥४९६

ग्यांनी गरिब गलतान अति, भक्तो येक गुजरात मे ॥
सोनीकुल महि जनम आतमा को अनभौ उर।
ससा छिण मृग-भीर, जगत ऐसो जान्यौं धुर।
असपत राजा सुण्यौं, गयो सो आप तास पहि।
गोष्टि करी अघाइ, जाइ बनराज आसनहि।
भक्ति ग्यान बैराग सम, अतीत[1] दिखायौ बस्त में।
ग्यांनी गरिब गलतान अति, भक्तो येक गुजरात मे ॥४९७

ये पुनि पुनीत परमार्थी सब सरन प्रमानंद साह को ॥
करि उद्यम उदार व देहो करी उजागर।
पुनि भक्त भगवंत भक्ति को धरम्यो आगर।
माहोरा तू रामजो बालकृष्ण भूरधंध निपू।
सकल कुटंब धर्मात्मा सपु बीरप बेटी बधू।
राघो राम निवाजि है प्रभु करि है तन निरबाह को।
ये पुनि पुनीत परमार्थी सब सरन प्रमानंद साह को ॥४९८

१ अवधूत। २ (हरि निराकार वाज)।

मनहर छंद

महत रजब के अजब सिष खेमदास,
जाकै नेम निति प्रति व्रत निराकार कौ।
पंथ मधि प्रसिधि ह्वौ देखिये दैदीपमान,
बाणी कौ बिनांणी[1] अति मांझों न मैं मारि कौ।
रामति मेवाड मैं वासो मुख सोहै बात,
बोलत खरौ सुहात बेता वा बिचार कौ।
राघो सारो रहणो कहणी सुकृत अति,
चैतन चतुरमति भेदी सुख सार कौ॥५०६

छपै

प्रम-पुरष प्रहलाद धनि, देवजोति दिजकुल भयौ॥
दिपत देह दैदीप, दुतौ सनकादिक वोपै।
दिढ द्रिगपाल महत, परम गुर थप्यौ पछोपै।
श्रीदादू दादा गुर लगै, सर्बग्य सुंदरदास गुर।
यौं निराकार कौ नेम व्रत, पहुचायौ परलोक धुर।
इम राघो राम परताप तै, प्राण मुक्ति परमपद लयौ।
प्रम-पुरष प्रहलाद धनि, देवजोति दिजकुल भयौ॥५०७

मनहर छंद

दादूजी के पथ मैं दरद वंद देवजोति,
प्रणउ प्रहलादजी प्रहलाद कै पटंतरे।
वह प्रेम वह नेम वह पण प्रीति रीति,
वह मन माया जित मगन महत रे।
वह जत वह सत वह रग राम रत,
नृमल नृदोष सुखदाई महासत रे।
राघो कहै मन बच क्रम धर्म धारणां सूं,
जीवत मुकति भयौ वोपमा अनतरे॥५०८

छपै

दादू केरा पंथ मैं, चैन चतुर चित चरण हरि॥
कथा कीरतन प्रीति, हेत सौं हरि जस गाया।
साथि र[2] रहै समाज, प्रेम परब्रह्म लगाया।
ग्रंथ रचे बहु भांति, बिहगम नामां रूपक।
सिधि साधिक गुन कथन, जास थै अधिके ऊपक।

---

१. छिनानी। २. सायरि है।

बाईजी स माईजी सरस सिर हाथ धरयौ,
सत हूं महंतन सबन मन भायौ है।
राघो कहै राम धनि पाई बड़ी ठौर धनि
धनौ मसकीन[1] धनि माता जिन जायौ है ॥५०२

छपै स्वामी प्रीव महंत क, टीकै केवलदास वर ॥
प्रेम भक्ति कौ पुंज रचे पद साखी नीके।
करुणा बिरह बियोग, सुनत उधारक जी के।
जो धनि आवै साध बहुत तिन आदर करई।
भजन भाव सत सील देखि सब कौ मन टरई।
राघो महिमा करत चे, सुख पाव नारी र नर।
स्वामी प्रीव महंत क, टीकै केवलदास वर ॥५०३

मनहर सूबौ अजमेरि ताकौ भयौ ही दिवान आयौ,
छंद केवल बिराजे बड़ी सरणि सिरनि हैं।
आये असवार ताकौं पकरि ले चाले जब
केवल हूं आये दरपोने दुसराने हैं।
थिमौ मे पधाऊं पोथे तुरकन मराऊ यह
बंद बाले राखे मेरी काफरन जाने हैं।
बई काढि संभर की पेठ मांझ मूर्ति बाके
परचौ प्रतक्ष भयो जगत बखानि हैं ॥५०४

छपै इम रज्जब अज्जब महंत कै भले पछोपै साध सब ॥
धीरच १गोविंददास, पाटि अब रांमट राजै।
२खेम सरस सरवाड़ि तास सिष तहां बिराजै।
३हरीदास ४धीतर ५भगन ६दामोदर ७कैसौ।
८जगजीवन दो बनवारि, रांम रत-मत गहि केसौ।
जन राघो मंमस राति दिन बीसत है बैकार अब।
इम रज्जब अज्जब महंतकै भले पछोपै साध सब ॥५०५

---

1 तमरीन।

बड़ो पुरष पुरसा[1] रचव, या आवानेरी अजब उठाण[2] ।
जन राघो प्रणम पछोपै वोपै, तुलछीदास तपै जिम भाण ॥५१३

अब जगजीवन कै पाटि है, दिपत दमोदरदास भणि ॥
ध्यांनदास धनि पिता, आन तजि हरिगुण गावै ।
भ्राता कान्हडदास, सहित हरि भक्ति बढावै ।
सकल पराकृत संसकृत, कवित छंद गाहा गूढ़ा ।
खीरनीर निरवारि, करै अरथन का कूढा ।
यम राम जपत राघो कहै, सकल कुटब की गई सु बणि ।
अब जगजीवन कै पाटि है, दिपत दमोदरदास भणि ॥५१४

मनहर छंद

नाराइन दूधाधारी घड़सी गुर पाय भारी,
राजा जसवत असवारी भेजी आइये ।
बैलन लीये चुराइ भैल कैसे चलै पाइ,
चढ्य करि कह्यौ जु निरंजन चलायये ।
भैल चली आवै अचिरज सब पावै,
राजा सनमुख ध्यायौ हुलसायौ मन भाइये ।
अदभुत कीनौं नृप चीन्हौं द्रिष्टि आपनी,
सु परचौ प्रतक्ष यह संतन सुनाइये ॥५१५

छपै

दादू दीनदयाल कै, घड़सी घट हरि भजन कौं ॥
घडसी कै गोबिंददास, कुल नांमां बंसी ।
रची डीडपुर साल, भक्ति बल है हरि अंसी ।
बांणी करी रसाल, ग्यान बैराग चितावनि ।
साखि सबद मै राम, नांम गुन और न भावनि ।
परचा दे परकाज कौं, जांनत तन प्रभु[3] संजन कौं ।
दादू दीनदयाल के, घडसी घट हरि भजन कौं ॥५१६

मनहर छद

रतीयाज गाव देस जगल मे हुतौ सत,
प्रमांनद रहे दया सील सत पाले हैं ।
परचौ है दुकाल देस मटकी भरी ही सात,
बाबा अन सौंपि लोग मालवा कौं चाले हैं ।

---

१ पुरासार । २ (प्रमाव) । ३ प्रछ ।

ध्यांन जोग बराग मग, बरणे मन बच काम करि।
दादू केरा पंथ मैं चैन चतुर चित धरण हरि ॥२०९

इंदव छंद
दादूदयाल गोपाल प्रताप तै चैन के अंग यौं ग्यांन उपज्यौं।
माछुड़ गांम मसंदत पेखहि, यौं उर मैं गुर आप अर्पंग्यौ।
बीहिणि मौनी बित ब्रह्म बड़ी निधि देख्यौ सबै जग झूठ सुपन्यौ।
तास सबद सुरति बिचारत राघो कहै पुनि ध्यांन निपज्यौ ॥२१०

मनहर छंद
दादूजी के पंथ में सराहिबे सुगति जति
मांन को सिहारी भारी निरांनदास मांगल्यौ।
सोभित सकल अंग रोम रोम मांझ नग,
ब्रह्म बिद्या-बीचड़ी पहरि भयौ मांगल्यौ।
भजन को पुंज गलतांन भयौ रांम रंग
ध्यांन कांम सूरबीर मोक्षपद मांगल्यौ।
धाम्याकारी प्रसिध मिसल भजनीकन की
राघो ऐसी भांति सेवि साइकै रांमै रल्यौ ॥२११
मोहन दफ्तरी कै बिपत पच्छोपै थीप
जनवास चैतनि परबीन परसिधि है।
रांमजी को बासौ जाकी रांमसाला मध्य भृम्य,
बिद्या उपबिद्या तार्क क्रम मधि रिधि[1] है।
सांखिजोग क्रमजोग भजन भगति-जोग
बिद्या बेद सास्त्रहि बांणें सारी बिधि[2] है।
राघो कहै राति दिन रांम न बिसारयौ छिन
तन मन चित्त निरपक्ष बड़ी निधि[3] है ॥२१२

छप्पै
दादू गुर बसहूं दिसि प्रगट धर्म †मोरयौ मोहनदास ॥
तास पाटि सिर धर्यौ[4] धुरंधर जन गरीब गोबिंदनिवास।
तास पछोप ध्रबपि सिरोमनि, हरि प्रताप उपज्यौ प्रमहंस।
मधि भगवंत भरम कम प्रहरि कीयो प्रगागर ऊंचो बंस।

---

१ रिध्य। २ बिध्य। ३ निध्य। ४ धर्यौ।

---

†(धर्म को चोरी)।

वड़ो पुरष पुरसा[1] रचव, या आवानेरी अजब उठाण[2] ।
जन राघो प्रणम पछोपै वोपै, तुलछीदास तपै जिम भाण ॥५१३

अब जगजीवन कै पाटि है, दिपत दमोदरदास भणि ॥
ध्यांनदास धनि पिता, आंन तजि हरिगुण गावै ।
भ्राता कान्हडदास, सहित हरि भक्ति बढावै ।
सकल पराकृत ससकृत, कवित छंद गाहा गूढा ।
खीरनीर निरवारि, करै अरथन का कूढा ।
यम राम जपत राघो कहै, सकल कुटब की गई सु बणि ।
अब जगजीवन कै पाटि है, दिपत दमोदरदास भणि ॥५१४

मनहर छंद

नाराइन दूधाधारी घड़सी गुर पाय भारी,
राजा जसवत असवारी भेजी आइये ।
बैलन लीये चुराइ भैल कैसे चलै पाइ,
चढ्य करि कह्यौ जु निरजन चलायये ।
भैल चली आवै अचिरज सब पावै,
राजा सनमुख ध्यायौ हुलसायौ मन भाइये ।
अदभुत कीनौं नृप चीन्हौं द्रिष्टि आपनी,
सु परचौ प्रतक्ष यह संतन सुनाइये ॥५१५

छपै

दादू दीनदयाल कै, घड़सी घट हरि भजन कौं ॥
घडसी कै गोंबिददास, कुल नांमां बंसी ।
रची डीडपुर साल, भक्ति बल है हरि अंसी ।
बाणी करी रसाल, ग्यांन बैराग चितावनि ।
साखि सबद मै राम, नांम गुन और न भावनि ।
परचा दे परकाज कौं, जांनत तन प्रभु[3] संजन कौं ।
दादू दीनदयाल के, घडसी घट हरि भजन कौं ॥५१६

मनहर छद

रतीयाज गाव देस जगल मै हुतौ सत,
प्रमानद रहै दया सील सत पाले हैं ।
परचौ है दुकाल देस मटकी भरी ही सात,
बाबा अन सौंपि लोग मालवा कौं चाले हैं ।

१ पुरासार । २ (प्रमाव) । ३ प्रछ ।

ध्यान जोग बैराग मग, बरत्यो मन बच काम करि।
दादू केरा पंथ मै, चैन चतुर चित चरण हरि ॥५०९

इंदव छंद
दादूदयाल गोपाल प्रताप ते, चैन क चैन यौं ध्यान उपज्यौ।
पाळहु धाम प्रगट्ट पेखहि, यौं उर मै गुर आप अपज्यौ।
बीरिण खोयौ चित ब्रह्म बड़ी निधि देख्यौ सबै जग झूठ सुपन्यौ।
तास सबद सुरति बिचारत, राघो कहै पुनि ध्यान निपज्यौ ॥५१०

मनहर छंद
दादूजी के पंथ में सराहिबे जुगति अति,
नाव को सिहारी भारी निरांनदास मांगल्यौ।
सोभित सकल अंग रोम रोम नाम मग्ग
ब्रह्म विद्या-बीदड़ी पहरि भयौ मांगल्यौ।
भजन को पुंज गलतांन सम्यौ राम रंग
स्याम धाम सूरबीर मोक्षपद मांगल्यौ।
ध्यान्याकारी प्रसिध मिसल भक्तनिकन की,
राघो क्यूं भांति सेति आइके रांमै रम्यौ ॥५११
मोहन दफ्तरी कै बिपत पद्योर्प दीप
जगदास चेतनि परबीन परसिनि है।
रामजी कौ दासौ साकी रांमसाला मध्य कृष्ण
विद्या उपविद्या ताकै क्रम मधि रिधि[1] है।
सांखिजोग क्रमजोग भजन भगति-जोग,
विद्या बैद सास्त्रहि जांने सारी बिधि[2] है।
राघो कहै राति दिन रांम न बिसारयौ छिन
तन मन जित निरपख बड़ौ सिधि[3] है ॥५१२

छपै
दादू गुर दसहुं दिसि प्रगट धर्म †मोरयौ मोहनदास ॥
तास पाटि थिर थप्यौ[4] धुरंधर जन गरीब गोबिंदनिवास।
तास पद्योर्प भक्ति सिरोमनि हरिप्रताप उपज्यौ परमहंस।
भजि भगवंत भरम कर्म प्रहरि कीयो उजागर ऊंचो वंस।

---

१ रिध्य। २ बिध्य। ३ सिध्य। ४ थरप्यौ।

---

†(धर्म को चोरी)।

जनम करम गुन रूप, कृष्ण तन दसम बनायौ।
पखा-पखी सौं रहत, सहत बैराग बिबेकं।
पथ सप्रदा सत, सबन कूं जानत येकं।
चामलि तीर गगाइचौ, जन राघो कीयो वास वन।
माखू दादू दास कौ, जाकै बेणीदास जन ॥५२१
बूसर सुदरदास कै, सिष पांच प्रसिधि हैं ॥
टीकै दयालदास, बड़ौ पंडत परतापी।
काबि कोस ब्याकरण, सास्त्र मैं बुद्धि श्रमापी।
स्यांम दमोदरदास, सील सुमरन के साचे।
निरमल निराइनदास, प्रेम सौं प्रभु पै नाचे।
राघो-राम सु रांम-रत, थली थावरे निधि हैं।
बूसर सुंदरदास कै, सिष पांच प्रसिधि हैं ॥५२२

मनहर छंद
सुंदर के नराइनदास काहू कै न सग पास,
रहत हुलास निति ऊचे चढि गांवहीं।
दिल्ली के बजार माहि डोले मैं हुरम जाहि,
परे कूदि ताहि नीकी गोष्टि करावहीं।
साथ केनि सोर कीयौ श्राप उन चेत लीयौ,
कूदि गये जहां के तहा श्रचिरज पांवहीं।
गगन मगन जन सुख दुख नांहीं मन,
गावत सु राम गुन रत रहै नावहीं ॥५२३

छपै
दादू दीनदयाल के, नाती बालकरांम ॥
करै हंस ज्यू श्रस, सार श्रस्सार निरारै।
श्रांन देव कौं त्याग, येक परब्रह्म संभारै।
कीये कबित षट तुकी, वहुरि मनहर श्ररु इंदव।
कुडलिया पुनि साखि, भक्ति बिमुखिन कूं निंदव।
राघो गुर पखि मै निपुन, सतगुर सुंदर नांम।
दादू दीनदयाल कै, नाती बालकरांम ॥५२४
दादू दीनदयाल कै, नाती उभै सुभट भये ॥
चतुरदास श्रति चतुर, करी येकादस भाषा।

भागे हैं प्रसाद मास बरस मई है पास,
बाहुन कौं माज मास बिता मनि लासे हैं।
मच्छी बताई प्रन भरी सो बिखाई सब,
सोधे पाप छाचि सब प्रचिरज म्हासे हैं ॥२१७
मासेरी प्रमान सूके टूकरे भिजोइ राखे,
पानी घोरि पीवें स्वाद षटरस त्यागो है।
रिधि सिधि प्रवै बहु संतन सुवाव,
प्रमारथ बतावे प्रप स्वारथ न मांगो है।
मातम कवल जहां ग्यांन को प्रकास कीयो,
हिरदै कवल तहां ब्रह्म सिव लागो है।
प्रमानंद ग्रामंद सु पायो बनवारी गुर,
सेवै सत चरण सवा ही बड़भागी है ॥२१८

छप्पै
दादू दीनदयाल के सिष बिहांणी प्रागदास ॥
ताके सिष दस भये, दसौं दिसिहूं को गाजे।
१रांमदास बड़ सिष फतैपुर प्रस्तल राजे।
२चसीदास ३निरांनदास ४बोहिथ ५धर्मदासा।
६हरीदास ७सूरदास ८प्रमाणंद ९टीकू वासा।
१०टीको मापोदास को, सब बीयो डीडपुर मांहि तास।
दादू दीनदयाल के सिष बिहांणी प्रागदास ॥२१९
दादूजी के जगंनाथ, जाके है बलराम निधि ॥
किये सहर प्रांबेरि राइ महास्यंघ मवाय।
भजन तेज प्रताप प्रगट प्रये दिखराये।
जिते गनिब उमराव रहैं कर जोरें ठाढ़े।
कन्यायो मप धांम पूरबिया सेवग गाढ़े।
चरन सरन जे प्राप रै तिनके कीये काज सिधि।
दादूजी के जगंनाथ जाके है बलराम निधि ॥२२०
मान्यू दादू दास को जाके वेणीदास जन ॥
धनुस भक्ति को भाव भाव निधि निधि मन भायो।

---

१ भये।

जनम करम गुन रूप, कृष्ण तन दसम बनायौ।
पखा-पखी सौं रहत, सहत वैराग विवेकं।
पथ संप्रदा सत, सबन कूं जानत येकं।
चामलि तीर गगाइचौ, जन राघो कीयो वास वन।
माखू दादू दास कौ, जाकै वेणीदास जन ॥५२१

बूसर सुदरदास कै, सिष पांच प्रसिधि हैं॥
टीकै दयालदास, वड़ौ पंडत परतापी।
काबि कोस ब्याकरण, सास्त्र मैं बुद्धि अमापी।
स्यांम दमोदरदास, सील सुमरन के साचे।
निरमल निराइनदास, प्रेम सौं प्रभु पैं नाचे।
राघो-राम सु रांम-रत, थली थावरे निधि हैं।
बूसर सुंदरदास कै, सिष पांच प्रसिधि हैं ॥५२२

मनहर छंद
सुदर के नराइनदास काहू कै न सग पास,
रहत हुलास निति ऊंचे चढि गांवहीं।
दिल्ली के बजार माहि डोले मैं हुरम जाहि,
परे कूदि तांहि नीकी गोष्टि करावहीं।
साथ केनि सोर कीयौ आप उन चेत लीयौ,
कूदि गये जहां के तहां अचिरज पावहीं।
गगन मगन जन सुख दुख नांहीं मन,
गावत सु राम गुन रत रहै नांवहीं ॥५२३

छपै
दादू दीनदयाल के, नाती बालकरांम ॥
करै हंस ज्यूं अस, सार अस्सार निरारैं।
आन देव कौं त्याग, येक परब्रह्म संभारै।
कीये कबित षट तुकी, बहुरि मनहर अरु इंदव।
कुडलिया पुनि साखि, भक्ति बिमुखिन कूं निंदव।
राघो गुर पखि मैं निपुन, सतगुर सुदर नाम।
दादू दीनदयाल कै, नांती बालकरांम ॥५२४

दादू दीनदयाल कै, नाती उभै सुभट भये॥
चतुरदास अति चतुर, करी येकादस भाषा।

पाये हैं प्रसाद मास परचा भई है पास,
बाहुन कौं माज मास चिता मनि सासे हैं।
मडफी बताई मन मरी सो विलाई सब,
लीये[१] पाय दाबि सब प्रबिरज ल्हासे हैं ॥५१७
मासेरी प्रमान सूके टूकरे भिजोइ राखे,
पांनी घोरि पीवें स्वाद षटरस त्यागी है।
रिधि सिधि प्रबै बहु संतन सुवावें,
प्रमारथ वनावें प्रप स्वारथ न मांगी है।
मातम कवल जहां ध्यान को प्रकास कीयौ,
हिरदे कवल तहां ब्रह्म लिव लागी है।
प्रमानिद प्रामद सु पायो मनवारी गुर,
सेव सत चरण सदा ही बड़भागी है ॥५१८

छप्पै दादू दीनदयाल के सिष बिहांणी प्रागदास ॥
ताके सिष दस भये, दसौं दिसिहो को गाजे।
१रामदास बड़ सिष, फतेपुर प्रगतल राजे।
२कसीदास ३गिरिधरदास ४बोहिथ ५धर्मदासा।
६हरीदास ७हरदास ८प्रमानन्द ९छीतू पासा।
१०टीकी मायौदास भौं, सब दीयो डीडपुर मांहि तास।
दादू दीनदयाल के सिष बिहांणी प्रागदास ॥५१९
दादूजी के जगंनाथ, जाके है बलराम सिषि ॥
किये सहर आंबेरि राइ महारमध मनाये।
भजन तेज प्रताप प्रगट प्रथि हिरदाये।
जित गाबिब उमराव रहैं कर जोरें ठाड़े।
कन्हायो मध थांम पूरबिया सेवग गाड़े।
चरन सरन जे प्राप रै तिनके कीये काज सिधि।
दादूजी के जगंनाथ, जाके है बलराम सिषि ॥५२०
मारू दादू दास को जाके बेणीदास जन ॥
प्रनुम भक्ति को भाव भोग तिनि तिनि मन भायो।

---
१ पवे।

हरीदास पुनि पाटि, कीयो हरि घर प्रवेसौ।
कान्हडदास कल्यांण, पुनहि परमानद घमडी।
रांमदास हरदास, भक्ति भगवत की समडी।
इम राघौ कै रुचि राति दिन, भएं भक्त भगवंत गुर।
इम प्रम-पुरष प्रहलाद कै, इतने सिष अब धर्म धुर ॥५२६
इम येक टेक हरि नाव की, हापाजी के सिषन कै॥
टीकै ऊधौदास, धर्म धीरज की आगर।
रथि राघो कै राम, बैठि उन कीयौ उजागर।
दीरघ दिनन कल्याण, उदैचंद ईस्वर अरजन।
आनंद लाल दयाल, स्यांम गोबिन्द जस गरजन।
तुरसी हैं हरिराम, पुनह पारबती बाई।
टीकू द्वै भगवान, सकल ग्यानि गुर-भाई ॥५३०
कृष्णदास मोहन मगन, अजमेरी ऊधौं रहै।
गगन मगन खेलत फिरै, जथासक्ति हरि हरि कहै।
परमार्थ मै निपुन अति, आये कौं जल अन दे।
सतन कौ उर भाव बहु, सनमुख जाइ र धाम ले।
ये करणी कृतब भले, ज्यूं राजस बृति रिषन कै।
येक टेक हरि नाव की, हापाजी के सिषन की ॥५३१

भक्तवत्सल कौ उदाहरन

मनहर छंद

रांमजी की रीती अैसी प्रीति सु खुसी है भया,
करमां की खीचड़ी आरोगनें को आये हैं।
त्यागे हैं अवास दुरजोधन के जांनि बूझि,
बिदुर गरीब घरि साक पाक पाये हैं।
विप्र सुदामा कौ दलिद्र दुख दूरि कीयौ,
कूरी कन देखे प्रभु हेत सौं चबाई हैं।
राघो कहै रामजी दयाल अैसे दीनन सू,
भीलन के झूठे बेर आप अैसै खाये हैं ॥५३२
भक्तवछल भगवत देखौ सत काज,
देहु रोद्र हाल फेरयौ नांमदे की टेर सूं।

पखापखी कौं छाड़ि भज्यौ हरि सास उसासा।
भीखजन बांवनी प्रसिधि, सु तौं सारे जग होई।
जा माहै सब भाव, जाहि भावै सो सोई।
संतदास गुर धारि उर, राघो हरि मैं मिलि गये।
दादू दीनदयाल के, नाती उभै सुभट भये ॥५२५
दादू दीनदयाल के, नाती दास सर्वंग मगूं ॥
बांणी बहु बिसतरी, मांहि गुर हरि भक्तन जस।
सपतदीप बरणियां गुण गुणसागर मति रस।
पंथपरछा आदि ग्रंथ, बहु पद ग्रथ साखी।
महिमा बरणी नांव, भक्ति बिरदावली भाखी।
राघो ठाकुर पद परसि इन पायौ अनुभौ मगूं।
दादू दीनदयाल के नाती दास सर्वंग मगूं ॥५२६
दादू दीनदयाल के, नाती दोइ बखेत मति ॥
गुरपंथ करी निज भक्ति, प्रेम परमेसुर मांही।
सर्व सबईया कीये दोय दस दीये दिखाई।
भमरदास के सबद, सूर कै पटतर दीजै।
बिरह प्रेम संमिलत, चोज जनदास सुनीजै।
राघो हूं बसि रहसि को, नीकै सुमरे प्रानपति।
दादू दीनदयाल के नाती दोइ बखेत मति ॥५२७
इम धमपुरष प्रहलाद कै सिष हरीदास सिरोमनि भयो ॥
कुछवाहौ कुल आदि नाम पहली हो हायौ।
गुरह परसि प्रहलाद, तज्यौ कुल बल क्रम मायौ।
कोमल कृष्ण कुमार, नहि चंचलता हासी।
सम दम सुमरन करै मोक्ष-पद सुपति उपासी।
यौं हबक मारि हरि कौं मिल्यौ जन राघो रहि अनहद गयौ।
परम पुरष प्रहलाद कै सिष हरीदास सिरोमनि भयौ ॥५२८
धम-पुरष प्रहलाद कै, इतने सिष सर्व धर्म-धुर ॥
तिन मधि बड़ बांनैत हेत हापोजी होई।
दीरघ अचर अमत, दुती जिन माली कोई।
चरणदास मजनीक, तिलकधारी है केसी।

हरीदास पुनि पाटि, कीयो हरि घर प्रवेसौ।
कान्हडदास कल्यांण, पुनहि परमानद घमडी।
रामदास हरदास, भक्ति भगवत की समडी।
इम राघौ कै रुचि राति दिन, भरणै भक्त भगवंत गुर।
इम प्रम-पुरष प्रहलाद कै, इतने सिष अब धर्म धुर ॥५२६

इम येक टेक हरि नाव की, हापाजी के सिषन कै॥
टीकै ऊधौदास, धर्म धीरज की आगर।
रथि राघो के राम, बैठि उन कीयौ उजागर।
दीरघ दिनन कल्याण, उदैचंद ईस्वर अरजन।
आनद लाल दयाल, स्याम गोबिन्द जस गरजन।
तुरसी हैं हरिराम, पुनह पारबती बाई।
टीकू द्वै भगवान, सकल ग्यानि गुर-भाई ॥५३०

कृष्णदास मोहन मगन, अजमेरी ऊधौं रहै।
गगन मगन खेलत फिरै, जथासक्ति हरि हरि कहै।
परमार्थ मैं निपुन अति, आये कौं जल अन दे।
सतन कौ उर भाव बहु, सनमुख जाइ र थांम ले।
ये करणी कृतव भले, ज्यू राजस बृति रिषन कै।
येक टेक हरि नांव की, हापाजी के सिषन की ॥५३१

भक्तवत्सल कौ उदाहरन

मनहर छंद

रामजी की रीती अैसी प्रीति सु खुसी है भया,
करमां की खीचड़ी आरोगनै को आये हैं।
त्यागे हैं अवास दुरजोधन के जानि बूझि,
बिदुर गरीब घरि साक पाक पाये हैं।
बिप्र सुदामां कौ दलिद्र दुख दूरि कीयौ,
कूरी कन देखे प्रभु हेत सौं चबाई हैं।
राघो कहै रामजी दयाल अैसे दीनन सूं,
भीलन के झूठे बेर आप अैसें खाये हैं ॥५३२

भक्तवछल भगवत देखो सत काज,
देहु रोद्र हाल फेरचौ नांमदे की टेर सूं।

कासी में कबीर कसि बाँधि डारयौ हाथी आगै,
स्याम रूप धारि के बहारयौ मुटभेर सौं।
भीर में भगत काज बहुत विरद लाज,
धूसे कीन्हे अटल बधायौ येक सेर सौं।
प्रगटे प्रहलाद काज खंभ सु नृस्यंघ रूप,
राघो हरयौ हिरनांकुस हाथ की चपेर सु ॥२३९
गरीबनिवाज सु प्रमान कीन्हीं येक बेर
धाये गज काज कौ छुडायौ येक छिन मैं।
द्रोपती की राखी पति अंबर बढायौ अति,
दुसासन दुष्ट खिसानौं परयौ मन मैं।
कासी मैं कबीर काज बालदि लै ल्याये आज
देवे प्रभु दीनबंधु ऐसे पूरे पन मे।
राघो कहै पंगुन सु ओर क्यूं निबाही प्रीति,
राखे केऊ बार करतार राति दिन मैं ॥२३८
दीनबंधु दीन काज दौरे गज टेर सुनि
ग्रांमिक छुडायो उन राख्यौ त्रिय ताप सौं।
दीगरयौ विटप द्विज सोऊ गयौ लोक निज
अजामेल अंतकाल नांव के प्रताप सौं।
पूत्रा कौ पठायले सरीर सुधि भूलि गई
गनिका विवांन चढ़ी गयी हरि आप सौं।
राघो अबरीस बेर भये हैं दुवासा येर
कीयौ है अधिक जगदीस जन आप सौं ॥२४२

इंदव छंद पैज रही परमेस्वर पावत दादूदयाल की देखौ रे भाई।
कासी मैं कौंस दई जिनि के मुनि स्वांमी न चूके सजा उन पाई।
सांभरि सात महोदधि की बल सातौं ही ठौर भये सुखदाई।
राघो रखा करी राज सभा मधि पौरि उभै गज सागौं है पाइ ॥२४६
भारत मे मुति राखि लीये पंडवा हरि हेत सौं खेत जितायौ।
जन कौ रिपु रांम हयौ हिरनांकुस प्रान सौं प्रहलाद बचायौ।
टेर सुनी गज की इतनी, अर्ध नांव को लेत ही रांमजी आयौ।
राघो कही द्रोपती भई दीन सु कीन्ही कृपा हरि चीर बढायौ ॥२४७

भोग छतीस कीये दुरजोधन, भाव बिनां भुगते न विधाता।
येकक भाव इकोतर सैं तजे, बिद्र कै कौंन उतारै है पाता।
साग कै लेतहि भाग उदै भयौ, कृष्ण मिले त्रिये-लोक के दाता।
राघो कहै हरि हेत के गाहक, प्रीति बिनां कुछ[1] नेह न नाता ॥५३८

छपै अधिकार श्रवन सुनि साध कौ, अदभुत कोई न मांनियौ॥
अहं भक्त आधीन, कह्यौ हरि दुरबासा सौं।
ध्रू प्रहलाद गयद, सेस सिवरी सरितासौं।
पांडुन के जगि कृष्ण, अंघ्रि सुचि झूठि बुहारी।
चद्रहास बिष मेटि, राज दे विषया नारी।
परचा कलि महि बिदत बहु, आसतिक बुधि उर आंनियौ।
अधिकार श्रवन सुनि साध कौ, अदभुत कोई न मांनियौ ॥५३९

अरिल छपै दाई आगैं पेट, दुरायें क्यूं दुरै।
ज्यू निजरबाज निसतू, कठ गहि ठांवो करै।
समझै साल सराफ, दरबि खोटो खरौ।
करै राग के भाग, गुनीजन कौ गरौ।
यौं साध सबद कौं पेखि कै, गुनी बहुतर[2] चाल रहि।
जन राघो यौं हस ज्यूं, खीरनीर निरनौ करहि ॥५४०
कीयौ ग्रंथ गमि विना, सुनौं कवि चतुर बिनानी।
सरवर कौं सर मांझ, भिरा भरि अरप्यौ पांनी।
सोवन भई सुमेर, ताहि कचन की किर्ची।
गणपति कौं इक साखि, गिरा दे सरस्वती अरची।
सूरजवासी ससि दसी, कलपवृछ कौं धरि धजा।
स्यंघ खोज सेवत चढ़ी, जन राघो गज मस्तक अजा ॥५४१
अन लह माइ रु हस, गरुड गोबिंद को आसन।
लघु खग और अनेक, उड़हि पंखी आकासन।
सत जोजन हनवत, कूदि गयौ सबका[3] गावै।
मृग चीता मृगराज छल, और पै फाल न आवै।

---

१. कछ। २ बहुत चरचाल रही। ३ सब को।

कासी मैं कबीर कसि बांधि डारयौ हाथी आगे,
स्यंघ रूप धारि कै पछारयौ मुटभेर सौं।
नीर मैं भगत काज बहुत बिरद लाज,
धूसे कीन्हे प्रगट बधायो मेक सेर सौं।
प्रगटे प्रहलाद काज खंभ सु नृस्यंघ रूप,
राघो हत्यौ हिरनांकुस हाथ को पपेर सु ॥२६३
गरीबनिवाज सु प्रवाज कीन्हीं येक बेर
आये गज काज कौ छुडायौ येक छिन मैं।
द्रोपती की राखी पति अंबर बढायौ अति,
दुसासन दुष्ट खिसानौं परयौ मन मैं।
कासी मैं कबीर काज बालदि ले ल्याये नाज
केसे प्रभु दीनबंधु अंसे पूरे पन मैं।
राघो कहै पंडुन सु चोर ज्यू निबाही प्रीति
राखे केऊ बार करतार राति दिन मैं ॥२६४
दीनबंधु दीन काज दौरे गज टेर सुनि
ग्रांनिक छुडायौ जम रास्यौ बिप्र ताप सौं।
बीगरयौ बिटप बिन सोऊ गयौ मोक्ष निज
अजामेल सुतकाम नांव के प्रताप सौं।
सुवा कौं पढावतै सरीर सुधि भूलि गई
गनिका बिवांन चढी पची हरि जाप सौं।
राघो अंबरीस बेर भये हैं दुवासा बेर
कीन्हौ है अभिन्न जगदीस जन आप सौं ॥२६५

इंदव छंद
पैज रही परमेस्वर गावत बालुकयास की देखो रे भाई।
कासी मैं कौंस दई जिनि कै मुनि स्वामी न पूछे सजा धन पाई।
सांभरि साल महोछिन कौं जल सातौं ही ठौर भये सुखदाई।
राघो रक्षा करी राज सभा मधि पौरि उभै गज लायौ है घाइ ॥२६६
भारत मैं श्रुति राखि लीये पंडवा हरि हेत सौं खेत जितायौ।
जन को रिपु रांम हत्यौ हिरनांकुस प्रांन सौं प्रहलाद बचायौ।
टेर सुनी गज की इतनी धर्म नांव को लेत ही रांमजी आयौ।
राघो कहै द्रोपती भई दीन सु, कीन्हीं कृपा हरि चीर बढायौ ॥२६७

राघो कबि कोबिद महत सत स्यधजल,
मेरो उनमान असौ डाग मधि डोहरा ॥५४७
मम गुर माथै परि स्वामी हरीदासजू है,
प्रम गुर स्वामी प्रहलाद बडी निधि[1] है।
स्वामी प्रहलादजू के गुर बड़े सूरबीर,
नाम स्वामी सुदरदास जांणै सारी विधि[2] है।
तास गुर दादूजी दयाल दिणियर सम,
सो तो त्रियलोक मधि प्रगट प्रसिध्य है।
स्वामी दादूजु के गुर ब्रह्म है विचित्र विग,
राघो रटि राति दिन नातो प्रनती वृध्य है ॥५४८

साखी
दुगध गऊ कौ लीन है, अस्त मास तजि चाम।
ज्यौ मराल मोती चुगै, त्याग सीप जल ताम ॥१
जौ अतिज आभूषन सजै, नख-सिख वार हजार।
तऊ हाटक हटवारे गये, मोल न घटै लगार ॥२
त्यू प्रसिध्य पचू बरण, अन्य न भक्ति उर जास कै।
तिन चरनन की चरणरज, मनि मस्तक रावोदास कै ॥३॥५४९
उर अतर अनभै नहीं, काबिन पिंगुल-प्रमाण।
मैं चुणि बीण सिलोकीयौ, कबिजन लीज्यौ जांण ॥४
अक्षर जोडि जाणौं नहीं, गीत कवित छंद अैन।
सिसु रोटी टोटी कहै, जननी समझै सैन ॥५
भूलि चूकि घटि बढि बचन, मो अनजानत निकसियौ।
राम जाणि राघो कहै, सत महत सब बकसियौ ॥६॥५५१
छद प्रबंद अक्षर जुरहि, सुनि सुरता देदादि।
उक्ति चोज प्रसताव बिन, बक्ता बकै सु बादि ॥७
बालक बहरौ बावरौ, मूरख बिनां बिबेक।
बार कुबार भलौ बुरौ, इनकै सबही यैक ॥८
हूं अजांन यौं कहत हूं, कबिजन काढौ खोरि।
राघव अरजव अरज करै, सबहिन सूं कर जोरि ॥९॥५५१

१. निध्य। २ विध्य।

टीका मैदक भाइ भृग सरकि, सरनि उम पुनि महूरी।
स्यूं राघव रचि पचि रसत मम, भोर मिति भृति कृत कहूरी ॥२८२

इंदव नौस निवासिन बीच निरंतर, स्पष सूं सोल मिलेहि रहैं हैं।
छंद बेसब बंब चकोर कमोदनि अमृत को पुट पान गहैं हैं।
कंज प्रकास बचे बिधि बारिक, भुसिक धारि सतोष सहैं हैं।
राघो कहै गुर की मछि भुमस, निपजि रामहि राम कहैं हैं ॥२८३
पूरस भाग उब बम होसह, ताहि बिनां सत-संगति भावै।
साध र बेद को भेद सुनें बिन कोटि करौ हिरदै बुधि नावै।
मुंडत केस चमेड जटा सिर, ग्यांन बिनां बिसरांम न पावै।
बैठे तें व्याधि पछेल कसै[1] कछु, राघो कहै मन कौन सूं लावै ॥२८४
दूरस भाग बिनां भृति को कृत, कौन सहै पच ग्यान मुवा के[2]।
संगति सार बिचार बड़ी निधि, मांठ मरे मनि स्वाति सुधा के।
हाथि चढ़े बन धाम सु धीरज बीरज बस्र धर्म सुबधा के।
राघो कहै अस जोग समागम संत कों मानव रूप उदा के ॥२८५

मनहर बीन कछू जाने नाहि जानत है बीनकार
छंद प्रतछ बजावत छतीस राम रागणी।
पांख को परेखा करें बाजीगर बाजी मधि
बेबरी सूं कुसम दिखावै नाग नागणी।
संपति अनेक बाच करत उराव बहु
पति चाहि मांनें सोई सबन सुहागणी।
राघो कहै रीसि जिन मांनों कोई कबिजन
राम रच बैठे तब बेत बाप बागणी ॥२८६
अक्षर अरथ गुरु जाणें व्यास सुक मुनि
मैं का जांणौं पंथ करि मूढमति सोहरा।
आवत है सकुचि बड़ों सों बकि बीन्हीं मोठ
दुरै न दुकांन दूर कारीगर सोहरा।
मद्दुर रुपैया नग[4] स्वार टकसार बिन
सेत परसाइ ताहि साहूकार सोहरा।

---
१ (जा बस्र ही)। २ (दुरा तन बीर)। ३ (मर्प)। ४ नग मरा।

लई मानि करी जानि धरे आनि भक्त सब,
नृगुन सगुन षट-द्रसन बिसाल है।
साखि छपै मनहर इदव अरेल चौपे,
निसानी सवइया छंद जानियो हंसाल है॥६३१

प्रथमहि कीन्ही भक्तमाल सु निरानदास,
परचा सरूप संत नाम गाम गाइया।
सोई देखि सुनि राघोदास आप कृत मधि,
मेल्हिया बिवेक करि साधन सुनाइया।
नृगुन भगत और आनि या बसेख यह,
उनहू का नाव गाव गुन समझाइया।
प्रियादास टीका कीन्ही मनहर छंद करि,
ताहि देखि चत्रदास इदव बनाइया॥६३२

स्वामी दादू इष्टदेव जाकौ सबै जानै भेव,
सुंदर बूसर सेव जगत विख्यात है।
तिनके निरानदास भजन हुलास प्यास,
उनहू कै रामदास पंडित साख्यात है।
जिनके जु दयाराम कथा कीरतन नाम,
लेत भये सुखराम और नही बात है।
त्रिष्णा अरु लोभ त्याग लयौ है संतोष भाग,
असे जु संतोष गुर चत्रदास तात है॥६३३

सप्रदाइ पंथ पाइ षट-द्रष्ण जक्त आइ,
भजत गोबिंद राइ मन बच काइये।
जिन माहै काढि खोरि निंदत है मुख मोरि,
दूषन लगाइ कोरि साचहि झुठाइये।
साध कौं असाध करै अनदेखी बात धरै,
राम सू न डरै लरै जोर तै धिकाइये।
यसे कलिजुगी प्रानी आइ कहै कटुबानी,
पाप की निसानी प्रभु ताहि न मिलाइये॥६३४

इदव छंद
बुद्धि नही उर ना अनभै धुर, पासि न थे गुर दूषन टारै।
आइ गई मनि औरन पैं सुनि, संतन कौं भनि होद उचारैं।

छांनी छिपी न उब्बरहि, निकस नहि मुख मोरि ।
सतवेता जिनतर कही, भिपठ लगा ज्यूं तोरि ॥१०
महापुरुष मधि तक रहि तब पलटहि वसु वोई ।
आत्म अनभव ऊपजै, सबद संचो यौं होइ ॥११
इह जीव अंकूरा बापरौ कर कौन सौं टेक ।
राघो सत कवि कहैंगे, तेरी कला न मानै येक ॥१२॥५२२
माया को मद ऊतरै सुनि साधन की साखि ।
कथा कीरतन भजन धम, हित सूं हिरदै राखि ॥१३
अठसिठ तीरथ कोटि धमि, सहंस गऊ दे दांन ।
इन सबहिन सू अधिक है सत-संगति पल मांन ॥१४
भगवत गीता भागवत, बिसन सहसर-नांम ।
चतुर सलोकर अवर सब, पंचम पूजा धांम ॥१५॥५२३
गाइत्री गुर-मंत्र जपि अठसठि तीरथ न्हाइये ।
भक्तमाल पोथी पढ़त इतनौं तल फल पाइये ॥१६
भक्तबछल कृत भक्त कृ[illegible] कृत अब धर्म की गली ।
राघो करि है रांमजी श्रोता वक्ता को भलौ ॥१७
भक्तबछल नृप रावरौ बदत वेद ब्याकै बरण ।
जन राघो रटि राति दिन, भक्तमाल कलिमल-हरण ॥१८॥५२४
संवत सत्रह-सै सतहौंतरा, सुकल पख सनिवार ।
तिथि त्रितीया आषाढ़ की राघो कीयौ विचार ॥१९

चौपई पीपा वंसी चांगल गोत । हरि हिरदै कीन्हौं उद्योत ॥
भक्तमाल कृत कलिमल-हरणी । आदि अंति मधि अनुक्रम बरणी ॥२०
सीखै सुणै तिरै भवतरणी । चौरासी की होइ निसरणी ॥
साध-संगति सति सुरग निसरणी । राघो भगतिन कौं गति करणी ॥२१॥५२५

इति श्री राघोदासजी कृत भक्तमाल संपूर्ण ॥ समाप्त

मनहर छंद
प्रथ गुर नामा जू कौं आज्ञा दीन्हीं कृपा करि,
प्रथमहि साखि छपै कीन्हो भक्तमाल है ।
पीछे प्रहलाद जू बिचार कहो राघो जू सू,
करो संत आपनी सु बात यौ रसाल है ।

---
१ तब ।

लई मानि करी जानि धरे आनि भक्त सब,
नृगुन सगुन षट-द्रसन बिसाल है।
साखि छपै मनहर इदव अरेल चौपे,
निसानी सवइया छद जानियो हंसाल है ॥६३१
प्रथमहि कीन्ही भक्तमाल सु निरानदास,
परचा सरूप संत नाम गाम गाइया।
सोई देखि सुनि राघोदास आप कृत मधि,
मेल्हिया बिवेक करि साधन सुनाइया।
नृगुन भगत और आनि या बसेख यह,
उनहू का नाव गाव गुन समझाइया।
प्रियादास टीका कीन्ही मनहर छद करि,
ताहि देखि चत्रदास इदव बनाइया ॥६३२
स्वामी दादू इष्टदेव जाकौ सबै जानै भेव,
सुदर बूसर सेव जगत विख्यात है।
तिनके निरानदास भजन हुलास प्यास,
उनहू कै रामदास पडित साख्यात है।
जिनके जु दयाराम कथा कीरतन नाम,
लेत भये सुखराम और नही बात है।
त्रिष्णा अरु लोभ त्याग लयौ है सतोष भाग,
औसे जू सतोष गुर चत्रदास तात है ॥६३३
सप्रदाइ पथ पाइ षट-द्रष्ण जक्त आइ,
भजत गोबिंद राइ मन बच काइये।
जिन माहै काढि खोरि निंदत है मुख मोरि,
दूषन लगाइ कोरि साचहि झुठाइये।
साध कौं असाध करै अनदेखी बात धरै,
राम सू न डरै लरै जोर तै बिकाइये।
यसे कलिजुगी प्रानी आइ कहै कटुबानी,
पाप की निसानी प्रभु ताहि न मिलाइये ॥६३४

इंदव छंद बुद्धि नही उर ना अनभै घुर, पासि न थे गुर दूषन टारै।
आइ गई मनि औरन पैं सुनि, सतन कौं भनि होइ उबारै।

जो कुछ छंद र अगर मातर अथ मिस बिन साध सुधारे।
चातुरदास करै बिनती भवि मानि कवीसुर चूक निवार ॥६३५
संवत येक रु आठ लिखे सुभ पांच र सातहिं फेरि मिलावै।
भाद्रव की बदि है तिथि चौदसि मंगलवार सु वार सुहावै।
ता दिन पूरन होत भयौ यह टिप्पण चातुरदास सुनावै।
बांचि बिचारि सुन रु सुनावत सो नर-नारि भगतिहिं पावै ॥६३६

इति श्री भक्तमाल की टीका संपूरण समाप्त। सुभमस्तु कल्याणरस्तु॥ भगतपाठकया॥ छप॥ ३३८॥ मनहर ॥१५२॥ हंसाल ॥४॥ साखी ॥२८॥ चौपाई ॥२॥ इंदव ॥७५॥ राघोदासजी कृत संपूर्ण॥ इंदव छंद॥ सब ६२१॥ चतुरदासजी कृत टीका छ सर्व कवित ॥१२०४॥ ग्रंथ संख्या श्लोक ॥४१ १॥ लिखतं बाबाजी श्री चतुरदासजी तिनका सिष बाबाजी श्री नदरामजी तिनको सिष गोकलदास बांचे ताकों राम राम।

मनहर छंद
बस दस आठा साठा उपरांत येक पुनि
मास वयसाख बदि तितिया बखानियें।
कह्यौ मान गुरधर बर भक्तमाल बनी
मानी मनि सुनि प्रानी नीर द्रिग मानियें।
माही तें बिचारि कें संभारि सार लीन्हौ धारि
लिखि डीडवाने लिखि लीबी मन मानियें।
मान मति भारी प्रति कोजिया जु बुद्ध सुद्ध
भाट ठोठ लिख्यो कछु माऊ मथ मानियें ॥१॥

नोट : प्रति नं० B की पुष्पिका इस प्रकार है—

इति श्री भक्तमाल की टीका सम्पूरण समाप्त। सुभमस्तु॥ कल्याणमस्तु॥ लेखकपाठकयो॥ छप्पै ३३८॥ मनहर १५२॥ हंसाल ४॥ साखी २८॥ चौपई २॥ इंदव ७५॥ राघोदासजी कृत संपूर्ण॥ ॥ इंदव छंद ६२१॥ चतुरदासजी कृत टीका का छं। सर्व कवित १२ ४॥ ग्रन्थ संख्या श्लोक ४१ १॥ लिखतं ओंकार-राम। बांचे वांहि तिनकों मम राम॥ संवत १८८७ भादवा सुद ८—राम राम राम राम॥ श्री रस्तु॥

नोट : नं० 'C' की पुष्पिका इस प्रकार है—

इति श्री भक्तमाल की टीका समाप्त संपूर्ण। सुभमस्तु॥ कल्याणमस्तु॥ लेखकपाठक को मंगलमस्तु।

[illegible] गुर [illegible] बाति सांत बिरागंत बाति [illegible] यह [illegible] [illegible] लिखे।
तिन के सो [illegible] हरिदास तिन [illegible] ताके तिन प्रगट सु सेविये।
[illegible] ताके तिन [illegible] लिखि [illegible] तिन तिन [illegible] देखिये।
तिन तिन हरिदास [illegible] [illegible] ताके तिन [illegible] देखिये॥१॥
दोहा॥ छप्पै छपय ३३८॥ मनहर १५२॥ हंसाल ४॥ साखी २८॥ चौपई २॥ इंदव छंद ७५॥ राघोदासजी कृत भक्तमाल सम्पूर्ण॥ ६२१ इंदव छंद चतुरदास कृत टीका का छं॥ १२०४॥ [illegible] ॥ १४१२॥ ग्रन्थ को श्लोक संख्या ४१ १॥ लिखतम् [illegible] —[illegible] लिखि [illegible] संवत १८८८ [illegible] बैसाख सुदी १॥

परिशिष्ट १

(परिवर्द्धित सस्करण का अतिरिक्त पाठ)

मूल मगलाचरण

दादू नमो नमो निरजन, नमस्कार गुरुदेवत ।
वन्दन सर्व साधवा प्रणाम पारगत ।।

पृष्ठ २ पद्यांक ६ के बाद —

कवित्त

नमो नमो गुरुदेव, नमो कर्ता अविनासी ।
अनन्त कोटि हरिभक्त, नमो दशनाम सन्यासी ।।
नमो जैन जोगेश, नमो जगम सुखराशी ।
नमो बोध दरवेस, नमो नवनाथ सिद्ध चौरासी ।।
नमो पीर पैगम्बरा, ब्रह्मा विष्णु महेश ।
धरनि गगन पाणी पवन, चन्द सूर आदेश ।।
नर-नारी सुर नर असुर, नमो चतुर-लष जीवको ।
जन राघौ सब को नमो, जे सुमरे नित पीव कू ।।१०

पृष्ठ १४ पद्याक २६ के बाद—

इदव छद

द्विज एक अजामिल अन्त समै, जमकै जमदूतनि आन गह्यो ।
भयभीत महा अति आतुर ह्वै, सुत हेत नरायन नाम लह्यो ।
जब सन्तनि आय सहाय करी, गहि बेत सो दूत को देह दह्यो ।
'माधौदास' कहै प्रभु पूरण है, हरि के सुमरे अघ नाहिं रह्यो ।।६३
जमदूत भजे जमलोक गये, जमराय सो जाय पुकार करी ।
जहा अग के भग दिखाय दियो, तहा त्रास की पास उतार धरी ।
करता हम और न जानत हैं, हम पै अब होत न एक घरी ।
'माधोदास' कहै अघ मेटत हैं, सोई दीन अधीर न सन्त हरी ।।६४
जमराय कहै जमदूतन सो, तुम वात भली सुनल्यो अव ही ।
जहा भगत के भेष की वात सुनो, वह मारग जाहु मतै कव ही ।
हरि के जन सो कोई कोप करे, हरि देत सजा ताको जव ही ।
'माधोदास' को आस विश्वास यह, हरिराय की टेक सदा निवही ।।६५

ओ तुम ध्रुव र भगर मातर ग्रर्थ मिल विन साथ सुधारै।
चातुरद स करै बिनती मति मानि मवीसुर चूक मिवार ॥६३१
सवत येक र ग्राठ लिखे सुभ पाच र मातहि फरि मिलावै।
भाद्रव का बदि है तिथि चौदसि मंगलवार सु मार सुहावै।
ता दिन पूरन होत भयो मह टिप्पण चातुरदास सुनावै।
सोधि मिलाय सुन र सुनावत सा नर-नारि भगतिहि पावै ॥६३६

इति श्री भक्तमाल की टीका सपूरण समापत। सुभमस्तु कल्याणरस्तु ॥ लेखकपाठक्यो॥ छप्य॥ ३३८॥ मनहर ॥१४२॥ इंसाल ॥७॥ साखी ॥३८॥ चौपाई ॥२॥ इदव ॥७४॥ रापोदासजी कृत संपूर्ण ॥ इदव छद॥ सर्व ६२१॥ चतुरदासजी कृत टीका छ सर्व कवित ॥१२ ४॥ ग्रंथ संख्या श्लोक ॥४१ १॥ लिखतं बाबाजी श्री चतुरदासजी तिनका सिष बाबाजी श्री मदरामजी तिनका सिष गोकलदास बांच नार्को राम राम।

मनहर छंद

बर्स दस ग्राठा साठा उपरत्य येक पुनि
　　मास मधमास बदि तितिया बखानियें।
कह्यो मोर गुरधर वर भक्तमाल बनी
　　याको मनि सुनि प्रांनी नीर छिम मांनियें।
याही त मिलारि क संभारि सार लीज्यो धारि,
　　लिखि डीकबाने लिपि मीकी मन मानियें।
मोर मति मोरी मति कीजियो जु शुद्ध सुद्ध
　　साट ठोठ लिख्यौ कछू सोक मव मानियें ॥१॥

नोट : प्रति नं B की पुष्पिका इस प्रकार है—

इति श्री भक्तमाल की टीका सम्पूरण समाप्त। शुभमस्तु॥ कल्याणरस्तु॥ लेखकपाठक्यो॥ छप्पै ३३८॥ मनहर १४१॥ हंसाल ४॥ साखी-३८॥ चौपई २॥ इंदव ७४॥ राघोदासजी कृत संपूर्ण॥ इंदव छंद ६२१॥ चतुरदासजी कृत टीका का छं। सर्व कवित १२ ४॥ ग्रन्थ संख्या श्लोक ४१ १॥ लिखतं डोलता-राम। बांचे पढ़े तिनकों राम राम॥ संवत १८६७ भादवा सुद ८—राम राम राम राम॥ श्री प्रभु॥

नोट : नं 'C' की पुष्पिका इस प्रकार है—

इति श्री भक्तमाल की टीका समाप्त संपूर्ण। शुभमस्तु॥ कल्याणमस्तु॥ लेखकपाठक-यो बहुमस्तु।

प्र दि पुर बहा चामि ससि विमलेव जानि सोज मय नाथुदास प्रमथो लिखी।
तिन के तो सिष्य नचारी हरिदास सिष कुशीलदास ताके सिष प्रमर सु लेखिये।
रामदास ताके सिष स्वामी ही जो ध्यावै विधि मालदास तिन सिष प्रभी बहु देखिये।
तिन सिष हरिदास जम मैं निहाल रूप चरणदास ताके सिष ओमेसुर पेखिये॥१॥
दोहा॥ छंपै छप्य ३३३॥ मनहर १४१॥ हुलास ४॥ साखी ३८॥ चौपई २॥ इंदव छंद ७४॥ राघोदासजी कृत भक्तमाल सम्पूर्ण॥ ६६३ इंदव छंद चतुरदास कृत टीका का छं ॥६२१॥ सरबस कवित ११८४॥ ग्रन्थ की श्लोक सख्या ४१ १॥ लिखतम् गुमसुधान रीझीनगरे—बालीराम चरन लिपि कृते सम्वत १८८८-मिति बैसाख सुदी १॥

बीच रु लौंड पुकारत आतुर आत दया हिय पाहण ही है।
राघवदास अनाथ यू दाक्रत साध दुखावन को फल ली है ॥४४४

पृष्ठ ९३, मूल पद्यांक २०४ के बाद—

दीन ह्वै राम रहे जन के गृह प्रीति तिलोचन की मन भाई।
बात अज्ञात लखै मन की, ग्रह को सब काज करै सुखदाई।
एक समै कहु दासिक दूखन, पीस पोवन की मन आई।
'राघौ' कहै निज रूप निरन्तर, ह्वै गये सेवक को समभाई ॥४७७

पृष्ठ १३७, टीका पद्यांक ४१९ के बाद—

मनहर छन्द

शकर के शिष्य चारि जातै दस-नाम यह,
स्वरूपाचारज के द्वै तीरथ रु आरनै।
पदमाचारज के जु दोय शिष शूरवीर,
आश्रम रु वन नाम ज्ञानी गुन जार नैं।
ओटकाचारज के सु तीन शिष्य भक्त-ज्ञानी
प्रवत सागर गिरी तुरू सेय वार नै।
पृथीधराचारज के राघौ कहै तीन शिष्य,
सरस्वती, भारती, पुरी दश-नाम वारनै ॥७१९

पृष्ठ १४०, पद्यांक २८१ के बाद—

टीका

इदव छद

माग हुती सुत की नृप व्याहत, रूपवती अति वुद्धि चलाई।
खेलत गेंद गई दुरि ता घर, दौरि गयो तिस लेनहि जाई।
देखत रूप अनूप महा अति, बाह गही सग मोहि कराई।
हाथहि जोरि कहै मुख सूकत, बात अजोगि कहो जिन भाई ॥७३०
त्राम दिखावत मारि डरावत, एक न भावत शील गह्यो है।
जोर करचो निकस्यो झट छूटिक, चालत दाव न फारि लह्यो है।
रूसि रही नृप आवत बूझत, कैंत भई सुन भोग चह्यो है।
क्रोध भयो नृप हो तिय को, जित न्याव न बूझत मूढ वह्यो है ॥७३१
नीच वुलाय लयै कर पाव हि, काटि कुवा महि डारि सु आऐ।
राम भजे करुणा हि करे, गुरु गोरख आय रु वोल सुनाऐ।

जमदूत कहै जमरायन सों, तुम्ह काहे को बीच करावत हांसी ?
इतत पठयौ उत ये न गिनें, हरिजन बीचहि मारि भगासी।
पशु मानुष पंखि की कौन चलै तहां कीट पतंग सब जु मैं वासी।
'माधोदास' नरायन नाम प्रताप सों पाप जरै जैसे फूस की रासी ॥६६
डरै जमराय उठे अकुलाय, रहे जु सिखाई इक बात चलाई।
नाम उचार भयो तिहि बार सहि सिर मारग एक न धाई।
सुनहु जमदूत कु जान कुपूत भई भल सूत बचे हम भाई।
जहां काल प्रचण्ड को दण्ड मिट्यो, हमरी तुमरी किन बात चलाई ॥६७

पृष्ठ ३० पद्यांक ६५ के बाद—

अन्य मत

मनहर छंद

भयो हू पिशाच तेरो कूखि अवतार लियो
मेरे जाने सिपटि पिशाचनी तूं कैकयी।
हंस हति कुमति तें बांधि धरे वायस कों
अमृत लुटाय के जु बेलि बिष की बई।
कमल से कोमल चरण रघुबीरजी के,
कैसे बन जैहैं कुश-कण्टक मही छई।
मैं तो मरिबेहू मोसों कैसे दुःख सह्यो जात
होणहार हुई और कहा होयगी दई ॥१४८

पृष्ठ ८२ पद्यांक १८६ के बाद—

परसजी का वर्णन मूल

छप्पय

मरुधर कसरू गांव परस जहां प्रभु को प्यारो।
सतवादी पूतार कर्म कलियुग तें न्यारो।
ता बदलें तन भारि राम रथ-चक्र सुधारयो।
इकलग पूठी एक बिना वाल तबै बिचारयो।
परम गयो जहां भूपति चित चहुत चरनों भयो।
'राघौ समग्र रामजी भक्ति करत यों बश भयो ॥४१२

पृष्ठ ८८ पद्यांक २२२ के बाद—

भूपति मन्दिर लाग लगी अति लाट जु अम्बर लाग लगी है।
नांहि बुझै सु उपाय करे बहु हाय बुदा किम चूकि परी है।

बीव रु लौंड पुकारत आतुर आत दया हिय पाहरण ही है।
राघवदास अनाथ यू दाकृत साध दुखावन को फल ली है ॥४४४

पृष्ठ ९३, मूल पद्यांक २०४ के बाद—

दीन ह्वै राम रहे जन के गृह प्रीति तिलोचन की मन भाई।
बात अज्ञात लखै मन की, ग्रह को सब काज करै सुखदाई।
एक समै कहु दासिक दूखन, पीस पोवन की मन आई।
'राघौ' कहै निज रूप निरन्तर, ह्वै गये सेवक को समझाई ॥४७७

पृष्ठ १३७, टीका पद्यांक ४१९ के बाद—

मनहर छन्द

शकर के शिष्य चारि जाते दस-नाम यह,
स्वरूपाचारज के द्वै तीरथ रु आरनै।
पदमाचारज के जु दोय शिष शूरवीर,
आश्रम रु वन नाम ज्ञानी गुन जार नैं।
त्रोटकाचारज के सु तीन शिष्य भक्त-ज्ञानी
प्रवत सागर गिरी तुरू सेय वार नैं।
पृथीधराचारज के राघौ कहै तीन शिष्य,
सरस्वती, भारती, पुरी दश-नाम वारनै ॥७१९

पृष्ठ १४०, पद्यांक २८१ के बाद—

टीका

इदव छद

माग हुती सुत की नृप व्याहत, रूपवती अति बुद्धि चलाई।
खेलत गेंद गई दुरि ता घर, दौरि गयो तिस लेनहि जाई।
देखत रूप अनूप महा अति, बाह गही सग मोहि कराई।
हाथहि जोरि कहै मुख सूकत, वात अजोगि कहो जिन भाई ॥७३०
त्रास दिखावन मारि डरावत, एक न भावत शील गह्यो है।
जोर करयो निकस्यो झट छूटिक, चालत दाव न फारि लह्यो है।
रूसि रही नृप आवत बूझत, कैत भई सुन भोग चह्यो है।
क्रोध भयो नृप हो तिय को, जित न्याव न बूझत मूढ वह्यो है ॥७३१
नीच बुलाय लयै कर पाव हि, काटि कुवा महि डारि सु आऐ।
राम भजे करुणा हि करे, गुरु गोरख आय रु बोल सुनाऐ।

जमदूत कहै जमरायन सों, तुम्ह काहे को बीच करावत हांसी ?
इतत पठ्यों उत वे न गिनें हरिजन बीचहि मारि भगासी।
पशु मानुष पंखि की कौन चलै तहां कीट पतंग सबै जु मैं वासी।
'माधोदास' नरायन नाम प्रताप सों पाप जरे जैसे फूस की रासी ॥६६
डरे धमराय उठे प्रकुलाय, रहे जु सिसाई इक बात बताई।
नाम उचार भयो सिहिं वार सहि सिर मारग एक न धाई।
सुनहु जमदूत कु पान कुपूत भई भल सूत बचे हम भाई।
जहां काम प्रचण्ड को डण्ड मिट्यो, हमरी तुमरी किन बात चलाई ॥६७

पृष्ठ ३० पद्यांक ६५ के बाद—

अन्य मत

मनहर छंद

भयो तू पिशाच तेरी कूखि अवतार लियो,
मेरे जाने निपटि पिशाचनी तूं कैकयी।
हंस हति कुमति तें बांधि धरे बायस कों
अमृत लुटाय के जु बेलि विष की बई।
कमल से कोमल चरण रघुबीरजी के
कैसे बन जैहैं कुश-कण्टक मही छई।
मैं तो मरिबेहू मोसौं कैसे कु-ल सह्यो जात
होणहार हुई और कहा होयगी दई ॥१४८

पृष्ठ ८२ पद्यांक १८६ के बाद—

परसजी का वर्णन मूल

छप्पय

मरुधर कसक गांव परस जहां प्रभु को प्यारो।
सतवादी सुतार कर्म कलिजुग सें न्यारो।
ता बखसै तन भारि राम रथ चक्र सुधारयो।
इकलग पूठी एक बिना दाम सर्व विचारयो।
परस गयो जहां भूपति चित चहुत चरनों भयो।
राजो' समग्र रामजी भक्ति करत यों बद्य भयो ॥४१२

पृष्ठ ८८ पद्यांक २२२ के बाद—

भूपति मन्दिर साय लगी अति आट पु मन्दर साय लगो है।
मांहि बुझै यु उपाय करै बहु हाय पुरा किम चूकि परी है।

हृदो कियो सुवज्र समानो। उर अन्तर नहिं उपज्यो ज्ञानू ॥
नीति अनीति कीयो नहिं खेदू। निरणँ करि बूझ्यो नहिं भेदू ॥१५
काटि चरन करि नाख्यो कूपू। महाप्रवीन सु अजब अनूपू ॥
तहा मछिन्द्र गोरख आये। दरद देखि अरु अति दुख पाये ॥१६
करुणा करैं भये कृपालू। बूझै पीर सु प्रेम दयालू ॥
कौन चूक सासना दीनी। सो तो हम पैं जाय न चीन्ही ॥१७
माई दियो मिथ्या दोषू। राजा अति मान्यो मन रोषू ॥
सोति सुत अति भई सु क्रूरी। किये पिता हाथ पग दूरी ॥१८
बसैं सुनि ध्रू गाइ किहि बासू। अपने पिता को नाम प्रकासू ॥
बसैं सहीपुर माडल गाऊ। नृपति शालिवाहन है नाऊ ॥१९
ना हमसो कोई भई बुराई। कर्म-सजोग न मेट्यों जाई ॥
लिख्यो विधाता त्यूही होई। कोटि किया हू मिटै न सोई ॥२०
अब मोहि राखो निकट हजूरी। चरन-कमल सू करो न दूरी ॥
भाग बडे थे भेटे आई। तुम बिन दुती न और सुहाई ॥२१

दोहा भाग बडे थे पाइये, निरमल साधू सन्त।
आनि मिलाप गैव मैं, कृपा करी भगवन्त ॥२२
आये सद्गति करन को, निन्यानवे कोटि नरेश।
भूपन का छन भवन सो, दे दे गुरु उपदेश ॥२३

चौपाई तब अमृत फल करसो अर्प्यो। चौरगी अपनो कर थर्प्यो ॥
दियो मुदित ह्वै सिर पर हाथू। होह सहायक गोरखनाथू ॥२४
गुरू मच्छन्दर सिष चौरगू। उपजी अनभैं भक्ति अभगू ॥
आरती वडी सु आत्म माही। भगवन्त नाम विसारैं नाही ॥२५
इहा रहो तुम द्वादस वर्षू। सुमरि सनेही मन करि हर्षू ॥
रमे मछिन्द्र दे प्रमोघू। गोरख रहे सिखावन बोधू ॥२६

टीका

इदव द्वादश वर्ष हि नेम लियो गुरु, गाव सु पट्टण पाउ[1] रहाई।
छन्द ग्राम गयो सिष भीष न पावत, एक कुम्हारि उपाय वताई।

---

१ पहाड।

साध कह्यों सत नांहि गयो सुभ पारस ले नहि तार भुलाये।
जीवत तार भये कर पाद हु शिष्य करयो हरि के गुण गाये ॥७३२

चौपाई तव सू लग उम सग रहिम। अन्तर कथा भली सो कहिये॥
नृपति शालवाहन की नारी। महाकपटनी अति धूतारी ॥१
सुन्दर सुत सोतिको जायो। रूप देखि तासों मन लायो॥
अतिहि मन्यू सु अम्बुज-नना। महासम्स मुख अमृत बैना ॥२
हित करि लीया निकट बुलाई। मन मांही उपजी सो बुराई॥
लज्जा छाडि करो परसंगू। सनमुख ह्व के देखो अंगू ॥३
कियो शृंगार न बरन्या जाई। मन हु इन्द्रकी रम्भा आई॥
मृगनयनी सो बिगसी बोले। महा अडिग मन कबहु न डोले ॥४
कर पकरयो सुन बिनती मेरा। ह्व हु सदा तुम्हारी चेरी॥
कह्यो करहि तो सूं यो राजू। सरवस दे सारूं सब काजू ॥५
कर मुक्ती कर कह्यो सुनाई। तुम तो लगो धर्म की हमारो माई॥
ऐसी कथा मा लेहु न नाऊ। नहि तो प्राण त्यागि मर जाहू ॥६
काको पूत कौन की माई। बुध वे हु तोहि कही सुनाई॥
कियो नहि सु कह्यो हमारो। अबै कौन तोहि राखनहारो ॥७
कामी शहर सों यों नृप घेरी। काढों नगर ढंढोरा फेरी॥
अब आई है बेर हमारी। कछु न राखों मानि तुम्हारी ॥८
कर सू कर लियो मरोरी। करी कहा है तें कछु चोरी॥
होहि चोरायो प्रगट ऐन। दूरि करों भुज देखत नैन ॥९
तजे अभूषन वस्त्र फारी। गई सु पति पै छाती उघारी॥
कही मात मत आवे मेरा। तो उन खोल्यो मेरो केरो ॥१०
मेरी पति सों नेक न राख्यो। देखि शरीर सु प्रगट साखी॥
अब हु प्राण त्यागि मर जाऊं। कहा जगत में मुख दिखाऊं ॥११
देखि गात कामिनी को नैन। पश्चाताप उपज्यो मम ऐन॥
दहु दांत बिच अंगुरी दीन्ही। कैसी पुत्र कमाई कीन्ही ॥१२
तब कोमी मौज मंगायो मारी। दे सिरोपाव भरतार सिगारी॥
तुमको दुष्ट बहुत दुख दीया। पावेगो सो अपनां कीयो ॥१३
पुत्र नहीं पर अरी मेरो। अब कोई ल्यावे मत नेरा॥
कीज्यो दूर हाथ पग जाई। जो हमकों मुख न दिखावै आई ॥१४

हृदो कियो सुबज्र समानो। उर अन्तर नहिं उपज्यो ज्ञानू ॥
नीति अनीति कीयो नहिं खेदू। निरणै करि बूझ्यो नहिं भेदू ॥१५
काटि चरन करि नाख्यो कूपू। महाप्रवीन सु अजब अनूपू ॥
तहा मछिन्द्र गोरख आये। दरद देखि अरु अति दुख पाये ॥१६
करुणा करै भये कृपालू। बूझै पीर सु प्रेम दयालू ॥
कौन चूक सासना दीनी। सो तो हम पै जाय न चीन्ही ॥१७
माई दियो मिथ्या दोषू। राजा अति मान्यो मन रोषू ॥
सोति सुत अति भई सु कूरी। किये पिता हाथ पग दूरी ॥१८
बसै सुनि धू गाइ किहि बासू। अपने पिता को नाम प्रकासू ॥
बसै सहीपुर माडल गाऊ। नृपति शालिवाहन है नाऊ ॥१९
ना हमसो कोई भई बुराई। कर्म-सजोग न मेट्यों जाई ॥
लिख्यो विधाता त्यूही होई। कोटि किया हू मिटै न सोई ॥२०
अब मोहि राखो निकट हजूरी। चरन-कमल सू करो न दूरी ॥
भाग बडे थे भेटे आई। तुम बिन दुती न और सुहाई ॥२१

दोहा भाग बडे थे पाइये, निरमल साधू सन्त।
आनि मिलाप गैव मैं, कृपा करी भगवन्त ॥२२
आये सद्गति करन को, निन्यानवे कोटि नरेश।
भूपन का छन भवन सो, दे दे गुरु उपदेश ॥२३

चौपाई तब अमृत फल करसो अर्प्यो। चौरगी अपनो कर थर्प्यो ॥
दियो मुदित ह्वै सिर पर हाथू। होहू सहायक गोरखनाथू ॥२४
गुरू मच्छन्दर सिष चौरगू। उपजी अनभै भक्ति अभगू ॥
आरती वडी सु आतम माही। भगवन्त नाम विसारै नाही ॥२५
इहा रहो तुम द्वादस वर्षू। सुमरि सनेही मन करि हर्षू ॥
रमे मछिन्द्र दे प्रमोधू। गोरख रहे सिखावन वोधू ॥२६

टीका

इदव छन्द द्वादश वर्ष हि नेम लियो गुरु, गाव सु पट्टण पाउ[1] रहाई।
ग्राम गयो सिष भीष न पावत, एक कुम्हारि उपाय वताई।

---

१ पहाड।

साँच कहौं सत माँहि गयो तुम पारख से महि सार भुलाये।
छीवत सार भये कर पाद हु शिष्य करया हरि के गुण गाये ॥७३२

चौपाई तब सु भगे उनै संग रहिये। अन्तर कथा भली सो कहिये ॥
नृपति सालवाहन की नारी। महाकपटनी अति धूतारी ॥१
सुन्दर सुत ओतिको जायो। रूप देखि तासौं मन भायो ॥
अतिहि बयू सु अम्बुज-नैना। महासन्त मुख अमृत बैना ॥२
हित करि भीमा निकट बुलाई। मन माँही उपजी सो बुराई ॥
लज्या छाडि करो परसगू। सनमुख ह्वै के देखो भयू ॥३
कियो शृंगार न बरन्यो जाई। मन हु इन्द्रकी रम्भा आई ॥
मृगनयनी सो विगसी बोले। महा अडिग मन कबहु न डोले ॥४
कर पकरयो सुन बिनती मेरी। ह्वै हु सदा तुम्हारी चेरी ॥
कह्यो करहि तौ सु यौं राजू। सरवस दे सारू सब काजू ॥५
कर मुल्कि कर कह्यो सुनाई। तुम तो लगो धर्म की हमारी माई ॥
ऐसी कथा का लेहु म नाऊ। नहिं तो प्राण त्यागि मर जाहु ॥६
काको पूत कौन की माई। दुख दे हु तोहि कही सुनाई ॥
कियो नहिं सु कह्यो हमारो। अर्थ कौन तोहि राखनहारो ॥७
कह्यो शहर सौं यौं नृप घेरी। कार्यौ नगर ढंढोरा फेरी ॥
अब आई है बेर हमारी। कछु न राखौं मानि तुम्हारी ॥८
कर सू कर लियो मरोरी। करी कहा है तैं कछु चोरी ॥
होहि चोरगयो प्रगट ऐन। दूरि करौं मुख देखत नैन ॥९
तबै अभूषन वस्त्र फारी। गई सु पति पै दोश उचारी ॥
कह्यो मात मत भावे नेरो। तो उन छोड्यो मेरो केरो ॥१०
मेरी पति सौं नेक न राखी। देखि शरीर सु प्रगट साखी ॥
अब हु प्राण त्यागि मर जाऊ। कहा जगत में मुख दिखाऊं ॥११
देखि गात कामिनी को मंन। पश्चाताप उपज्यो मन ऐन ॥
दहु दांत विष मधुरी दीन्ही। कैसी पुत्र कमाई कीन्ही ॥१२
तब कीनी मौज मतोपो मारी। दे सिरोपाव भरतार सिंगारी ॥
तुमको दुष्ट बहुत दुख दीया। पावेगो सो अपनों कीयो ॥१३
पुत्र नही पर अरी मेरो। अब कोई ल्यावे मत नेरो ॥
कीज्यो दूर हाथ पग जाई। जो हमकों मुख न दिखावे आई ॥१४

'आयस जो ठगो' ॥१०॥
बाबा जे ठगिया ते तो मन बैठि गया, अरु ठगिया जम कालम् ।
हम तो जोगी निरन्तर रहिया, तजिया माया-जालम् ॥१०
'आयस जी फेरी द्यौ' ॥११॥
बाबा जे फेरे तो मन को फेरे, दस दरवाजा घेरे ।
अरध उरध बीच ताली लावे, तो अठ-सिद्ध नो-निधि मेरे ॥११
'आयस जी धन्धै लागौ' ॥१२॥
बाबा गोरख धन्धै अहनिस इक मनि, जोग जुगति सो जागे ।
काल व्याल का मैं हम देख्या, नाथ निरजन लागे ॥१२
'आयस जी देखो' ॥१३॥
बाबा इहा भी दीठा उहा भी दीठा, दीठा सकल ससारम् ।
उलट पलटि निज तत चीन्हिवा, मन सू करिवा विचारम् ॥१३
जैसा करै सु पावै तैसा, रोष न काई करणा ।
सिद्ध शब्द को बूझे नाही, तो विण ही खूटी मरणा ॥१४

इदव जाय जहा सब दुष्ट ही देखत, खेचर तें सबदी हु करी है ।
छद आय कही सिष सो तब सेवक, होय सु बाहरि जाय धरी है ।
कोप भये गुरु पत्तर लेकर, पट्टण पट्टण मार करी है ।
सन्त अनादर को फल देखहु, दण्ड दिये परजा सु डरी है ॥७३५

पृष्ठ १४२ पद्यांक २८८ के बाद—

(यह पद्य पृष्ठ २५ पद्यांक ४७ मे आ गया है)

अथ बोध-दर्शन

छप्पय भृगु मरीच वाशिष्ठ पुल्हस्त पुल्ह कृतु अगिरा ।
छद अगस्त च्यिवन सौनक्क सहस अग्रासी सगरा ।
गौतम गृग सौभ्री करिचक सृङ्गी जु समिक गुरु ।
वुगदालमि जमदग्न जवल पर्वत पारासुर ।
विश्वामित्र माडीफ कन्व वामदेव सुक व्यास पखि ।
दुर्वासा अत्रेय अस्त देवल राघव ऐते ब्रह्म-रिष ॥७४२

इति बोधदर्शन समाप्त ॥

मों सुत साधिहिं इंधन ल्याकर, पीसन पोवन की मम भाई।
आवत शिष्य जु पाव नहीं घर, बूझि गये गुरु भीष न पाई ॥७३४

अथ धुंधलीमल की शब्दी लिख्यते

आयस जी आवो' ॥ १ ॥
बाबा आवत जावत बहुत जग दीठा, कछु न चढ़िया हाथम्।
अब का आवण सुफल फलिया पाया निरंजन-नाथम् ॥१
'आयस जी जावो' ॥ २ ॥
बाबा जे आया ते जाइ रहेगा, तामें कैसा संसा।
बिछुरत बेला मरण दुहेला ना जाणा कत हंसा ॥२
आयस जी बठो ॥ ३ ॥
बाबा बठा उठो ऊठा बैठो बैठि उठि जग दीठा।
घर घर रावल भिक्षा मांगै एक महा अमीरस मीठा ॥३
'आयस जी ऊभा' ॥ ४ ॥
बाबा ज ऊभा ते इक टग ऊभा, शम्भु समाधि लगाई।
ऊभा रहा ही कोण फायदा जे मन भरमैं जग मांही ॥४
'आयस जो आडा पड़ो' ॥ ५ ॥
बाबा जे आडा ते गहि गुण गाढ़ा, मो दरवाजा तासी।
जोग जुगति करि सनमुख लागा पच पचीसों नासी ॥५
आयस जी सोवो' ॥ ६ ॥
बाबा जे सूता ते मरा बिगूता जनम गया सब हारयो।
माया हिरणी काम अहेड़ी हम देखत जग मारयो ॥६
'आयस जी जागो ॥ ७ ॥
बाबा ज जाग्या ते जुग जुग जाग्या नाम्या सुन्या है बैना।
गगन मण्डल में तामो लागी जाग रंग है ऐना ॥७
'आयस जी मरो ॥ ८ ॥
बाबा हम भी मरणा तुम भी मरणा मरणा सब संसारम्।
सुर नर गण गन्धर्व भी मरणा कोई बिरला उतरे पारम् ॥८
'आयस जी जीवो ॥ ९ ॥
बाबा ज जीया ते निज ही जीया मारया ने सब मूवा।
जोग जुगति करि पवना साध्या सो अजरामर हूवा ॥९

काठ की रोटी बनाय पेट सो बाधी चढाय,
क्यू कहो बढाय बात पूछिए सरीद को।
राघो कहै तीसरे तरूर तप तेग भयो,
आय के खुदाय दयो मौज दे मुरीद को ॥७४६

सुलताना का वर्णन

अजब है मजब गजब सो तरक दई,
शाह सुल्तान गलतान गल गूदरी।
आसफ अटारे लखि बुलक बुखारै देश,
त्यागे हाथी हसम सहस्र सोला सुन्दरी।
मादर बिरादर बलक्क खेस ख्वाहि खेल,
खेलत खालिक दर छडि रहे बूदरी।
राघो कहै कदम करीम के करार दिल,
शाहि रू खुदाई मिले माबूद माबूदरी ॥७४८

हेसमशाह वर्णन

छप्पय छंद

दुश्मन करे दरेग, तेग हेतम सो हारयो।
इक गजा करत दरवेस, शाह तजि सर्म पुकारयो।
दुखतर करौं कबूल, सकल चाकर घर खगो।
दरबड चाहु दिवान, जाय हेतम सिर मंगो।
जिन्दे किया पयान, खाण कुछ खरच मगाया।
कुछ दिन लागे बीच, नगर हेतम के आया।
जन राघो मिले अवाज करि, देहु सिर नियत खुदाई।
मैं आया तकि तोहि, सकस ने शरम गहाई ॥७४६
यो हेतम बूझी माय, फक्कर मेरो शिर मगै।
पिसर नियत खुदाय, देहु दिल करो न तगै।
मादर की दिल खूब रहै, खालिक सो नेरी।
रे तुम जाहु फकर के, साथि सुनो सुत वाता मेरी।
सुत चले कुनन्द करि, माय पायन गो सिर खुले।
तब दुशमन देखि रहफ गये, अवगुन सब भूले।
सकल हसम घर राज तन, दुखतर दे पाऊ परयो।
जन राघो हेतमशाह का, यो अलह शीष कायम करयो ॥७५०

पृष्ठ १४२ पद्यांक २८१ के बाद—

अथ जैन-दर्शन वर्णन

चौवीस तिथंकर थीनहु जन राघौ मन बच कर्म ॥
ऋषभ अजित अरु पदम चंद्र संभव सुबुद्धि मन।
अभिनन्दन निम नेम सुमति शीतल श्रीहांसि गन।
बासुपूज्य पारस्स अनन्तजी बिमल धर्म भर।
सत कुंथ अरिहंत सुमलजी मुनि सुव्रत भर।
पारसनाथ मुनिहि प्रसिद्ध जगवीर बर्धमान सुधर्म धर।
चौवीस तिर्थंकर थीनहु जन राघौ मन बच कर्म ॥७४४

अन्य मत

पहुपन्त प्रभु चन्द चन्द समि सेत बिराजै।
पारसनाथ सुपार्श्व हरित पद्मामय साजै।
बासुपुज्ज अरु पदम रक्त माणिक दुति सोहै।
मुनिव्रत अरु नेम श्याम सुरनर मन मोहै।
बाको सोलह कंचन बरन मह व्यवहार शरीर-दुति।
निहचै अरूप चेतन विमल दरश ज्ञान चारित्र द्युति ॥७४५

॥ इति जैन-दर्शन समाप्त ॥

अथ जीवन दर्शन वर्णन

मूल

छप्पय अनलहक मनसूर राबिया हेतम शेख फरीद सुलतान।
छप्पै दाद कबीर कमाल कमधुज वैश्नो साधना सेऊ समन।
ए पट गुण जित गमतान विस्मुलीशां बाजीन्द बिहाबदी कादन।
महमूद सत मनि जन जमुना उसमान अबलिम पीरौं दास गरीब गन।
इन पथ पचीसों बश किए, हरि पिण्ड ब्रह्माण्ड बिधि तरक की।
जन राघौ रामहिं मिले हद तजि हिन्दू तुरक की ॥७४६

फरीदजी का वर्णन

मनहर   माई कीन्ही परख बडी न हु खरोस वर्ष
छंद   पीरका मुरीद कीन्हा फेरि कै फरीद को।
बारह बरष खाये पात दरखत जामैं गात
कैम मागें बात सुदाई खरीद को।

काठ की रोटी वनाय पेट सो वाघी चढाय,
क्यू कही वढाय वात पूछिए सरीद को।
राघो कहै तीसरे तरूर तप तेग भयो,
आय के खुदाय दयो मौज दे मुरीद को ॥७४६

सुलताना का वर्णन

अजब है मजव गजव सो तरक दई,
शाह सुल्तान गलतान गल गूदरी।
आसफ अटारे लखि वुलक बुखारै देश,
त्यागे हाथी हसम सहस्र सोला सुन्दरी।
मादर विरादर वलक खेस ख्वाहि खेल,
खेलत खालिक दर छडि रहे वूदरी।
राघो कहै कदम करीम के करार दिल,
शाहि रू खुदाई मिले माबूद माबूदरी ॥७४८

हेसमशाह वर्णन

छप्पय छंद
दुश्मन करे दरेग, तेग हेतम सो हारयो।
इक गजा करत दरवेस, शाह तजि सर्म पुकारयो।
दुखतर करौं कबूल, सकल चाकर घर खगो।
दरबड चाहु दिवान, जाय हेतम सिर मंगो।
जिन्दै किया पयान, खाए कुछ खरच मगाया।
कुछ दिन लागे बीच, नगर हेतम के आया।
जन राघौ मिले अवाज करि, देहु सिर नियत खुदाई।
मैं आया तकि तोहि, सकस ने शरम गहाई ॥७४६
यो हेतम बूझी माय, फक्कर मेरो शिर मगै।
पिसर नियत खुदाय, देहु दिल करो न तगै।
मादर की दिल खूब रहै, खालिक सो नेरी।
रे तुम जाहु फकर के, साथि सुनो सुत वाता मेरी।
सुत चले कुनन्द करि, माय पायन गो सिर खुले।
तब दुशमन देखि रहफ गये, अवगुन सब भूले।
सकल हसम घर राज तन, दुखतर दे पाऊ परयो।
जन राघौ हेतमशाह का, यो अलह शीष कायम करयो ॥७५०

पृष्ठ १४२ पद्यांक २८९ के बाद—

अथ जैन-दर्शन वर्णन

चौबीस तिर्थंकर दीनहु जन राघौ मन वच कर्म ॥
ऋषभ अजित अरु पदम चंद्र संभव सुबुद्धि मन।
अभिनन्दन निम नेम सुमति शीतल श्रीहांसि गन।
वासुपूज्य पारस्स अनन्तजी विमल धर्म धर।
सत कुंथ अरिहंत सुमलजी मुनि सुव्रत धर।
पारसनाथ मुनिनिहि प्रसिद्ध जगवीर वर्धमान सुधर्म भर।
चौबीस तिर्थंकर दीनहु जन राघौ मन वच कर्म ॥७५४

अन्य मत

पहुपदन्त प्रभु चन्द चन्द समि सेत विराजै।
पारसनाथ सुपार्स हरित पद्मामम छाजै।
वासुपुज्ज अरु पदम रक्त माणिक द्युति सोहै।
मुनिव्रत अरु नेम स्याम सुरनर मन मोहै।
वाका सोमह कचन वरन मह व्यवहार शरीर-द्युति।
निहचै अरूप चेतन विमल दरस ज्ञान चारित्र जुति ॥७५५

॥ इति जैन दर्शन समाप्त ॥

अथ जीवन दर्शन वर्णन

मूल

छप्पय मनमहक मनसूर राबिया हेतम सेप फरीद सुलतान।
छुम्न दास कबीर कमाल कमपुज देखो साधना सेऊ समन।
ए पट् गुरण जित पसतान विज्जुलीखां वाजीन्द बिहावदी कावन।
महमूद सत भनि अम बमुमा उसमान भवतिय पीरौं वास गरीब गन।
इन पंच पचीसों बस किए, हरि पिण्ड ब्रह्मण्ड बिधि उरक की।
जन राघौ रामहिं मिले हद तजि हिन्दू तुरक की ॥७५६

फरीदजी का वर्णन

मनहर　माई कीन्ही परख प्रती न हु छत्तीस वर्ष
छंद　पीरका मुरीद कीन्हा फेरि कै फरीद को।
बारह बरष खाये पात दरखत चामी गात
कंन मानैं बात खुदाई खरीद को।

यो परमारथ के कारणौ, जन राघौ हारयो सूर।
साहिब सरवरदीन विचि, पडदा ह्वै गये दूर ॥८
एक विपिन द्वै सिद्ध निपुन, साधक करी तरक्क।
अरस-परस शोभा सरस, राघौ दुवै गरक्क ॥९
मुसलमान मुरतजाअली, करी भली इक रोस।
जन राघौ काज रहीम कै, पुरई परकी हौस ॥१०

छपै छन्द

राघौ सन्त जु ऊतरे, सेउसमन घरि आयके ॥
पिता पुत्र पुनि मात, आहि अति पण के गाढे।
घर मे कछू नहिं अन्न, सोच सब दिन मन वाढे।
चोरी गए समन, फोरि' घर अन पकरायो।
वणिक पुत्र सुत गह्यो, काटि मस्तक लै आयौ।
धड सूली मस्तक फिरयो, परसाद कियो जन भायके।
राघौ सन्त जु ऊतरै, सेउसमन घरि आयके ॥७५३

काजी महमद वर्णन

करुणा विरह विलाप करि, काजी मंहमद पिव मिले ॥
आठ पहर गलितान, छक्यो रस प्रेम सु मातो।
टोडी आशा राग, प्रीति सो हरि गुन गातो।
पुत्री को सुत मृतक देखि, मन दया जु आई।
सुता कियो मन सोच, मृतक सो लियो जिवाई।
राघौ कुल-मरजाद तजि, काम क्रोध सब गुण गिले।
करुणा विरह विलाप करि, काजी महमूद पिव मिले ॥७५४

नमस्कार

द्वादश पथ जोगी नमो, नमो दशनाम दिगम्बर।
नमो शेष सोफी जु नमो जैनी सेतम्बर।
नमो बोध शिव शक्ति, नमो द्विज निगम उपासी।
नमो महन्त विरकत, नमो वैकुण्ठा-वासी।
विष्णु वैसनो वेद गुरु, तारक तीनो लोक के।
ये षट्-दरशन पुजि खलक मे, जन राघो हता शोक के ॥७५५

इति श्री जीवन दरशन समाप्त ॥

मनसूर का वर्नन

मनसूर प्रलह की बन्दगी, भ्रनल-हक्क कहि यों मिले ॥
भ्रनल-हक्क भ्रनल-हक्क कहै मनसूर जु प्यारो।
काजी मुल्ला सबै कहै मिसि गरदन मारो।
डरपे नहि हुसियार भ्राप दिस साहिब भायो।
जारि बारि तन भस्म उदधि के माहि बहायो।
राघौ कंचन ताइके हक्क हकी कतियों मिले।
मनमूर भ्रलह की बन्दगी भ्रनल-हक्क कहि यों मिले ॥३५१

वाजीन्द ख्वाज को वर्नन

ख्वाज वाजीन्द दरि मवस की, ख्वाहो राह ठाही करी ॥
मृतक बठो ऊंट देखि तिहि मति डर लाग्यो।
बिना बन्दगी बाद स्वाद सब तजि करि भागो।
सुन ही वनके माहि काटि तिहि नीर पिलायो।
करी बन्दगी सार बेचि मंहि निमिक खिलायो।
राघौ कुदी कुसम तजि साहब मिले तबकरी ॥
ख्वाज वाजीन्द दर मवसकी ख्वाहो राह ठाहो करी ॥३५२

साखी बन्दा शाह खुदायका बठा जीवस जीति।
माल मुलक राघौ कहै भरपि भ्रलह को प्रीति ॥१
कुल हो जामां बेच के दाम खुवार महक्कु।
राघौ तन मन भ्ररसमें भ्रवसि मजिस परिपक्कु ॥२
इक दमरी के साग कों हजरत कही हुसियार।
सबा भए राघौ कहै बकसि गुहृ करतार ॥३
मस मासिक मिमलोक में शोमित सरवरदीन।
राघौ बम औरे न कों इष्टि परत हूं हीन ॥४
तब पैंज बदी पतिशाह ने जो जंग जीते याहि।
शहर सहित राघौ कहै कुलतर ब्याहू ताहि ॥५
यों राघौ भ्रायो देस के भेष गवाई यारि।
बरा खुदाई काम है, तू मुझ भ्रागे हारि ॥६
राघौ सरवरदीन धनि सुनि कीन्हो इकतार।
मैवा मिश्री घी मिरी ताम कुपोरस यार ॥७

यो परमारथ के काररगैं, जन राघौ हारचो सूर।
साहिब सरवरदीन विचि, पडदा ह्वै गये दूर ।।८

एक विपिन द्वै सिद्ध निपुन, साधक करी तरक्क।
अरस-परस शोभा सरस, राघौ दुवै गरक्क ।।९

मुसलमान मुरतजाअली, करी भली इक रोस।
जन राघौ काज रहीम कैं, पुरई परकी हौस ।।१०

छपै छन्द

राघौ सन्त जु ऊतरे, सेउसमन घरि आयके ।।
पिता पुत्र पुनि मात, आहि अति पण के गाढे।
घर मे कछू नहिं अन्न, सोच सब दिन मन वाढे।
चोरी गए समन, फोरि घर अन पकरायो।
वरिणक पुत्र सुत गह्यो, काटि मस्तक लै आयौ।
धड सूली मस्तक फिरचो, परसाद कियो जन भायके।
राघौ सन्त जु ऊतरै, सेउसमन घरि आयके ।।७५३

काजी महमद वर्णन

करुणा विरह विलाप करि, काजी महमद पिव मिले ।।
आठ पहर गलितान, छक्यो रस प्रेम सु मातो।
टोडी आशा राग, प्रीति सो हरि गुन गातो।
पुत्री को सुत मृतक देखि, मन दया जु आई।
सुता कियो मन सोच, मृतक सो लियो जिवाई।
राघौ कुल-मरजाद तजि, काम क्रोध सब गुरग गिले।
करुणा विरह विलाप करि, काजी महमूद पिव मिले ।।७५४

नमस्कार

द्वादश पथ जोगी नमो, नमो दशनाम दिगम्बर।
नमो शेष सोफी जु नमो जैनी सेतम्बर।
नमो बोध शिव शक्ति, नमो द्विज निगम उपासी।
नमो महन्त विरकत, नमो वैकुण्ठा-वासी।
विष्णु वैसनो वेद गुरु, तारक तीनो लोक के।
ये षट्-दरशन पुजि खलक मे, जन राघो हता शोक के ।।७५५

इति श्री जीवन दरशन समाप्त ॥

छप्पय ए हृद तजि हिन्दू तुरक की, साहिब सों रहे सरस-रू[1]॥
छन्द आंभा जग मम न्हांन विष्णु ब्यापक जप सीमो।
सिद्ध भयो जसनाम भेष भगवां धरि सोधो।
उद्धवदास उग्रास स सति सों राम बतायो।
लाल षास अजास ठठ्मा पियहि कों पायो।
राघौ रामभों धारि क नर-नारी सब पर सक।
ए हृद तजि हिन्दू तुरक को साहिब सों रहे सरस-रू ॥७२६

इति षद् दरसन मध्ये भक्त वर्णन समाप्त ॥

पृष्ठ १२८ पद्यांक ४६२ के बाद—

नृप चोर वंकचूल वर्णन

(साखी) चारि मास चुपके रहे भील नगर मधि सन्त।
राघौ यो सिष समझ करि काम बतायो अन्त ॥१
पुर मधि पूरे सन्त जन पावस कीयो वदीत।
राघौ पुनि आगो मछे, चित स्वामीन प्रतीत ॥२
पुरवासी गोहम समे पहुचावन को पंथ।
राघौ सावन सुख दियो उपदेशयो धम सथ ॥३
फहुम बिना पूछ तोरिके मरि से आयो गोद।
राघौ पुनि प्रगट भये एक बचन परमाद ॥४
कबर जियो सन्यास-हित साघ सवद उर धारि।
राघौ पुनि मगरो रही बची बहुमी मक मारि ॥५

जसु कुठारा का वर्णन

नर-नारी मन जिन जिते ते माहि न माया बसू।
राघौ त्यागी रूप म्हौर लकरी बीम ठग्मो जसू ॥६
भूप रूप भगवन्त को भाया ताके पास।
झिलमिलाट करती म्हार राघो देखी रास ॥७
नीति विचार निपट कर राघौ नृप में भूमि।
नृप प्रतीत में को पक्यो द्रव्य छुवें नहि भूमि ॥८
नृप भूपो प्रजा दण्ड तऊ न या सम भार।
राघौ उच्छिष्ट के लिये पुरु-तन हूं भण्डार ॥९

१ गुर्जरगढ़।

जदपि अजाची जाचई, तो शुभ भिक्षा लीन्ह।
राघौ अब हित ना गहै, सो अतीत परवीन ॥१०
जन राघौ राजा कियो, विन पर इतो विचार।
जे कोई दुर्बल मिलै, ताहि करू उपकार ॥११
मनको चाणक दे चल्यो, नृप विवेक को पुज।
राघो गुरू ज्ञानी मिले, जहा सघन वन-कुज ॥१२
देख्यो लकरी वीनतो, दुर्वल उभानै पाव।
जन राघौ नृपनै कही, महोर बताऊ आव ॥१३
जन राघौ नृपनें कही, मोहर जिसी मल खात।
वर्ष बारह देषत भई, कहू न चलाई बात ॥१४
राघौ नृप विनती करी, स्वामी मे शिष तोर।
पूरे गुरु बिन उर-विथा, मिटे न तिमिर अघोर ॥१५
कही जसू तू द्रव्य सौं, बन्ध्यो द्रव्य वित-पूर।
हू कमीण तू नृपति नर, भिन कर भजि है दूर ॥१६
नृपति कही भाजो नही, मैं राखौं गुरु भाव।
जन राघौ दण्डव्रत कियो, मस्तक धारो पाव ॥१७
राघो करि है लोक-लज, कही जसू नृप डाटि।
हू निकसोगो मीड लै, तू बैठेगो पाटि ॥ ८
नृपति कही चूको नही, धर्म खडग की धार।
राघौ देखि रु दौरि हू, लेहू सिर ते भार ॥१९
धन्नि सिष्य वह धन्नि गुरु, निह-स्वारथ निर्दोष।
सहर सहित राघौ कहै, भये भजन करि मोष ॥२०

पृ० १६५, मूल पद्यांक ३१६ के बाद—

रामदास वर्णन

इदव छद
आप गऐ वनिजी अनि गावहि मोट धरें सिर बोझ सु भारी।
दास दुखी लखि मोट लई हरि जानि गऐ मन माहि विचारी।
होय कढी फुलका जलता तहु जाय कही घरि मोट उतारी।
आय रु देखत सो पछितावत रामहि थे सुनि मूरख नारी ॥८८२

गुजरात घटा उत्पन्नि, न्याती नगर जानी।
लोदीराम सु तात, लछि जाके वहुत्रानी।
वर्ष बीते दश एक, आप हरि दर्शन दीन्हो।
कर सो कर जब गह्यो, लाय अपने अग लीन्हो।
जन राघौ सुर-नर-दुर्लभ, सो प्रसाद मुख सो दियो।
जग जहाज परमहस, एक दादू दयाल प्रगट भयो ॥६५८

पृष्ठ १८३ प० ५५७ के बाद—

टीका

इदव छद
सीकरी शाह अकब्बर ने सुनि दादू अवल्न फकीर खुदाई।
भगवन्त बुलाय लये इक साव तू ल्याव दरव्वड वेरिन लाई।
नृप करी तसल्लीम ततक्षन सूजे को भेज दिया तब भाई।
राघौ गयो दिन राति प्रभाति यो दादू दयाल को आन सुनाई ॥६७०
दादू दयाल चले सुनि के उनके सतिरामजी एक सहाई।
सिष सातक सगि लिये सब ही दिन सात मे साध पहुँचे जाई।
अवल्लि फजल्लि उभै द्विज देखित खोजत बूझन ले गय आई।
राघौ कहे धनि दादू अकब्बर साखी कबीर की भाखि सुनाई ॥६७१
आदि रु अन्त उत्पत्ति की सब बूझी अकब्बर दादू को भाई।
तुम इलम गैब अतीत मौकलि मौल न अगंति कैस उपाई।
दादू कही करतार करीम के एक शबद्द मे ह्वै सब जाई।
राघौ रजा दिल मालिक की भई सोर हकीकति हाल सुनाई ॥६७२

छप्पय छद
इम कही अकब्बर शाह देहु दादू को डेरा।
तब विप्र विद्यापति कहि सुनो हजरति मन मेरा।
इनको मैं ले जाहुँ करो खिजमति सो इलहणा।
तब शाह खुशी ह्वै कहो मजव सुनि हमसो कहना।
वहुत खूव हजरात जिवै गुदराऊँगा आनिकै।
जन राघौ तब रात दिन अति खोजे इन आनि कै ॥६७३
द्विज अपने डेरे जाय जावता कीन्हो भारी।
नृप विवेक को पुज वात अति भली विचारी।
सब विधि वहुत विछाहना पादारघ परणाघ करि।
अचवन को कोरे कलश तुरत मगाये नीर भरि।

पृ० १७८, प० १४६ के बाद –

छप्पय मर्मेमि मारफत मोज मरद मक्कै कौं भाया।
छंद जिकर करत गय आम परे द्रुक पैर हलाये।
रिवधे मआ वर कैफ कौन यह परचा चिकारा।
कारो बाहर खेंच भमह दिस पाव पसारा।
कही मवक्कम यह देह दिस मालिक मस्यो।
सेवन लाग अबै भई मजमत्ति मरद को।
जन राघो सुलतान दिस फिरयो वस हु दिस मकों ॥१४१

पृष्ठ १७९ प० १५१ के बाद

दादू दिल दरियाव हंस हरिजन तहाँ झूलै।
गगन मगन गलितान, राम रसना नहिं भूले।
उपजे महन्त मराल मुक्ति मुक्ताहल भोगी।
रहत मगम बमवोल विष ममि होहिं न रोगी।
मन माला गुरु तिलक तत रटणि राम प्रतिपाल की।
जन राघो छाप छिपे नहीं दादू दीनदयाल की ॥१५४

पृष्ठ १८० प० १६० के बाद—

दादू दीनदयाल सो मनि जननी एक जन्यो॥
भक्ति भूमि दे दान नाम नौबत्ति बजाई।
चारी बर्णं कुल धर्म सबन कौं भक्ति दिढ़ाई।
हरि बिन भान जु धर्म दास के माहि उपासी।
पूरण ब्रह्म प्रखण्ड, तहाँ की करत खवासी।
हद छांडि बेहद गयो जग तारणें नाहिं न लम्पू।
दादू दीनदयाल सोच निज जननी एको जन्यो ॥१५६
यह चवदह रतन प्रगटे उदधि म दादू दयाल प्रगट भयो॥
महा पुत्र की चाह विप्र झार्थे जल मांही।
डाकक-डूबा होय तिरता माप ता मांही।
ऋषि र लिये उठाय चिन्ह भद्भुत से दरसे।
कर्ता पुत्र यह दियो कहा हमरो को करसे।
कोटानकोटि जीव तिरहिंगे परा मम्य राघो कह्यो।
यह चौदह रतन प्रगटे उदधि म दादू दयाल प्रगट भयो ॥१५७

गुजरात घटा उत्पन्नि, न्याती नगर जानी।
लोदीराम सु तात, लछि जाके वहुवानी।
वर्ष बीते दश एक, आप हरि दर्शन दीन्हो।
कर सो कर जब गह्यो, लाय अपने अग लीन्हो।
जन राघौ सुर-नर-दुर्लभ, सो प्रसाद मुख सो दियो।
जग जहाज परमहस, एक दादू दयाल प्रगट भयो ॥६५८

पृष्ठ १८३ प० ५५७ के बाद—

टीका

इंदव छद
सीकरी शाह अकब्बर ने सुनि दादू अवल्न फकीर खुदाई।
भगवन्त बुलाय लये इक साव तू ल्याव दरव्वड बेरिन लाई।
नृप करी तसल्लीम ततक्षन सूजे को भेज दिया तव भाई।
राघौ गयो दिन राति प्रभाति यो दादू दयाल को आन सुनाई ॥६७०
दादू दयाल चले सुनि के उनके सतिरामजी एक सहाई।
सिष सातक सगि लिये सब ही दिन सात मे साध पहुँचे जाई।
अवल्लि फजल्लि उभै द्विज देखित खोजत बूझन ले गय आई।
राघौ कहे धनि दादू अकब्बर साखी कबीर की भाखि सुनाई ॥६७१
आदि रु अन्त उत्पत्ति की सब बूझी अकब्बर दादू को भाई।
तुम इलम गैब अतीत मौक्कलि मौल न अर्गति कैस उपाई।
दादू कही करतार करीम के एक शबद्द मे ह्वै सब जाई।
राघौ रजा दिल मालिक की भई सार हकीकति हाल सुनाई ॥६७२

छप्पय छंद
इम कही अकब्बर शाह देहु दादू को डेरा।
तब विप्र विद्यापति कहि सुनो हजरति मन मेरा।
इनको मैं ले जाहुँ करो खिजमति सो इलहणा।
तब शाह खुशी ह्वै कहो मजब सुनि हमसो कहना।
बहुत खूब हजरात जिवै गुदराऊँगा आनिकै।
जन राघौ तब रात दिन अति खोजे इन आनि कै ॥६७३
द्विज अपने डेरे जाय जावता कीन्हो भारी।
नृप विवेक को पुज बात अति भली विचारी।
सब विधि बहुत विछाहना पादारघ परणाध करि।
अचवन को कोरे कलश तुरत मगाये नीर भरि।

मक्ष मोजन प्रति भाव सों महल दिखाये निज नये।
जन राघो नृपसों मिपट विरक्त वचन स्वामी कहे ॥१७४

बह्मदास ब्रह्म ज्ञान को भिन्न-भिन्न पूछ्यो भेद।
दादूजी इस देह में कहत हैं चारों वेद।
तब निर्वाण-पद आपणों, स्वामी उचरै बैन।
जिन सेती प्रथ्य-दृष्टि ह्वै सो गुण निरखों नैन।
गुरु लक्ष बिन उर बज्र, ब्रह्मा जड़े कपाट।
जन राघो स्वामी कही विकट ब्रह्म की बाट ॥१७५

इत प्रनमै को पुछ्र भतहि कवि चतुर बिनाणी।
ज्ञान घटा घररांहि गुहर्यां द्वन्द्व वाणी।
इस आगम उत निगम कह्यो सग बरणों गाथा।
तब स्वामी दादू हँसे, बीरबल नायो माथा।
चरचा दिन चालीस भों अष्ट पहर नितप्रति नई।
जन राघो नृप की नसां, मन बच कर्म करि के भई ॥१७६

यों गयो अकब्बर पासि बीरबल बुद्धि को आगर।
हजरति मैं हैरान साध दादू सुख-सागर।
मग्रब बहुत बसियार ज्ञानमुक्ति कहत न आवै।
तब कही अकब्बर एक बेर मुझि क्यों न मिलावै।
दरवड़ जहाँ से आव धव तलब बहुत दीदार की।
जन राघो धनि रामजी यों चोट पुकारै धारकी ॥१७७

मनहर छंद

नूर हो के तखत र पाए जाके नूर ही के
नूर ही के दादू दास नूर मन भाव ही।
नूर ही के मुनीजन गावत गुणानुवाद,
नूर ही को सभा करजोर शीश नावई।
घरनी आकाश माहो देखे सो अमर मौंही
नूर को दिदार कियो पाप-ताप जावही।
राघो कहै ताकी छबि मानो उदय कोटि रवि
दरबत की महिमां कछु कहत न आव ही ॥१७८

छप्पय छंद

इम देखि तखत पुनि नूर को, शाह अकब्बर को ससो मिट्यो ॥
खडो करत अरदासि पार किनहुँ नहिं पाए।
तुम जहाँन के वीचि खुदा के दोस्त आए।
मेरी बगसो चूक, अकब्बर ऐसे भाखै।
हम यह करत अरदास, साहिब तुम सरनै राखै।
ऐसे आप काशिया, अफताप तुदै ज्यू तम तिप्यो।
यम देखि तखत पुनि नूर को, शाह अकब्बर को ससो मिटचो ॥६७६
यो स्वामी दादू चलत, बीरबल अति विलखानो।
मोहर रुपैया धरै, प्रभुजी एह रषानो।
हम यह हाथ छुयें न लेहु को चेला-चाँटी।
तुम राजा हम अतिथि देहु विप्रन को बाँटी।
बहुरि बीरवल ले गयो, अकब्बर के दरबार।
यौं राघौ चलते रस रह्यो, जग माहि जय जयकार ॥६८०

इदव छंद

आय रहे दिवसा सरके तट स्वामि कह्यो सहनान करीजै।
शिष्य जगो यह कहत भयो प्रभु तार्ति जिलेबी जिमावन रीजै।
जानि गये सबके मन की हरि ध्यान करचो सिधि आय खरीजै।
राघौ कहै हरि छाव पठावत पात वची जल माहि करीजै ॥६८१
आत ही आमेर भई एक नाथहु वैन सुबोलि सुनायो।
स्वामी करी जरना मन मे सिष टलिहु जोगि अकाश उडायो।
स्वामी खिजे सिषगा करूणा पद जोगि सिलासुघरा परि आयो।
दुष्ट पलें तजि आय परचो पग राघौ कहै जब शिष्य कहायो ॥६८२

मनहर छंद

कपट सो तुरक सगोती लायो ढाक करी,
जानि गये स्वामी हरि भोग न लगाये हैं।
कह्यो परसाद लेहु स्वामी खोलि ऐहै,
बूरा भात मेवा गिरी प्रगट दिखाए हैं।
रामत करत सुने माधो, काणि टोक मधि,
स्वामी को बुलाए हिये, अति हुलसाए हैं।
राघौ कहै गुरु महा छै मे सन्तन देखि,
रिधि थोरी जानि आय स्वामी को सुनाए हैं ॥६८३

इन्दव स्वामि कह्यो जिन सोच करो हरि ध्यान करा प्रभु पूरण हारे।
छन्द सामगरी गंज मांहि मंगाय र भोग लगा हरि ता महि डारे।
रिद्धि अट्ट भइ दिन सात सो अंस भयो बग बाग अचारे।
लोग निरषि प्रसाद दिये जुग राघो कहै गुरु बहुरि पधारे ॥१८४
देखि प्रताप जल्यो अति दुष्ट कपट छिपाय र स्वामि बुलाऐ।
मारन को सरिण गाडिहि ढांकस आनि गए चित नांहि डुलाऐ।
काढि तलाक धसे ततकालहि लोहर साबत बेगि बुलाऐ।
राघो कहै जस कूप परे भक्ति गा करुणा पद भौरि चलाऐ ॥१८५
बानि प्रकाश भई मम रूपहि आय मिलो हरि सेव करी है।
ढूंढि सथान निराने मकान जु राखि मना मन चिन्त धरी है।
दास नरान निरानहु को नृप दे सुपनों हरि भक्ति हरी है।
दक्षिम तें ततकालहि आय र राघो कहै गुरु प्रीति खरी है ॥१८६
मन्दिर में पधराय रखे गुरु भीर भई तब बाहर आये।
कोउ दिना तर पोर रहे पुनि शेष के साथ सु भेजर आए।
आयस लीन हुई हरि की तब तत्व मिलाए र ब्रह्म समाए।
राघो कही बुधि के अनुमान सु दादुदयाल को पार न पाऐ ॥१८७

पृ० १८६ पद्यांक १७३ के बाद—

करतार सुनि करुणा जिनकी मन चारि विचारि र ले घरि आए।
रीति बड़े की बड़े पहिचानत सार करी बहु भांति जिवाए।
कपड़ा हथियार तुरी करचि दई यों करिके घरिकों पहुँचाए।
राघो कहै सति सुन्दरदासजी आवत ही मथुरा मधि न्हाए ॥१९०

पृ० १८५ मूल पद्यांक १६१ के बाद—

सुन्दरदास वर्नन मूल

छप्पय गुरु दादू बड़ शिष्य भयो सधु नृप बीकानेर को।
बादशाह करि हुकम पठायो कावलि जाई।
जुद्ध करि धावा पड़यो समझि किन लियो उठाई।
ताजा है राठौड़ तुरी चढ़ि मथुरा आयो।
मिल्यो देस को लोग सति समचार सुनायो।
राघौ मिलि चतुरै कही मग मै सामरि सेर को।
गुरु दादू बड़ शिष्य भयो सधु नृप बीकानेर को ॥१९१

पृ० १९० पद्याक ३९० के वाद—

इन्दव माँहि रहाय रु वार मुंदाय सु प्राण चढाय समाधि लगाई।
छन्द मारि विलाय लै माँहि नखाय कही द्विज जाय न होय भलाई।
माँहि मुवो सिव होय लिख्यो विधि वासि उठ्यो सुनि राय रिसाई।
राय रिसाय दियो वलि वायक ह्यो सिव आप जु खाज गँवाई ॥१०१७

अरेल श्रीफल चन्दन तूप चिता विधि सो करी।
अगनि सु दई लगाय देह अति परजरी।
ब्रह्मड फूटि सुशब्द होत रकार रे।
परिहा राघौ खल भये फट राय दृग वार रे ॥१०१८

पृ० १९० पद्याक ३९१ के वाद—

मनहर काशी को पण्डित महानाम जग-जीवन,
छन्द सुदिग्गविजै कृत आम्बावती सु पधारे है।
सुने दादू सन्त वड दर्शन को गयो तट,
चर्चा को उभावो अति पण्डित जु हारे हैं।
प्रश्न कीयो है जाय स्वामी दियो समझाय,
रामजी मिले सुकरि वैन उर धारे हैं।
रघवा मिटी है आँट पोथा द्विज दीन्हाँ वाँटि,
मन वच कर्म स्वामी दादूजी तुम्हारे हैं ॥१०२०

पृ० १९१ पद्यांक ३९३ के बाद—

अरेल देह त्यागतो वेर कही सब साधि का।
धरि आज्यो मम देह श्रीगुरु पादुका।
चलो वीच जगत हट्ट पट परे करे।
परहा राघौ रथ सुरीति देख चर पग परे ॥१०२३

दोहा जगजीवन धनि राघवै, रीत भलि अति कीन।
देह कारवज कारण मिले, आप भये ब्रह्मलीन ॥१

पृ० १९३ पद्याक ४०२ के बाद—

चतुरदासजी का वर्णन मूल

छप्पय मरदनियाँ की छाप शीश शिष्य चतुरदास दयाल को ॥
ब्राह्मन कुल उत्पत्ति जगत गति निपट निवारी।
गगन मगन गलतान भजन रस मे मति धारी।

उर बैराग अपार सार ग्राही गुण सागर।
निहकामी निर्दोष मोष मारग अघि नागर।
धाम परमपद विमल विश्र गयो भानि भय काल को।
मरदनियाँ की छाप शीष शिष्य चतुरदास दयाल को ॥१०३३
चतुरदास चौकस चतुर, धीर वीर ध्रुव धर्मधर ॥
गुरु सेवा को मन प्रेम नित नूतन भायो।
भजन ध्यान की बान ज्ञान उर उदिग सवायो।
गुरु दादू प्रताप पाप, दुख यु दोष निवारे।
रह्यो न संसो कोय काज सब सुधर सँवारे।
पुर संग्रावट वास बसि मिले ब्रह्म सुख सिन्धुवर।
चतुरदास चौकस चतुर धीर वीर ध्रुव धर्मधर ॥३४

पृ० १६४ पद्यांक ४०८ के बाद—

साधूजी का वर्णन

इन्दव दादूजी दीन दयालु के पंथ में साधुजी साध शिरोमणि सारो।
छन्द बड़ो भजनीक भगति को पुंज हो ज्ञानी महा करतूति करारो।
धर्म नहीं गमतान मतो गह्यो धर्म को टेक निबाहनहारो।
शीश सर्वस दियो जगदीश हि राषी रह्यो जग सेति नियारो ॥१०४१

मनहर भगति को पुंज भजनीक बड़ो सूरवीर,
छन्द आसन विभूति छाजे साधू साध सारो है।
बालापन माँहि जाके विरह अत्यन्त बढ़ि,
प्रभु-रुचि प्रीति गाढ़ि लग्यो सब खारो है।
आवे कोऊ वेदमात बूझै हित चाय चाय
रोग को गमावे मोहि भयो सोच भारो है।
काहू शिष्य स्वामीजी का पद गायो सुनि धायो
राषी गुरु वेद मिले कियो निर्विकारो है ॥१०४२
आसन को दिढ़ कर साल अधि ध्यान धर,
विश्वरूप व्यापक में गमत पू भीनो है।
काहू नर बिना ज्ञान गहै कीर्क भमाई ओट
आपने पु सई ओट उपरी है छोट तन एक ब्रह्म चीनो है।

ताहि समै सेवकहु दर्शन को आयो जित,
गुरुजी लगाई कित,
स्वामी कही हकीकत शीश चरण दीनो है।
राघौ वात छानी नही, प्रगट जगत माही,
नासिक को मूंदिवार पच्छिम को कीनो है ॥१०४३

पृ० २०२ मू० पद्यांक ४९८ के बाद—

दादूजी के सेवकों का वर्णन

छप्पय छन्द दादू दीनदयाल के, ए सेवग भूपति भले ॥
अकबर शाह बडमती, वीरबल बुधि को आगर।
खघार स्यघ नरायण (भापर) सिंह, कृष्णसिंह भोज उजागर।
ईश्वर कुछवाहोहि, ताहि गुरु दादू भाए।
लाडखान घाटवै दयाल दादू पधराए।
पीथो निर्वाण उर आण धरि, पुनि खीची सूरजमलै।
दादू दीनदयाल के, ए सेवग भूपति भले ॥१०६४

बाईया को वर्णन

दादू दीनदयाल की, सगति ए बाई तिरी ॥
नेमा के गुरु नेम, तहा गुरु दादू पूजे।
रम्भा जमुना जानि गगा छोडे भ्रम दूजे।
लाडा भागा सन्तोषी, राणी हरिजाणी।
रुक्मणि रतनी भलै, गुरू की रीति पिछाणी।
जगत जसोधा जस लियो, सीता सान्ति हृदय धरी।
दादू दीनदयाल की, सगति ए वाई तिरी ॥१०६५

पृष्ठ २३५, प० ५०८ के बाद—

मीठे मुख वचन रु कचन ज्यू क्रान्तिवन्त,
दिपत लिलाट पाट स्वामी प्रहलाद को।
हाथ को उदार हरि हेत होते राखे नाही,
सुध बुध महा सन्त जैसे सनकादि को।
भगति को पुज भगवन्त जु रिझायो जिन,
भूत भविष्य वर्तमान आज्ञाकारी आदि को।

मोपो नांही रामरेप प्रीति सेसो पूग्यो भेप,
राघो कहै रामजी निबाहैंगे व्रत साम को ॥१०७२

इन्दव कलिकाल में निहाल भये प्रहलाद मिले प्रहलाद की नाईं।
छन्द उदार अपार दया सनमान, इसी विधि सों रिझिए जिन साईं।
शील सन्तोष निर्दोष निरम्मल सन्तन सों न दई कछु बाईं।
राघो कहै गुरु के गुरु सों मिलियों मुघरो कियो राम के तांईं॥१०७३

पृष्ठ २४१ प० ११ के बाद—

दादूदयालजी के शिष्यों के भजन-स्थानों का निरूपण उदाहरण

मनहर दादूजी दयाल पाट गरीब मसकीन ठाठ
छन्द सुमसबाई निराट निराणे विराज हो।
बखनों संकर पाक बसो चांदो प्राग टाक
बडो उ गोपाल ताक गुरुद्वारे राम हो।
सांगानेर रज्जब सु, देवल दयालदास
चडसी करेमवंसी धरम को धाम हो।
ईडवे दूधणदास तेजानन्द जोधपुर
मोहन सु भजनीक आसोप निवास हो॥१०९८
गूलर में माधोदास बिलाद में हरिसिंह,
जनदास संग्रामटि कियो तन काम हो।
बिहाणी प्रयागदास डीडवाणे है प्रसिद्ध
सुन्दरदास बूसर सु फतेपुर गामही।
बनवारी हरदास रतिये चांगल मधि
साधूराम मांडोठी में नीके मिल धामही।
सुन्दर प्रल्हाददास घाटडे सु छीड मधि
पूरब चतुरभुज रामपुर बारामही॥१०९९
नराणदास मांगल्यो सु डांग मांही इकलोद
रणत-भवरगढ़, चरणदास जानिए।
हाडोती गमायचा में माधूजी मगन भये
जगोजी भडोंच मधि प्रभाधारी मानिये।
लालदास नायक सु पीरान पटणदास
फोफले मेवाड़ मांही टीलोजी प्रमानिए।

सादा पर्मानन्द इंदोर वली मे रहे जपि,
जैमल चौहान भले बोलि हरि गानिये ॥११००
जैमल जोगी कछाहा वनमाली चोकन्यौ सु,
साभर भजन करि यो वितान तान तानियो।
मोहन दफ्तरी सु मारोठ चिताई भलै,
रघुनाथ मेडते सु, भाव करि आनियो।
कालेडेहरे चत्रदास, टीकमदास नाँगले मे,
झोटवाडैं झाझू वाझू, लघु गोपाल घानियो।
आम्बावति जमनाथ, राहौरी जनगोपाल,
बारै हजारी सतदास चाँवण्डे लुभानियो ॥११०१
आधी मे गरीरबदास, भानुगढ माधव के,
मोहन मेवाडा जोग, साधन सो रहे हैं।
टेटडे मे नागर-निजाम हू ,भजन कियो,
दास जगजोवन सुदचो, साहरि लहे हैं।
मोह दरियाई सु, समिधी मधि नागर-चाल,
बोकडास सत जु, हिंगोल गिरि भए हैं।
चैनराम काणोता मे, गुदेर कपिल मुनि,
श्यामदास झालाणा मे, चोडके मे ठये हैं ॥११०२
सौक्या लाखा नरहर, अलूदे भजन कर,
म्हाजन खण्डेलवाल, दादू गुरू गहे हैं।
पूरणदास ताराचन्द, म्हाजन मेहरवाल,
आधी मे भगति करि, काम क्रोध दहे है।
रामदास राणी बाई, झाजल्या प्रगट भये,
म्हाजन डिंगायच सु, जाति वोल सहे हैं।
बावनहि थाभा अरु, बावन महन्त ग्राम,
दादूपन्थो चतरदास, सुनी जैसें कहे हैं ॥११०३
इति दादू सम्प्रदाय मध्ये भक्तवर्णन समाप्त ॥

पृ० २०६ प० ४४४ के बाद—

अथ पुनि समुदाय-भक्त वर्णन

अरेल यम हरि सो रत हरिदास, पठाण भाण भयो भक्ति को।
घनि माघो मुगल महन्त, गह्यो मत मुक्ति को।

सोधो नांही रामरेप प्रीति सेती पूज्यो भेप,
राघो कहै रामजी निबाहैंगे व्रत साध को ॥१०७२

छप्पै कलिकाल में मिहास भये प्रहलाद मिले प्रहलाद की नांई।
उदार अपार दया सनमान, इसी विधि सो रिझिए जिन साँई।
सील सन्तोष निर्दोष निरम्मल सन्तन सों न दई कहु थाई।
राघो कहै गुरु के गुरु सों मिलियो मुजरो कियो राम के तांई ॥१०७३

पृष्ठ २४१ प० ५३१ के बाद—

दादूदयालजी के शिष्यों के भजन-स्थानों का निरूपण उदाहरण

मनहर दादूजी दयाल पाट गरीब मसकीन ठाठ
छन्द जुगलबाई निराट निराणें विराज ही।
बखनों सकर पाक जसो बांदो प्राग टाक
बडो उ गोपाल ताक गुरुद्वारे राज ही।
सांगानेर रज्जब पु देवल दयालदास
घड़सी कडेलबंधी धरम की पाज ही।
ईडबे पूजणदास तेजानन्द जोधपुर,
मोहन सु भजनीक आसोप निवाज ही ॥१०९८
गूलर में माधोदास बिदाद में हरिसिंह
चत्रदास सग्रावटि कियो तन काम ही।
विहाणी प्रयागदास डीडवाणें है प्रसिद्ध
सुन्दरदास धूसर सु फतेपुर गाजही।
बनवारी हरदास, रतिये जंगल मधि
गापुराम मांडाठ में मीरे नित छाजही।
सुन्दर प्रह्लाददास पाटट सु छौंड मधि
पूरन चतुरभुज रामपुर बाराजही ॥१०९९
नरायणदास मांगल्या सु डांग मांही टसलोन
स्याम में रगड, परमानन्द जानिए।
टहोली गंगापथा में सागूजी मगन भव
जगाजी भडाण मधि प्रभापारी मानिये।
मामदास मामर सु घाराल घटसाग
पोटो मेवाड़ मांही दीमोटो प्रमानिए।

पृ० २३१, प० ४६१ के बाद—

कडवा तजत किराट को, गई अप्सरा वरनकू ॥
भक्ति करत इक भूप, सही कसणी अति भारी।
तव भेटे भगवान, आप त्रिभुवन-धारी।
नारी पलटि नर भयो, सीत परसादी पाई।
भाड भगत प्रतिछ नृपत, पूज्यो निरताई।
कवर कठारा की कथा, जन राघौ कही जग-तिरन को।
कडवा तजट किराट को, गई अप्सरा वरनकू ॥१२५१

खरहंत को वर्णन

सत-सगति परताप ते, निकसि गयो सब खोट।
घुनहो तोरी घान कै, आयो हरि की वोट ॥

अत्यज एक अन्तर मही, धुनि घुनिही हिरदै धरी ॥
दुनी देख वेहाल, काल को वहुत पसारो।
लुक्यो धाम के माहि, मूदि पग घर को द्वारो।
[illegible]म्वानेरी विप्र, तास ने मोठ पठाई।
[illegible] सैन, भक्त मेरो वह भाई।
धनि धनि रामजी, खरहन्त की रक्षा करो।
एक अन्तर मही. धुनि घुनिही हिरदै धरी ॥१२५२

[illegible] घर वस्तु बहू, खरहन्त अपना खोठ।
घी घणा, लिख्या भाग मे मोठ ॥

अन्तज कुल अवतार कहूर पति परहरयो।
भक्तवछल रविपाल काल भ्रम परहरयो।
जन राघौ पट भृतु, ब्याल अजपा जापर्यो।
निधि दिन गोष्टी ज्ञान मापमों मापर्यो ॥११२२

पृ० २०६ प० ४४५ के बाद—

निपटजी का वर्णन

निपट कपट सब छाडि कर, एक अलख्खित उर धरे ॥
उत्तम कविसो ऐन काव्य सब के मन भाव।
मनहर छन्दव छप्पै मूलणा खूब सुनावै।
ज्ञानी अति गलितान ब्रह्म अद्वैतहि गायो।
साखी वे चाणक मरम गहि अमर उडायो।
आप निरंजन की तहाँ जिते कवित राघौ करे।
निपट कपट सब छाडि करि एक निरंजन उर धरे ॥११२४

पृ० २१८ प० ४६४ के बाद—

करमैती कर्म न मग्यो साहा पती पीव वहू।
गृह ते निकसि भागि करक को मन्दिर कीन्हो।
तीन रैन तहाँ वसी बहुरि मारग पथ लीन्हो।
ब्रज भूमि में जाय महा ऊँचे स्वर रोयै।
लोक कुटुम्ब सब त्याग पंथ हरिजी को जोवै।
जन राघौ हरिजी मिले सुख प्रगट्यो दुख गयो वहू।
करमैती कर्म न मग्यो साहा पैलो मोह दहू ॥११८६

पृ० २३० मू प ४८१ के बाद—

बलीजी का वर्णन

हुकुम हसम घर माल तजि बलिराम उर मुष कियो ॥
भगी नाम सों प्रीति रीति औरे सब छाडी।
पिया ब्रह्म रस नीर माल धर्म छाडि र नाडी।
गयो पातासा पासि ज्ञान बैराग दिपाए।
दोऊ करम भोग पाव दाऊ मुकताए।
राघौ भक्ति करी इसी श्रवण सुनत उमग्यो हियो।
हुकुम हसम घर माल तजि बलिराम उर मुष कियो ॥१२४१

पृ० २३१, प० ४६१ के बाद—

कडवा तजत किराट को, गई अप्सरा वरनकू ॥
भक्ति करत इक भूप, सही कसरणी अति भारी।
तब भेटे भगवान, आप त्रिभुवन-धारी।
नारी पलटि नर भयो, सीत परसादी पाई।
भाड भगत प्रतिछ नृपत, पूज्यो निरताई।
कवर कठारा की कथा, जन राघौ कही जग-तिरन को।
कडवा तजट किराट को, गई अप्सरा वरनकू ॥१२५१

खरहंत को वर्णन

साखी सत-सगति परताप ते, निकसि गयो सब खोट।
घुनहो तोरी धान कै, आयो हरि की वोट ॥

छप्पय छंद अत्यज एक अन्तर मही, धुनि धुनिही हिरदै धरी ॥
दुनी देख वेहाल, काल को बहुत पसारो।
लुक्यो धाम के माहि, मूदि पण घर को द्वारो।
आम्बानेरी विप्र, तास ने मोठ पठाई।
दईरामजी सैन, भक्त मेरो वह भाई।
राघौ धनि धनि रामजी, खरहन्त की रक्षा करो।
अत्यज एक अन्तर मही धुनि धुनिहो हिरदै धरी ॥१२५२

दोहा साहिब के घर वस्तु बहू, खरहन्त अपना खोठ।
गेहू चावल घी घणा, लिख्या भाग मे मोठ ॥

पृ० २३३, प० ४६८ के बाद—

टूटै व्रत आकाश, कौन करता विन जोरे।
परमेश्वर पति राखि, होह परजा कै वोरे।
वूडत बाजी राखि, विधाता चित्र धिनाणो।
चौरासी लक्ष जोनि, पूरि सब को अन-पाणी।
रघवो प्रणवत रामजी, दृष्टि न कीज्यो कहर की।
जतो सती को पण रहै, करि वर्षा एक पहर की ॥१२६०

पृ० २४६, प० ५५५ के बाद—

अनन्यशरणता

मनहर छन्द

दादू को सेवक हूं दादूजी सहाय मेरे
दादूजी को ध्यान धरूं दादू मेरे पक्ष है।
दादूजी रिझाऊं नित नाम लेऊं दादूजी को,
दादू-गुन गाऊं बको दादूजी सों पक्ष हैं।
दादूजी सों नातो रसनातो रहूं दादूजी सों
दादूजी अधार मेरे दादू धन मन है।
कहै दादूदास मोहि भरोसो एक दादूजी को
दादूजी सों काम दादू अघ के हरन है ॥१२८०

इति राघौदासजी कृत मूल भक्तमाल सम्पूर्ण ॥

——

परिशिष्ट २

दादूशिष्य जग्गाजी रचित

भक्तमाल

(दादूपन्थी सम्प्रदाय की प्राचीन व संक्षिप्त भक्तमाल)

चौपाई ढाढियो हरि सन्तन केरो। निसदिन जस करौ मे चेरौ ॥
प्रथमे गुरु दादू मैं जाच्या। दिया राम धन दुख सब वाच्या ॥१
चन्द सूर धरती असमाना। इनहू कह्यौ रामको ग्याना ॥
एक पवन अरु दूजा पानी। तेज तत्त कह्यौ राम वखानी ॥२
ब्रह्मा विष्णु महेश हनुवत भाई। इनहू हरि की सन्धि वताई ॥
गोरष भरतरी गोपीचन्द। इनहू कह्यौ भजौ गोविन्द ॥३
सन्त कणेरी चरपट हाली। प्रिथीनाथ कह्यौ हरि मार्ग चाली ॥
अजैपाल नेमीनाथ जलध्री कन्हीपाव। इनहू कह्यौ भज समरथ-राव ॥४
धूधलीमल कथड भडगी विप्रानाथ। इनहू कह्यौ हरि देवे हाथ ॥
नागार्जुन बालनाथ चौरगी मीडकीपाव। इनहू कह्यौ भज समरथ-राव ॥५
सिद्ध गरीबदेव लहर ताली। चुणकर कह्यौ लाय उनमनी ताली ॥
गणेश जडभरथ शकर सिद्ध घोडाचोली। इनहू कह्यौ राम लै रोली ॥६
आजू-वाजू सुकल हँस ताविया भाई। इनहू कहयौ गोविन्द गुण गाई ॥
वगदाल मलोमाच सिंगी रिष अगस्त। इनहू कहयौ राम भज वस्त ॥७
रिषिदेव कदरज हस्तामल व्यास। इनहू कहयौ भज सासँ-सास ॥
ऋषि वशिष्ठ जमदग्नि पारासर मुचकदा। इनहू कह्यौ भज हरिचदा ॥८
गर्ग उत्तानपाद वामदेव विश्वमात्र भाई। इनहू कहयो साची राम सगाई ॥
भृगी अगिरा कपिल दुरालभा। इनहू कहयौ हरि भज सुलभा ॥९
दुरवासा मार्कंडेय मत्तन नासाग्रेह। इनहू कहयौ हरि भज प्रेह ॥
अष्टावक्र पुलिस्त पुलह गगेव। इनहू कहयौ करो हरि-सेव ॥१०
सुभर च्यवन कुभज गजानद। इनहू कहयौ हरि भज आनद ॥
पहुपाल्या अदे कुभ मुजजा भगनो। इनहू कहयो राम भज घनो ॥११

शांडिल्य कुरखजा जाजवालिवय श्रया। इनहू कह्यो राम भज नया ॥
धासजोति दगजोति सहलजोति गालवरिपि। इनहू कह्यो राम रस चपि ॥१२
मांडव्य पिपसाद उद्दालक नाराकेस। इनहू कह्यो करि हरि सौं हेत ॥
कर भमन नारद भजुन सरस्वती। इनहू कह्यो राम भज पती ॥१३
सनक सनंदन समतकुमार। इनहू कह्यो भज राम संबार ॥
कामाहरि भतरिप प्रबुद्धा। इनहू कह्यो भज समरथ शुद्धा ॥१४
पहुपाल्या मर्द दमसा चमासे। इनहू कह्यो राम हरि रमासे ॥
अबाइम रसूल वमेस वहायदी मुल्ला। इनहू कही मल्ला की गल्ला ॥१५
फरीद हाफिज ईसा मूसा। इनहू कह्यो मसा तोहि सुसा ॥
बाज वाजिद बिसन समन सहबाज। इनहू कह्यो मल्ला की भावाज ॥१६
वमस का बादशाह धल बूढा मनसूर। इनहू कह्यो रस मसा हजूर ॥
मलहदाद मनसहक खान। इनहू दिया नाम निसान ॥१७
काजी महमूद कहा पठाना। इनहू दिया नांव निज थाना ॥
कायाम्री संजावती सविया मम्दाससाह। इनहू कह्यो भज समरथ साह ॥१८
एता सिद्ध ऋषीसुर तुरकी संत कवियो गावै। भौर भगतनि पै मांग पावै ॥
ध्रू प्रहलाद शेष सुखदेवा। सत्यराम की कहि मोहि सेवा ॥१९
नामदेव तिलोचन कबीर पूरी स्वामी। इनहू कह्यो भज अन्तरयामी ॥
रामानन्द सुखा श्रीरंगा। नानक कह्यो रहहु हरि-संगा ॥२०
पीपा सोंझा धना रैदासा। राम राम की बधाई भासा ॥
सुकाम सेठ जनक रांका बांका। इनहू दिया हरिनाम का नाका ॥२१
पदमनाभ माधाकू नरसी। सो म कह्यो तोको हरि दरसी ॥
उमपति सुनपति हस परमहंस। इनहू कह्यो राम भज मंस ॥२२
कोसल बेणी नापा हरिदास। इनहू कह्यो हरि तेरे पास ॥
भगद भुवन परस प्रस्सेन। ए भी जड्या रामधन देन ॥२३
सूर परमानन्द माधो जगनाथी। इनहू कही मोहि राम की साथि ॥
छीतर महबस सीहा भाई। इनहू मोको दई दिखाई ॥२४
कीता सन्ता चत्रभुज कान्हा। प्रगट राम कह्यो नहिं छाना ॥
दत्त दिगम्बर भौघड नरसिंह भारथी। इनहू बात कही इक छुरी ॥२५
ग्यांन तिलोक मति सुन्दर मीत। मुकुंद कह्यो रहु हरि की सीत ॥
विचित्रा बेगिमा हासरा मव हाथी। इनहू कह्यो राम है साथी ॥२६

दीप कील्ह अरु वेलियानन्द । भर्तृ कह्यौ भजि राम गोविन्द ।।
घाटम द्योगू सूरिया आसानन्दा । इनहू कह्यौ राम भजि गदा ।।२७
सधना सावल मुवा अर गालिम । इनहू कह्यौ राम भजि खालिम ।।
तापिया लोदिया सायर अरु नीर । इनहू कह्यौ करि हरि सू सीर ।।२८
वोहिथ पैवत हरिचन्द ऋषीकेश । इनहू दियो राम उपदेश ।।
डूगर विसालप परमानन्द वीठल । इनहू कह्यौ राम भज मीठल ।।२९
कान्हैयो नाइक वैकुण्ठ-वन । सारी कह्यौ हो हरि को जन ।।
लाडण वालमीक भैरू कमाल । इनहू कह्यौ हरि मारग हाल ।।३०
हातम छीहल पदम धूधली । इनहू कह्यौ भज राम भली ।।
जैदेव कृष्ण राम लिछमण भाई । इनहू हरि-मारग दियो वताई ।।३१
सीता माता मैंणावती बाई । पारवती अरु ध्रू की माई ।।
सरिया कुभारी अनुसूया अजनो जाणी । इनहू कहो राम की वाणी ।।३२
इतना सन्त पुरातन जगियो हिरदै राखै । गुरु दादू का सेवग भाखै ।।
गुरु दादूका सेवग वखाण । गरीबदास मसकीना जाण ।।३३
नानी माता दोन्यु बाई । इनहू कह्यौ राम भज भाई ।।
वावो लोदी माता वसी । हवा साधु कह्यौ हरि-मारग घसी ।।३४
सतदास माधो मागौ रामदास । इनहू कह्यौ हरि तेरे पास ।।
चान्दा टीला दामोदरदास । इनहूं कह्यौ रहु हरि के वास ।।३५
दयालदास वडो गोपाल सतदास । इनहू कहयौ वन हरि के दास ।।
जगजीवन जगदीश स्याम पहलादू । इनहू कह्यौ भजो हरि साधू ।।३६
वखनो जैमल जनगोपाल चतुर्भुज वणजारो । इनहू कह्यौ भजो साहब सारो ।।
नारायण प्रागदास भगवान मारु सन्तदास । इनहू कहयौ करो हरि के वास ।।३७
मोहन दफतरी मोहन मेवाडो केशा राघो । इनहू कह्यौ भजो हरि आघो ।।
रज्जव दूजण घडसी ठाकुर । इनहू कह्यौ होहु राम को चाकर ।।३८
सादो परमानद रीकू लालदास नाइक । इनहू कह्यौ भजो हरि लाइक ।।
जैमल पूरण गरीव साधु साध । इनहू कह्यौ भजि हरि-अगाध ।।३९
चतरो भगवान हरिसिंह भवना । इनहू कह्यौ होहु हरि-जना ।।
दयाल मावो जोगी खाटरयो चत्रददास । इनहू कह्यौ भज हरि अवास ।।४०
प्रागदास धीरो जगनाथ चतरो मर्दनो वीरो । इनहू कह्यौ भजो हरि हीरो ।।
लघु गोपाल रामदास मोहन नरसिह लावालो । इनहू कह्यौ भजि राम राले आलो।।४१

तेजानन्द हरिदास कृष्ण गोविन्द झांझरि वासो। इनहू कह्यो जगा राम सभालो ॥
डूंगो भगवान माधो सन्तदास। इनहू कह्यो करो हरि की आस ॥४२
वनमाली चैतन्य ब्रह्मा अरु मोनी। इनहू कह्यो भजो हरि क्यों सी ?
गंगदास चरणदास साधू अर मोहन। इनहू कह्यो राम भजि सोहन ॥४३
हरिदास कपिल नारायण टोडू माली। इनहू कह्यो जगाराम सभाली ॥
बधू चेतन नरहरि माधा कासी। इनहू कह्यो भजो एक विनांणी ॥४४
वाजिन्द परमानन्द निजाम नागर। इनहू कह्यो भजो हरि उजागर ॥
परसराम चतरो गोविन्द जंगी। इनहू कह्यो राम है संगी ॥४५
गजनीसा सांवल महमूद वाहिद। इनहू कह्यो राम रमि सोहिद ॥
पूरण चतरो लालदास नागो। केवल केसो झांझु हरि मांगो ॥४६
बीठल जसा अरु जगनाथ। इनहू कह्यो रहु हरि के साथ ॥
केसो चतरो निरंजनी सन्त्ता तोलो सरवंगी। इनहू कह्यो राम रंग रंगी ॥४७
ऊधो रामदास बूढ़ा वनमालो। इनहू कह्यो जगा राम संभालो ॥
बीन नारायण ठाकुर पांचो। इनहू कह्यो भज साहब सांचो ॥४८
नारायण दांतणियो जगनाथ गोपाल ऊधो। इनहू कह्यो राम भजि सूधो ॥
गरीबजन रामदास सारंगदास। इनहू कह्यो हरि हिरदै वास ॥४९
नारायण गोविन्द विठ दास मुरारी। इनहू कह्यो हरि भगति सारो ॥
दमणा माहून ऊदा राघा हरिदास टोको पाल्हा इनहू कह्यो राम भजि वाल्हा ॥५
ईसर केसो साहूकार बैरागी स्यामा जगा। इनहू कह्यो राम है सगा ॥
स्यामदास पूरबिया सांगा गांगा। इनहू कह्यो सै राम मैं पांगा ॥५१
सांगो पहुराज स्यामदास कमो। इनहू कह्यो राम भज भलो ॥
सुन्दरदास गोपाल भगवान देवो गुजराती साध। इनहू कह्यो भज हरि अगाध ॥५२
चरणदास माधो पचायण पूरा। इनहू कह्यो राम भज सूरा ॥
रामदास दामोदर नारायण नरसिंह पेमदास। इनहू कह्यो होहु हरि के दास ॥५३
ध्यानदास बामा लाला हरिदास जनी। इनहू कह्यो राम भज मंत्री ॥
जगदीश धन्नदास माधो साहिब मागी। इनहू कह्यो राम करे रलयासी ॥५४
चरणदास हेमो दामोदरस्याम धन। इनहू कह्यो होहु हरि को जन ॥
मालू माधो बैसोमाल। इनहू कह्यो भज हरि हर हाल ॥५५
चरणदास गुजराती बीरम बैगो रूपा। इनहू कह्यो राम भज बाला ॥

उतराधा सन्त वखाणों

दयालदास दामोदर माधो। इनहू कह्यौ सोध हरि लाधौ ।।५६
परमानन्द भगवान मनोहर जीता। इनहू कह्यौ राम भज रहो न रीता ।।
गोपाल मनोहर वनमाली मीठा। इनहू कह्यौ राम तोहे दीठा ।।५७
हरिदास दमोदर परमानन्द दूदा। इनहू कह्यौ राम भज सूदा ।।
हरिदास कलाल दयालदास काणोतेवालौ। इनहू कह्यौ राम भज रलि पालो ।।५८
सतोषो राघो कान्हड हरिदासा। इनहू कह्यौ राम भजि खासा ।।
राघो भगवान गोरा तो मोहन धनावसी। इनहू कह्यौ हरि के दर वसी ।।५९
जन जलाल खेमदास राघो माली। इनहू कह्यौ राम करै रखवाली ।।
ऊधोदास जोधा सतोषदास पिनारो। हरीदास मूडती-वालो ।।६०
विरही राघो राम लखी नारो। इनहू कह्यौ गहि राम को डालो ।।
तुलसी गोविंद दामोदर ईसर। इनहू कह्यौ राम जनि वीसर ।।६१
पूरण ईसर गोपाल रैदास वशी। इनहू कह्यौ हरि के दर वसी ।।
लाखो नरहरि कल्याण केसो। इनहू दियो राम उपदेशो ।।६२
टोडर खेमदास माधो नेमा। इनहू कह्यौ रहु हरि की सीमा ।।
राणी रमा जमना अरु गगा। इनहू कह्यौ राम भज चगा ।।६३
लाडा भागा सतोषा राणी। इनहू कह्यौ भज एक विनाणी ।।
रुकमणी रतनी सीता जसोदा। इनहू कह्यौ करि राम का सौदा ।।६४

स्वामी दादू के कीरतनिया वखाणों

स्वामी दादू का कीरतनिया वखाणो। रामदास हरीदास धर्मदास बावो बूढौ वानो ।।
रामदास नाथो राघो खेम गोपाल। इनहू कह्यौ हरि वडे दयाल ।।६५
हरिदास लखमी विसनदास कल्याण। तुलछा नेता स्याम सुजाण ।।
हुये होहिंगे अब ही साधा। तिनकौ खोजय हु मारग लाधा ।।६६
अगणित साध अगोचर वाणी। कृपा करौ मोहिं अपणौ जाणी ।।
गुरु प्रसादे या बुधि आई। सकल साध मेरे वाप र माई ।।६७
गुरु गुरु-भाई सब मे वूझ्या। तिनके ग्यान परम-पद सूझ्या ।।
जगि ये साध सिध सुण्या ते जाच्या। दियो रामधन दुख सव वाच्या ।।६८
जनम-जनम का टोटा भाग्या। अखै भडार विलसने लाग्या ।।
भक्तिमाल सुनै अरु गावे। योनि-सकट वहुरि न आवै ।।६९

।। इति जग्गाजी की भक्तिमाल सम्पूर्ण ।।

परिशिष्ट २

घमजी रचित

भक्तमाल

दोहा

सीस नाय चरनन करूं गुरु गोविन्द उर आनि।
सकल संत की ओर कर कहु सु नवां बखानि ॥१
प्रसिद्ध भय जेते जपूं, छिपे सु रहे अनन्त।
अनक्षमियां सो हेत मति गुपत कह्या सोई सन्त ॥२
ब्रह्मा विष्णु महेश शेष सनकादिक नारद।
मारकंड वगदासक मयूरखी गर्ग सुधारद ॥३
भजमार्मद विकेसनि प्रवलवभाण धधारु।
नंद सुनंद प्रवाम कर्वे देखे दीदारु ॥४
चंड प्रचंड पुनीत मुतो पति निरमस अधू।
धीस सुधीस सु सैन भजे हरि लागी रंगू ॥५
भद्र सुभद्र हर पर पीव, कमम कमलाक्षि प्रभाक।
सही सरबै सुख सू सीव ॥६
सगर भगर सत्यव्रत प्रीति अभिमन्सर परकासू।
सिबरी सुमति धना धरम में कीया वासू ॥७
रवि अम्बारक ऐसि बलि सु अरपियो सरीर।
रुकमांगद हरिचन्द व्रत मांही मति धीर ॥८
धरीहन्त निज शेष भक्ति भागीरथ पाई।
बालमीक मिथलेश भरत कै राम सहाई ॥९
गंभीर गज धनपर्ण सुपारस पहुचाणी।
बोधा भीम दधीचि स्मृति मगीत बखांणी ॥१०
तामरध्वज परचीन्ह परीक्षत पाई परखू।
प्रणमृत प्रियव्रत भजै स्वयंभू मनु हरखू ॥११
धाह पृथु भीषम मनु भूप सुग्रीव सुदामा विप्र अनूप।
अगस्त पुलस्त्य कश्यप ध्यांन मन्दालसा प्रचेता वाम ॥१२

विरहु वालमीक स सुमरै एक। चन्द्रहास चित्रकेतु अनेक।
सरभऋषि कर्दम भृगु अगिराई। लउचम अत्रि करहे ल्यौ लाई ॥१३
विश्वामित्र माधवाचार्य ध्यावै। पदमनाभ परमातम गावै।
पुलह च्यवन जस कहै वखानी। लीन भये गौतम से ग्यानी ॥१४
सनक सनदन सन्त कवारू। सनातन पावै नहि पारू।
कवि हरि अन्तरिक्ष हरि गावै। प्रबुद्ध पुहपला पार न पावै ॥१५
अविर होत दुर्मिल हरिदासू। चम स रहै क्रमाजन पासू।
सनकादिक नारद भये पारू। नौ जोगेश्वर सुमिरे सारू ॥१६
कदरज हस्तामल निज सतू। अष्टावक्र भजै भगवन्तू।
जै विजै माडवी भृगु अगराई। अजामेल गणिका गति पाई ॥१७
अनुसूया अजनी सु धावै। सहस अठ्यासी मुनि हरि गावै।
कोटि तेतीसूं कहे सु देऊ। इन्द्रदेवनि दुर्वासा सेऊ ॥१८
गवरां श्याम कार्तिक गनेसू। लियो कपिल कर निज उपदेसू।
धू सुनीति लिछमन सुख दैऊ। सन्त शौनिक गुरु गगेऊ ॥१९
गण गन्धर्प देहुति सुमाई। जप निज नाम सु शुन्य समाई।
धमराय जयदेव वखाणी। जनक भये निज सन्त विनाणी ॥२०
ऊधो अक्रूर प्रहलाद हणवतु। विल्वमगल वशिष्ट जपै अनन्तू।
अलखनाथ पराशर दिलीप अम्बरीष। समकि सीगी गुरु की सीख ॥२१
जड-भरथ रघु गुणदत्त गुंसाई। मछिदर गोरख लगै सु नाई।
बालनाथ औघड सावरानन्दू। कणेरी चौरगी जपै गोविन्दू ॥२२
सुध-बुध भीन र भैरूं रु जोगी। काकभडी कोरट अमृत भोगी।
टिटणी कपाली खड नाम सारू। वीरू पाख वेलिया भई करारू ॥२३
नित्यनाथ निरजन विदु सु नाथू। सिद्धपाद सदानद कियो मन हाथू।
भून्नी गौड भालुकी तारे। निनाणवै कोड नृप पार उतारे ॥२४
सतीनाथ भर्थरी करै अनदा। श्री मछिदर चर्पट वन्दा।
सिध गरीबा वालगु नाई। देवल सुरति निरन्तर लाई ॥२५
नागार्जुन अरु घोडाचोली। अजैपाल अन्तर हरि बोली।
चुणाकर गोपीचन्द मैंणवती माता। जलन्द्रीपाव धूधली जपै हो विमाता ॥२६
पूजपाद अरु हालीपाऊ। कान्हीपाव सिधा सौ भाऊ।
नागदेव जोगी जप जप जागै। माडकी पाव सु भये सभागे ॥२७

मोहनदास भजै हरि प्यारो। सिखन साखा सबसौं न्यारो।
रहै मासोप महा ल्यो लाई। गुरु दादू की बन्ध्यो सगाई ॥५८
मोहनदास दफ्तरी सन्तू। सदगति भये सु भज भगवन्तू।
चत्रदास सिख भगति प्रकासू। झांझू कै सोहे निज वासू ॥५९
देवल दमा रही भरपूरी। सन्त विराजै जीवन मूरी।
तहाँ सुख को सागर स्यामदासू। प्रेम प्रीति पंजर परकासू ॥६०
गलित गरीबी वाहक दीन। रहै अहोनिसि हरि सू लीन।
स्वामी दादू को मत मारू। छिन छिन देखै हरि सुख सारू ॥६१
कलो दिसाबर सांगौ सन्तू। सिख पहराज सही दिढमन्तू।
भागा कर्मां के हरि रंगू। साध मग सूं पलट्यो भ्रमू ॥६२
पीपा-वणी सन्त पिरागू। प्रगट भये सु पूरण भागू।
हिरदे विराजे जीमदयालू। रहै सोह बाहू गोपालू ॥६३
बन सु दयाल मना को सांगो। हरि सन्तन में भीनो भागो।
अहनिसि सुरत निरन्तर जोरी। सकर बसो उनमनी डोरी ॥६४
पंडित कपिल और जगनाथू। निरपख्यो सीस गह्यो हरि हाथू।
सिख सुन्दर गोपाल दयालू। सतगुरु काटे सकल जंजालू ॥६५
सुन्दरदास सन्त निज पादू। सिख सुघरे पीपा पहलादू।
केसो चतरा कै नहिं मापी। पोवा सिख हरिदास र हापी ॥६६
हरीदास हिरदै हरि हीरू। सिख नारायण निर्मल सरीरू।
पोपा वणी पूरण ग्यान। परम-जोति में धरे सु ध्यान ॥६७
ऊधौ माधौ रामदास हेमू। भर देवल को बालक पेमू।
स्यामदास झालाणी साधू। करै सु बदगति को आराधू ॥६८
प्रागदास बिहाणी सन्त सुजाण। दादू किरपा बजे नीसाण।
चरणदास सिख बन्ध्यो नारायण। रामदास भगवन्त परायण ॥६९
सतदास परमानंद सुखनिवासू। बाबा निरभै गोबिन्ददासू।
गोपाल दामोदर गुरु सिख लीन। जैसो मनोहर मधुकर दीन ॥७०
मोहन मवाडो मन धीरू। संगि जगनाथ भापी भति धीरू।
गरीबजन गोबिन्द गुरु ग्यान। हरीदास कै हरि को ध्यान ॥७१
निर्मल सन्त निजामर नामर। डोडै भये ग्यान के आगर।
ऊधो चतुर्भुज अर माधो काणी। रहयो कहै राम की बाणी ॥७२

सन्तदास अरु तेजा नन्दू। चरणदास नित करै अनन्दू।
माधौदास रु रुकमाबाई। रूपानन्द के राम सहाई ॥७३
माधौ देव देवो गुजराती। आतम रहै परम रग राती।
देवेदर अरु मौनी कालो। श्यामदास मदाऊ वालौ ॥७४
ठाकुर मोहन घडसी सन्तू। पावन भये सु भज भगवन्तू।
मगन भयो हरि को रग राच्यो। स्वामी दादू आगै नाच्यौ ॥७५
चतरो थलेचो रामाबाई। सिख वीठल जीवौ सुखदाई।
रैदास-वशी दयाल सुधारे। नामा-वसी टीकू सारे ॥७६
माधौ सन्तदास सिख गोपाल। हिरदे विराजै दीनदयाल।
पूरणदास सुमति को धीरू। सिख चतरो साहिबखा राघौ हीरू ॥७७
चत्रौ भगवान भज करै विलासू। सुमर वनमाली हरिदासू।
साधू कियो शुद्ध शरीरु। सतगुरु कृपा दई हरि धीरु ॥७८
सन्तदास सिख को अति सेवा। किये प्रशन्न परम गुरुदेवा।
मोहनदास महा वैरागी। रहै टहरडै हरि ल्यौ लागी ॥७९
सादो परमानन्द भगवन्त भज जाग्या। माधो खेम सु गुरु की आग्या।
हरिसिंह सन्त-शिरोमणि सारु। सिख सपूत मोहन हुशियारु ॥८०
धनावसी चत्रदास सूरो। हरि मारग मे निविह्यौ पूरो।
जगदीशदास बावो भगवानू। परम जोति मे प्राण समानू ॥८१
देदो रहै धणी सू दीन। गरीबदास आगै लै लीन।
जगन्नाथ बाबा जपि जपि जागे। वणिक भगवान ब्रह्म कै आगे ॥८२
गिरधरलाल गवार हरि साथू। नापा-वसी तहाँ जगनाथू।
सीधू सन्तदास वारा-हजारी। जैमल माधौ की बलिहारी ॥८३
गोविन्ददास वैद्य मऊ थानू। सिख सपूत माधौ भगवानू।
जैदेव-वशी गोविन्द द न। तिलोचन वसी सुन्दर लीन ॥८४
साभर भगवान राघौ जपियो।
सैर परै चोखा की साला। तहाँ रहे दादू दीनदयाला ॥८५
जैमल को सिख सारगदासू। सिख नारायण भक्ति प्रकासू।
पोता सिख सो लालपियारो। सनमुख सदा सन्त निज सारौ ॥८६
हरिसू हित लपट्यो जगनाथू। आनदास सिख विचरै साथू।
निर्गुण भोजन कियो न स्वादू। हिरदै न आन्यो वाद-विवादू ॥८७

मोहनदास भजै हरि प्यारो। सिखन साखा सबसौं न्यारो।
रहै धासोप ब्रह्म ज्यों भाई। गुरु दादू की बन्ध्यो सगाई ॥५८
मोहनदास दफ्तरी सन्तू। सदगति भये सु भज भगवन्तू।
चत्रदास सिख भगति प्रकासू। सांभू के सोहे निज दासू ॥५९
देवल दमा रह्यौ भरपूरी। सन्त विराजै जीवन मूरी।
तहाँ सुख को सागर दयालदासू। प्रेम प्रीति पंजर परकासू ॥६०
गलित गरीबी साइक दीन। रहै अहोनिसि हरि सूं लीन।
स्वामी दादू को मत मारू। छिन छिन देखै हरि सुख सारू ॥६१
कमो बिसाबर सांगी सन्तू। सिख पहराज सही विरमन्तू।
मागां कर्मां के हरि रंगू। साध सग सूं पलट्यौ अंगू ॥६२
पीपा-वधी सन्त पिरागू। प्रगट भये सु पूरण भागू।
हिरदे बिराजै दीनदयालू। रहै सोह बाहू गोपालू ॥६३
वन सु दयाल धना को सांगो। हरि सन्तन में सीधा मांगो।
अहनिसि सुरत निरंतर जारी। शंकर जसो उनमना डोरी ॥६४
पंडित कपिल और जगनाथू। निरखह्यो सीस गह्यो हरि हाथू।
सिख सुन्दर गोपाल दयालू। सतगुरु काटे सकल जंजालू ॥६५
सुन्दरदास सन्त मिज धादू। सिख सुघरे पीपा पहलादू।
केसो चतरा के नहिं आपो। पोता सिख हरिदास र छापो ॥६६
हरीदास हिरदै हरि हीरू। सिख नारायण निर्मल सरीरू।
पीपा वधी पूरण ग्यान। परम-जोति में धरे सु ध्यान ॥६७
ऊधी माधो रामदास हेमू। धर देवल को बालक पेमू।
श्यामदास अधलांणी साधू। धरे सु प्रवगति को आराधू ॥६८
प्रागदास बिहांणी सन्त सुजांण। दादू किरपा बचे भीसाण।
चरणदास सिग बन्यो नारायण। रामदास भगवन्त परायण ॥६९
सतदास परमानंद सुखनिवासू। बह्म निरन्तै गोविन्दासू।
गोपाल दामोदर गुरु सिर मीन। केसो मनोहर मधुकर दीन ॥७०
मोहन मेवाड़ो मन धीरू। संगि जगनाथ माधो मति धीरू।
गरीबजन गोविन्द गुरु ग्यान। हरीदास के हरि को ध्यान ॥७१
निर्मल सन्त निजामर मागर। बोर्डे भये ग्यान के आगर।
ऊधो चतुर्भुज पर माधो कांणी। रहयी बन्दै राम की बांणी ॥७२

सन्तदास अरु तेजा नन्दू। चरणदास नित करै अनन्दू।
माधौदास रु रुकमाबाई। रूपानन्द के राम महाई ॥७३
माधौ देव देवो गुजराती। आतम रहै परम रग राती।
देवेदर अरु मौनी कालो। श्यामदास मदाऊ वालौ ॥७४
ठाकुर मोहन घडसी सन्तू। पावन भये सु भज भगवन्तू।
मगन भयो हरि को रग राच्यो। स्वामी दादू आगै नाच्यौ ॥७५
चतरो थलेचो रामाबाई। सिख बीठल जीवौ सुखदाई।
रैदास-वशी दयाल सुधारे। नामा-वसी टीकू सारे ॥७६
माधौ सन्तदास सिख गोपाल। हिरदै विराजै दीनदयाल।
पूरणदास सुमति को धीरू। सिख चतरो साहिबखा राघौ हीरू ॥७७
चत्रौ भगवान भज करै विलासू। सुमर वनमाली हरिदासू।
साधू कियो शुद्ध शरीरु। सतगुरु कृपा दई हरि धीरु ॥७८
सन्तदास सिख को अति सेवा। किये प्रशन्न परम गुरुदेवा।
मोहनदास महा वैरागी। रहै टहरडै हरि ल्यौ लागी ॥७६
सादो परमानन्द भगवन्त भज जाग्या। माधो खेम सु गुरु की आग्या।
हरिसिंह सन्त-शिरोमणि सारु। सिख सपूत मोहन हुशियारु ॥८०
धनावसी चत्रदास सूरौ। हरि मारग मे निविह्यौ पूरो।
जगदीशदास वावो भगवानू। परम जोति मे प्राण समानू ॥८१
देदो रहै धणी सू दीन। गरीबदास आगै लै लीन।
जगन्नाथ वाबा जपि जपि जागे। वणिक भगवान ब्रह्म कै आगे ॥८२
गिरधरलाल गवार हरि साधू। नापा-वसी तहाँ जगनाथू।
सीधू सन्तदास बारा-हजारी। जैमल माधौ की बलिहारी ॥८३
गोविन्ददास वैद्य मऊ थानू। सिख सपूत माधौ भगवानू।
जैदेव-वशी गोविन्द द न। तिलोचन वसी सुन्दर लीन ॥८४
साभर भगवान राघौ जपियो।
सैर परै चोखा की साला। तहाँ रहे दादू दीनदयाला ॥८५
जैमल को सिख सारगदासू। सिख नारायण भक्ति प्रकासू।
पोता सिख सो लालपियारो। सनमुख सदा सन्त निज सारौ ॥८६
हरिसू हित लपट्यो जगनाथू। आनदास सिख विचरै साथू।
निर्गुण भोजन कियो न स्वादू। हिरदै न आन्यो वाद-विवादू ॥८७

गह्यो निरंजन को मत सारू। माया पच न लगी लगारू।
तजि प्रतिमा अविनाशी गायो। अन्तरयामी सूं मन लायो ॥८८
स्यामदास के सन्त प्रसंगू। निराकार को लागौ रंगू।
जप निज नाम सु भ्रम सुधारयो। साधो इष्ट सीस प धारयौ ॥८९
सिख ऊधो नवल सूजा मरू साम। रामदास जंगली को हरि सूं श्याम।
रामदास गोकली कोमल-बैन। निर्मल मूरति देख्यो मन ॥९०
माधो मोहन नारायण मदेरे। नाचो हरि को मारग हेरे।
पिराग रावत जमनाबाई। कुन्ती जसोदा सीस समाई ॥९१

॥ इति चैनजी की भक्तमाल सम्पूर्ण ॥

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

प्रकाशित ग्रन्थ

राजस्थानी और हिन्दी

		मूल्य
१	कान्हडदे प्रबन्ध, महाकवि पद्मनाभ विरचित, सम्पादक—प्रो० के० बी० व्यास, एम०ए०।	१२.२५
२.	क्यामखा-रासा, कविवर जान रचित सम्पादक—डॉ० दशरथ शर्मा और श्री अगरचन्द नाहटा।	४.७५
३	लावा-रासा, चारण कवियां गोपालदान विरचित सम्पादक—श्री महताबचन्द खारैड।	३ ७५
४.	बाँकीदासरी ख्यात, कविराजा बांकीदास रचित सम्पादक—श्री नरोत्तमदास स्वामी, एम०ए०, विद्यामहोदधि।	५ ५०
५	राजस्थानी साहित्य-संग्रह, भाग १ सम्पादक—श्री नरोत्तमदास स्वामी, एम०ए०, विद्यामहोदधि।	२ २५
६	राजस्थानी साहित्य संग्रह, भाग २ सम्पादक—श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम०ए०, साहित्यरत्न।	२ ७५
७	कवीन्द्र-कल्पलता, कवीन्द्राचार्य सरस्वती विरचित सम्पादिका—श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत।	२ ००
८	जुगल विलास, महाराज पृथ्वीसिंह कृत, सम्पादक—श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत।	१ ७५
९	भगतमाळ, ब्रह्मदास चारण कृत, सम्पादक—श्री उदैराजजी उज्ज्वल।	१ ७५
१०	राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर के हस्तलिखित ग्रंथों की सूची, भाग १।	७.५०
११.	राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची, भाग २।	१२ ००
१२	मुहता नैणसीरी ख्यात, भाग १, मुहता नैणसी कृत, सम्पा०—श्री बदरीप्रसाद	८ ५०
१३	,, ,, ,, ,, २, ,, ,, साकरिया	९ ५०
१४	,, ,, ,, ,, ३, ,, ,,	८.००
१५	रघुवरजसप्रकास, किसनाजी आढा कृत, सम्पादक—श्री सीताराम लाळस।	८ २५
१६	राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थसूची, भाग १, सम्पादक—पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्त्वाचार्य।	४ ५०
१७	राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थसूची, भाग २, सम्पादक—श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम०ए०, साहित्यरत्न।	२ ७५
१८	वीरवांण, ढाढ़ी बादर कृत सम्पा०—श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत।	४ ५०

गह्यो निरंजन को मत सारू। माया पक्ष न लगी लगारू।
तजि प्रतिमा अविनाशी गायो। अन्तरयामी सूं मन लायो ॥८८
स्यामदास के सन्त प्रसंगू। निराकार की लागो रंगू।
जप निज नाम सु जन्म सुधार्यो। लाग्यो इष्ट सीस प धार्यो ॥८९
खिल ऊधो नवल सूजा भक्त लाल। रामदास जगजी को हरि सूं ख्याल।
रामदास गोकुली कोमल-बैन। निर्मल मूरति देख्या नैन ॥९०
माधो मोहन नारायण नवेर। नाथो हरि का मारग हेरे।
पिराग रावत जमनाबाई। कुन्ती जसोदा सील समाई ॥९१

॥ इति चैनजी की भक्तमाल सम्पूर्ण ॥

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

प्रकाशित ग्रन्थ

राजस्थानी और हिन्दी

मूल्य

१ कान्हडदे प्रबन्ध, महाकवि पद्मनाभ विरचित, सम्पादक—प्रो० के० बी० व्यास, एम०ए०। १२.२५

२. क्यामखां-रासा, कविवर जान रचित सम्पादक—डॉ० दशरथ शर्मा और श्री अगरचन्द नाहटा। ४.७५

३ लावा-रासा, चारण कविया गोपालदान विरचित सम्पादक—श्री महतावचन्द खारैड। ३ ७५

४. बांकीदासरी ख्यात, कविराजा बांकीदास रचित सम्पादक—श्री नरोत्तमदास स्वामी, एम०ए०, विद्यामहोदधि। ५ ५०

५ राजस्थानी साहित्य-संग्रह, भाग १ सम्पादक—श्री नरोत्तमदास स्वामी, एम०ए०, विद्यामहोदधि। २ २५

६ राजस्थानी साहित्य संग्रह, भाग २ सम्पादक—श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम०ए०, साहित्यरत्न। २ ७५

७ कवीन्द्र-कल्पलता, कवीन्द्राचार्य सरस्वती विरचित सम्पादिका—श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत। २ ००

८ जुगल विलास, महाराज पृथ्वीसिंह कृत, सम्पादक—श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत। १ ७५

९ भगतमाळ, ब्रह्मदास चारण कृत, सम्पादक—श्री उदैराजजी उज्ज्वल। १ ७५

१० राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर के हस्तलिखित ग्रंथों की सूची, भाग १। ७ ५०

११. राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची, भाग २। १२ ००

१२ मुहता नैणसीरी ख्यात, भाग १, मुहता नैणसी कृत, सम्पा०—श्री बदरीप्रसाद साकरिया ८ ५०

१३ " " " " २, " " ९ ५०

१४ " " " " ३, " " ८.००

१५ रघुवरजसप्रकास, किसनाजी आढा कृत, सम्पादक—श्री सीताराम लाळस। ८ २५

१६ राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थसूची, भाग १, सम्पादक—पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्त्वाचार्य। ४ ५०

१७ राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थसूची, भाग २, सम्पादक—श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम०ए०, साहित्यरत्न। २ ७५

१८ वीरवांण, ढाढी बादर कृत सम्पा०—श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत। ४ ५०

१९. स्व. पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण ग्रन्थसंग्रह सूची
सम्पादक—श्री गोपालनारायण बहुरा एम॰ए॰ और श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी दीक्षित। ६.२५

२० सूरजप्रकास भाग १ कविया करणीदानजी कृत सम्पा॰—श्री सीताराम लाळस। ८.००

२१ „ „ २ „ „ „ ६.५०

२२ „ ३ „ „ ९.७५

२३ नेहतरंग रावराजा बुधसिंह हाडा कृत सम्पा॰—श्री रामप्रसाद दाधीच, एम॰ए॰। ४.००

२४ मत्स्यप्रदेश की हिन्दी साहित्य को देन (शोध प्रबन्ध)
डॉ॰ मोतीलाल गुप्त एम॰ए॰ पी-एच॰डी॰। ७.००

२५. राजस्थान में संस्कृत साहित्य की खोज एस॰ आर॰ भाण्डारकर
हिन्दी अनुवादक—श्री ब्रह्मदत्त त्रिवेदी एम॰ए॰ साहित्याचार्य काव्यतीर्थ। ३

२६ समदर्शी आचार्य हरिभद्र श्री सुखलालजी सिंघवी
हिन्दी अनुवादक—शान्तिलाल म॰ जैन एम॰ए॰ शास्त्राचार्य ३

२७ बुद्धि विलास बखतराम शाह कृत सम्पादक—श्री पद्मधर पाठक एम॰ए॰। ३.७५

२८. रुक्मिणी हरण सांयाजी झूला कृत
सम्पादक—श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया एम॰ए॰ साहित्यरत्न। ३.००

२९ सन्त कवि रज्जब : सम्प्रदाय और साहित्य (शोध प्रबन्ध) डॉ॰ व्रजलाल वर्मा ७.२५

३० भक्तमाल राघवदास कृत टीका—चतुरदास सम्पा॰—श्री अगरचन्दजी नाहटा। ९.७५

प्रेसों में छप रहे ग्रन्थ

राजस्थानी-हिन्दी

१ कोन्हडदे प्रबन्ध पदमनाभ कृत ... — (first line as printed:) खोग बन्धन पद्मणी चउपई कवि हेमरतनकृत सम्पा॰—श्री उदयसिंह भटनागर, एम॰ए॰

२ राठोडांरी वंशावली सम्पादक—पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्त्वाचार्य।

३ सचित्र राजस्थानी भाषा साहित्य ग्रन्थ सूची
सम्पादक—पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्त्वाचार्य।

४ मीरां बृहत् पदावली स्व॰ पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण द्वारा संकलित
सम्पादक—पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्त्वाचार्य।

५ राजस्थानी साहित्य संग्रह, भाग ३ सम्पा॰—श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी दीक्षित।

६ पश्चिमी भारत की यात्रा कर्नल जेम्स टॉड
हिन्दी अनुवादक और सम्पादक—श्री गोपालनारायण बहुरा एम॰ए॰।

७ पृथ्वीराज रासो महाकवि चन्दबरदाई कृत
सम्पादक—पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्त्वाचार्य।

८ सीतायण महाकवि चिमनजी कविया कृत सम्पादक—श्री शक्तिदान कविया एम॰ए॰।

९ बिन्दु रासो कवि मोहनराम राव कृत सम्पादक—श्री सौभाग्यसिंह शेखावत एम॰ए॰।

१० जमुनारे कुवरा छन्द मेहाजी सिंह कृत सम्पादक—श्री रावतजी उज्ज्वल।

११ प्रताप रासो, जाचिक जीवण कृत
सम्पादक—डॉ॰ मोतीलाल गुप्त एम॰ए॰ पी-एच॰डी॰।

१२ मुंहता नैणसी री ख्यात भाग ४ सम्पादक—श्री बदरीप्रसाद साकरिया।

सूचना पुस्तक-विक्रेताओं को २५% कमीशन दिया जाता है।

१९ स्व० पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण ग्रन्थसंग्रह सूची, सम्पादक—श्री गोपालनारायण बहुरा एम ए० और श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी दीक्षित ।

२० सूरजप्रकास भाग १, कविया करणीदानजी कृत सम्पा —श्री सीताराम लाळस ।

२१ " " २ " " " "

२२ " " ३ " " " "

२३ नेहतरंग रावराजा बुधसिंह हाड़ा कृत सम्पा०—श्री रामप्रसाद दाधीच, एम०ए० ।

२४ मत्स्यप्रदेश की हिन्दी साहित्य को देन (शोध प्रबन्ध) डॉ० मोतीलाल गुप्त एम ए पी०-एच०डी ।

२५ राजस्थान में संस्कृत साहित्य की खोज एस आर० भाण्डारकर हिन्दी अनुवादक—श्री ब्रह्मदत्त त्रिवेदी एम०ए० साहित्याचार्य काव्यतीर्थ ।

२६ समदर्शी आचार्य हरिभद्र, श्री सुखलालजी सिंघवी हिन्दी अनुवादक—शान्तिलाल म० जैन एम ए शास्त्राचार्य

२७ बुद्धि विलास बखतराम साह कृत सम्पादक—श्री पद्मधर पाठक एम ए० ।

२८ रुक्मिणी हरण सांयाजी झूला कृत सम्पादक—श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम०ए० साहित्यरत्न ।

२९ सन्त कवि रज्जब सम्प्रदाय और साहित्य, (शोध प्रबन्ध) डॉ ब्रजलाल वर्मा

३ भक्तमाल राघवदास कृत टीका—चतुरदास, सम्पा०—श्री अगरचन्दजी नाहटा ।

प्रेसों में छप रहे ग्रन्थ

राजस्थानी-हिन्दी

१ गोरा बादल पदमणी चउपई कवि हेमरतनकृत, सम्पा —श्री उदयसिंह भटनागर, एम ए

२ राठौडांरी वंसावली सम्पादक—पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्त्वाचार्य ।

३ सचित्र राजस्थानी भाषा साहित्य-ग्रन्थ सूची सम्पादक—पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्त्वाचार्य ।

४ मीरां बृहत् पदावली स्व पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण द्वारा संकलित सम्पादक—पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्त्वाचार्य ।

५ राजस्थानी साहित्य संग्रह भाग ३ सम्पा०—श्री लक्ष्मीनारायण गोस्वामी दीक्षित ।

६ पश्चिमी भारत की यात्रा कर्नल जेम्स टॉड हिन्दी अनुवादक और सम्पादक—श्री गोपालनारायण बहुरा एम ए० ।

७ पृथ्वीराज रासो महाकवि चन्दबरदाई कृत सम्पादक—पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्त्वाचार्य ।

८ सोढायण महाकवि चिमनजी कविया कृत सम्पादक—श्री शक्तिदान कविया एम ए० ।

९ बिन्हे रासो कवि महेशदास राव कृत सम्पादक—श्री सौभाग्यसिंह शेखावत एम०ए० ।

१० पाबूजीरे छुटरा छन्द मेहाजी मिठू कृत सम्पादक—श्री चन्द्रदानजी चारण ।

११ प्रताप रासो जाचिक जीवण कृत सम्पादक—डॉ मोतीलाल गुप्त एम ए पी-एच०डी ।

१२ मुंहता नैणसी री ख्यात भाग ४ सम्पादक—श्री बदरीप्रसाद साकरिया ।

सूचना : पुस्तक-विक्रेताओं को २५% कमीशन दिया जाता है ।